बृहज्ज्योतिःसार

(भाषा - टीका - सहित)

फलित ज्योतिष का अपूर्व संग्रह - ग्रंथ

पुस्तक–परिचय

'बृहज्ज्योतिःसार' ज्योतिषशास्त्र के स्कन्धत्रय का संक्षिप्त रूप प्रस्तुत करता है। सिद्धान्त, संहिता तथा होरा इन तीनों स्कन्धों की सारवस्तु इस ग्रन्थ में सन्निहित है। यद्यपि सिद्धान्त तथा संहिता से सम्बद्ध विषय इसमें स्वल्प है परन्तु संवत्सर प्रकरण में क्षयमास, मलमास तथा ताजिक प्रकरण में ग्रह स्पष्टीकरण, लग्नानयन और बलाबल विचार आदि सिद्धान्त स्कन्ध के विषय स्वीकार किये जा सकते हैं। संहिता स्कन्ध के अन्तर्गत नक्षत्र ज्ञान, गुरु शुक्रादि के उदयास्त का विचार, विभिन्न कार्यों तथा संस्कारों के लिए मुहूर्त विचार, राहुचक्र, शिवद्विघटिका मुहूर्त्त तथा पल्ली पतनादि का विचार सुष्ठु प्रकारेण सम्प्राप्त होता है। होरा स्कन्ध के विषय भी प्रचुरतया इस ग्रन्थ में मिलते हैं। जन्म कुण्डली, वर्ष कुण्डली, मास कुण्डली आदि निर्माण, योगिनी दशा, विंशोत्तरी दशा, स्त्री जातक तथा ताजिक के फलाफल का ज्ञान इस ग्रन्थ के द्वारा किया जा सकता है। गोचर फल और ब्रतादि का निर्णय भी इस पुस्तक में उपलब्ध हो जाता है। अतः एक कुशल ज्योतिषी बनने के लिए बृहज्ज्योतिःसार एक अत्यन्त उपादेय ग्रन्थ है। फलित ज्योतिष के अनेक विषयों का सङ्कलन एकत्र प्राप्त होने से यह ग्रन्थ सैंकड़ों वर्षों से ज्योतिषियों के मध्य परम समाहत रहा है। मूल संस्कृत श्लोकों के साथ हिन्दी टीका भी सरल तथा सुबोध है। एक ज्योतिषी के लिए यह ग्रन्थ विशेष रूप से सङ्ग्रहणीय है।

:: श्री ::

बृहज्ज्योतिःसार

(भाषा टीका सहित)

फलित ज्योतिष का अपूर्व संग्रह-ग्रंथ

संग्रहकर्ता और भाषानुवादक

पंडित श्री सूर्यनारायण सिद्धान्ती

संशोधक और संवर्द्धक

पंडित प्रवर श्री कृष्णमुरारी मिश्र राजज्योतिषी

---o---

पूर्णतया संशोधित तथा परिष्कृत

श्रीमती स्मिता पटवर्धन द्वारा

राजा राम कुमार प्रेस, लखनऊ में मुद्रित।

---o---

प्रकाशक- तेजकुमार बुक डिपो (प्रा०) लिमिटेड

उत्तराधिकारी- नवल किशोर बुक डिपो

पोस्ट बाक्स नं० ८५, १ त्रिलोकनाथ रोड, लखनऊ

उन्नीसवां संस्करण २००० सन् 2013 ई० मूल्य १२०/-

नमः शिवाय ।

बृहज्ज्योतिःसार

(सटीक)

प्रकरण-क्रम से विषयानुक्रमणिका ।

उदाहरण

श्रीसंवत् १९४८ शक १८१३, इस शक को दूसरी जगह स्थापित किया १८१३, इसे बाईस से गुणा किया ३९८८६ हुए। इसमें चार हजार दो सौ इक्यानबे जोड़ दिये ४४१७७ हुए, इस अङ्क में एक हजार आठ सौ पचहत्तर का भाग दिया तो लब्ध मिले २३, इसे प्रथम शक में जोड़ दिया १८३६ हुए, इस अङ्क में साठ का भाग दिया तो शेष बचे ३६, प्रवेश ३७ अर्थात् प्रभवादि संवत्सर से छत्तीसवाँ गत हुआ और सैंतीसवें का प्रवेश हुआ, इसका नाम शोभन संवत्सर है।

अब संवत्सर के भुक्तमासादि वा भोग्यमासादि का उदाहरण लिखते हैं। एक हजार आठ सौ पचहत्तर का भाग देने से जो शेषाङ्क बचा है, उसे बारह से गुणा करना, फिर एक हजार आठ सौ पचहत्तर का भाग देना, लब्ध संवत्सर के भुक्त मास होते हैं। फिर शेषाङ्क को तीस से गुणा करके एक हजार आठ सौ पचहत्तर का भाग देने से लब्ध भुक्त दिन मिलेंगे। शेषाङ्क को साठ से गुणा करके एक हजार आठ सौ पचहत्तर का भाग देने से लब्ध भुक्तघटी होती हैं। फिर शेषाङ्क को साठ से गुणा करके एक हजार आठ सौ पचहत्तर का भाग देने से लब्ध भुक्त पल मिलेंगे। भुक्त मासादि को बारह में घटाने से भोग्य मासादि हो जायेंगे ॥ १—२ ॥

ब्रह्म-बीसी ।

प्रभवो विभवः शुक्लः प्रमोदश्च प्रजापतिः ।
अङ्गिराः श्रीमुखो भावो युवा धाता तथैव च ॥ १ ॥
ईश्वरो बहुधान्यश्च प्रमाथी विक्रमो वृषः ।
चित्रभानुः सुभानुश्च तारणः पार्थिवो व्ययः ॥ २ ॥

ब्रह्मबीसी—प्रभव १ विभव २ शुक्ल ३ प्रमोद ४ प्रजापति ५ अङ्गिरा ६ श्रीमुख ७ भाव ८ युवा ९ धाता १० ॥१॥ ईश्वर ११ बहुधान्य १२ प्रमाथी १३ विक्रम १४ वृष १५ चित्रभानु १६ सुभानु १७ तारण १८ पार्थिव १९ व्यय २० ॥ २ ॥

विष्णु-बीसी।

सर्वजित् सर्वधारी च विरोधी विकृतः खरः ।
नन्दनो विजयश्चैव जयो मन्मथदुर्मुखौ ॥ ३ ॥
हेमलम्बो विलम्बश्च विकारी शर्वरी प्लवः ।
शुभकृत् शोभनः क्रोधी विश्वावसुपराभवौ ॥ ४ ॥

विष्णुबीसी—सर्वजित् १ सर्वधारी २ विरोधी ३ विकृत ४ खर ५ नन्दन ६ विजय ७ जय ८ मन्मथ ९ दुर्मुख १० ॥ ३ ॥ हेमलम्ब ११ विलम्ब १२ विकारी १३ शर्वरी १४ प्लव १५ शुभकृत् १६ शोभन १७ क्रोधी १८ विश्वावसु १९ पराभव २० ॥४॥

रुद्र-बीसी ।

प्लवङ्गः कीलकः सौम्यः साधारणविरोधकौ ।
परिधावी प्रमादी च आनन्दो राक्षसो नलः ॥ ५ ॥
पिङ्गलः कालयुक्तश्च सिद्धार्थो रौद्रदुर्मती ।
दुन्दुभी रुधिरोद्गारी रक्ताक्षः क्रोधनः क्षयः ॥ ६ ॥

रुद्रबीसी—प्लवङ्ग १ कीलक २ सौम्य ३ साधारण ४ विरोधक ५ परिधावी ६ प्रमादी ७ आनन्द ८ राक्षस ९ नल १० ॥ ५ ॥ पिङ्गल ११ कालयुक्त १२ सिद्धार्थ १३ रौद्र १४ दुर्मति १५ दुन्दुभी १६ रुधिरोद्गारी १७ रक्ताक्ष १८ क्रोधन १९ क्षय २० ॥ ६ ॥

स्वामी पितर हैं, पाँच वर्ष के स्वामी विश्वेदेव हैं, पाँच वर्ष के स्वामी चन्द्रमा हैं, पाँच वर्ष के स्वामी अग्नि हैं, पाँच वर्ष के स्वामी अश्विनीकुमार हैं, फिर पाँच वर्ष के स्वामी भगदेवता हैं ॥ २ ॥

मासज्ञान ।

दर्शावधिं मासमुशन्ति चान्द्रं
सौरं तथा भास्कराशिभोगात् ।
त्रिंशद्दिनं सावनसञ्ज्ञमाहु-
र्नाक्षत्रमिन्दोर्भगणभ्रमाच्च ॥ १ ॥

शुक्लपक्ष की प्रतिपदा से कृष्णपक्ष की अमावस तक चान्द्रमास और संक्रान्ति से संक्रान्ति तक सौरमास कहा जाता है। तीस दिन को सावनमास और चन्द्रमा द्वारा अश्विन्यादि नक्षत्र चक्र के भ्रमण काल को नाक्षत्र मास कहते हैं।

कार्यभेद से मासज्ञान ।

विवाहादौ स्मृतः सौरो यज्ञादौ सावनो मतः ।
पितृकार्येषु चान्द्रं च ऋक्षं दानव्रतेष्वपि ॥ १ ॥

विवाहादि कार्यों में सौर मास और यज्ञादिक में सावनमास ग्रहण करना चाहिये । पितृकार्य में चान्द्र मास और व्रत दानादि में नाक्षत्रमास ग्रहण करना चाहिये ॥ १ ॥

——:०.——

क्षयमास मलमासज्ञान।

असंक्रान्तिमासोऽधिमासः स्फुटं स्याद्
द्विसंक्रान्तिमासः क्षयाख्यः कदाचित्।
क्षयः कार्त्तिकादित्रये नान्यतः स्या-
त्तदा वर्षमध्येऽधिमासद्वयं च॥ १॥

जो महीना संक्रान्तिहीन हो जाय अर्थात् जिसमें संक्रान्ति न हो वह महीना मलमास का जानिये और जिस महीने में दो संक्रान्ति हों वह महीना क्षयमास का होता है। वह कभी-कभी पड़ता है, हमेशा नहीं होता है। क्षयमास कार्त्तिकादि तीन मास में ही होता है अन्य महीनों में नहीं होता। अर्थात् कार्त्तिक, अगहन, पौष सिवाय इनके और में क्षयमास नहीं होता है। जिस वर्ष में क्षयमास पड़ता है, उस वर्ष में दो मलमास भी पड़ते हैं॥ १॥

संवत्सर में राजादिज्ञान।

चैत्रादिमेषादिकुलीरतौलि-
मृगादिवाराधिपतिक्रमेण।
राजा च मन्त्री त्वथ शस्यनाथो
रसाधिपो नीरसनायकश्च॥ १॥

चैत्रशुक्लपक्ष की प्रतिपदा को जो वाराधिपति हो, वही संवत्सर का राजा होता है। मेष की संक्रान्ति को जो वाराधिपति हो, वही मन्त्री होता है और कर्क की संक्रान्ति को जो वाराधिपति हो, वही सस्यनाथ (खेती का स्वामी) होता है। तुला की संक्रान्ति को जो वाराधिपति हो वह रसाधिप होता है और मकर की संक्रान्ति को जो वाराधिपति हो वह नीरसाधिप होता है॥ १॥

उदाहरण ।

कलियुग के प्रमाण को चार से गुणा किया तो १७२८००० वर्ष हुए । यही कृतयुग का प्रमाण है । फिर कलिप्रमाण को तीन से गुणा किया तो १२९६००० वर्ष हुए, यही त्रेतायुग का प्रमाण हुआ । फिर कलिप्रमाण को दो से गुणा किया तो ८६४००० वर्ष हुए, यही द्वापर का प्रमाण जानिये ॥ २ ॥

संवत्सर में वर्षादि के विस्वा का आनयन ।

शाकस्त्रि३निघ्नो नग७भाजितश्च
शेषं द्वि२निघ्नं शर५संयुतं च ।
वर्षा च धान्यं तृण-शीत-तेजो
वायुश्च वृद्धिक्षयविग्रहौ च ॥ १ ॥

शाकं वेद ४ गुणं कृत्वा सप्तभि ७ र्भागमाहरेत् ।
शेषं द्वि२घ्नं त्रिभि३र्युक्तं भुक्तविश्वाख्यसंज्ञकम् ॥ २ ॥
क्षुधा तृषा च निद्रा च आलस्योद्यममेव च ।
शान्तिः क्रोधस्तथा दम्भो लोभमैथुनयोः क्रमात् ॥ ३ ॥
ततश्च रसनिष्पत्तिः फलनिष्पत्तिरेव च ।
उत्साहः सर्वलोकानां फलान्येतानि चिन्तयेत् ॥ ४ ॥
शकं च वसु ८ भिर्निघ्नं नव ९ भिर्भागमाहरेत् ।
शेषं द्वि२घ्नं रूप१युक्तं प्रोक्तं विश्वाख्यसंज्ञकम् ॥ ५ ॥
उग्रत्वपापपुण्यानि व्याधिश्च व्याधिनाशनम् ।
आचारश्चाप्यनाचारो मृत्युर्जन्म यथाक्रमम् ॥ ६ ॥
देशोपद्रवस्वास्थ्यं च चौरभीश्चौरनाशनम् ।
वह्निभीर्वह्निशान्तिश्च ज्ञातव्यानि यथाक्रमात् ॥ ७ ॥

शकः चतुःस्थश्शर ५ सप्त ७ नन्द ९
रुद्रै ११ र्हतः सप्त ७ हृतावशेषम् ।
द्वि २ घ्नं त्रिभिः ३ संयुतमत्र मान-
मुद्भिज्जजारराडजस्वेदजानाम् ॥ ८ ॥
सप्त७घ्नशाकं नवभि९र्भाजिताशेषकं तथा ।
लोचन२घ्नं युतं रामै३र्जीवीयाश्च यथाक्रमम् ॥ ९ ॥
शलभाश्च शुकाश्चैव मूषकाः स्वर्णताम्रकौ ।
स्वचक्रं परचक्रं च वृष्टिर्वृष्टिविनाशनम् ॥ १० ॥
अर्कादिवारे संक्रान्तौ कर्कस्याब्दविशोपकाः ।
दिशो १० नखा २० गजाः ८ सूर्या १२
भृत्यो १८ ऽष्टादश १८ सायकाः ५ ॥ ११ ॥

शक को तीन से गुणा करके सात का भाग देना, लब्ध को अलग रखना और शेष को दूना करके पाँच जोड़ देना जो अङ्क हों वह वर्षा के बिस्वा निकलेंगे। फिर लब्ध को तीन से गुणा करके सात का भाग देना, लब्ध को अलग रखना, शेष को दूना करके पाँच जोड़ देना, जो अङ्क प्राप्त हों उनको धान्य के बिस्वा जानिये। फिर लब्धाङ्क को इसी रीति से गणित करके तृण के बिस्वा बन जायँगे। फिर लब्धाङ्क से इसी प्रकार वारंवार यही क्रिया करने से शीत, तेज, वायु, वृद्धि, क्षय और विग्रह इन सब के बिस्वा अलग अलग निकलेंगे।

उदाहरण।

संवत् १९४८ शक १८१३ इस शक को तीन से गुणा किया तो ५४३९ हुए। इसमें सात का भाग दिया तो लब्ध मिले ७७७

शक में पैंतीस जोड़कर चार का भाग देना शेष मेघ जानना; अर्थात् १ बचे तो आवर्त्तकनाम मेघ, २ बचें तो संवर्त्तकनामक मेघ, ३ बचें तो पुष्करसंज्ञक मेघ, ४ बचें तो द्रोणसंज्ञक मेघ जानिये । उसका शुभाशुभ फल पूर्व महर्षि इस प्रकार कहते हैं ।

मेघ-फल ।

आवर्त्त में महावर्त्त हों, संवर्त्तक में बहुत जलवृष्टि हो, पुष्कर में चित्रविचित्र वर्षा हो और द्रोण में बूड़ा आवे ।

उदाहरण ।

संवत् १९४८ शक १८१३, शक में पैंतीस जोड़ दिये तो १८४८ हुए । इसमें चार का भाग दिया तो शेषाङ्क बचा शून्य। इसलिए चौथा द्रोणसंज्ञक मेघ समझना चाहिए । इसी प्रकार से सब निकलेंगे ॥ १–३ ॥

सम्वत्सर के राजा आदि का संक्षेप में फल ।

राजा भौमादिकानाञ्च वच्मि संक्षेपतः फलम् ।
गुरुशुक्रेन्दवोऽधीशाः सन्ति चेज्जनसौख्यदाः ॥ १ ॥
सुभिक्षं शोभना वृष्टिर्देशे स्वास्थ्यं प्रकुर्वते ।
शनिभौमौ प्रकुर्वाते दुर्भिक्षं विग्रहं भयम् ॥ २ ॥
अल्पसौख्यप्रदः सौम्यः खलु दुःखप्रदो रविः ।
फलं सविस्तरं चैषां विज्ञेयं संहितादिषु ॥ ३ ॥

संवत्सर के राजादि का फल संक्षेप से कहते हैं । गुरु, शुक्र और चन्द्रमा राजा हों तो मनुष्यों को सुख देनेवाले हैं ॥ १ ॥ सुभिक्ष हो, वर्षा अच्छी हो, देश में स्वास्थ्य लाभ भी करें । शनैश्चर और मङ्गल राजा हों तो दुर्भिक्ष और विग्रह करें ॥ २ ॥ बुध राजा हों तो थोड़ा सुख करें । सूर्य राजा हों तो दुःख हो । विस्तारपूर्वक फल संहिताग्रन्थों में जानना चाहिए ॥ ३ ॥

आषाढ़ में पूर्णिमा के पवन का फल।

आषाढे पूर्णिमायां चेदनिलो वाति नैर्ऋतः।
अनावृष्टिर्धान्यनाशो जलं कूपे न दृश्यते ॥ १ ॥
आषाढे पूर्णिमायां तु वायव्ये यदि मारुतः।
धर्मशीलस्तदा लोको धनं धान्यं गृहे गृहे ॥ २ ॥
आषाढे पूर्णिमायां तु ईशान्ये याति मारुतः।
सुखिनो हि तदा लोका गीतवाद्यपरायणाः ॥ ३ ॥
वह्निकोणे वह्निभीतिः पश्चिमे च जलाद्भयम्।
अन्यत्र यदि वायुः स्यात्सुभिक्षं जायते तदा ॥ ४ ॥

आषाढ़मास की पूर्णमासी को जो नैर्ऋत्यदिशा से हवा चले तो अनावृष्टि हो, धान्यनाश हो और कूप का जल सूखे ॥ १ ॥ आषाढ़ की पूर्णमासी को जो वायव्यदिशा से हवा चले तो लोक में धर्म हो और धनधान्य घर घर होवे ॥२॥ आषाढ़ की पूर्णमासी को यदि ईशानदिशा से वायु चले तो लोक में सुखप्राप्ति हो और सांसारिक प्राणी गीतवाद्यपरायण होवें ॥३॥ अग्निकोण से वायु चले तो अग्निभय हो और पश्चिमदिशा की वायु हो तो जल का भय हो और शेष दिशाओं में वायु चले तो सुभिक्ष जानना चाहिए ॥४॥

होलिका के पवन का फल।

पूर्वे वायौ होलिकायाः प्रजाभूपालयोः सुखम्।
पलायते च दुर्भिक्षं दक्षिणे जायते ध्रुवम् ॥ १ ॥
पश्चिमे तृणसम्पत्तिरुत्तरे धान्यसंभवम्।
यदि खे च शिखावृद्धिर्दुर्गराजोऽपि संक्षयेत् ॥ २ ॥

होलिका की वायु पूर्वदिशा में जाय तो राजा-प्रजा सुखी हों और दक्षिणदिशा में जाय तो पलायमान अर्थात् पराजित हों,

व्रतादि-निर्णय

बृहज्ज्योतिःसार की विषयानुक्रमणिका समाप्त ।

——: ० :——

श्रीगणेशाय नमः ।

बृहज्ज्योतिःसार

सटीक ।

—:०:—

गणाधिपं नमस्कृत्य ज्योतिःसारसुसंग्रहम् ।
सूर्यनारायणः कुर्वे लोकानां हितकाम्यया ॥ १ ॥

गणेशजी को नमस्कार करके सर्वसाधारण के लाभार्थ, ज्योतिः-शास्त्र के सारांश का संग्रह मैं सूर्यनारायण करता हूँ ॥ १ ॥

(१) संवत्सरप्रकरण ।

प्रभवादि संवत्सर आनयन ।

शककालः पृथक्संस्थो द्वाविंशत्या २२ हतस्त्वथ ।
भूनंदाश्व्यब्धि ४२९१ युग्भक्तो बाणशैलगजेन्दुभिः १८७५
लब्धियुग्विहृतः षष्ट्या ६० शेषे स्युर्गतवत्सराः ।
बार्हस्पत्येन मानेन प्रभवाद्याः क्रमादमी ॥ २ ॥

शक को दो जगह रखकर प्रथम को बाईस से गुणा करना उसमें चार हजार दो सौ इक्यानबे जोड़कर एक हजार आठ सौ पचहत्तर का भाग देना ॥ १ ॥ जो अङ्क लब्ध मिले उसे दूसरे शक में जोड़ देना फिर उस अङ्क में साठ का भाग देना जो शेष बचे वे ही बृहस्पति के मान से प्रभवादि गत संवत्सर होते हैं ॥२॥

ऋतुज्ञान तथा अयनज्ञान ।

शिशिरपूर्वमृतुत्रयमुत्तरं
ह्ययनमाहुरहश्च तदामरम् ।
भवति दक्षिणमन्यऋतुत्रयं
निगदिता रजनी मरुतां हि सा ॥ १ ॥
मृगादिराशिद्वयभानुभोगा-
त्षडर्तवः स्युः शिशिरो वसन्तः ।
ग्रीष्मश्च वर्षा च शरच्च तद्व-
द्धेमन्तनामा कथितोऽत्र षष्ठः ॥ २ ॥

शिशिर, वसन्त, ग्रीष्म इन तीनों ऋतुओं में सूर्य उत्तरायण होते हैं। उसमें देवताओं का दिन होता है। तथा वर्षा, शरद्, हेमन्त इन तीनों ऋतुओं में सूर्य दक्षिणायन होते हैं। उसमें देवताओं की रात्रि होती है ॥ १ ॥ मकर, कुम्भ के सूर्यों में शिशिरऋतु; मीन, मेष के सूर्यों में वसन्तऋतु; वृष, मिथुन के सूर्यों में ग्रीष्मऋतु तथा कर्क, सिंह के सूर्यों में वर्षाऋतु; कन्या, तुला के सूर्यों में शरद्ऋतु; वृश्चिक और धन के सूर्यों में हेमन्त-ऋतु होती है ॥ २ ॥

ऋतुचक्र ।

सूर्यराशि	१०।११	१२।१	२।३	४।५	६।७	८।९
ऋतु	शिशिर	वसन्त	ग्रीष्म	वर्षा	शरद्	हेमन्त

अयन में शुभाशुभ कर्म ।

गृहप्रवेशस्त्रिदशप्रतिष्ठा
विवाहचौलव्रतबन्धदीक्षाः ।
सौम्यायने कर्म शुभं विधेयं
यद्गर्हितं तत्खलु दक्षिणे च ॥ १ ॥

गृहप्रवेश, विवाह, देवप्रतिष्ठा, मुण्डन, जनेऊ और दीक्षा-कर्म इतने कार्य उत्तरायण सूर्य में करना शुभ हैं और अशुभ कर्म दक्षिणायन में शुभ हैं ।। १ ।।

संवत्सरों के स्वामी ।

युगं भवेद्वत्सरपञ्चकेन
युगानि च द्वादश वर्षषष्ट्याम् ।
भवन्ति तेषामधिदेवताश्च
क्रमेण वक्ष्यामि मुनिप्रणीताः ॥ १ ॥
विष्णुर्जीवः शक्रो दहनस्त्वष्टा चाहिर्बुध्नः पितरः ।
विश्वेदेवाश्चन्द्रज्वलनौ नासत्यनामानौ च भगः ॥ २ ॥

पाँच वर्ष का एक युग होता है। प्रभवादि साठ वर्ष में बारह युग होते हैं। उन वर्षों के स्वामी मुनियों ने आगे बतलाए क्रम से कहे हैं ॥ १ ॥ प्रभवादि पाँच वर्ष के स्वामी विष्णु हैं, इसके आगे के पाँच वर्ष के स्वामी बृहस्पति हैं, फिर क्रम से पाँच वर्ष के स्वामी इन्द्र हैं, पाँच वर्ष के स्वामी अग्नि हैं, पाँच वर्ष के स्वामी त्वष्टा हैं, पाँच वर्ष के स्वामी अहिर्बुध्न हैं, पाँच वर्ष के

मतान्तर से राजादिज्ञानचक्र ।

संक्रा०	मे०	वृ०	मि०	कर्क	सिं०	कं०	तु०	वृ०	ध०	म०	कुं०	मी०
संवत्सर कार्याधिप	मन्त्री	कोशाधिप	मेघाधिप तथा युवत्यधिप	शस्याधिप	सैन्याधिप	क्षत्राधिप	रसाधिप	आज्ञाधिप	धान्याधिप	नीरसाधिप	व्यवहाराधिप	व्यापाराधिप

जिस संक्रान्ति में जो वाराधिपति हो, वही कार्याधिप मेषादि क्रम से चक्र के अनुसार समझ लेना ॥

संवत्सर में लाभव्ययज्ञान ।

राशीशवर्षेशयुतं त्रि३गुण्यं
शरेण ५ युक्तं तिथि १५ शेषलाभम् ।
लाभं त्रि३गुण्यं च शरेण ५ युक्तं
तिथ्यावशेषं १५ व्ययमामनन्ति ॥ १ ॥
रसा६स्तिथ्यो१५गजाः८शैल-
चन्द्रा १७ नन्देन्दव १९ स्तथा ।
स्वर्गा २१ दिशः १० क्रमाज्ज्ञेया
रव्यादीनां ध्रुवा इमे ॥ २ ॥

जिस राशि को जिस वर्ष में लाभ-व्यय निकालना हो उस राशि के स्वामी के ध्रुवाङ्क में उस वर्ष के राजा का ध्रुवाङ्क जोड़ देना, उस अङ्क को ३ से गुणा करना उसमें ५ जोड़ देना फिर उसमें १५ का भाग देना शेष बचे वह लाभ होता है। जो लब्धि

मिली है, उसे ३ से गुणा करना उस अङ्क में ५ जोड़ देना, उसमें १५ का भाग देना जो शेष रहे वही खर्च जानिये ॥१॥ सूर्यादिग्रहों के ध्रुवाङ्क ये हैं—सूर्य का ध्रुवांक ६ चन्द्र का १५ भौम का ८ बुध का १७ जीव का १९ शुक्र का २१ शनैश्चर का १० ॥२॥

उदाहरण।

जैसे मेषराशि का लाभ व्यय बनाना है उसका स्वामी मङ्गल है, उसका ध्रुवाङ्क ८ हुआ और संवत्सर (शक १८१३) का राजा शुक्र है उसका ध्रुवाङ्क २१ हुआ; दोनों ध्रुवाङ्क जोड़े तो २९ हुए, इसको तीन से गुणा किया तो ८७ हुए, उसमें पाँच जोड़े तो ९२ हुए; इसमें पन्द्रह का भाग दिया तो लब्ध मिले ६ शेष बचे २; यही मेषराशि का लाभ जानिये। फिर लब्ध जो ६ मिले हैं, उन्हें तीन से गुणा किया तो १८ हुए, उसमें पाँच जोड़ दिये तो हुए २३, इसमें पन्द्रह का भाग दिया तो शेष बचे ८, यही मेषराशि का खर्च जानिये। इसी प्रकार से सब राशियों का लाभ-खर्च जानना ॥ २ ॥

युगों का प्रमाण।

द्वात्रिंशद्भिः सहस्रैश्च युक्तं लक्षचतुष्टयम्।
प्रमाणं कलिवर्षाणां प्रोक्तं पूर्वैर्महर्षिभिः ॥ १ ॥
युगानां कृतमुख्यानां क्रमान्मानं प्रजायते।
कलेर्मानं क्रमान्निघ्नं चतु४स्त्रि३द्वि२मितैस्तदा ॥ २ ॥

पूर्व महर्षिगण चारलाख बत्तीसहजार ४३२००० वर्ष कलियुग का प्रमाण कहते हैं ॥ १ ॥ इसी युग के प्रमाण से सत्ययुगादि का भी प्रमाण कहते हैं। क्रम से कलिप्रमाण को चार ४, तीन ३ और दो २ से गुणा करें तो उसी क्रम से सत्ययुग; त्रेता और द्वापरयुग का प्रमाण हो जायगा।

विवाह-विचार

शेष शून्य बचा । इसमें पाँच जोड़े तो पाँच हुए । यही वर्षा के बिस्वा का प्रमाण जानिये और लब्धाङ्क से पूर्वोक्त प्रकार धान्यादिक बिस्वा जानिये ।

शक को चार से गुणा करना उसमें सात का भाग देना लब्ध को अलग रखना शेषाङ्क को दूना करना उस अङ्क में तीन जोड़ने से जो अङ्क हों उसे क्षुधा के बिस्वा जानिये ।

लब्ध को फिर चार से गुणा करके सात का भाग देना लब्ध को अलग रखना शेषाङ्क को दूना करके तीन और जोड़ देना जो अङ्क हों उसे तृषा के बिस्वा जानिये ।

लब्धाङ्क को इसी रीति से पूर्वोक्त क्रिया करके वारंवार इसी प्रकार के गणित से निद्रा, आलस्य, उद्यम, शान्ति, क्रोध, दम्भ अर्थात् पाखण्ड, लोभ, मैथुन, रस, फल तथा उत्साह के बिस्वा जानिये ।

शक को आठ से गुणा करना और नव का भाग देना, लब्ध को अलग रखना, शेषाङ्क को दूना करके उसमें एक जोड़ देना, जो अङ्क हों वे उग्रत्व के बिस्वा होते हैं ।

लब्धाङ्क को आठ से गुणा करके नव का भाग देना जो लब्ध मिले उसे अलग रखना शेषाङ्क को दूना करके एक जोड़ देना जो हों उसको पाप के बिस्वा जानिए ।

लब्धाङ्क में पूर्वोक्त क्रिया करने से पुण्य, व्याधि, व्याधिनाश, आचार, अनाचार, मृत्यु, जन्म, देशोपद्रव, देशस्वास्थ्य, चौरभय, चौरनाश, अग्नि तथा अग्निशान्ति, इन सबों के बिस्वा सिद्ध होते हैं।

शक को चार जगह रखना, प्रथम को पाँच से गुणा करना दूसरे को सात से, तीसरे को नव से, चौथे को ग्यारह से गुणा करना; इन चारों अङ्कों में अलग अलग सात-सात का भाग देना, शेषाङ्कों को दूना-दूना करना, चारों जगह पर उनमें तीन-तीन और जोड़ देना,

फिर क्रम से उद्भिज, जरायुज, अण्डज, स्वेदज जीवों के बिस्वा जानना; अर्थात् प्रथम अङ्क में उद्भिज, दूसरे में जरायुज, तीसरे में अण्डज और चौथे में स्वेदज जीवों के बिस्वा जानना ।

शक को सात से गुणा करना और नव का भाग देना, लब्ध को अलग रखना, शेषाङ्क को दूना करना, उसमें तीन और जोड़ देना, जो अङ्क हों उसे शलभ अर्थात् टीड़ी के बिस्वा जानिये ।

लब्धाङ्क को फिर सात से गुणा करना और नव का भाग देना, लब्ध को अलग रखना, शेषाङ्क को दूना करना, उसमें तीन जोड़ देना, जो अङ्क हों उसे शुक अर्थात् तोता के बिस्वा जानना ।

लब्धाङ्क पर फिर इसी रीति से क्रिया करने से मूषक, सोना, ताँबा, स्वचक्र, परचक्र, वृष्टि और वृष्टिनाश के बिस्वा अलग अलग बन जायेंगे ।

कर्क की संक्रान्ति जिस दिन हो उसी दिन के अनुसार संवत्सर के बिस्वा होते हैं । जैसे रविवार को संक्रान्ति हो तो संवत्सर के दश बिस्वा, सोमवार को बीस बिस्वा, मङ्गल को आठ बिस्वा, बुध को बारह बिस्वा, बृहस्पति को अठारह बिस्वा, शुक्रवार को अठारह बिस्वा और शनिवार को पाँच बिस्वा होते हैं ॥१–११॥

मेघ का आनयन ।

शकं बाणाग्नि ३५ संयुक्तं वेदेन ४ परिभाजयेत् ।
शेषं मेघं विजानीयादावर्त्तादिचतुष्टये ॥ १ ॥
आवर्त्तकः १ संवर्त्तकः २ पुष्करो ३ द्रोणसंज्ञकः ४ ।
शुभाशुभफलं ज्ञेयं प्रोक्तं पूर्वमहर्षिभिः ॥ २ ॥
आवर्त्तके महावर्त्तः संवर्त्तो बहुतोयदः ।
पुष्करे चित्रिता वृष्टिर्द्रोणेऽपि बहुवारिदः ॥ ३ ॥

शिवद्विघटिका मुहूर्त

(३) ताजिक-प्रकरण

किंवा दुर्भिक्ष हो ॥ १ ॥ पश्चिमदिशा में जाय तो तृण बहुत पैदा हो । और उत्तरदिशा में जाय तो धान्यसंभव हो अर्थात् पैदा हो और जो आकाश को जाय तो राजा का किला छूट जाय ॥ २ ॥

सूर्य और चन्द्र ग्रहण का ज्ञान ।

द्वि २ द्वादशे १२ च षष्ठे ६ च समसप्तम ७ गे तथा ।
एकराशौ यदा राहुर्ग्रस्तौ च शशिभास्करौ ॥ १ ॥

राहु से दूसरे, बारहवें, छठें, सातवें या राहु की राशि में सूर्य चन्द्रमा होवें तो ग्रहण पड़े ॥ १ ॥

मतान्तर से ग्रहण का ज्ञान ।

मासनक्षत्रमारभ्य ऋक्षं भवति षोडशः ।
अमायां प्रतिपत्सन्धौ सूर्यग्रहणनिश्चितम् ॥ १ ॥
रवेः पञ्चदशं ऋक्षं पूर्णमास्यां यदा भवेत् ।
रात्रौ च प्रतिपत्सन्धौ चन्द्रग्रहणनिश्चितम् ॥ २ ॥

कृष्णपक्ष की प्रतिपदा को जो नक्षत्र होवे उससे सोलहवाँ नक्षत्र अमावस को पड़े और अमावस में प्रतिपदा मिले, तो सूर्यग्रहण अवश्य होवे ॥ १ ॥ जिस नक्षत्र का सूर्य हो उससे पन्द्रहवाँ नक्षत्र पूर्णमासी को पड़े और रात्रि को प्रतिपदा मिले तो चन्द्रग्रहण अवश्य होवे ॥ २ ॥

फल सहित तिथियों की संज्ञाएँ ।

नन्दा च भद्रा च जया च रिक्ता
पूर्णेति तिथ्योऽशुभमध्यशस्ताः ।
सितेऽसिते शस्तसमाधमाः स्युः
सितज्ञभौमार्किगुरौ च सिद्धाः ॥ १ ॥

नन्दा, भद्रा, जया, रिक्ता, पूर्णा ये प्रतिपदा से पञ्चमीपर्यन्त, षष्ठी से दशमीपर्यन्त और एकादशी से पूर्णमासी पर्यन्त तिथियों की संज्ञा हैं। अर्थात् प्रतिपदा, षष्ठी, एकादशी नन्दासंज्ञक; द्वितीया, सप्तमी, द्वादशी, भद्रासंज्ञक; तृतीया, अष्टमी, त्रयोदशी जयासंज्ञक; चतुर्थी, नवमी, चतुर्दशी रिक्तासंज्ञक और पञ्चमी, दशमी, पूर्णमासी (और अमावस) पूर्णासंज्ञक हैं। ये तिथियाँ शुक्लपक्ष में शुभ कार्य के लिए अधम, मध्यम, उत्तम और कृष्णपक्ष में उत्तम, मध्यम और अधम होती हैं। अर्थात् शुक्लपक्ष की प्रतिपदा अधम, षष्ठी मध्यम, एकादशी उत्तम और कृष्णपक्ष में प्रतिपदा उत्तम, षष्ठी मध्यम और एकादशी अधम होती है। इसी प्रकार भद्रादि तिथियों में भी मध्यमादि का ज्ञान करना चाहिए। ये नन्दादि तिथियाँ क्रम से शुक्र, बुध, मंगल, शनि, बृहस्पति के दिन पड़ें, तो सिद्धा (कार्य सिद्ध करनेवाली) होती हैं, इसलिए सिद्धा यह अन्वर्थनाम है।

शुक्लपक्ष में तिथिचक्र।

नन्दा	भद्रा	जया	रिक्ता	पूर्णा	फल
१	२	३	४	५	अधम
६	७	८	९	१०	मध्यम
११	१२	१३	१४	१५	उत्तम
शुक्र	बुध	मंगल	शनि	गुरु	सिद्धियोग

कृष्णपक्ष में तिथिचक्र ।

नन्दा	भद्रा	जया	रिक्ता	पूर्णा	फल
१	२	३	४	५	उत्तम
६	७	८	९	१०	मध्यम
११	१२	१३	१४	३०	अधम
शुक्र	बुध	मंगल	शनि	गुरु	सिद्धियोग

तिथियों के कृत्य ।

गीतं नृत्यं तथा क्षेत्रं चित्रोत्सवगृहादिकम् ।
वस्त्रालङ्कारशिल्पादि नन्दाख्यासु शुभं स्मृतम् ।। १ ।।
विवाहोपनयो यात्राभूषाशिल्पकलादिकम् ।
गजाश्वरथकृत्यं च भद्रातिथिषु सिद्धिदम् ।। २ ।।
सैन्यं संग्रामशस्त्रादि यात्रोत्सवगृहादिकम् ।
भैषज्यं चैव वाणिज्यं सिद्ध्येत्सर्वं जयासु च ॥ ३ ॥
शत्रूणां वधबन्धादि विषशस्त्राग्नियोजनम् ।
कर्तव्यं तच्च रिक्तायां नैव सन्मङ्गलं क्वचित् ॥ ४ ॥
व्रतबन्धविवाहादि यात्राराज्याभिषेचनम् ।
शान्तिकं पौष्टिकं कर्म पूर्णासु किल सिद्ध्यति ।। ५ ।।

गीत, नृत्य, खेती का कार्य, चित्र, उत्सव, गृहादि कर्म तथा वस्त्राभूषण धारण करना और शिल्पादि कर्म अर्थात् थवई का कृत्य इनमें नन्दा तिथि शुभ है ॥१॥ विवाह, जनेऊ, यात्रा, भूषण पहिरना, थवई का काम, कला सीखना और हाथी-घोड़ा व रथकर्म इन सब कार्यों में भद्रातिथि शुभ है ॥२॥ फौज के कार्य, युद्धकार्य और हथियारों के कार्य और यात्रा का उत्सव या गृहादिक कार्य तथा भैषज्य अर्थात् औषध करना, वाणिज्यकर्म इन कार्यों में जया तिथि शुभ है ॥३॥ शत्रु का वध करना, बन्धनादि कर्म करना, विष देना, शस्त्र चलाना, अग्नि लगाना इन कार्यों में रिक्ता तिथि शुभ है। और मङ्गलकार्य रिक्ता में कभी न करना चाहिए ॥४॥ जनेऊ, विवाह, यात्रा, राजगद्दी पर बैठना और शान्तिकर्म और पौष्टिक कर्म इनमें निश्चय करके पूर्णा तिथि शुभ है ॥ ५ ॥

तिथियों के स्वामी ।

तिथीशा वह्निधात्र्यम्बाहेरम्बोरगषण्मुखाः ।
रवीशाम्बायमोविश्वे हरिस्मरशिवेन्दवः ॥
अमावास्यातिथेरीशाः पितरः संप्रकीर्तिताः ॥ १ ॥

प्रतिपदा के स्वामी अग्नि, द्वितीया के स्वामी ब्रह्मा, तृतीया की स्वामिनी देवी, चतुर्थी के स्वामी गणेश, पञ्चमी के स्वामी सर्प, षष्ठी के स्वामी स्वामिकार्त्तिक, सप्तमी के स्वामी सूर्य, अष्टमी के स्वामी शिव, नवमी की स्वामिनी दुर्गा, दशमी के स्वामी यम, एकादशी के स्वामी विश्वेदेव, द्वादशी के स्वामी विष्णु, त्रयोदशी के स्वामी कामदेव, चतुर्दशी के स्वामी शिव, पूर्णमासी के स्वामी चन्द्रमा और अमावस के स्वामी पितर हैं। इसी प्रकार से तिथियों के स्वामी जानना ॥ १ ॥

तिथीशचक्र ।

१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	१५ ३०
अग्नि	ब्रह्मा	पार्वती	गणेश	सर्प	स्वामिकार्तिक	सूर्य	शिव	दुर्गा	यम	विश्वेदेव	हरि	काम	शिव	चन्द्र, पितर

कृत्य-विशेषों में निषिद्ध तिथियाँ ।

पष्ठ्य ६ ष्टमी ८ भूत १४ विधुक्षयेषु ३०
नो सेवेत ना तैलपले क्षुरं रतम् ।
नाभ्यञ्जनं विश्व १३ दश १० द्विके २ तिथौ
धात्रीफलैः स्नानममा३०द्रि७गो ९ष्वसत् ॥ १ ॥

पुरुष षष्ठी को तैल सेवन, अष्टमी को मांस भक्षण, चतुर्दशी को क्षौर कर्म और अमावस को स्त्रीप्रसंग न करे। त्रयोदशी, दशमी, द्वितीया इन तिथियों में उबटन न लगावे। अमावस, सप्तमी और नवमी को आँवला के फल से स्नान न करे ॥ १ ॥

तिथि-विशेष में तैल आदि का परिहार ।

षष्ठीशनैश्चरे तैलं महाष्टम्यां पलानि च ।
तीर्थक्षौरं चतुर्दश्यां दीपमालासु मैथुनम् ॥ १ ॥

षष्ठी को यदि शनिवार पड़े तो तैल सेवन करना चाहिए। और दुर्गाष्टमी को मांस खाना योग्य है। तीर्थस्थान पर चतुर्दशी के क्षौर में दोष नहीं है और दीपमालिका को मैथुन का निषेध नहीं है ॥ १ ॥

तिथियों में भक्ष्य-निषेध ।

कूष्माण्डं मातुलुङ्गं च पटोलं बृहतीफलम् ।
श्रीफलं पिचुमन्दं च धात्रीं पक्षादितस्त्यजेत् ॥ १ ॥

प्रतिपदा को कुम्हड़ा, द्वितीया को बिजौरा नींबू, तीज को परवर, चौथ को भाँटा, पञ्चमी को बेल, छठि को निमकौरी और सप्तमी को आँवला का भक्षण (खाना) वर्जित है ॥ १ ॥

शुभकृत्यों में वर्जित योगादि ।

व्यतीपातवैधृत्यमापर्वभद्रा
तिथेर्वृद्धिनाशौ जनुर्भं ग्रहर्क्षम् ।
कवीज्यास्तसंक्रान्तिन्यूनाधिमासं
कुजार्कार्किरिक्तास्त्यजेद्भव्यकृत्ये ॥ १ ॥
विष्कुम्भवज्रे घटिका हि तिस्रो
व्याघातशूले नव पञ्च जह्यात् ।
भव्येषु कृत्येष्वतिगण्डगण्डे
षडेव धीरः परिघार्द्धमाद्यम् ॥ २ ॥

व्यतीपातयोग, वैधृतियोग, अमावस, पर्व, भद्रा, तिथिवृद्धि और तिथिक्षय, जन्मनक्षत्र, ग्रहणनक्षत्र और शुक्र व बृहस्पति का अस्त, संक्रान्ति का दिन तथा क्षयमास, मलमास और मंगल, रविवार, शनिवार और रिक्तातिथि ये कुयोग समस्त शुभकार्य में वर्जित हैं ॥ १ ॥

किसी आचार्य के मत से संक्रान्ति में सोलह सोलह घड़ी पूर्व और पर की वर्जित हैं । विष्कुम्भ व वज्रयोग के आदि में तीन तीन घड़ी वर्जित हैं । व्याघात के आदि में नव घड़ी और शूल के आदि में पाँच घड़ी वर्जित हैं । गण्ड व अतिगण्ड में छः छः

घड़ी वर्जित हैं। और समस्त शुभकार्यों में परिघयोग के आदि का आधा वर्जित है ॥ २ ॥

पर्व-तिथियाँ।

चतुर्दश्यष्टमी कृष्णा अमावस्या च पूर्णिमा ।
पर्वाण्येतानि राजेन्द्र ! रविसंक्रान्तिरेव च ॥ १ ॥

कृष्णपक्ष की चतुर्दशी और अष्टमी, अमावस्या, पूर्णमासी और संक्रान्ति का दिन ये पर्वसंज्ञक हैं तथा शुभकार्य में वर्जित हैं ॥ १ ॥

भद्रा-ज्ञान ।

शुक्ले पूर्वार्द्धेऽष्टमीपञ्चदश्यो-
भद्रैकादश्यां चतुर्थ्यां परार्द्धे ।
कृष्णेऽन्त्यार्द्धे स्यातृतीयादशम्योः
पूर्वे भागे सप्तमीशम्भुतिथ्योः ॥ १ ॥

शुक्लपक्ष में अष्टमी और पूर्णमासी के पूर्वार्ध में भद्रा वास करती हैं। एकादशी और चतुर्थी के उत्तरार्ध में भद्रा वास करती हैं। कृष्णपक्ष में तृतीया और दशमी के उत्तरार्ध में भद्रा वास करती हैं, सप्तमी और चतुर्दशी के पूर्वार्ध में भद्रा वास करती हैं ॥ १ ॥

भद्रा-वास-ज्ञान तथा भद्रालोकफल ।

कुम्भकर्कद्वये मर्त्ये स्वर्गेऽब्जेऽजात्त्रयेऽलिगे ।
स्त्रीधनुर्जूकनक्रेऽधो भद्रा तत्रैव तत्फलम् ॥ १ ॥
स्वर्गे भद्रा शुभं कार्यं पाताले च धनागमः ।
मृत्युलोके यदा भद्रा सर्वकार्यविनाशिनी ॥ २ ॥

कुम्भ, मीन, कर्क, सिंह इन राशियों में चन्द्रमा हो तो भद्रा का वास मृत्युलोक में होता है । मेष, वृष, मिथुन और वृश्चिक इन राशियों के चन्द्रमा में भद्रा का वास स्वर्गलोक में जानिये । कन्या, तुला, धन और मकर इन राशियों में चन्द्रमा हो तो भद्रा का वास पाताललोक में होता है । जिस लोक में भद्रा हो उसी लोक में फल देती है ।। १ ।। स्वर्ग में भद्रा हो तो कार्य में शुभ-फल, पाताल में हो तो धनलाभ और मृत्युलोक में हो तो सब कार्यों का विनाश करती है ।। २ ।।

भद्रा का परिहार ।

दिवाभद्रा यदा रात्रौ रात्रिभद्रा यदा दिने ।
तदा विष्टिकृतो दोषो न भवेत्सर्वसौख्यदः ॥ १ ॥

दिन की भद्रा अर्थात् पूर्वार्द्ध की भद्रा रात्रि में हो और रात्रि की भद्रा अर्थात् परार्द्ध की भद्रा यदि दिन को पड़े तो भद्रादोष नहीं करती है और सर्वसुख देनेवाली होती है ।। १ ।।

मतान्तर से भद्रादि का परिहार ।

विष्टिरङ्गारकश्चैव व्यतीपातश्च वैधृतिः ।
प्रत्यारेर्जन्मनक्षत्रं मध्याह्नात्परतः शुभम् ॥ १ ॥

विष्टि अर्थात् भद्रा, अङ्गारक अर्थात् मंगल, व्यतीपात और वैधृति योग तथा पाँचवीं तारा और जन्म का नक्षत्र ये सभी कुयोग मध्याह्न के अनन्तर शुभ होते हैं ।। १ ।।

शुक्र, गुरु और चन्द्र की बाल वृद्ध अवस्था ।

पुरः पश्चाद्भृगोर्बाल्यं त्रिदशाहं च वार्द्धकम् ।
पक्षं पञ्चदिनं ते द्वे गुरोः पक्षमुदाहृते ॥ १ ॥

ते दशाहं द्वयोः प्रोक्ते कैश्चित्सप्तदिनं परैः ।
त्र्यहं त्वात्ययिकेऽप्यन्यैरुद्धाहं च त्र्यहं विधोः ॥ २ ॥

यदि शुक्र का उदय पूर्व में होवे तो तीन दिन बालक रहता है और पश्चिम में उदय हो तो दश दिन बालक रहता है । जब पूर्वदिशा में शुक्र अन्त होने को होता है, उसके पहले पन्द्रह दिन से वृद्ध होता है और जब पश्चिम में अस्त होने को होता है तब उसके पहले पाँच रोज वृद्ध होता है। बृहस्पति के उदय और अस्त होने पर, वह क्रम से पन्द्रह, पन्द्रह दिन बाल और वृद्ध रहता है ॥ १ ॥ कोई आचार्य शुक्र और बृहस्पति की बाल्यावस्था और वृद्धावस्था दश दिन की कहते हैं और कोई सात दिन की कहते हैं । कोई कहते हैं कि यदि कोई कार्य करना बहुत ही आवश्यक हो तो तीन ही दिन की बाल्यावस्था और वृद्धा-वस्था माननी चाहिए । चन्द्रमा की बाल्यावस्था आधा दिन तथा वृद्धावस्था तीन दिन की होती है ॥ २ ॥

गुरु-शुक्रास्त में वर्जित कार्य ।

वाप्यारामतडागकूपभवनारम्भप्रतिष्ठे व्रता-
रम्भोत्सर्गवधूप्रवेशनमहादानानि सोमाष्टके ।
गोदानाग्रयणप्रपाप्रथमकोपाकर्मवेदव्रतं
नीलोद्वाहमथाति पन्नशिशुसंस्कारान्सुरस्थापनम् १
दीक्षामौञ्जिविवाहमुण्डनमपूर्वं देवतीर्थेक्षणं
संन्यासाग्निपरिग्रहौ नृपतिसंदर्शाभिषेकौ गमम् ।
चातुर्मास्यसमावृती श्रवणयोर्वेधं परीक्षां त्यजेद्
वृद्धत्वास्तशिशुत्वइज्यसितयोर्न्यूनाधिमासेतथा ॥२॥

बावली, बगीचा, तालाब, कुआँ और घर इनके बनाने का आरम्भ करना या प्रतिष्ठा करना और नवीन व्रत का आरम्भ करना तथा उद्यापन, वधूप्रवेश, महादान (तुलादान आदि सोलह), सोमयज्ञ, अष्टकाश्राद्ध, प्रथमवार दाढ़ी के बाल बनवाना, नवान्न, पौशाला, प्रथम श्रावणीकर्म, वेदारम्भ, काम्यवृषोत्सर्ग, समयातिक्रान्त बालक का संस्कार अर्थात् अन्नप्राशनादि कर्म करना, देव-प्रतिष्ठा करना ॥ १ ॥ तथा मन्त्र लेना अर्थात् शिष्य होना, जनेऊ करना, विवाह तथा मुण्डन करना और प्रथम तीर्थ व प्रथम देवता का दर्शन, संन्यास लेना, अग्निहोत्रादि के लिये अग्नि का ग्रहण करना, राजा का दर्शन और राजगद्दी पर बैठना, यात्रा करना, चातुर्मास्य नामक यज्ञ, समावर्तन कर्म, कर्णवेध करना, परीक्षा लेना ये सब कार्य बृहस्पति और शुक्र के अस्त में तथा बाल और बृद्ध समय में वर्जित हैं। ये सब कार्य क्षयमास तथा मलमास में भी वर्जित हैं ॥ २ ॥

अन्यमत से वर्जित कार्य।

अस्ते वर्ज्यं सिंहनक्रस्थजीवे
वर्ज्यं केचिद्वक्रगे चातिचारे।
गुर्वादित्ये विश्वघस्रेऽपि पक्षे
प्रोचुस्तद्वद्दन्तरत्नादिभूषाम् ॥ १ ॥

बृहस्पति और शुक्र के अस्त में जो कार्य वर्जित हैं वे सिंह और मकर के बृहस्पति में भी वर्जित हैं। किसी आचार्य का मत यह है कि यदि बृहस्पति वक्री किंवा अतिचार अर्थात् एक राशि का उल्लंघन करके दूसरी राशि पर चले गए हों तो भी पूर्वोक्त वर्जित हैं। गुर्वादित्य अर्थात् सूर्य और बृहस्पति जब एक राशि

में हों तो भी वर्जित हैं। पूर्वोक्त कार्य जब तेरह दिन का पक्ष पड़े तब भी वर्जित है। उसी प्रकार से हाथियों के दाँत से या रत्न से बने हुए आभूषणों को भी बृहस्पति और शुक्र के अस्तादि काल में धारण न करना चाहिए ॥ १ ॥

गुर्वादित्य आदि का परिहार ।

गुर्वादित्ये दशाहानि गुरौ सिंहे त्रिमासिकम् ।
अतीचारे च वक्रे च अष्टाविंशतिवासरान् ॥ १ ॥

गुर्वादित्य दस दिन मानना चाहिए और सिंह के बृहस्पति तीन महीना वर्जित हैं तथा अतीचार वा वक्री हों तो अट्ठाइस दिन वर्जित हैं ॥ १ ॥

अन्यमत से गुर्वादित्य का परिहार ।

गुरुः सूर्यात्पृथग् भूत्वा पुनश्चेत्क्रियते युतिः ।
गुर्वादित्योद्भवो दोषो न भवेद्धै कदाचन ॥ १ ॥

गुरु सूर्य अलग होकर फिर एकराशि में प्रवेश करें तो गुर्वा-दित्य का दोष निश्चय से नहीं होता है ॥ १ ॥

सिंहस्थ गुरु का परिहार ।

मघादिपञ्चपादेषु गुरुः सर्वत्र निन्दितः ।
गङ्गागोदान्तरं हित्वा शेषांघ्रिषु न दोषकृत् ॥ १ ॥

चार चरण मघा के और एक चरण पूर्वाफाल्गुनी का, इन पाँच चरणों में बृहस्पति समस्त देशों में वर्जित हैं। गंगा तथा गोदावरी के बीच को छोड़कर शेष जो चार चरण सिंह नक्षत्र के बाकी रहे, वे अन्य देशों में वर्जित नहीं हैं। अर्थात् गंगा गोदावरी के बीच में केवल मेष के सूर्यों को छोड़कर समस्त सिंह का बृहस्पति वर्जित हैं। यह वचन आगे लिखते हैं ॥ १ ॥

अन्यमत से सिंहस्थगुरु का परिहार।

मेषेऽर्के सद्व्रतोद्वाहौ गङ्गागोदान्तरेऽपि च।
सर्वः सिंहगुरुर्वर्ज्यः कलिङ्गे गौडगुर्जरे॥ १॥

सिंह के बृहस्पति में यदि मेष के सूर्य हों तो गङ्गा और गोदावरी के मध्य में भी विवाह शुभ है परन्तु कलिङ्गदेश, गौड़देश और गुर्जरदेश में समस्त सिंह का बृहस्पति वर्जित है॥ १॥

मकरस्थ गुरु का परिहार।

रेवापूर्वे गण्डकीपश्चिमे च
शोणस्योदग्दक्षिणे नीच ईज्यः।
वर्ज्यो नायं कोङ्कणे मागधे च
गौडे सिन्धौ वर्जनीयः शुभेषु॥ १॥

रेवानदी के पूर्व और गण्डकी नदी के पश्चिम और शोणभद्र के उत्तर-दक्षिण में मकर के बृहस्पति शुभ कार्यों में वर्जित हैं, पर कोंकण और मागधदेश में नहीं वर्जित हैं। गौड़देश व सिन्धुदेश में शुभकार्यों में वर्जित हैं॥ १॥

ग्रहण में वर्जित मास आदि।

नेष्टं ग्रहर्क्षं सकलार्द्धपाद-
ग्रासे क्रमात्तर्कगुणेन्दुमासान्।
पूर्वं परस्तादुभयोस्त्रिघस्रा
ग्रस्तास्तगे चाभ्युदितेऽर्द्धखण्डे॥ १॥

यदि सर्वग्रहण हो तो ग्रहण का नक्षत्र शुभकार्य में छः महीने तक वर्जित है। यदि आधा ग्रहण हो तो ग्रहण का नक्षत्र तीन महीने तक वर्जित है और यदि चौथाई ग्रहण पड़े तो एक महीना तक शुभकार्य में ग्रहण का नक्षत्र वर्जित है। यदि ग्रहण पड़ते-पड़ते अस्त हो जाय तो ग्रहण के पहले तीन दिन शुभकार्य में वर्जित हैं। यदि ग्रहण पड़ते-पड़ते उदय हो तो ग्रहण के पीछे तीन दिन शुभकार्य में त्याज्य हैं। यदि अर्धग्रास हो तो भी तीन दिन पहले और तीन दिन पश्चात् (और ग्रहण का दिन भी) शुभ कार्यों में त्याज्य है ॥ १ ॥

कुयोग आदि का परिहार।

कुयोगास्तिथिवारोत्थास्तिथिभोत्था भवारजाः ।
हूणवङ्गखसेष्वेव वर्ज्यास्त्रितयजास्तथा ॥ १ ॥

तिथि वार से युक्त जो कुयोग हैं तथा तिथि नक्षत्र से मिले जो कुयोग हैं और नक्षत्र वार मिलकर जो कुयोग हैं वे हूणदेश, वङ्गदेश और खसदेश में वर्जित हैं। इसी प्रकार से तिथि, वार, नक्षत्र इन तीनों से युक्त जो कुयोग हैं वह भी इन्हीं देशों में वर्जित है ॥ १ ॥

अन्यमत से कुयोग-परिहार।

अयोगे सुयोगोऽपि चेत्स्यात्तदानी-
मयोगं निहत्यैष सिद्धिं तनोति ।
परे लग्नशुद्ध्या कुयोगादिनाशं
दिनार्द्धोत्तरं विष्टिपूर्वं च शस्तम् ॥ १ ॥

कुयोग में जो सिद्धियोग पड़े तो कुयोग का नाश करे, और अपनी सिद्धि को प्रकाश करे । दूसरे आचार्यों का मत है कि लग्न शुद्ध होने से कुयोगादि का नाश होता है और दोपहर के बाद भद्रादि जो कुयोग हैं वे भी शुभ हैं । यह वचन पहले लिख आये हैं ॥ १ ॥

वार-प्रवृत्ति ।

निशार्द्धं दिनमानं च युक्तं पञ्चेन्दुभिस्तथा ।
वारप्रवृत्तिर्विज्ञेया सूर्यसिद्धान्तसम्मता ॥ १ ॥

रात्रिप्रमाण को आधा करना, उसमें दिनप्रमाण जोड़ देना उस अङ्क में पन्द्रह और जोड़ देना जो अङ्क हो वही इष्टकाल वारप्रवृत्ति का सूर्योदय से समझ लेना, यह सूर्यसिद्धान्त का मत है ।

उदाहरण ।

संवत् १९४८ शक १८१३ श्रावणकृष्णदशमी १० गुरुवार स्पष्टवार प्रवृत्ति का निरूपण ग्रहलाघव से स्पष्टदिनमान ३३।१४ इस दिनमान को साठ में घटा देने से रात्रिमान हुआ २६।४६ इसका आधा किया १३।२३ इसको दिनमान में जोड़ दिया ४६।३७ इसमें पन्द्रह और जोड़ दिये ६१।३७ यह अङ्क हुआ, इसमें ६० निकाल डाले तो रहे १।३७ यही इष्टकाल गुरुवार प्रवेश का हुआ अर्थात् एक घड़ी सैंतीस पल दिन चढ़े बृहस्पतिवार का प्रवेश हुआ । जब अङ्क वारप्रवेश का ६० से ज्यादा आवे तब ६० निकालकर जो शेष बचे वही दिन चढ़े का इष्टकाल जानना

और वही अङ्क ६० से कम आवे उसे ६० में घटा देना, जितना शेष बचे उतनी रात्रि रहे का इष्टकाल जानना ॥ १ ॥

काल-होरा-ज्ञान ।

**वारादेर्घटिका द्वि२घ्नाः स्वाक्षह्रच्छेषवर्जिताः ।
सैका १ स्तष्टा नगैः ७ कालहोरेशा दिनपक्रमात् ॥१॥**

जब से वारप्रवृत्ति लगे तब से जो इष्टकाल बीता हो उसे दूना करना, फिर उसे दो जगह रखना, पहले अङ्क में पाँच का भाग देना जो शेषाङ्क हो उसे दूसरी जगह घटा देना, उसमें एक और जोड़ देना, उसमें सात का भाग देना, जो शेषाङ्क रहें, उसे दिन के क्रम से होरा जानना अर्थात् जिस दिन का होरा बनावे उसी दिन से गिने । शेषाङ्क पर्यन्त अन्त में जो वार आवे उसी का होरा जानिए ।

उदाहरण ।

संवत् १९४८ शक १८१३ श्रावणकृष्ण १० गुरुवारप्रवेश का इष्ट ११३७ सूर्योदयादिष्ट ६।७ इस इष्ट में वारप्रवेश का इष्ट घटाने से वारादि इष्ट हुआ ४।३० इसको दूना किया तो हुआ ९।०० इसको दूसरी जगह रक्खा ९।०० इसमें पाँच का भाग दिया तो शेष बचे ४, इसको जिसे दूना किया है उसमें घटा देना अर्थात् नव में घटा दिया तो शेष बचे ५, इसमें सात का भाग दिया तो पाँच शेष रहे । इन्हें गुरुवार से गिना तो सोमवार की होरा हुई । अब रात्रि रहे यदि वारप्रदेश हो तो होरा का क्रम वारादि इष्ट बनाने का लिखते हैं । जो इष्ट सूर्योदय से हो उसमें रात्रि रहे वारप्रवेश का जो इष्ट हो वह जोड़ देना । जोड़ने पर जो हो उसे वारादि इष्ट जान लेना फिर इसी उदाहरण से होरा बना लेना ॥१॥

द्वादश चन्द्र का परिहार ।

अभिषेके निषेके च प्राशने व्रतबन्धने ।
पाणिग्रहे प्रयाणे च चन्द्रमा द्वादशः शुभः ॥ १ ॥

अभिषेक (राजगद्दी पर बैठाना), निषेक (गर्भधारण), अन्नप्राशन, जनेऊ, विवाह और यात्रा इतने कार्यों में बारहवाँ चन्द्रमा शुभ होता है ॥ १ ॥

जन्म-चन्द्र-निषेध ।

जन्मगः फलदश्चन्द्रः पञ्च कर्मसु वर्जयेत् ।
यात्रायुद्धविवाहेषु प्रवेशे क्षौरकर्मणि ॥ १ ॥

जन्म का चन्द्रमा सब कार्यों में शुभ है । यात्रा, युद्ध, विवाह, प्रवेश और क्षौरकर्म इन पाँच कार्यों में वर्जित है ॥ १ ॥

चन्द्र-निर्णय ।

पापान्तः पापयुग्द्यूनेऽपापाच्चन्द्रः शुभोऽप्यसत् ।
शुभांशे वाधिमित्रांशे गुरुदृष्टोऽशुभोऽपि सत् ॥ १ ॥

चन्द्रमा पापग्रहों के मध्य में हो या पापग्रह से युक्त हो या पापग्रह से सातवें हो तो यदि अपनी राशि से शुभ भी हो तब भी अशुभ जानिए । चन्द्रमा यदि शुभग्रह के नवांश में हो या अपने मित्र के नवांश में हो या चन्द्रमा पर बृहस्पति की दृष्टि हो तब यदि चन्द्रमा अपनी राशि से अशुभ भी हो तब भी शुभ जानिए ॥ १ ॥

अन्यमत से चन्द्र-निर्णय ।

सिताऽसितादौ सद्दुष्टे चन्द्रे पक्षौ शुभावुभौ ।
व्यत्यासे चाशुभौ प्रोक्तौ संकटेऽब्जबलं त्विदम् ॥ १ ॥

शुक्लपक्ष की प्रतिपदा को, जिसकी राशि से चन्द्रमा शुभ हो और कृष्णपक्ष की प्रतिपदा को जिसकी राशि से चन्द्रमा अशुभ हो ऐसा योग जिसको हो उसका चन्द्रमा दोनों पक्ष में शुभ समझना चाहिए। और व्यत्याश अर्थात् विलोम हो अर्थात् शुक्लपक्षादि में अशुभ हो और कृष्णपक्षादि में शुभ हो तो दोनों पक्षों में अशुभ जानिए। यंह बल चन्द्रमा का संकट अर्थात् विवाह-यात्रा में लेना चाहिए ॥ १ ॥

चन्द्र का फल ।

आद्ये चन्द्रः श्रियं कुर्यान्मनस्तोषं द्वितीयके ।
तृतीये धनसम्पत्तिश्चतुर्थे कलहागमः ॥ १ ॥
पञ्चमे ज्ञानवृद्धिश्च षष्ठे संपत्तिरुत्तमा ।
सप्तमे राजसन्मानं मरणं चाष्टमे तथा ॥ २ ॥
नवमे धर्मलाभं च दशमे मानसेप्सितम् ।
एकादशे सर्वलाभो द्वादशे हानिरेव च ॥ ३ ॥

पहला चन्द्रमा लक्ष्मीकारक है। दूसरा मन को संतोषकारक है। तीसरा धनसंपत्तिकारक है। चौथा कलह करनेवाला है ॥ १ ॥ पाँचवाँ ज्ञानवृद्धिकारक है। छठवाँ संपत्तिदायक है। सातवाँ राजसन्मानदायक है। आठवाँ मरणप्रद है ॥ २ ॥ नवाँ धर्मलाभदायक है। दशवाँ मनवाञ्छित सिद्धिकारक है। ग्यारहवाँ सर्वलाभदायक और बारहवाँ हानिकारक है ॥ ३ ॥

चर, स्थिर, द्विस्वभाव-बोधक चक्र ।

मे.	वृ.	मि.	क.	सि.	कं.	तु.	वृ.	ध.	म	कुं.	मी.	ल.
च.	स्थि.	द्वि.	च.	स्थि.	द्वि.	च.	स्थि.	द्वि.	च.	स्थि.	द्वि.	स.

संवत्सरों का शुभाशुभफल ।

प्रभवाद्द्विगुणं कृत्वा त्रिभिन्यूंनं तु कारयेत् ।
सप्तभिस्तु हरेद्भागं शेषं ज्ञेयं शुभाशुभम् ॥ १ ॥
एके चतुर्थे दुर्भिक्षं पञ्चद्वाभ्यां सुभिक्षकम् ।
त्रिषष्ठे च समं ज्ञेयं शून्ये पीडा न संशयः ॥ २ ॥

प्रभवादि संवत्सरों को दूना करके तीन घटा देना उसमें सात का भाग देना, जो शेष बचे उसके अनुसार शुभाशुभ फल जानना ।।१।। एक व चार बचें तो दुर्भिक्ष पड़े, पाँच व दो बचें तो सुभिक्ष हो, तीन व छः बचें तो सम जानिए, और शून्य बचे तो पीड़ा हो । इसमें कुछ संदेह नहीं है ।। २ ।।

तिथ्यादिगुण-ज्ञान ।

तिथिरेकगुणोपेता नक्षत्रं च चतुर्गुणम् ।
वारश्चाष्टगुणः प्रोक्तः करणं षोडशान्वितम् ॥ १ ॥
स्याद्द्वात्रिंशद्गुणो योगस्ताराषष्टिगुणान्विता ।
चन्द्रो शतगुणो लग्नं सहस्रगुणमुच्यते ॥ २ ॥

तिथि में एक गुण है और नक्षत्र में चार गुण हैं । वार में आठ गुण हैं और करण में सोलह गुण होते हैं ।। १ ।। योग में बत्तीस गुण होते हैं और तारा में साठ गुण हैं । चन्द्रमा में सौ गुण होते हैं तथा लग्न में सहस्रगुण हैं, अर्थात् हजार गुण होते हैं ।। २ ।।

तारा-ज्ञान ।

जन्मभाद्दिनभं यावद्गणनीयं यथाक्रमम् ।
नव ९ भिस्तु हरेद्भागं शेषं ताराबलाबलम् ॥ १ ॥

जन्म १ संपद् २ विपत् ३ क्षेमः ४ प्रत्यरिः ५ साधक ६ रतथा
वधो ७ मैत्रा८तिमैत्रेयं९ तारानामसदृक्फला ॥ २ ॥
कृष्णे बलवती तारा शुक्लपक्षे तु चन्द्रमाः ।
सदा ग्राह्या बुधैरेवं कृष्णे तारा न चन्द्रमाः ॥ ३ ॥

जन्म के नक्षत्र से दिन के नक्षत्र तक गिने उसमें नौ का भाग दे, जो शेष बचे, वह तारा जानिए ॥ १ ॥ एक बचे तो जन्म तारा, दो बचें तो सम्पत्तारा, तीन बचें तो विपत्तारा, चार बचें तो क्षेम तारा, पाँच बचें तो प्रत्यरि तारा, छः बचें तो साधक, सात बचें तो वध तारा, आठ बचें तो मैत्र तारा, शून्य बचे तो अतिमैत्र तारा जानना ॥ २ ॥ कृष्णपक्ष में तारा बली है और शुक्लपक्ष में चन्द्रमा बली है । इसलिए पण्डितों को कृष्णपक्ष में सदा तारा का विचार करना चाहिए, चन्द्रमा का नहीं ॥ ३ ॥

दिशास्वामि-ज्ञान ।

रविः शुक्रो महीसूनुः स्वर्भानुर्भानुजो विधुः ।
बुधो बृहस्पतिश्चैव दिशामीशास्तथा ग्रहाः ॥ १ ॥

पूर्वदिशा के स्वामी सूर्य हैं । आग्नेय के स्वामी शुक्र, दक्षिण के स्वामी मङ्गल, नैर्ऋत्य के स्वामी राहु, पश्चिम के स्वामी शनैश्चर, वायव्य के स्वामी चन्द्रमा, उत्तर के स्वामी बुध हैं तथा ईशानकोण के स्वामी बृहस्पति हैं ॥ १ ॥

ग्रहजाति-ज्ञान

ब्राह्मणौ जीवशुक्रौ च क्षत्रियौ भौमभास्करौ ।
चन्द्रसौम्यौ विशौ प्रोक्तौ राहुमन्दौ तथान्त्यजौ ॥ १ ॥

बृहस्पति-शुक्र ब्राह्मण हैं, सूर्य-मङ्गल क्षत्रिय हैं । चन्द्रमा-बुध वैश्य हैं । राहु, शनैश्चर अंत्यज अर्थात् शूद्र जाति के हैं ॥ १ ॥

ग्रहवर्ण-ज्ञान ।

रक्तावङ्गारकादित्यौ श्वेतौ शुक्रनिशाकरौ ।
गुरुज्ञौ पीतहरितौ शनिराहुसितौ स्मृतौ ॥ १ ॥

सूर्य मङ्गल लालवर्ण, शुक्र चन्द्रमा श्वेतवर्ण, बृहस्पति पीतवर्ण, बुध हरितवर्ण, शनैश्चर और राहु श्यामवर्ण हैं ॥ १ ॥

नक्षत्र-ज्ञान ।

अश्विनी भरणी चैव कृत्तिका रोहिणी मृगः ।
आर्द्रा पुनर्वसुः पुष्यस्ततः श्लेषा मघा तथा ॥ १ ॥
पूर्वाफाल्गुनिका तस्मादुत्तराफाल्गुनी ततः ।
हस्तश्चित्रा तथा स्वाती विशाखा तदनन्तरम् ॥ २ ॥
अनुराधा ततो ज्येष्ठा तथा मूलं निगद्यते ।
पूर्वाषाढोत्तराषाढा अभिजिच्छ्रवणस्ततः ॥ ३ ॥
धनिष्ठा शततारार्ख्यं पूर्वाभाद्रपदा ततः ।
उत्तराभाद्रपदाऽथ रेवत्येतानि भानि च ॥ ४ ॥

अश्विनी १ भरणी २ कृत्तिका ३ रोहिणी ४ मृगशिरा ५ आर्द्रा ६ पुनर्वसु ७ पुष्य ८ आश्लेषा ९ मघा १० पूर्वाफाल्गुनी ११ उत्तराफाल्गुनी १२ हस्त १३ चित्रा १४ स्वाती १५ विशाखा १६ अनुराधा १७ ज्येष्ठा १८ मूल १९ पूर्वाषाढ़ २० उत्तराषाढ़ २१ अभिजित् २२ श्रवण २३ धनिष्ठा २४ शतभिषा २५ पूर्वाभाद्रपद २६ उत्तराभाद्रपद २७ रेवती २८ ये अट्ठाइस नक्षत्र अभिजित् समेत समझना चाहिए ॥ १—४ ॥ उत्तराषाढ़ का चौथा चरण तथा श्रवण नक्षत्र के आदि का पन्द्रहवाँ हिस्सा अभिजित् नक्षत्र का प्रमाण (भोग) है ॥

योग-ज्ञान ।

विष्कुम्भः प्रीतिरायुष्मान् सौभाग्यः शोभनस्तथा ।
अतिगण्डः सुकर्मा च धृतिः शूलस्तथैव च ॥ १ ॥
गण्डो वृद्धिर्ध्रुवश्चैव व्याघातो हर्षणस्तथा ।
वज्रं सिद्धिर्व्यतीपातो वरीयान्परिघः शिवः ॥ २ ॥
सिद्धिः साध्यः शुभः शुक्लः ब्रह्मैन्द्रो वैधृतिः क्रमात् ।
सप्तविंशतियोगाश्च नामतुल्यफलप्रदाः ॥ ३ ॥

योगों की संख्या २७ है और उनके नाम क्रमानुसार इस प्रकार हैं ।

१ विष्कुम्भ	८ धृति	१५ वज्र	२२ साध्य
२ प्रीति	९ शूल	१६ सिद्धि	२३ शुभ
३ आयुष्मान्	१० गण्ड	१७ व्यतीपात	२४ शुक्ल
४ सौभाग्य	११ वृद्धि	१८ वरीयान्	२५ ब्रह्म
५ शोभन	१२ ध्रुव	१९ परिघ	२६ ऐन्द्र
६ अतिगण्ड	१३ व्याघात	२० शिव	२७ वैधृति
७ सुकर्मा	१४ हर्षण	२१ सिद्धि	

इन योगों के फल उनके नामों के अनुसार ही होते हैं ॥ १-३ ॥

ग्रहस्वामि-ज्ञान ।

शिवो दुर्गा गुहो विष्णुर्ब्रह्मेन्द्रः कालसंज्ञकः ।
सूर्यादीनां क्रमादेते स्वामिनः परिकीर्त्तिताः ॥ १ ॥

सूर्य के स्वामी शिव, चन्द्रमा की स्वामिनी दुर्गा, मङ्गल के स्वामी स्वामिकार्तिक, बुध के स्वामी विष्णु, बृहस्पति के स्वामी ब्रह्मा, शुक्र के स्वामी इन्द्र और शनैश्चर के स्वामी काल हैं ॥ १ ॥

करणज्ञान ।

बवश्च बालवश्चैव कौलवस्तैतिलस्तथा ।
गरश्च वणिजो विष्टिः सप्तैतानि चराणि च ॥ १ ॥
कृष्णपक्षे चतुर्दश्यां शकुनिः पश्चिमे दले ।
चतुष्पदश्च नागः स्यादमावास्यदलद्वये ॥ २ ॥
शुक्लप्रतिपदायां च किंस्तुघ्नः प्रथमे दले ।
स्थिराण्येतानि चत्वारि करणानि जगुर्बुधाः ॥ ३ ॥
शुक्ल प्रतिपदान्ते च बवाख्यः करणो भवेत् ।
एकादशैव ज्ञेयानि चरस्थिरविभागतः ॥ ४ ॥
तिथिं च द्विगुणीकृत्य हीनमेकं च कारयेत् ।
सप्तभिस्तु हरेद्भागं शेषं करणमुच्यते ॥ ५ ॥

बव १ बालव २ कौलव ३ तैतिल ४ गर ५ वणिज ६ विष्टि ७ ये सात करण चरसंज्ञक जानिए ।। १ ।। कृष्णपक्ष की चतुर्दशी को दूसरे दल में शकुनि करण होता है। अमावस के प्रथम दल में चतुष्पद करण होता है और दूसरे दल में नाग करण होता है ।। २ ।। शुक्लपक्ष की प्रतिपदा के प्रथमदल में किंस्तुघ्न करण होता है। इन चार करणों को आचार्य लोग स्थिरसंज्ञक कहते हैं ।। ३ ।। शुक्लपक्ष की प्रतिपदा के दूसरे दल में बव करण होता है। इसी क्रम से ग्यारह करण होते हैं। चर स्थिर विभाग करके अर्थात् पहले के सात चरसंज्ञक हैं, पीछे के चार स्थिरसंज्ञक हैं ।। ४ ।। गत तिथि को दूना करना, उसमें एक घटा देना, फिर सात का भाग देना, शेष जो रहे वह बवादि करण जानिए ।। ५ ।।

—:०:—

करण-चक्र

शुक्ल पक्ष

तिथि	करण	
	प्रथम दल	द्वितीय दल
१	किंस्तुघ्न	बव
२	बालव	कौलव
३	तैतिल	गर
४	वणिज	विष्टि
५	बव	बालव
६	कौलव	तैतिल
७	गर	वणिज
८	विष्टि	बव
९	बालव	कौलव
१०	तैतिल	गर
११	वणिज	विष्टि
१२	बव	बालव
१३	कौलव	तैतिल
१४	गर	वणिज
१५	विष्टि	बव

कृष्ण पक्ष

तिथि	करण	
	प्रथम दल	द्वितीय दल
१	बालव	कौलव
२	तैतिल	गर
३	वणिज	विष्टि
४	बव	बालव
५	कौलव	तैतिल
६	गर	वणिज
७	विष्टि	बव
८	बालव	कौलव
९	तैतिल	गर
१०	वणिज	विष्टि
११	बव	बालव
१२	कौलव	तैतिल
१३	गर	वणिज
१४	विष्टि	शकुनि
३०	चतुष्पद	नाग

नक्षत्रों के स्वामी ।

अश्विनी दस्रदैवत्या भरणी यमदेवता ।
आग्नेयी कृत्तिका प्रोक्ता विधाता रोहिणीश्वरः ॥ १ ॥
मृगशीर्षेश्वरश्चन्द्रस्तथैवार्द्रेश्वरः शिवः ।
अदितिस्तु पुनर्वस्वोः पतिः पुष्यस्य वाक्पतिः ॥ २ ॥
आश्लेषाधिपतिः सर्पो मघेशाः पितरः स्मृताः ।
भगश्च पूर्वाफाल्गुन्या उफायाः पतिरर्यमा ॥ ३ ॥
हस्तस्याधिपतिः सूर्यस्त्वष्टा चित्राभिधस्य च ।
स्वातेश्च दैवतं वायुर्विशाखेन्द्राग्निदेवता ॥ ४ ॥
अनुराधेश्वरो मित्रो ज्येष्ठाया इन्द्र उच्यते ।
मूलस्य दैवतं रक्षः पूर्वाषाढेश्वरो जलम् ॥ ५ ॥
उषाया दैवतं विश्वे विधिश्चाभिजिताधिपः ।
श्रवणाधिपतिर्विष्णुर्धनिष्ठा वसुदेवता ॥ ६ ॥
वरुणः शततारायाः प्रभेशः कथितोऽजपात् ।
अहिर्बुध्न्यस्त्वथोभायाः पूषोक्तो रेवतीपतिः ॥ ७ ॥

अश्विनी नक्षत्र के स्वामी अश्विनीकुमार हैं, भरणी के स्वामी यम हैं, कृत्तिका के स्वामी अग्नि हैं, रोहिणी के स्वामी ब्रह्मा हैं ॥१॥ मृगशिरा के स्वामी चन्द्रमा हैं, आर्द्रा के स्वामी शिव हैं, पुनर्वसु के स्वामी अदितिदेव हैं, पुष्य के स्वामी बृहस्पति हैं ॥ २ ॥ आश्लेषा के स्वामी सर्प हैं, मघा के स्वामी पितर हैं, पूर्वाफाल्गुनी के स्वामी भगदेव हैं, उत्तराफाल्गुनी के स्वामी अर्यमा देव हैं ॥ ३ ॥ हस्त के स्वामी सूर्य हैं, चित्रा के स्वामी त्वष्टा देवता हैं, स्वाती के स्वामी वायुदेवता हैं, विशाखा के स्वामी अग्नि और इन्द्र हैं ॥ ४ ॥ अनु-

राधा के स्वामी मित्रदेव हैं, ज्येष्ठा के स्वामी इन्द्र हैं, मूल के स्वामी राक्षस हैं, पूर्वाषाढ़ के स्वामी जल हैं ॥ ५ ॥ उत्तराषाढ़ के स्वामी विश्वेदेवता हैं, अभिजित् के स्वामी विधि हैं, श्रवण के स्वामी विष्णुदेव हैं, धनिष्ठा के स्वामी वसुदेव हैं ॥ ६ ॥ शतभिष के स्वामी वरुण हैं, पूर्वाभाद्रपद के स्वामी अजपात्‌देव हैं, उत्तराभाद्रपद के स्वामी अहिर्बुध्न्य हैं और रेवती के स्वामी पूषादेव हैं ॥ ७ ॥

शुभाशुभ नक्षत्रों में कर्मज्ञान ।

रोहिण्यश्विमृगाः पुष्यो हस्तचित्रोत्तरात्रयम् ।
रेवती श्रवणश्चैव धनिष्ठा च पुनर्वसुः ॥ १ ॥
अनुराधा तथा स्वाती शुभान्येतानि भानि च ।
सर्वाणि शुभकार्याणि सिद्धन्त्येषु च भेषु च ॥ २ ॥
पूर्वात्रयं विशाखा च ज्येष्ठाऽऽर्द्रा मूलमेव च ।
शततारभिमेष्वेव कृत्यं साधारणं स्मृतम् ॥ ३ ॥
भरणी कृत्तिका चैव मघाऽऽश्लेषा तथैव च ।
अत्युग्रं दुष्टकार्यं यत् प्रोक्तंभेषु विधीयते ॥ ४ ॥

रोहिणी, अश्विनी, मृगशिरा, पुष्य, हस्त, चित्रा, तीनों उत्तरा, रेवती, श्रवण, धनिष्ठा, पुनर्वसु, अनुराधा और स्वाती ये नक्षत्र शुभ हैं। इनमें शुभकार्य शुभ हैं ॥ १—२ ॥ तीनों पूर्वा, विशाखा, ज्येष्ठा, आर्द्रा, मूल और शतभिष इन नक्षत्रों में साधारण कृत्य करना शुभ है ॥ ३ ॥ भरणी, कृत्तिका, मघा और आश्लेषा इनमें अति उग्र कार्य और दुष्टकार्य सिद्ध होते हैं ॥ ४ ॥

स्थिर और ध्रुवसंज्ञक नक्षत्र और उनमें विहित कर्म ।

उत्तरात्रयरोहिण्यो भास्करश्च ध्रुवं स्थिरम् ।
तत्र स्थिरं बीजगेहशान्त्यारामादिसिद्धये ॥ १ ॥

तीनों उत्तरा और रोहिणी नक्षत्र तथा रविवार इनकी ध्रुव और स्थित संज्ञा है। इनमें स्थिरकार्य तथा गृहकार्य, बीज बोना, घर बनवाना शान्तिकर्म करना, बाग आदि लगाना, ये कार्य सिद्ध होते हैं॥१॥

चर-संज्ञक नक्षत्र और उनके कार्य।

स्वात्यादित्ये श्रुतेस्त्रीणि चन्द्रश्चापि चरं चलम्।
तस्मिन् गजादिकारोहो वाटिकागमनादिकम् ॥ १ ॥

स्वाती, पुनर्वसु, श्रवण, धनिष्ठा, शतभिष ये पाँच नक्षत्र और सोमवार दिन, इनकी चर और चल संज्ञा हैं। इनमें हाथी इत्यादि की सवारी करे तथा फुलवारी लगावे और यात्रादि कर्म करे॥ १ ॥

उग्र-संज्ञक नक्षत्र और उनके कार्य।

पूर्वात्रयं याम्यमघे उग्रं क्रूरं कुजस्तथा।
तस्मिन्घाताग्निशाठ्यानि विषशस्त्रादि सिद्ध्यति ॥ १ ॥

तीनों पूर्वा, भरणी, मघा इन नक्षत्रों की तथा भौमवार की उग्र और क्रूरसंज्ञा है। इनमें मारण, आग, लगाना तथा शठता के कर्म, विष कर्म, और शस्त्रादि कर्म शुभ हैं॥ १ ॥

मिश्र-संज्ञक नक्षत्र और उनके कार्य।

विशाखाग्नेयभे सौम्यं मिश्रं साधारणं स्मृतम्।
तत्राग्निकार्यं मिश्रं च वृषोत्सर्गादि सिद्ध्यति ॥ १ ॥

विशाखा, कृत्तिका और बुधवार इनकी मिश्र और साधारण संज्ञा है। इनमें अग्निकार्य व मिश्र (मिले हुए) कार्य और वृषोत्सर्गादि सिद्ध होते हैं॥ १ ॥

लघु और क्षिप्र-संज्ञक नक्षत्र तथा उनके कार्य।

हस्ताश्विपुष्याभिजितः क्षिप्रं लघु गुरुस्तथा।
तस्मिन्पण्यरतिज्ञानभूषाशिल्पकलादिकम् ॥ १ ॥

हस्त, अश्विनी, पुष्य, अभिजित् और गुरुवार इनकी लघु और

क्षिप्र संज्ञा है । इनमें बाजार का कार्य, रति करना, भूषण धारण करना, शिल्प कर्म और कला सीखना ये कर्म शुभ हैं ।। १ ।।

मृदु और मैत्रसंज्ञक नक्षत्र तथा कार्य ।

मृगान्त्यचित्रामित्रर्क्षं मृदु मैत्रं भृगुस्तथा ।
तत्र गीताम्बरक्रीडा मित्रकार्यं विभूषणम् ॥ १ ॥

मृगशिरा, रेवती, चित्रा, अनुराधा और शुक्रवार इनकी मृदु और मैत्रसंज्ञा है । इनमें गायन वस्त्रधारण, विहार, मित्रकार्य, और आभूषण धारण करना श्रेष्ठ है ।। १ ।।

तीक्ष्ण और दारुणसंज्ञक नक्षत्र तथा कार्य ।

मूलेन्द्रार्द्राहिभं सौरिस्तीक्ष्णं दारुणसंज्ञकम् ।
तत्राभिचारघातोग्रभेदाः पशुदमादिकम् ॥ १ ॥

मूल, ज्येष्ठा, आर्द्रा, आश्लेषा और शनिवार इनकी तीक्ष्ण और दारुणसंज्ञा है । इसमें अभिचार, घात अर्थात् मिलके मारना और भयानक कर्म करना; भेद अर्थात् तोड़-फोड़ करना तथा पशुदमादिक अर्थात् पशुओं का सिखाना आदि शुभ हैं ।। १ ।।

ऊर्ध्वमुख-संज्ञक नक्षत्र तथा कार्य ।

उत्तरात्रितयं पुष्यो रोहिण्यार्द्रा श्रुतित्रयम् ।
ऊर्ध्ववक्त्रो गणो ज्ञेयो नक्षत्राणि मनीषिभिः ॥ १ ॥
प्रासादच्छत्रगेहानि प्राकारध्वजतोरणम् ।
नानाभिषेकमश्वंच कुर्यादूर्ध्वमुखे गणे ॥ २ ॥

तीनों उत्तरा, पुष्य, रोहिणी, आर्द्रा, श्रवण, धनिष्ठा, शतभिष इन नक्षत्रों की ऊर्ध्वमुखसंज्ञा है ।। १ ।। इन ऊर्ध्वमुख नक्षत्रों में देवस्थान और चहार-दीवारी बनाना, बन्दनवार बाँधना, पताका

बाँधना, छत्र धारण करना, गृहकार्य करना, अभिषेक करना, घोड़े की सवारी करना इतने कार्य शुभ हैं ॥ २ ॥

तिर्यङ्मुख नक्षत्र तथा कार्य ।

रेवतीयुगलं ज्येष्ठा मैत्रं हस्तत्रयो मृगः ।
पुनर्वसुश्च विज्ञेयो गणस्तिर्यङ्मुखो बुधैः ॥ १ ॥
वृक्षारोपणवाणिज्यं सर्वसिद्धिं च कारयेत् ।
वाहनानि च यन्त्राणि गमनं च विधीयते ॥ २ ॥

रेवती, अश्विनी, ज्येष्ठा, अनुराधा, हस्त, चित्रा, स्वाती, मृगशिरा, पुनर्वसु इन नक्षत्रों की तिर्यङ्मुख संज्ञा पण्डितों को जाननी चाहिए ॥ १ ॥ इन नक्षत्रों में वृक्ष लगाना, वाणिज्य करना सिद्ध है और वाहन यन्त्रादि अर्थात् गाड़ी इत्यादि का प्रयोग तथा रहँटा लगाना तथा यात्रा आदि शुभ हैं ॥ २ ॥

अधोमुख-संज्ञक नक्षत्र तथा कार्य ।

पूर्वात्रयं मघाऽऽश्लेषा विशाखा कृत्तिका यमः ।
मूलं चाधोमुखं ज्ञेयं नवकोऽयं गणो बुधैः ॥ १ ॥
भूकार्यमुग्रकार्यं च खननं विवरस्य च ।
युद्धं चाधोमुखं यच्च तत्कार्यं कारयेद् बुधः ॥ २ ॥

तीनों पूर्वा, मघा, आश्लेषा, विशाखा, कृत्तिका, भरणी, मूल इन नव नक्षत्रों की अधोमुख संज्ञा है। इनमें भूमिकार्य, उग्रकार्य, कुवाँ खोदना और युद्ध करना ये कार्य शुभ हैं। जो अधोमुख अर्थात् नीचे को मुखवाले कार्य हैं वे सब शुभ हैं ॥ १-२ ॥

वार-कृत्य ।

सोमसौम्यगुरुशुक्रवासराः सर्वकर्मसु भवन्ति सिद्धिदाः ।
भानुभौमशनिवासरेषु च प्रोक्तमेव खलु कर्म सिद्ध्यति १

सोमवार, बुधवार, शुक्रवार और बृहस्पतिवार को सब काम सिद्ध होते हैं। शनिवार, रविवार और मङ्गलवार को जो कार्य कहे गये हैं वे ही सिद्ध होते हैं ॥ १ ॥

वार-दोष का परिहार ।

यस्मिन वारे तु यत्कृत्यं पूर्वाचार्यैरुदाहृतम् ।
तत्कृत्यं तस्य खेटस्य होरायां खलु सिद्ध्यति ॥ १ ॥
वारदोषाश्च ये प्रोक्ता रात्रौ न प्रभवन्ति ते ।
शनिभौमार्कवारेषु विशेषादिति केचन ॥ २ ॥

जिस वार का जो कृत्य है वह वार न मिले तो उसकी होरा में वह कृत्य शुभ है, यह पूर्वाचार्य कहते हैं ॥ १ ॥ दूसरा परिहार यह है कि वार का दोष रात्रि को नहीं होता है, और कई एक आचार्यों का यह मत है कि शनिवार, भौमवार, और रविवार के दोष विशेष करके रात्रि को नहीं होते ॥ २ ॥

रविवार-कृत्य ।

राज्याभिषेकोत्सवयानसेवा-
गोवह्निमन्त्रौषधशस्त्रकर्म ।
सुवर्णताम्रौर्णिकचर्मकाष्ठ-
संग्रामपण्यादि रवौ विदध्यात् ॥ १ ॥

राज्याभिषेक, उत्सवकर्म, यान की सवारी, राजा की सेवा, गौ पालना, अग्नि में हवन करना, मन्त्रोपदेश करना, औषध खाना, शस्त्र बनाना, सोना, ताँबा, ऊन, चर्म, काष्ठकर्म करना, युद्धकर्म व बाजार लगाना इतने कर्म रविवार को शुभ हैं ॥ १ ॥

चन्द्रवार-कृत्य ।

शङ्खाब्जमुक्तारजतं सुभोज्य-
स्त्रीवृक्षकृष्यांबुविभूषणाद्याः ।
गानं क्रतुक्षीरविकारशृङ्ग-
पुष्पाम्बरारम्भणमिन्दुवारे ॥ १ ॥

शङ्ख, कमल, मोती और चाँदी का सेवन, भोजन, स्त्रीभोग, बृक्ष लगाना, कृषिकर्म, जलकर्म, भूषणादि बनवाना, गानविद्या सीखना, यज्ञकर्म, गोरसकर्म अर्थात् दूध-दही मथना, सींग मढ़ाना व पुष्प अर्थात् फूलकर्म तथा वस्त्रकर्म इतने कार्य सोमवार को आरम्भ करना चाहिए ॥ १ ॥

भौमवार-कृत्य ।

भेदानृतस्तेयविषाग्निशस्त्र-
वन्ध्याविघाताहवशाठ्यदम्भान् ।
सेनानिवेशाकरधातुहेम-
प्रवालरत्नानि कुजे विदध्यात् ॥ १ ॥

भेदकर्म, अनृतकर्म, चोरी इत्यादि तथा विषकर्म, अग्निकर्म, शस्त्रप्रयोग, वन्ध्याकर्म, घातकर्म, रणकर्म, शाठ्यकर्म, दम्भादिकर्म, सेनानिवेश, खान का काम, तथा धातु, सोना, मूँगा और रत्नादि कृत्य मङ्गलवार को करना शुभ हैं ॥ १ ॥

बुधवार-कृत्य ।

नैपुण्यपुण्याध्ययनं कलाश्च
शिल्पादिसेवालिपिलेखकानि ।
धातुक्रिया काञ्चनयुक्तसन्धि-
व्यायामवादाश्च बुधे विधेयाः ॥ १ ॥

चतुरता, पुण्य, विद्या पढ़ना, कला सीखना, शिल्पविद्या सीखना, लिपिलेखन, धातुक्रिया करना, सोनायुक्त सन्धि अर्थात् सोने के भूषण, जड़ना, तथा व्यायाम और विवाद इतने कार्य बुधवार को करना शुभ हैं ॥ १ ॥

गुरुवार-कृत्य ।

धर्मक्रियापौष्टिकयज्ञविद्या-
माङ्गल्यहेमाम्बरवेश्मयात्रा ।
रथाश्च भैषज्यविभूषणादि
कार्यं विदध्यात्सुरमन्त्रिवारे ॥ १ ॥

धर्मक्रिया, पौष्टिकाम, यज्ञ, विद्याभ्यास, माङ्गलिक कर्म, सोना व वस्त्रादि कार्य करना, गृह बनाना, यात्रा, रथ बनाना, औषध करना और भूषण धारण करना इतने कार्य बृहस्पतिवार को करने चाहिए ॥ १ ॥

शुक्रवार-कृत्य ।

स्त्रीगीतशय्यामणिरत्नगन्ध-
वस्त्रोत्सवालङ्करणादिकर्म ।
भूपण्यगोकोशकृषिक्रियाश्च
सिद्ध्यन्ति शुक्रस्य दिने समस्ताः ॥ १ ॥

स्त्रीप्रसंग, गानविद्या, शय्या बनाना, मणि-रत्नकर्म, सुगन्ध-सम्बन्धी कर्म, वस्त्रकर्म, उत्सवकर्म, तथा अलङ्कार आदि कर्म, भूमिकर्म, बाजारकर्म, गोकर्म, द्रव्यकर्म तथा खेती का कार्य इतने कार्य शुक्रवार को शुभ हैं ॥ १ ॥

शनिवार-कृत्य ।

गृहप्रवेशादीक्षादि गजबन्धः स्थिरक्रिया ।
दासशस्त्रानृतं स्तेयमेतत्सिद्ध्येच्छनैश्चरे ॥ १ ॥

गृहप्रवेश, दीक्षा लेना, हाथी बाँधना, स्थिर क्रिया करना, दासकर्म, शस्त्रकर्म, झूठ बोलना तथा चोरी करना ये कर्म शनैश्चर के दिन शुभ हैं ॥ १ ॥

पञ्चक-विचार।

धनिष्ठार्द्धोत्तरं पञ्चऋक्षेष्वेषु त्यजेद्बुधः।
याम्यदिग्गमनं शय्यावितानं गेहगोपनम् ॥ १ ॥
प्रेतदाहं न कुर्वीत तृणकाष्ठादिसंग्रहम् ॥ २ ॥

आधे धनिष्ठा से रेवतीपर्यन्त पंचक होता है उसमें दक्षिणदिशा की यात्रा, खटिया बनाना, तम्बू बनाना, घर छवाना वर्जित है तथा प्रेतदाह व तृण-लकड़ी का काम भी वर्जित है ॥ १—२ ॥

मेषराशिगत ग्रहण-फल।

उपरागो यदा मेषे पीड्यन्ते सर्वदा जनाः।
काम्बोजांध्रकिराताश्च पाञ्चालाश्च कलिङ्गकाः ॥ १ ॥

मेषराशि में ग्रहण पड़े तो काम्बोज, आंध्र, किरात, पाञ्चाल और कलिंग इन देशों को पीड़ित करे ॥ १ ॥

वृषराशिगत ग्रहण-फल।

वृषे च ग्रहणे गोपाः पशवः पथिका जनाः।
महान्तो मनुजा ये च पीड्यन्ते साधवस्तथा ॥ २ ॥

वृषराशि में ग्रहण पड़े तो गोप, पशु, पथिक अर्थात् रास्ता चलनेवाले, महात्मालोग तथा साधुओं को पीड़ा होवे ॥ २ ॥

मिथुनराशिगत ग्रहण-फल।

रविचन्द्रमसौ ग्रस्तौ मिथुने च वराङ्गनाः।
पीड्यन्ते वाह्लिका मत्स्या यमुनातटवासिनः ॥ ३ ॥

मिथुनराशि में सूर्य और चन्द्रग्रहण पड़ें तो श्रेष्ठ स्त्री और वाह्लिकदेश, मत्स्यदेश तथा यमुनातटवासियों को पीड़ित करें ।। ३ ।।

कर्कराशिगत ग्रहण-फल ।

कर्कटे ग्रहणे पीडा मल्लादीनां च जायते ।
अन्तरं सर्वराणां च तदा मत्स्यविनाशनः ॥ ४ ॥

कर्कराशि में ग्रहण पड़ें, तो मल्लादिकों अर्थात् कुश्तीबाजों को पीड़ा जानिए तथा अन्तरवेद और सरवार तथा मत्स्यदेश का विनाश करें ।। ४ ।।

सिंहराशिगत ग्रहण-फल ।

सिंहे च ग्रहणे पीडा सर्वेषां वनवासिनाम् ।
नृपाणां नृपतुल्यानां मनुजानां च जायते ॥ ५ ॥

सिंहराशि में ग्रहण पड़ें तो सब वनवासियों को पीड़ा करें और राजाओं को तथा राजा के समान मनुष्यों को पीड़ा करें ।। ५ ।।

कन्याराशिगत ग्रहण-फल ।

कन्यायां ग्रहणे पीडा त्रिपुराणां च शालिनाम् ।
कवीनां लेखकानां च जायते पीडनं सदा ॥ ६ ॥

कन्या में ग्रहण पड़े तो त्रिपुष्कर देश वासियों को पीड़ा करें और धान्य को नाश करें तथा कवि व लेखकों को सदा पीड़ा करें ।। ६ ।।

तुलाराशिगत ग्रहण-फल ।

तुलायामुपरागे च दशार्णौ बाहुकाहुकौ ।
मरुवश्च परात्यश्च पीड्यन्ते साधवश्च ये ॥ ७ ॥

तुलाराशि में ग्रहण पड़ें, तो दशार्ण, बाहुक, आहुक, मरुव, परात्य इन देशों को और साधुजनों को पीड़ा हो ।। ७ ।।

वृश्चिकराशिगत ग्रहण-फल ।

वृश्चिके ग्रहणे पीडा सर्पजातेश्च जायते ।
औदुम्बरस्य भद्रस्य चोलायोध्येयकस्य च ॥ ८ ॥

वृश्चिकराशि में ग्रहण पड़े तो सर्पों को पीड़ा हो, औदुं-बरदेश, भद्रदेश, चोलदेश और अयोध्या-निवासियों को भी पीड़ा होवे ॥ ८ ॥

धनुराशिगत ग्रहण-फल ।

यदोपरागश्चापे च तदा मत्स्यनिवासिनः ।
विदेहमल्लपाञ्चालाः पीड्यन्ते च भिषग्विदः ॥ ६ ॥

धनुराशि में ग्रहण पड़े तो मत्स्यदेशवासियों को पीड़ा करे तथा विदेह, मल्ल, पाञ्चालदेशों में पीड़ा करे और वैद्य तथा पण्डितों को पीड़ा करे ॥ ९ ॥

मकरराशिगत ग्रहण-फल ।

मकरे ग्रहणे पीडा नीचानां मन्त्रवादिनाम् ।
स्थविराणां भटानां च चित्रकूटस्थसंक्षयः ॥ १० ॥

मकरराशि पर ग्रहण पड़े तो नीच व मन्त्रवादियों को पीड़ा करे। वृद्ध और योद्धाओं को पीड़ा हो और चित्रकूटवासियों का क्षय हो ॥ १० ॥

कुम्भराशिगत ग्रहण-फल ।

कुम्भे चैवोपरागे च पश्चिमस्थास्तथार्बुदाः ।
चौराणां रोगिणां मृत्युः पीड्यन्ते बहुधा बुधाः ॥ ११ ॥

कुम्भराशि पर ग्रहण पड़े तो पश्चिम देशवाले और अर्बुद देशवाले पीड़ा पावें, चोर और रोगियों की मृत्यु हो और पण्डित लोग पीड़ित हों ॥ ११ ॥

मीनराशिगत ग्रहण-फल ।

मीनोपरागे पीड्यन्ते जलद्रव्याणि सागराः ।
जलोपजीविनो लोका ये च यत्र प्रतिष्ठिताः ॥ १२ ॥

मीनराशि पर ग्रहण पड़े तो जलद्रव्य, सागर और जलोपजीवी पीड़ा पावें अर्थात् जिनकी जीविका जल से है तथा जल के पास जो रहते हैं वे सब पीड़ा पावें ॥ १२ ॥

एक मास में चन्द्र-सूर्य-ग्रहण फल ।

यदैकमासे ग्रहणं जायते शशिसूर्ययोः ।
शस्त्रकोपैः क्षयं यान्ति भूपा माया परस्परम् ॥ १३ ॥

जब एक मास में चंद्र-सूर्य दोनों ग्रहण पड़ें, तो शस्त्रकोप से राजा क्षय हों अर्थात् युद्ध हो । राजाओं में परस्पर माया अर्थात् छल-कपट होय ॥ १३ ॥

इति श्रीपण्डितसूर्यनारायणत्रिपाठिसंगृहीते
बृहज्ज्योतिःसारे संवत्सरप्रकरणं
प्रथमं समाप्तम् ॥ १ ॥

——:०:——

(२) मुहूर्तप्रकरण

वस्त्र-भूषण चूड़िका आदि धारण-मुहूर्त ।

पौष्णध्रुवाश्विकरपञ्चकवासवेज्या-
दित्ये प्रवालरदशङ्खसुवर्णवस्त्रम् ।
धार्यं विरिक्तशनिचन्द्रकुजेऽह्नि रक्तं
भौमे ध्रुवादितियुगे सुभगा न दध्यात् ॥ १ ॥

रेवती, तीनों उत्तरा, रोहिणी, अश्विनी, हस्त, चित्रा, स्वाती, विशाखा, अनुराधा, धनिष्ठा, पुष्य और पुनर्वसु, इन नक्षत्रों में और रिक्ता को छोड़ अन्य तिथियों में और सोमवार, मंगल, शनैश्चर इन दिनों को छोड़ अन्य दिनों में, मूँगा का धारण करना, हाथी दाँत धारण करना, शंख धारण करना, सुवर्ण के आभूषण धारण करना और वस्त्र धारण करना उचित है। मंगल को लालवस्त्र धारण करना उचित है। तीनों उत्तरा, पुनर्वसु और पुष्य इन नक्षत्रों में सधवा स्त्री मूँगा इत्यादि को धारण न करे ॥ १ ॥

चूड़ा-चक्रज्ञान ।

यावद्भास्करभुक्तिभानि दिवसे धिष्ण्यानि संख्या ततः
३ ५ ३ ४ ७ २ १ २ १
वह्निर्भूतगुणाब्धिसप्तनयनं पृथ्वीकरेन्दुः क्रमात् ।
सूर्यारौ कविसौम्यराहुरविजा जीवः शशी केतवः
क्रूरेऽसच्च शुभे शुभं च कथितं चक्रे च चूडाह्वये ॥ १ ॥

जिस नक्षत्र के सूर्य हों वहाँ से दिन के नक्षत्र तक गिने। प्रथम तीन नक्षत्र सूर्य के हैं, वे अशुभ हैं। फिर पाँच मंगल के हैं, वे भी अशुभ हैं। फिर तीन नक्षत्र शुक्र के हैं, वे शुभ हैं। फिर चार नक्षत्र बुध के हैं, वे भी शुभ हैं। फिर सात्त नक्षत्र राहु के हैं, वे अशुभ हैं। फिर दो नक्षत्र शनैश्चर के हैं, वे अशुभ

हैं। फिर एक नक्षत्र बृहस्पति का है, वह शुभ है। फिर दो नक्षत्र चन्द्रमा के हैं, वे भी शुभ हैं। फिर एक नक्षत्र केतु का है, उसे अशुभ जानिए। इसी क्रम से चूड़ा-चक्र जानना चाहिए ॥ १ ॥

सूर्य के नक्षत्र से चूड़ा-चक्र।

सू.	मं.	शु.	बु.	रा.	श.	बृ.	चं.	के.	ग्रह
३	५	३	४	७	२	१	२	१	नक्षत्र
अशुभ	अशुभ	शुभ	शुभ	अशुभ	अशुभ	शुभ	शुभ	अशुभ	फल

बिना मुहूर्त वस्त्र-धारण।

राज्ञा प्रीत्याऽर्पितं वस्त्रं विवाहे चोत्सवादिषु।
तथा विप्राज्ञया धार्यं निन्द्ये धिष्ण्येऽपि वासरे ॥ १ ॥

जिस वस्त्र को राजा प्रीति से अर्पण करे उस वस्त्र को विवाह और उत्सवादि में धारण करना चाहिए तथा ब्राह्मणं की आज्ञा से निन्दित नक्षत्र तथा निन्द्य वारादि के होने पर भी नया वस्त्र धारण करना चाहिए ॥ १ ॥

नील, कृष्ण-वस्त्र-धारण-मुहूर्त।

पुनर्वसुधनिष्ठाख्येऽश्विभे हस्ताचतुष्टये।
पूर्वोत्तरे शनौ सूर्ये नीलकृष्णाम्बरं शुभम् ॥ १ ॥

पुनर्वसु, धनिष्ठा, अश्विनी, हस्त, चित्रा, स्वाती, विशाखा, तीनों पूर्वा, तीनों उत्तरा इन नक्षत्रों में तथा शनिवार, रविवार इन दिनों में नील व स्याह वस्त्र धारण करना शुभ है ॥ १ ॥

ऊनी वस्त्र-धारण-मुहूर्त।

नीलवस्त्रोदिते धिष्ण्ये रेवतीपुष्ययोरपि।
शुक्रे शनैश्चरेऽर्के च धारयेद्रोमजाम्बरम् ॥ १ ॥

नीलवस्त्र में जो नक्षत्र कहे हैं उनमें रेवती और पुष्य नक्षत्रों में, तथा शुक्रवार, शनिवार और रविवार को ऊनी वस्त्र धारण करना उचित है ॥ १ ॥

रेशमी-वस्त्र-धारण-मुहूर्त ।

जीवेऽर्के च बुधे शुक्रे वस्त्रोक्तर्क्षे श्रवान्विते ।
स्थिरेऽङ्गे सद्ग्रहैर्युक्ते पट्टकूलस्य धारणम् ॥ १ ॥

बृहस्पतिवार, रविवार, बुधवार, शुक्रवार तथा वस्त्रोक्त नक्षत्र, श्रवण नक्षत्र तथा शुभ ग्रहयुक्त स्थिर लग्न, इनमें रेशमी वस्त्र धारण करना शुभ हैं ॥ १ ॥

वस्त्र-धारण-नक्षत्र-फल ।

वस्त्रप्राप्तिरथाश्विन्यां भरण्यां तद्विनाशनम् ।
कृत्तिकाग्निभयं कुर्याद्रोहिण्यां सर्वसंपदः ॥ १ ॥
मृगे मूषकभीतिः स्यादार्द्रायां निधनं भवेत् ।
पुनर्वसौ तथा पुष्ये धनधर्ममहोत्सवः ॥ २ ॥
श्लेषाभे तु भवेच्छोको मघायां मरणं ध्रुवम् ।
राज्ञो भयं तु पूफायामुफायां तु धनागमः ॥ ३ ॥
कर्मसिद्धिस्तु हस्तर्क्षे चित्रायामिष्टसम्पदः ।
मिष्टभोजनदा स्वाती विशाखाऽऽनन्ददायिनी ॥ ४ ॥
मित्राप्तिरनुराधायां ज्येष्ठायां वाससां हृतिः ।
जलप्लुतिश्च मूलर्क्षे पूर्वाषाढाऽतिरोगदा ॥ ५ ॥
मिष्टान्नदोत्तराषाढः श्रवणो नयनार्तिकृत् ।
धान्यागमो धनिष्ठायां विषभीतिः शताभिधे ॥ ६ ॥
पूर्वाभाद्रे जलाद्भीतिरुत्तरायां धनागमः ।
रत्नावाप्तिस्तु रेवत्यां भवेद्वस्त्रस्य धारणात् ॥ ७ ॥

अश्विनी नक्षत्र में जो वस्त्र धारण करे तो वस्त्रप्राप्ति हो । भरणी में धारण करे तो उसका विनाश हो । कृत्तिका में अग्निभय हो और रोहिणी में सर्व सम्पदा हो ॥ १ ॥ मृगशिरा में मूषक का भय हो, आर्द्रा में मृत्यु हो, पुनर्वसु और पुष्य में धन, धर्म तथा महोत्सव हो ॥ २ ॥ आश्लेषा में शोक हो, मघा में मरण हो, पूर्वाफाल्गुनी में राजभय हो, उत्तराफाल्गुनी में धनागम हो ॥३॥ हस्त में कर्मसिद्धि हो, चित्रा में श्रेष्ठ सम्पदा हो, स्वाती में श्रेष्ठ भोजन मिले और विशाखा में वस्त्र धारण करने से आनन्द-प्राप्ति हो ॥ ४ ॥ अनुराधा में मित्र-प्राप्ति हो, ज्येष्ठा में वस्त्र चोरी जाय, मूल में वस्त्र धारण करे तो जल में डूब जावे । पूर्वाषाढ़ में महारोग हो ॥५॥ उत्तराषाढ़ में मिष्ठान्नप्राप्ति हो, श्रवण में वस्त्र धारण करने से नेत्ररोग हो, धनिष्ठा में धान्यागम हो, शतभिष में विष का भय हो ॥६॥ पूर्वाभाद्रपद में जल से भय हो, उत्तराभाद्रपद में धनागम हो और रेवती में वस्त्रधारण करने से रत्नप्राप्ति होवे ॥ ७ ॥

स्त्रियों के वस्त्र, आभूषण आदि धारण-मुहूर्त ।

अश्विन्यां च धनिष्ठायां रेवत्यां करपञ्चके ।
सुवर्णरत्नदन्तादिवस्त्राणां धारणं स्त्रियाः ॥ १ ॥

अश्विनी, धनिष्ठा, रेवती, हस्त, चित्रा, स्वाती, विशाखा और अनुराधा नक्षत्रों में स्त्री को सुवर्ण, रत्न, हाथीदाँत आदि तथा वस्त्र धारण करना शुभ है ॥ १ ॥

वस्त्रों के धुलाने का मुहूर्त ।

पुनर्वसुद्वयेऽश्विन्यां धनिष्ठाहस्तपञ्चके ।
हित्वार्कार्किबुधान् रिक्तां षष्ठीं श्राद्धदिनं तथा ॥ १ ॥
व्रतं पर्व च वस्त्राणि क्षालयेद्रजकादिना ॥ २ ॥

पुनर्वसु, पुष्य, अश्विनी, धनिष्ठा, हस्त, चित्रा, स्वाती, विशाखा और अनुराधा इन नक्षत्रों में धोबी आदि से वस्त्र का धुलाना शुभ है। तथा रविवार, शनिवार, बुधवार व रिक्तातिथि व छठ तथा श्राद्ध का दिन, व्रत का दिन और पूर्वोक्त पर्व में वस्त्रों का धुलाना वर्जित है ॥ १—२ ॥

तंबू आदि खड़ा करने का मुहूर्त।

कुर्याद्वस्त्रोदिते धिष्ण्ये तूलिकामुपधानकम्।
वितानाद्यं च बध्नीयादूर्ध्वमूर्ध्वमुखोडुषु ॥ १ ॥

जो नक्षत्र वस्त्र में कहे हैं उनमें तोशक, तकिया आदि बनाना शुभ है तथा ऊर्ध्वमुख नक्षत्र में तम्बू इत्यादि खड़ा करना शुभ है ॥ १ ॥

जूता आदि पहनने का मुहूर्त।

चित्रा पूर्वानुराधा च ज्येष्ठाश्लेषामघामृगे।
विशाखाकृत्तिकामूले रेवत्यां ज्ञार्किसूर्यजे ॥ १ ॥
उपानहपरिधानं च चर्मकर्मणि शस्यते ॥ २ ॥

चित्रा, पूर्वा, अनुराधा, ज्येष्ठा, श्लेषा, मघा, मृगशिरा, विशाखा, कृत्तिका, मूल, रेवती तथा बुधवार, रविवार, शनिवांर इनमें जूता पहिनना तथा सब चर्मकृत्य शुभ हैं ॥ १-२ ॥

जेवर बनवाने का मुहूर्त।

त्रिपुष्कराभिधे योगे त्र्युत्तरे रेवतीद्वये।
श्रुतित्रये मृगे पुष्ये पुनर्वस्वनुराधयोः ॥
हस्तत्रयेऽथ रोहिण्यां भूषा कार्या शुभेऽहनि ॥१॥

त्रिपुष्कर योग, तीनों उत्तरा, रेवती, अश्विनी, श्रवण, धनिष्ठा, शतभिष, मृगशिरा, पुष्य, पुनर्वसु, अनुराधा, हस्त,

चित्रा, स्वाती और रोहिणी इन नक्षत्रों तथा शुभ दिनों में आभूषण अर्थात् जेवर बनवाना शुभ है ॥ १ ॥

द्विपुष्कर और त्रिपुष्कर-योग ।

भद्रातिथौ रविजभूतनयार्कवारे
द्वीशार्यमाजचरणादितिवह्निवैश्वे ।
त्रैपुष्करो भवति मृत्युविनाशवृद्धौ
त्रैगुण्यदो द्विगुणकृद्वसुत्वष्टचान्द्रे ॥ १ ॥

शनिवार, मंगलवार और रविवार इन दिनों में यदि द्वितीया, सप्तमी और द्वादशी ये तिथि हों और विशाखा, उत्तराफाल्गुनी, पूर्वभाद्रपद, पुनर्वसु, कृत्तिका, उत्तराषाढ़ ये नक्षत्र हों तो त्रिपुष्कर नामक योग होता है । उस त्रिपुष्कर योग में यदि किसी के घर में कोई मरे, तो तीन प्राणी मरें और यदि कोई वस्तु खो जावे, तो तीन वस्तु खो जावें तथा किसी वस्तु का लाभ हो तो तीन वस्तुओं का लाभ होवे । यदि शनिवार, मंगलवार, रविवार, इन्हीं दिनों में द्वितीया, सप्तमी, द्वादशी ये तिथि हों और धनिष्ठा, चित्रा, मृगशिरा ये नक्षत्र हों तो द्विपुष्करनामक योग होता है । इसमें यदि कोई मरे, तो उस घर में दो प्राणी मरें, यदि कोई वस्तु खो जावे तो दो वस्तु खोवें और कुछ लाभ हो तो द्विगुणित लाभ होवे ॥ १ ॥

गजाङ्कुशमुहूर्त ।

शुभवारे शुभे लग्ने शुभांशे शोभने तिथौ ।
अङ्कुशाः करिणां योज्याः शनेर्लग्ने शनेर्दिने ॥ १ ॥

शुभवार, शुभग्रहों के लग्न, शुभग्रहों के नवांश और शुभ तिथियों में हाथी को अंकुश से हाँकने का मुहूर्त शुभ है । तथा शनैश्चर का लग्न अर्थात् मकर, कुम्भ लग्न हो और शनैश्चर का दिन हो तो भी पूर्वोक्त कार्य शुभ हैं ॥ १ ॥

रस-सेवन-मुहूर्त ।

हस्तत्रयेऽश्विनीपुष्येऽनुराधाऽन्त्ये श्रुतित्रये ।
पुनर्भे मृगशीर्षेऽर्के भौमेज्ये रसभक्षणम् ॥ १ ॥

हस्त, चित्रा, स्वाती, अश्विनी, पुष्य, अनुराधा, रेवती, श्रवण, धनिष्ठा, शतभिष, पुनर्वसु, मृगशिरा इन नक्षत्रों में तथा रविवार, मंगलवार, बृहस्पतिवार इन वारों में रस खाना शुभ है ॥ १ ॥

मल्लक्रीडा-मुहूर्त ।

ज्येष्ठार्द्राभरणीपूर्वामूलाश्लेषामघाभिधे ।
जयापूर्णासु सद्वारे सार्के शीर्षोदयेऽङ्गके ॥ १ ॥
सत्खेटैः केन्द्रगैः सार्कैर्मल्लक्रीडा शुभावहा ॥ २ ॥

ज्येष्ठा, आर्द्रा, भरणी, तीनों पूर्वा, मूल, आश्लेषा, मघा ये नक्षत्र मल्लविद्या में शुभ हैं। जया और पूर्णा संज्ञक तिथियाँ शुभ हैं। रविवार समेत शुभ दिन शुभ हैं। यदि शीर्षोदय लग्न हों अर्थात् मिथुन, कन्या, तुला, वृश्चिक और कुम्भ लग्न हों और सूर्य-सहित शुभग्रह केन्द्र में हों, तब भी शुभ है ॥ १-२ ॥

लोह-दाह-मुहूर्त ।

शतचित्राश्विनीमूले विशाखाकृत्तिकाइभे ।
ज्येष्ठाश्लेषाकुजेऽर्केऽङ्गे क्रूरलौहाग्निभेषजम् ॥ १ ॥

शतभिष, चित्रा, अश्विनी, मूल, विशाखा, कृत्तिका, हस्त, ज्येष्ठा, आश्लेषा इन नक्षत्रों में लोहदाह शुभ है। मंगल और सूर्य की राशि का लग्न अर्थात् मेष, वृश्चिक और सिंह शुभ हैं ॥१॥

लवण-मुहूर्त ।

लवणारम्भकृत्यं तु भरणीरोहिणीश्रवे ।
शनिवारे दिवा श्रेष्ठं जन्मराशेः शनेर्बले ॥ १ ॥

भरणी, रोहिणी, श्रवण इन नक्षत्रों में नमक बनाना शुभ है तथा शनिवार शुभ है और दिन में शुभ है अर्थात् रात्रि को त्याज्य है । जन्मराशि से गोचरोक्त शनैश्चर को बली होना चाहिए ॥१॥

नट-विद्या-मुहूर्त ।

चित्रार्द्रारोहिणी पुष्ये त्र्युत्तरे श्रवणत्रये ।
ससूर्यसौम्यवारे च नटविद्या प्रशस्यते ॥ १ ॥

चित्रा, आर्द्रा, रोहिणी, पुष्य, तीनों उत्तरा, श्रवण, धनिष्ठा, शतभिष ये नक्षत्र नट-विद्या में शुभ हैं तथा रविवार सहित सब शुभ दिन ग्राह्य हैं ॥ १ ॥

कुम्भकार-कृत्य-मुहूर्त ।

पुनर्वसुद्वये हस्तत्रयेऽन्त्ये रोहिणीमृगे ।
अनुराधाश्रवोज्येष्ठासमूर्यसौम्यवासरे ॥ १ ॥
तथा चरोदये प्रोक्ता कुम्भकारक्रिया बुधैः ॥ २ ॥

पुनर्वसु, पुष्य, हस्त, चित्रा, स्वाती, रेवती, रोहिणी, मृगशिरा, अनुराधा, श्रवण और ज्येष्ठा इन नक्षत्रों में कुम्हार का कृत्य शुभ है और रविवार व शुभ दिन तथा चरलग्न हो ॥ १-२ ॥

स्वर्णकार-कृत्य-मुहूर्त ।

श्रुतित्रयेऽश्विनीपुष्ये मृगे हस्तचतुष्टये ।
आदित्ये कृत्तिकायां च शुभे लग्ने शुभे तिथौ ॥ १ ॥
हेमकारक्रिया शस्ता हित्वा बुधशनैश्चरौ ॥ २ ॥

श्रवण, धनिष्ठा, शतभिष, अश्विनी, पुष्य, मृगशिरा, हस्त, चित्रा, स्वाती, विशाखा, पुनर्वसु, कृत्तिका इन नक्षत्रों में सोनार का कर्म शुभ है । शुभग्रहों का लग्न हो और शुभ तिथि हो तथा बुध और शनिवार वर्जित हैं ॥ १-२ ॥

ताम्बूल-भक्षण-मुहूर्त।

अनुराधात्रये हस्तत्रितये रेवतीद्वये।
उत्तरासु च रोहिण्यां श्रवणद्वितये मृगे ॥ १ ॥
पुनर्वसौ तथा पुष्ये शनिभौमान्यवासरे।
ताम्बूलभक्षणं सार्द्धद्विमासेऽन्नाशनेऽथवा ॥ २ ॥

अनुराधा, ज्येष्ठा, मूल, हस्त, चित्रा, स्वाती, रेवती, अश्विनी, उत्तरा, रोहिणी, श्रवण, धनिष्ठा, मृगशिरा, पुनर्वसु और पुष्य इन नक्षत्रों में ताम्बूलभक्षण शुभ है। शनिवार और मङ्गलवार वर्जित है तथा जन्म से अढ़ाई महीने में पान खाना शुभ है तथा अन्नप्राशन का दिन शुभ है ॥ १-२ ॥

वार-विषघटी-विचार।

नखायमार्कदिक्सप्तबाणतत्त्वमिताः क्रमात्।
आभ्यो नाडीचतुष्कं च विषं तद्रविवासरात् ॥ १ ॥

(नख = १०, यम = २, अर्क = १२, दिक् = १०, सप्त = ७, बाण = ५, तत्त्व = २५)

रविवार के दिन बीस घड़ी के उपरान्त चार घड़ी तक विषघड़ी होती हैं। सोमवार के दिन दो घड़ी के उपरान्त, मङ्गलवार को बारह घड़ी के उपरान्त, बुधवार को दस घड़ी के उपरान्त, बृहस्पतिवार को सात घड़ी के उपरान्त, शुक्रवार को पाँच घड़ी के उपरान्त, शनिवार को पचीस घड़ी के उपरान्त चार घड़ी तक विषघटी जानिए ॥ १ ॥

वार-विषघटी चक्र।

सू.	च.	म.	बु.	बृ.	शु.	श.	दिन
२०	२	१२	०	७	५	२५	विषघटी उ०
४	४	४	४	४	४	४	विषघटी यावत्

तिथि-विषघटी-विचार ।

तिथि बाणाष्टसप्ताङ्गपञ्चवेदाष्टभूधराः ।
दिग्वह्न्यर्का मनुः शैलो वसवो घटितः क्रमात् ॥१॥
आभ्यो घटीचतुष्कं च विषं प्रतिपदादितः ॥ २ ॥

प्रतिपदा से पूर्णमासी तथा अमावसपर्यन्त इन घड़ियों के उपरान्त चार घड़ी तक विषघटी होती हैं । इनको चक्र के क्रम से समझ लेना चाहिए ॥ १-२ ॥

तिथि-विषघटी-चक्र ।

तिथि	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	१५/३०
विषघटी उपरान्त	१५	५	८	७	६	५	४	८	७	१०	३	१२	१४	७	८
विषघटी यावत्	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४

अभिजित्-मुहूर्त ।

अङ्गुल्या विंशतिः सूर्ये शङ्कुः सोमे च षोडश ।
कुजे पञ्चदशाङ्गुल्यो बुधवारे चतुर्दश ॥ १ ॥
त्रयोदश गुरोर्वारे द्वादशार्कजशुक्रयोः ।
शङ्कुमूले यदा छाया मध्याह्ने च प्रजायते ॥ २ ॥
तत्राऽभिजित्तदाख्यातो घटिकैका स्मृता बुधैः ।
अत्र कार्याणि सर्वाणि सिद्धिं यान्ति कृतानि च ॥३॥

रविवार के दिन बीस अंगुल का शंकु, सोमवार को सोलह अंगुल का, मङ्गलवार को पन्द्रह अंगुल का, बुधवार को चौदह अंगुल का, बृहस्पतिवार को तेरह अंगुल का, शुक्रवार को बारह अंगुल का और शनिवार को बारह अंगुल का शंकु खड़ा करे । दोपहर को

जब छाया शंकुमूल के बराबर हो तब से एक घड़ी तक अभिजित्संज्ञक मुहूर्त होता है। उसमें कार्य आरम्भ करने से सब कार्य सिद्ध होते हैं ॥ १-३ ॥

दिन में पञ्चदश-मुहूर्त-विचार।

गिरिशभुजगमित्राः पित्र्यवस्वम्बुविश्वे-
ऽभिजिदथ च विधातापीन्द्रइन्द्रानलौ च।
निर्ऋतिरुदकनाथोऽप्यर्यमाथो भगश्च
क्रमश इह मुहूर्ता वासरे बाणचन्द्राः ॥ १ ॥

गिरिश १ भुजग २ मित्र ३ पित्र्य ४ वसु ५ अम्बु ६ विश्वे ७ अभिजित् ८ विधाता ९ इन्द्र १० इन्द्रानल ११ निर्ऋति १२ उदकनाथ १३ अर्यमा १४ भग १५ ये पन्द्रह मुहूर्त दिन भर में होते हैं। सूर्योदय से सूर्यास्तपर्यन्त दिनमान के भोग से जानना ॥ १ ॥

रात्रि में पञ्चदश-मुहूर्त-विचार।

शिवोजपादादष्टौ स्युर्भेशा अदितिजीवकौ।
विष्ण्वर्कत्वाष्ट्रमरुतो मुहूर्ता निशि कीर्तिताः ॥ १ ॥

शिव १ पूर्वाभाद्रपद २ उत्तराभाद्रपद ३ रेवती ४ अश्विनी ५ भरणी ६ कृत्तिका ७ रोहिणी ८ मृगशिरा ९ अदिति १० जीव ११ विष्णु १२ अर्क १३ त्वाष्ट्र १४ मरुत् १५ ये पन्द्रह मुहूर्त रात्रि भर में होते हैं ॥ १ ॥

कार्यकृत्य-मुहूर्त।

नक्षत्रनाथतुल्येऽस्मिन् कार्यं कुर्यात्स्वभोदितम्।
दिनमध्येऽभिजित्संज्ञे दोषसंज्ञेषु सत्स्वपि ॥ १ ॥
सर्वं कुर्याच्छुभं कर्म याम्यदिग्गमनं विना ॥ २ ॥

नक्षत्रस्वामी के तुल्य कार्य करना चाहिए, अर्थात् जब कार्योक्त नक्षत्र न मिले, तब इन मुहूर्तों में कार्य करना चाहिए।

उदाहरण ।

अनुराधा जिस कार्य में उक्त है उस दिन में तीसरा मुहूर्त मित्रसंज्ञक होता है । वह अनुराधा का स्वामी है, उसी में कार्यारम्भ करना चाहिए । इसी क्रम से सब जान लेना । जो दिन-मध्य में अभिजित् मुहूर्त होता है, उसमें कार्य करने से सब दोषों के होते हुए भी शुभ होता है अर्थात् सब शुभ कर्म करने उचित हैं; परन्तु दक्षिण दिशा की यात्रा वर्जित है ॥ १-२ ॥

वार-दुर्मुहूर्त-विचार ।

रवावर्यमा ब्रह्मरक्षश्च सोमे
कुजे वह्निपित्रे बुधे चाभिजित्स्यात् ।
गुरौ तोयरक्षो भृगौ ब्राह्मयपित्रौ
शनावीशसार्पो मुहूर्ता निषिद्धाः ॥ १ ॥

रविवार के दिन अर्यमा मुहूर्त वर्जित है । सोमवार के दिन ब्रह्म और रक्ष वर्जित है । मङ्गलवार को वह्नि व पितृ वर्जित है । बुधवार को अभिजित् वर्जित है। गुरुवार को तोय और रक्ष वर्जित है । शुक्रवार को ब्राह्मय और पितृ वर्जित है । शनिवार को ईश और आश्लेषा वर्जित है ॥ १ ॥

रविवारादि दुर्मुहूर्त-चक्र ।

सू.	चं.	मं.	बु.	बृ.	शु.	श.	वार
अर्यमा १४	ब्रह्म ९	वह्नि २२	अभिजित् ८	तोय ६	ब्राह्मय ९	ईश १	वर्जित मुहूर्त
००	राक्षस १२	पितृ ४	००	रक्ष १२	पितृ ४	आश्लेषा २	

राशियों के स्वामी।

मेषवृश्चिकयोर्भौमः शुक्रो वृषतुलाधिपः।
बुधः कन्यामिथुनयोः कर्कस्वामी च चन्द्रमाः ॥ १ ॥
धनुर्मीनाधिपो जीवः शनिर्मकरकुम्भयोः।
सिंहस्याधिपतिः सूर्यः कथितो गणकोत्तमैः ॥ २ ॥
कन्याया राहुराख्यातो केतुर्वै मिथुनस्य च ॥ ३ ॥

मेष और वृश्चिक का स्वामी मङ्गल, वृष और तुला का स्वामी शुक्र, कन्या और मिथुन का स्वामी बुध तथा कर्क का स्वामी चन्द्रमा है॥१॥ धनु और मीन का स्वामी बृहस्पति, मकर और कुम्भ का स्वामी शनैश्चर तथा सिंह का स्वामी सूर्य है। ऐसा पण्डित लोग कहते हैं। कन्या का स्वामी राहु और मिथुन का स्वामी केतु है॥ २-३॥

राशीश-चक्र।

सू.	चं.	मं.	बु.	बृ.	शु.	श.	रा.	के.	स्वामी
सिंह	कर्क	मेष वृश्चिक	मिथुन कन्या	धनु मीन	वष तुला	मकर कुंभ	कन्या	मिथुन	राशि

उत्पात योग आदि।

द्वीशात्तोयाद्वासवात्पौष्णभाच्च
ब्राह्मचात्पुष्यादर्यमर्क्षाच्चतुर्भैः।
स्यादुत्पातो मृत्युकाणौ च सिद्धि-
र्वारेऽर्काद्ये तत्फलं नामतुल्यम् ॥ १ ॥

रविवार आदि सात दिनों में विशाखा, पूर्वाषाढ़, धनिष्ठा, रेवती, रोहिणी, पुष्य, उत्तराफाल्गुनी इन नक्षत्रों से लेकर क्रम से चार नक्षत्रों में उत्पात, मृत्यु, काण और सिद्धि ये चार योग होते हैं, अर्थात् रविवार को विशाखा हो तो उत्पात, अनुराधा हो

तो मृत्यु, ज्येष्ठा हो तो काण, और मूल हो तो सिद्धियोग होता है। सोमवार को पूर्वाषाढ़ हो तो उत्पात, उत्तराषाढ़ हो तो मृत्यु, अभिजित् हो तो काण और श्रवण हो तो सिद्धियोग होता है। मंगल को धनिष्ठा हो तो उत्पात, शतभिष हो तो मृत्यु, पूर्वभाद्रपद हो तो काण और उत्तराभाद्रपद हो तो सिद्धियोग होता है। बुध को रेवती हो तो उत्पात, अश्विनी हो तो मृत्यु, भरणी हो तो काल और कृत्तिका हो तो सिद्धियोग होता है। बृहस्पति को रोहिणी हो तो उत्पात, मृगशिरा हो तो मृत्यु, आर्द्रा हो तो काण और पुनर्वसु हो तो सिद्धियोग होता है। शुक्रवार को पुष्य हो तो उत्पात, आश्लेषा हो तो मृत्यु, मघा हो तो काण और पूर्वाफाल्गुनी हो तो सिद्धियोग होता है। शनिवार को उत्तराफाल्गुनी हो तो उत्पात, हस्त हो तो मृत्यु, चित्रा हो तो काण और स्वाती हो तो सिद्धियोग होता है। इन चारों योगों का फल भी नाम के समान ही होता है ॥१॥

उत्पात आदि चार योगों का चक्र ।

सू.	चं.	मं.	बु.	बृ.	शु.	श.	वार
वि.	पू. षा.	ध.	रे.	रो.	पुष्य.	उ. फा.	उत्पातयोग
अनु.	उ.षा.	श.	अ.	मृ.	श्ले.	ह.	मृत्युयोग
ज्ये.	अभि.	पू.भा.	भ.	आ.	म.	चि.	काणयोग
मू.	श्र.	उ.भा.	कृ.	पु.	पू.फा.	स्वा.	सिद्धियोग

कुलिक आदि योग ।

कुलिकः कालवेला च यमघण्टश्च कण्टकः ।
वाराद्द्विघ्ने क्रमान्मन्दे बुधे जीवे कुजेक्षणः ॥ १ ॥

कुलिक, कालबेला, यमघण्ट, कण्टक ये चार प्रकार के योग हैं। वर्तमान वार से शनिवार तक गिने, जो अङ्क हो उसे दूना करे।

द्विगुणित करने से जो अङ्क हो, उसी मुहूर्त में कुलिकयोग जानिए। कालवेला का विचार करे तो वर्तमान वार से बुधवार तक गिने। उसे दूना करे जो अङ्क हो उसी मुहूर्त में कालवेला-योग होता है। यमघण्टयोग का विचार करना हो तब वर्तमान वार से बृहस्पतिवार तक गिने, उसे दूना करे और जो अङ्क हो उसी मुहूर्त में यमघण्ट योग जानिए। कण्टकयोग विचारना हो तो वर्तमान वार से मङ्गलवार तक गिने और उसे दूना करे जो अङ्क हो उसी मुहूर्त में कण्टकयोग जानिए ।। १ ।।

उदाहरण।

रविवार के दिन कुलिक विचारना है। तो रविवार से शनिवार तक गिना तो सात हुए, इसको दूना किया तो चौदह हुए, इसी चौदहवें मुहूर्त में कुलिकयोग होगा, अर्थात् तेरह मुहूर्त के उपरान्त चौदह तक कुलिक जानना चाहिए। मुहूर्त दिन के सोलहवें हिस्से को कहते हैं।

क्रकच-योग-विचार।

तिथ्यङ्केन समायुक्तो वाराङ्को यदि जायते।
त्रयोदशाङ्कः क्रकचो योगोऽयं निन्दितः शुभे ।। १ ।।

तिथि और वार के अङ्कों को मिलाकर तेरह हो तो क्रकच-योग होता है। यह योग शुभ कार्य में निन्दित है ।। १ ।।

रवियोग-विचार।

४६ ६ १० १३ २०

सूर्यभाद्वेदगोतर्कदिग्विश्वनखसंमिते।
चन्द्रर्क्षे रवियोगाः स्युर्दोषसङ्घविनाशकाः ।। १ ।।

सूर्य के नक्षत्र से दिन के नक्षत्र तक विचारे। चार, नव, छः, दश, तेरह. बीस ये अङ्क हों तो रवियोग जानिए। इन रवियोगों से दोषों के समूह का नाश होता है ।। १ ।।

सूर्य के नक्षत्र से रवियोग चक्र ।

४	९	६	१०	१३	२०	नक्षत्र संख्या
रवियोग	रवियोग	रवियोग	रवियोग	रवियोग	रवियोग	संज्ञा

स्त्रियों द्वारा कज्जल आदि धारण का मुहूर्त ।

चित्राचतुष्टयेऽश्विन्यां धनिष्ठारेवतीमृगे ।
शुक्रेऽर्केऽह्नि शनौ स्त्रीणां दर्पणाञ्जनयोर्धृतिः ॥ १ ॥

चित्रा, स्वाती, विशाखा, अनुराधा, अश्विनी, धनिष्ठा, रेवती, मृगशिरा ये नक्षत्र और शुक्रवार, रविवार, शनिवार इन वारों में स्त्रियों को अञ्जन अर्थात् सुरमा लगाना और दर्पण देखना शुभ है ॥ १ ॥

सुगन्धित वस्तु-धारण-मुहूर्त ।

श्रुतित्रयेऽश्विनीपुष्ये पूर्वाषाढानुराधयोः ।
हस्तत्रये पुनर्भेऽन्त्ये मृगभे च शुभेऽहनि ॥ १ ॥
चन्दनागुरुकस्तूरीपुष्पाणां धारणं शुभम् ॥ २ ॥

श्रवण, धनिष्ठा, शतभिष, अश्विनी, पुष्य, पूर्वाषाढ़, अनुराधा, हस्त, चित्रा, स्वाती, पुनर्वसु, रेवती, मृगशिरा इन नक्षत्रों में और शुभ वारों में चन्दन, अगुरु, कस्तूरी, फूल आदि सुगन्धित वस्तुओं को धारण करना शुभ है ॥ १-२ ॥

मद्यारम्भ-मुहूर्त ।

रौद्रे पैत्र्ये वारुणे पौरुहूते
यास्ये सार्पे नैर्ऋते चैव धिष्ण्ये ।
पूर्वाख्येषु त्रिष्वपि श्रेष्ठ उक्तो
मद्यारम्भः कालविद्भिः पुराणैः ॥ १ ॥

आर्द्रा, मघा, शतभिष, ज्येष्ठा, भरणी, आश्लेषा, मूल, तीनों पूर्वा—इन नक्षत्रों में मदिरा बनाना शुभ है ॥१॥

वृक्षारोपण-मुहूर्त

शतद्वीशमूलान्त्यचित्रानुराधा-
मृगत्र्युत्तराधातृहस्ताश्विपुष्ये ।
भवेद्वृक्षवल्ल्यादिरोपः प्रशस्तः
सिते शीतगौ सोमपुत्रे सुरेज्ये ॥ १ ॥
वैशाखे श्रावणे मार्गे कार्तिके फाल्गुने तथा ।
एते साधारणा मासा वृक्षस्यारोपणे शुभाः ॥ २ ॥

शतभिष, विशाखा, मूल, रेवती, चित्रा, अनुराधा, मृगशिरा, तीनों उत्तरा, रोहिणी, हस्त, अश्विनी और पुष्य इन नक्षत्रों में तथा शुक्रवार, चन्द्रवार, बुधवार और बृहस्पतिवार इन वारों में वृक्ष-लता आदि का लगाना शुभ है ॥ १ ॥ वैशाख, श्रावण, मार्गशीर्ष, कार्तिक, फाल्गुन ये मास वृक्ष लगाने में शुभ हैं ॥ २ ॥

वृक्ष-चक्र-विचार ।

सूर्यभाद्दिनभं यावद् वृक्षचक्रं विचारयेत् ।
त्रीणि मूले भवेद्रोगस्त्वचि त्रीणि धनागमः ॥ १ ॥
शाखायां वेदनाशः स्यात्पत्रे युग्मं दरिद्रता ।
शीर्षे त्रीणि शुभं प्रोक्तं पूर्वमेकं तु मृत्युदम् ॥ २ ॥
याम्ये पञ्च सुतो नाशः पश्चिमे द्वे धनप्रदे ।
उत्तरे वेदलाभः स्यात्तदुक्तं ब्रह्मयामले ॥ ३ ॥

सूर्य के नक्षत्र से दिन के नक्षत्र तक गिनकर तीन नक्षत्र वृक्ष की जड़ में स्थापित करे वे रोगप्रद हैं । तीन नक्षत्र त्वचा में रक्खे वे धनप्रद हैं ॥ १ ॥ इसी प्रकार शाखा में चार नक्षत्र

नाशप्रद, दो नक्षत्र पत्र में दरिद्रताप्रद, तीन शिर में शुभप्रद हैं। एक नक्षत्र पूर्व में मृत्युदायक, दक्षिण में पाँच नक्षत्र पुत्रनाशक और दो नक्षत्र पश्चिम में धनदाता हैं, तथा उत्तर में चार नक्षत्र लाभप्रद हैं । यह चक्र ब्रह्मयामल में कहा है ॥ २-३ ॥

सूर्य के नक्षत्र से वृक्ष-चक्र ।

मूल	त्वचा	शाखा	पत्र	शीर्ष	पूर्व	दक्षिण	पश्चिम	उत्तर	स्थान
३	३	४	२	३	१	५	२	४	नक्षत्र
रोग प्रद	धना-गम	नाश-प्रद	दरि-द्रता	शुभ-प्रद	मृत्यु-प्रद	पुत्र-नाश	धन-प्रद	लाभ-प्रद	फल

गौओं का क्रय-विक्रय-मुहूर्त ।

शक्रवासवकरेषु विशाखा पुष्यवारुणपुनर्वसुभेषु ।
अश्विपूषभयुतेषु विधेयो विक्रयः क्रयविधिः सुरभीणाम् १

ज्येष्ठा, धनिष्ठा, हस्त, विशाखा, पुष्य, शतभिष, पुनर्वसु, अश्विनी, रेवती इन नक्षत्रों में गौओं को मोल लेना और बेचना शुभ है ॥ १ ॥

राज-दर्शन-मुहूर्त ।

त्र्युत्तरे श्रवणद्वन्द्वे मृगे पुष्यानुराधयोः ।
रोहिण्यां रेवती युग्मे चित्राहस्ते शुभेऽहनि ॥ १ ॥
बलिन्यर्केऽर्कवारेऽपि राजदर्शनमीरितम् ॥ २ ॥

तीनों उत्तरा, श्रवण, धनिष्ठा, मृगशिरा, पुष्य, अनुराधा, रोहिणी, रेवती, अश्विनी, चित्रा और हस्त इन नक्षत्रों में और रविवार के सहित शुभ दिनों में राजा की मुलाकात करना शुभ है । परन्तु गोचर के अनुसार सूर्य बली होना चाहिए ॥ १-२ ॥

पशु-प्रवेश आदि का मुहूर्त ।

न रिक्ताष्टमीदर्शभौमेषु चित्रा
श्रुतित्र्युत्तरे रोहिणीषु प्रकामम् ।
पशूनां प्रवेशप्रयाणस्थितीश्च
प्रकुर्वन्ति धीराः कदाचित्कथंचित् ।। १ ।।

रिक्तातिथि, अष्टमी, अमावस और मङ्गल दिन पशु यात्रा आदि में वर्जित करे। तथा चित्रा, श्रवण, तीनों उत्तरा, रोहिणी इन नक्षत्रों में पशु-प्रवेश, पशु-यात्रा और पशु-स्थिति वर्जित करे ।।१।।

क्रय-विक्रय-मुहूर्त ।

पुष्यो भाद्रपदायुग्मं स्वाती च श्रवणोऽश्विनी ।
हस्तोत्तरा मृगो मैत्रं तथाऽऽश्लेषा च रेवती ।। १ ।।
ग्राह्याणि भानि चैतानि क्रयविक्रयणे बुधैः ।
चन्द्रभार्गवजीवाश्च वाराः शकुनमुत्तमम् ।। २ ।।

पुष्य, पूर्वाभाद्रपद, उत्तराभाद्रपद, स्वाती, श्रवण, अश्विनी, हस्त, उत्तरा, मृगशिरा, अनुराधा, आश्लेषा, रेवती इन नक्षत्रों में तथा चन्द्रवार, शुक्रवार तथा गुरुवार में क्रय-विक्रय-कार्य अर्थात् खरीदना और बेचना शुभ है, परन्तु उत्तम शकुन लेना चाहिए ।।१-२।।

दुकान और दर्जी के कार्य का मुहूर्त ।

स्याद्रोहिणीत्र्युत्तरहस्तपुष्ये
चित्रान्त्यमित्रे विपणिर्मृगाश्वे ।
पुनर्वसौ मित्रहये धनिष्ठा
चित्रासु सौम्येऽहनि कर्मसूच्याः ।। १ ।।

रोहिणी, तीनों उत्तरा, हस्त, पुष्य, चित्रा, रेवती, अनुराधा, मृगशिरा और अश्विनी इन नक्षत्रों तथा शुभ दिनों में

दुकान करना शुभ है । पुनर्वसु, अनुराधा, अश्विनी, धनिष्ठा, चित्रा इन नक्षत्रों में, शुभ दिनों में सूचीकर्म अर्थात् दर्जी का काम शुभ है ॥ १ ॥

औषधि-सेवन-मुहूर्त ।

अर्काश्विपुष्ये श्रवणत्रये च
मूलादितिस्वातिमृगे सपौष्णे ।
चित्रासु मित्रे च शुभेऽह्नि सार्के
भैषज्यकर्म प्रचरेद्विरिक्ते ॥ १ ॥

हस्त, अश्विनी, पुष्य, श्रवण, धनिष्ठा, शतभिष, मूल, पुनर्वसु, स्वाती, मृगशिरा, रेवती, चित्रा, अनुराधा, इन नक्षत्रों में और रविवार के सहित शुभ दिनों में भैषज्य-कर्म अर्थात् औषधि खाना शुभ है ॥ १ ॥

हाथी-घोड़े की सवारी का मुहूर्त ।

क्षिप्रान्त्यवस्विन्दुमरुज्जलेशा-
दित्येष्वरिक्तारदिने प्रशस्तम् ।
स्याद्वाजिकृत्यं त्वथ हस्तिकार्यं
कुर्यान्मृदुक्षिप्रचरेषु विद्वान् ॥ १ ॥

क्षिप्रसंज्ञक नक्षत्र तथा रेवती, धनिष्ठा, मृगशिरा, स्वाती, शतभिष और पुनर्वसु ये नक्षत्र घोड़े के कार्य में शुभ हैं अर्थात् सवारी इत्यादि में श्रेष्ठ हैं । रिक्तातिथि और मंगलवार वर्जित है । बुद्धिमान् लोग हाथी की सवारी आदि मृदुसंज्ञक, क्षिप्रसंज्ञक और चरसंज्ञक नक्षत्रों में करें ॥ १ ॥

अश्व-चक्र-विचार ।

अश्वाकारं लिखेच्चक्रं साभिजिद्भानि विन्यसेत् ।

स्कन्धे च सूर्यभात्पञ्च पृष्ठे च दश भानि च ॥ १ ॥
पुच्छे द्वे स्थापयेद्धीरश्चतुष्पादे चतुष्टयम् ।
उदरे विन्यसेत्पञ्च मुखे द्वे तुरगस्य च ॥ २ ॥
अर्थलाभो मुखे सम्यग् वाजी नश्यति चोदरे ।
चरणस्थे रणे भङ्गः पुच्छे पत्नी विनश्यति ॥ ३ ॥
अर्थसिद्धिर्भवेत्पृष्ठे स्कन्धे स्कन्धपतिर्भवेत् ।
अश्वाकारमिदं चक्रं विचार्यं गणकोत्तमैः ॥ ४ ॥

सूर्य के नक्षत्र से अश्वाकारचक्र लिखकर अभिजित्समेत चन्द्रमा के नक्षत्र तक स्थापित करे। प्रथम पाँच नक्षत्र स्कन्ध में, फिर दश नक्षत्र पीठ में, फिर दो नक्षत्र पुच्छ में, फिर चार नक्षत्र चारों चरणों में, फिर पाँच नक्षत्र पेट में और फिर दो नक्षत्र मुख में रक्खे ॥ १-२ ॥

अश्व चक्र-फल ।

मुख में पड़े तो अर्थलाभ हो, पेट में पड़े तो घोड़े का नाश करे, चरणों में पड़े तो रण में भङ्ग करे और पुच्छ में पड़े तो स्त्री का नाश करे, पीठ में पड़े तो अर्थसिद्धि करे और स्कन्ध में पड़े तो स्कन्धपति हो अर्थात् पालकी इत्यादि सवारी मिलें। यह उत्तम अश्वाकारचक्र ज्योतिषियों को अवश्य विचार लेना चाहिए ॥ ३-४ ॥

अश्व-चक्र ।

स्कन्ध	पृष्ठ	पुच्छ	पाद	उदर	मुख	अङ्ग
५	१०	२	४	५	२	नक्षत्र
स्कन्धपति	अर्थसिद्धि	पत्नी नाश	रण-भङ्ग	अश्व-नाश	अर्थलाभ	फल

गज-चक्र विचार ।

गजाकारं लिखेच्चक्रं जन्मभान्तं च सूर्यभात् ।
कर्णे शीर्षे रदे पुच्छे द्वयं सर्वत्र योजयेत् ॥ १ ॥
शुण्डायां तु द्वयं योज्यं वेदाः पृष्ठोदरे मुखे ।
षड् वै चतुर्षु पादेषु साभिजिद्विन्यसेत्क्रमात् ॥२॥
कर्णे चैव महालाभो मस्तके लाभ एव च ।
दन्ते चैव भवेल्लाभो पुच्छे हानिः प्रजायते ॥ ३ ॥
शुण्डायां तु शुभं ज्ञेयं पृष्ठे तु सुखसंपदा ।
उदरे रोगसंभूतिर्मुखे तु मध्यमं स्मृतम् ॥ ४ ॥
पादयोश्च भवेल्लाभो गजे चैवं विनिर्दिशेत् ॥५॥

सूर्य के नक्षत्र से जन्मनक्षत्र तक गजाकारचक्र लिखे । दो नक्षत्र गज के कर्ण में, दो मस्तक में, दो दन्त में और दो पुच्छ में रक्खे ॥ १ ॥ दो शुण्ड में, चार पृष्ठ में, चार पेट में, चार मुख में और छः नक्षत्र चरणों में रक्खे । इस गजाकार चक्र के विचार में अभिजित् नक्षत्र की भी गणना करनी चाहिए ॥ २ ॥

गज चक्र-फल ।

कर्ण में पड़े तो महालाभ हो, मस्तक में पड़े तो लाभ हो और दन्त में पड़े तो भी लाभ हो, तथा पुच्छ में पड़े तो हानि हो, शुण्ड में पड़े तो शुभप्रद है । पृष्ठ में पड़े तो सुख-संपदा हो, पेट में पड़े तो रोग करे, मुख में पड़े तो मध्यम है और चरणों में पड़े तो लाभ हो । इसी क्रम से गज-चक्र देखना चाहिए ॥ ३-५ ॥

गज-चक्र ।

कर्ण	मस्तक	दन्त	पुच्छ	शुण्ड	पृष्ठ	उदर	मुख	पाद	अङ्ग
२	२	२	२	२	४	४	४	६	नक्षत्र
महा-लाभ	लाभ	लाभ	हानि	शुभ	सुख-सम्पदा	रोग	मध्यम	लाभ	फल

सेवा-चक्र-विचार ।

नराकारं लिखेच्चक्रं सेवार्थे भृत्यसंग्रहे ।
शीर्षे त्रीण्यर्थलाभः स्यान्मुखे त्रीणि विनाशनम् ।। १ ।।
हृदि पञ्च धनं धान्यं पादे षट्कं दरिद्रता ।
पृष्ठे द्वे प्राणसंदेहो नाभौ वेदाः शुभावहाः ।। २ ।।
गुदे द्वे भयपीडा च दक्षहस्तैकमर्थदम् ।
एकं वामे नाशकरं भृत्यभात्स्वामिभान्तकम् ।। ३ ।।
प्रथमं सेव्यनक्षत्रं द्वितीयं सेवकस्य च ।
न सेवा सुस्थिरा तस्य यतः प्राणार्थनाशदा ।। ४ ।।

भृत्य जो नौकर है उसके नक्षत्र से स्वामी के नक्षत्र तक गिने। तीन नक्षत्र शिर में दे वह अर्थलाभप्रद हैं। मुख में तीन नक्षत्र दे वह विनाशकारक हैं। पाँच नक्षत्र हृदय में दे वह धन-धान्य के देनेवाले हैं। चरणों में छः नक्षत्र दे वह दरिद्रता के देनेवाले हैं। दो नक्षत्र पीठ में दे वह प्राण संदेहकारक हैं। नाभि में चार नक्षत्र दे वह शुभकारी हैं। दो नक्षत्र गुदा में दे वह भयपीड़ाकारक हैं। एक नक्षत्र दाहिने हाथ में दे वह अर्थदाता है। एक बाएँ हाथ में दे वह नाशकारक है ।। १-३ ।। प्रथम

नक्षत्र स्वामी का हो उससे दूसरा नक्षत्र सेवक का हो तो सेवा स्थिर न रहे, प्राण और धन का नाश करे ॥ ४ ॥

सेवा-चक्र ।

शिर	मुख	हृदय	चरण	पीठ	नाभि	गुदा	दक्षिणकर	वामकर	अङ्ग
३	३	५	६	२	४	२	१	१	नक्षत्र
अर्थ-लाभ	विनाश	धन-धान्य	दारि-द्रय	प्राण-संदेह	शुभ	भयपीड़ा कारक	अर्थदाता	नाश कारक	फल

सेवा-मुहूर्त ।

हस्तद्वयेऽनुराधायां रेवतीयुगले मृगे ।
पुष्ये बुधे गुरौ शुक्रे सत्तिथौ रविवासरे ॥ १ ॥
योनिराशिपयोर्मैत्र्यां स्वामीसेव्योऽनुजीविभिः ॥ २ ॥

हस्त, चित्रा, अनुराधा, रेवती, अश्विनी, मृगशिरा, पुष्य इन नक्षत्रों में और बुधवार, गुरुवार, शुक्रवार, रविवार और शुभ तिथियों में सेवा-कर्म शुभ है । तथा योनि व राशीश से मित्रता हो तो सेवकों को स्वामी की सेवा करनी चाहिए ॥ १-२ ॥

छत्र-धारण-मुहूर्त ।

त्र्युत्तरारोहिणीरौद्रपुष्याश्च शततारका ।
धनिष्ठा श्रवणश्चैव शुभानि छत्रधारणे ॥ १ ॥

तीनों उत्तरा, रोहिणी, आर्द्रा, पुष्य, शतभिष, धनिष्ठा, श्रवण ये नक्षत्र छत्र (छतुरी) धारण करने में शुभ हैं ॥ १ ॥

छत्र-चक्र-विचार ।

मूले त्रीणि सप्त दण्डे कण्ठे चैव तु पञ्चकम् ।
मध्ये वसु प्रदातव्यं शिखरे वेद एव च ॥ १ ॥

मूले च जायते नाशो दण्डे हानिर्धनक्षयः ।
कण्ठे च राजसन्मानो मध्ये छत्रपतिर्भवेत् ॥ २ ॥
शिखरे कीर्तिवृद्धिश्च जन्ममात्सूर्यमान्तकम् ॥३॥

जन्म के नक्षत्र से सूर्य के नक्षत्र तक छत्र-चक्र स्थापित करे। तीन नक्षत्र मूल में दे और दण्ड में सात नक्षत्र दे तथा पाँच कण्ठ में दे, मध्य में आठ दे और शिखर में चार नक्षत्र दे ॥ १ ॥

छत्र-चक्र का फल ।

मूल में पड़े तो नाश करे, दण्ड में पड़े तो हानि करे तथा धनक्षय हो, कण्ठ में पड़े तो राजसम्मान हो, मध्य में पड़े तो छत्र पति हो और शिखर में पड़े तो कीर्त्तिवृद्धि हो ॥ २-३ ॥

छत्र-चक्र ।

मूल	दण्ड	कण्ठ	मध्य	शिखर	अङ्ग
३	७	५	८	४	नक्षत्र
नाश	हानि	धनक्षय	राजसम्मान	छत्रपति	फल

धनुश्चक्र-विचार ।

सूर्यभाज्जन्मभान्तं च कार्मुके चैव योजयेत् ।
चापाग्रे बाण[५]संख्याकं शराग्रे पञ्च[५] दीयते ॥ १ ॥
शरमूले तथा पञ्च[५] पञ्च[५] सन्धौ प्रकीर्तितम् ।
दण्डे द्वयं[२] तु दद्याद्वै धनुषश्चक्रमुत्तमम् ॥ २ ॥
अग्रे हानिः शरे लाभो शरमूले जयस्तथा ।
चापसन्धौ तु शौर्यं स्याद्दण्डभङ्गः प्रजायते ॥ ३ ॥

सूर्य के नक्षत्र से जन्म नक्षत्र तक धनुष-चक्र लिखना चाहिए। धनुष के अग्र-भाग में पाँच नक्षत्र देना उसका फल हानिकारक

है । पाँच नक्षत्र बाण के आगे स्थापित करना चाहिए, उसका फल लाभकारी जानिए । पाँच नक्षत्र बाण के मूल में देना चाहिए उसका फल जयकारक है । धनुष की दोनों संधियों पर पाँच-पाँच नक्षत्र देना चाहिए, उसका फल शूरता उत्पन्न करे अर्थात् बड़ा लड़नेवाला हो । धनुष के दण्ड में दो नक्षत्र देना चाहिए, उसका फल संग्राम में भङ्ग करनेवाला होता है ।। १-३ ।।

धनुश्चक्र ।

चापाग्र	बाणाग्र	मूल	प्रथमसंधि	द्वितीयसंधि	दण्ड	अङ्ग
५	५	५	५	५	२	नक्षत्र
हानि	लाभ	जय	शूरता	शूरता	भङ्ग	फल

धनुर्विद्या-मुहूर्त ।

अनुराधामघापुष्यमृगशीर्षेऽष्टमीतिथौ ।
धनुर्विद्यादिक कार्यं द्वादश्यां शुभवासरे ।। १ ।।

अनुराधा, मघा, पुष्य, मृगशिरा ये नक्षत्र और शुभवार तथा अष्टमी और द्वादशी तिथि में धनुर्विद्या शुभ है ।। १ ।।

दीपिका-चक्र-विचार ।

दीपिकायां मुखे पञ्च लाभसम्मानदायकाः ।
कण्ठे नव धनप्राप्तिर्मध्येऽष्टौ स्वामिमृत्युदाः ।।
दण्डे पञ्च भवेद्राज्यमग्निनक्षत्राच्च दीपकम् ।। १ ।।

कृत्तिका नक्षत्र से दिन नक्षत्र तक दीपिका-चक्र लिखे । पाँच मुख में रक्खे, उसका फल लाभसम्मानदायक है । कण्ठ में नव नक्षत्र रक्खे, वह धनदाता है । मध्य में आठ स्वामी के मृत्युदायक हैं । दण्ड में पाँच नक्षत्र राज्यदायक हैं ।। १ ।।

दीपिका-चक्र ।

मुख	कण्ठ	मध्य	दण्ड	अङ्ग
५	९	८	५	नक्षत्र
लाभसम्मानप्राप्ति	धनदा	स्वामिमृत्यु	राज्यलाभ	फल

इक्षु-यन्त्र-चक्र ।

४ २ २ १ ५ ५ २ ६

वेदद्विनेत्रभूभूतबाणहस्तरसाः क्रमात् ।
प्रथमे च भवेल्लक्ष्मीर्द्वितीये हानिरेव च ।। १ ।।
तृतीये सर्वलाभश्च चतुर्थे च क्षयस्तथा ।
पञ्चमे च भवेन्मृत्युः षष्ठस्थाने शुभं स्मृतम् ।। २ ।।
सप्तमे चैव पीडा स्यादष्टमे धनधान्यदः ।
सूर्यभाद्गणयेच्चान्द्रमिक्षुयन्त्रेण योजयेत् ।। ३ ।।

सूर्य-नक्षत्र से दिन-नक्षत्र तक इक्षु-चक्र लिखना चाहिए । उसका क्रम आठ भाग में जानना । प्रथम भाग में चार नक्षत्र लिखना चाहिए, उसका फल लक्ष्मीप्राप्तिकारक है । दूसरे भाग में दो नक्षत्र लिखना चाहिए, उसका फल हानिकारक है । तीसरे भाग में दो नक्षत्र लिखना चाहिए, वह सर्वलाभकारी हैं । चौथे भाग में एक नक्षत्र लिखना चाहिए, वह क्षयकारक है । पाँचवें भाग में पाँच नक्षत्र लिखना चाहिए, वह मृत्युकारक हैं । छठे भाग में पाँच नक्षत्र लिखना चाहिए, उनको शुभकारक जानिए । सातवें भाग में दो नक्षत्र लिखना चाहिए, वह पीड़ाकारक हैं । अष्टम भाग में छः नक्षत्र लिखना चाहिए, उनको धनधान्यदायक जानिए ।। १-३ ।।

इक्षु-यन्त्र-चक्र ।

भाग	नक्षत्र	फल
प्रथम भाग	४	लक्ष्मी प्राप्ति
द्वितीय भाग	२	हानि
तृतीय भाग	२	सर्वलाभ
चतुर्थ भाग	१	क्षय
पञ्चम भाग	५	मृत्यु
षष्ठ भाग	५	शुभ
सप्तम भाग	२	पीड़ा
अष्टम भाग	६	धन-धान्य-प्राप्ति

कोल्हू-चक्र-विचार ।

सूर्यनक्षत्रमारभ्य गणयेद्दिनभावधिम् ।
त्रयं मूलेऽधरे पञ्च दक्षे पञ्च विधीयते ॥ १ ॥
शीर्षे त्रयं त्रयं शैले शेषं कर्तरि उच्यते ।
शुभं मूलेऽधरे धान्यं दक्षे पीडा विधीयते ॥ २ ॥
शीर्षे नाशश्च शैले च चर्चरा कर्तरिस्तथा ॥ ३ ॥

सूर्य के नक्षत्र से दिन-नक्षत्र तक कोल्हू-चक्र विचारे। तीन नक्षत्र मूल में दे, पाँच नक्षत्र अधर में दे, पाँच नक्षत्र दाहिने दे, तीन नक्षत्र शीर्ष में दे तथा तीन नक्षत्र शैल में दे, जो आठ बाकी रहे उनको कर्तरी में देना चाहिए ॥ १ ॥

कोल्हू-चक्र का फल।

मूल में पड़े तो शुभ, अधर में पड़े तो धान्य मिले, दक्षिण में पड़े तो पीड़ा हो, शीर्ष या शैल में पड़े तो नाश करे, कर्तरी में पड़े तो चर्चराहट हो ॥ २-३ ॥

कोल्हू-चक्र।

मूल	अधर	दक्षिण	शीर्ष	शैल	कर्तरी	स्थान
३	५	५	३	३	८	नक्षत्र
शुभ	धान्य	पीड़ा	नाश	नाश	चर्चराहट	फल

मार्जनी-चक्र और मुहूर्त।

गुणा रामतर्का गुणा तर्कतर्का
फलं दग्धधान्यं व्यथा सम्पदा च।
अरिश्चार्थलाभो रवेर्भाच्च ज्ञेयं
गृहे मार्जनीषु रवियामलानि ॥ १ ॥
हरिः सूर्यचित्रादितिमैत्रपुष्ये
मृगे धातृदस्रे विरिक्ते च भौमे।
त्यजेत्कुम्भमीनौ ह्यलिं गेहशुद्धौ
पवित्रार्थमेतद्रवेर्यामलानि ॥ २ ॥

सूर्य के नक्षत्र से दिन-नक्षत्र तक विचारे। प्रथम तीन नक्षत्र दग्धकारक हैं अर्थात् अग्नि में जरे। फिर तीन नक्षत्र धान्यदायक हैं, फिर छः नक्षत्र व्यथा-कारक हैं, फिर तीन नक्षत्र संपत्तिदायक हैं। फिर छः नक्षत्र शत्रुवृद्धिकारक हैं, फिर छः नक्षत्र धनलाभप्रद हैं। इसी प्रकार से गृह की मार्जनी अर्थात् झाड़ू का चक्र विचार करना सूर्ययामल में कहा है ॥ १ ॥ श्रवण, हस्त, चित्रा, पुनर्वसु, अनु-

राधा, पुष्य, मृगशिरा, रोहिणी, अश्विनी इन नक्षत्रों में मार्जनी-बन्धन शुभ है। रिक्ता तिथि, मङ्गलवार और कुम्भ, मीन, वृश्चिक लग्न वर्जित हैं। उक्त विचार सूर्ययामल में घर को पवित्र करने के अर्थ कहा है। लौकिक मत से रविवार भी वर्जित है ॥ २ ॥

मार्जनी-चक्र ।

३	३	६	३	६	६	नक्षत्र
दग्ध	धान्य	व्यथा	सम्पदा	शत्रु	अर्थलाभ	फल

चुल्ली-चक्र-विचार ।

सूर्यभाद्वेदं[४]नाशाय वेदं[४]संख्या सुखाय च ।
रसं[६]संख्या च दारिद्यं वेदं[४]संख्या पुनः सुखम् ॥ १ ॥
बाणं[५]संख्या स्त्रिया नाशः पुत्रलाभश्च शेषके ।
चुल्लीचक्रं प्रवक्ष्यामि यथोक्तं गर्गभाषितम् ॥ २ ॥

सूर्य के नक्षत्र से दिन के नक्षत्र तक चुल्ली-चक्र का विचार करे। प्रथम चार नक्षत्र नाशप्रद हैं, फिर चार नक्षत्र सुखप्रद हैं। फिर छः नक्षत्र दारिद्र्यप्रद हैं, फिर चार सुखप्रद हैं, फिर पाँच नक्षत्र स्त्रीनाशक हैं, शेष चार नक्षत्र पुत्र-लाभकारक हैं ॥ १-२ ॥

चुल्ली-चक्र ।

४	४	६	४	५	४	नक्षत्र
नाश	सुख	दारिद्र्य	सुख	स्त्रीनाश	पुत्रलाभ	फल

रथकर्म-मुहूर्त ।

रथकर्मशुभं क्षिप्रमृदुब्राह्मेन्द्रभैश्चरैः ।
सौम्योदये शुभे वारे रविवारे विशेषतः ॥ १ ॥

क्षिप्रसंज्ञक नक्षत्र तथा मृदुसंज्ञक नक्षत्र, रोहिणी, ज्येष्ठा तथा चरसंज्ञक नक्षत्रों में तथा शुभग्रहों की लग्न में, रविवार के सहित शुभवारों में रथकर्म शुभ होता है ॥ १ ॥

खट्वा-चक्र-विचार।

सूर्यभाच्चन्द्रभं गण्यं खट्वाचक्रं विचारयेत्।

मस्तके वेद४ शुभदं कोणयोरष्ट८ मृत्युदम् ॥ १ ॥

शाखमष्ट८ शुभो नित्यं मध्ये त्रीणि३ शुभप्रदम्।

पादयोर्वेद४नक्षत्रं हानिमृत्युमहद्भयम् ॥ २ ॥

खट्वायां सर्वमासेषु पञ्च पक्षं विवर्जयेत्।

कन्यायां प्रथमे पक्षे धनुर्मीनं तथैव च ॥ ३ ॥

सूर्य के नक्षत्र से चन्द्रमा के नक्षत्र तक गिनकर खट्वाचक्र विचारे। खट्वा का बनाना तथा शयन, चक्र से समझना चाहिए। मस्तक में चार नक्षत्र दे, उनका फल शुभकारक है। कोणों में आठ नक्षत्र दे, उनका फल मृत्युकारक है ॥ १ ॥ शाखा में आठ नक्षत्र दे, उनका फल शुभप्रद है। मध्य में तीन नक्षत्र दे, उनका फल शुभप्रद है। पाद में चार नक्षत्र दे ये हानि, मृत्यु और महा-भय देनेवाले हैं ॥ २ ॥ खाट बनाने में, सब महीने शुभ हैं केवल पाँच पक्ष वर्जित हैं। अर्थात् कन्या की संक्रांति के पंद्रह अंश, और धनु और मीन की संक्रान्ति सम्पूर्ण वर्जित है ॥ ३ ॥

खट्वा-चक्र।

मस्तक	कोण	शाखा	मध्य	पाद	अङ्ग
४	८	८	३	४	नक्षत्र
शुभदा	मृत्युदा	शुभ	शुभप्रद	हानि, मृत्यु, महाभय	फल

खट्वा-मुहूर्त ।

रोहिणी चोत्तरा ज्ञेया हस्तपुष्यपुनर्वसुः ।
अनुराधाश्विनी शस्ता खट्वानिर्माणकर्मणि ॥ १ ॥
शुभे योगे शुभे वारे विदध्यात्खट्वकां नरः ।
मृताशौचे तथा हेया रिक्तामा विष्टिवैधृतो ॥ २ ॥
पितृपक्षे श्रावणे च भाद्रे मास्यशुभेऽहनि ।
वर्जयेद्भौममन्दे च खट्वानिर्माणकं सदा ॥ ३ ॥

रोहिणी, तीनों उत्तरा, हस्त, पुष्य, पुनर्वसु, अनुराधा, अश्विनी ये नक्षत्र खट्वानिर्माण में शुभ हैं ॥ १ ॥ मनुष्य शुभ योग और शुभ वार में खट्वा पर शयन करे तथा मृत्युसूतक, रिक्तातिथि, अमावस, भद्रा, वैधृति, पितृपक्ष, श्रावण और भाद्रमास, अशुभ दिन अर्थात् जिस दिन कोई उत्पात हुआ हो, वह दिन वर्जित है। मङ्गलवार और शनिवार खट्वा-निर्माण में सदा वर्जित करे ॥ २-३ ॥

चरही-मुहूर्त ।

स्वामिहस्तप्रमाणेन दीर्घविस्तारसंयुतम् ।
वसुभिश्च हरेद्भागं शेषाङ्के फलमादिशेत् ॥ १ ॥
पशुहानिः[1] पशोर्नाशः[2] पशुलाभः[3] पशुक्षयः ।
पशुरोगः[5] पशोर्वृद्धिः[6] पशुभेदः[7] पशोश्चयः ॥ २ ॥

स्वामी के हाथों के प्रमाण से लम्बाई-चौड़ाई का जोड़ करना, चरही के बनाने में आठ का भाग देने से जो शेष अङ्क बचे उसका फल जानना ॥ १ ॥ एक बचे तो पशुहानि, दो बचें तो पशुनाश, तीन बचें तो पशुलाभ, चार बचें तो पशुक्षय, पाँच बचें तो पशुरोग,

छः बचें तो पशुवृद्धि, सात बचें तो पशुभेद, आठ बचें तो बहुत पशु होवें ॥ २ ॥

शस्त्राभ्यास-मुहूर्त ।

हस्तत्रये श्रुतौ दास्रे पुष्येऽदित्युत्तरासु च ।
सुदिने सर्वशस्त्राणामभ्यासः सद् बुधं विना ॥ १ ॥

हस्त, चित्रा, स्वाती, श्रवण, अश्विनी, पुष्य, पुनर्वसु, तीनों उत्तरा, शुभ दिन अर्थात् सोमवार, बृहस्पतिवार, शुक्रवार इनमें शस्त्र सीखने का मुहूर्त शुभ है और बुधवार वर्जित है ॥ १ ॥

सेतु-बन्धन-मुहूर्त ।

ध्रुवर्क्षे स्वातिभे सौम्ये स्थिरलग्ने शुभे सिते ।
सेतूनां बन्धनं कार्यं जीवमन्दार्कवासरे ॥ १ ॥

ध्रुवसंज्ञक, स्वाती, मृगशिरा ये नक्षत्र पुल बाँधने में शुभ हैं। स्थिर लग्न शुभ हैं। शुक्लपक्ष, बृहस्पति, शनैश्चर और रविवार दिन शुभ हैं। किसी आचार्य के मत से भूमिसुप्त, पाताल, चन्द्रमा और राहु भी विचारना चाहिए, उसे आगे लिखते हैं ॥ १ ॥

भूमि-सुप्त-विचार ।

प्रद्योतनात्पञ्चनगाङ्कसूर्य-
नवेन्दुषड्विंशमितानि भानि ।
शेते मही नैव गृहं विधेयं
तडागवापीखननं न शस्तम् ॥ १ ॥

(ऊपर छपे अंक: ५ ७ ९ १२ १९ २६)

सूर्य के नक्षत्र से पाँच, सात, नव, बारह, उन्नीस और छब्बीस इतने नक्षत्र चन्द्रनक्षत्र तक होवें, तो भूमिसुप्त जानिए। उसमें पुल बाँधना, पृथ्वी खोदना, खेती इत्यादि तथा गृहारम्भ, तालाब और बावली खोदना शुभ नहीं है ॥ १ ॥

चन्द्रलोक-वास-विचार ।

तिथिं पञ्चगुणीकृत्वा एकेन च समन्वितम् ।
त्रिभिश्चैव हरेद्भागं शेषं चन्द्रं विचारयेत् ।। १ ।।
एकेन वसते स्वर्गे द्विके पातालमेव च ।
तृतीये वसते मृत्युः सर्वकर्माणि साधयेत् ।। २ ।।
पातालस्थो यदा चन्द्रः षट्कर्माणि विर्जयेत् ।
गृहहोमकृषीयात्रातडागाकूपकर्मणि ।। ३ ।।

वर्तमान तिथि को पाँच से गुणा करे और उसमें एक जोड़ दे । जोड़े हुये में तीन का भाग दे शेष जो रहे उसे चन्द्रलोक-वास जानिए ।। १ ।। एक बचे तो चन्द्रमा का वास स्वर्ग में, दो बचें तो पाताल में और तीन बचें तो मृत्युलोक में जानना। इसमें सब कार्यों का साधन करना योग्य है ।। २ ।। पाताललोक में चन्द्रमा बसे तो छः कर्म वर्जित करना चाहिए । एक तो गृहारम्भ, दूसरा होम करना, तीसरा खेती का कार्य, चौथा यात्रा करना, पाँचवाँ तालाब खोदना और छठा कुवाँ खोदना वर्जित है ।

चन्द्र-वास का उदाहरण ।

संवत् १९४८ शक १८१३ भाद्रशुक्लषष्ठयां ६ भौमेष्टम् २।५ चन्द्रवासचिन्तनम् । अर्थात् भादों सुदी छठ मङ्गल को चन्द्रवास का उदाहरण । छठ को पाँच से गुणा किया तो तीस हुए, उसमें एक जोड़ दिया तो इकतीस हुए । इस जोड़े हुए अङ्कों में तीन का भाग दिया तो शेष बचा १, तो चन्द्रमा का वास स्वर्ग में जानना । इसी रीति से सब तिथियों का समझना चाहिए ।। ३ ।।

राहु-वास-विचार।

देवालये गेहविधौ जलाशये
राहोर्मुखं शम्भुदिशो विलोमतः।
मीनार्कसिंहार्कमृगार्कतस्त्रिभे
खाते मुखात्पृष्ठविदिक् शुभा भवेत्॥ १॥

देवालय, गृहारम्भ तथा जलाशय में राहु का मुख विचारना चाहिए। क्रम से ईशान दिशा से विलोम होता है, उसका क्रम लिखते हैं। देवालय में मीन के सूर्यों से तीन-तीन राशि चारो विदिशाओं अर्थात् ईशान, वायव्य, नैर्ऋत्य, आग्नेय में राहुमुख जानिए। गृहारम्भ में सिंह के सूर्यों से तीन-तीन राशि चारों विदिशाओं में राहुमुख जानना चाहिए। जलाशय में मकर के सूर्यों से तीन-तीन राशि चारों विदिशाओं में राहुमुख जानना चाहिए। सुस्पष्ट चक्र से समझ लेना। जिस दिशा में राहु का मुख हो उसका पृष्ठ अर्थात् पीछेवाली दिशा में खात होता है, उसी दिशा में आरम्भ करना शुभ है अर्थात् उसी दिशा में खोदना चाहिए।

उदाहरण।

ईशान में राहु का मुख हो तो पृष्ठ आग्नेय दिशा होती है। वायव्य में राहु का मुख हो तो पृष्ठ ईशान होती है। नैर्ऋत्य में मुख हो तो वायव्य पृष्ठ होती है और आग्नेय में मुख हो तो नैर्ऋत्य पृष्ठ होती है॥ १॥

देवालय आदि बनाने में राहु-मुख-चक्र विचार।

मीन, मेष वृष	मिथुन, कर्क सिंह	कन्या, तुला वृश्चिक	धनु, मकर कुंभ	सूर्यराशि
ईशान	वायव्य	नैर्ऋत्य	आग्नेय	दिशा

गृहारम्भ में राहु-मुख-चक्र ।

सिंह, कन्या तुला	वृश्चिक धनु, मकर	कुंभ, मीन मेष	वृष, मिथुन कर्क	सूर्यराशि
ईशान	वायव्य	नैर्ऋत्य	आग्नेय	दिशा

जलाशय में राहु-मुख-चक्र ।

मकर, कुंभ मीन	मेष, वृष मिथुन	कर्क, सिंह कन्या	तुला, वृश्चिक धनु	सूर्यराशि
ईशान	वायव्य	नैर्ऋत्य	आग्नेय	दिशा

सूर्य-नक्षत्र से कूप-चक्र-विचार ।

कूपेऽर्कभान्मध्यगतैस्त्रिभिर्भैः
स्वादूदकं पूर्वदिशि त्रिभिस्त्रिभिः ।
खण्डं जलं स्वादुजलं जलक्षयं
स्वादूदकं क्षारजलं शिलाश्च ॥ १ ॥
मिष्टं जलं क्षारजलं क्रमाद्भवेद्
वैसूर्यभात्त्रित्रिमितैः फलं वदेत् ॥ २ ॥

सूर्य के नक्षत्र से दिन नक्षत्र तक कूप-चक्र गिने । पहले मध्य में तीन नक्षत्र लिखे उसका फल स्वादुजल हो। फिर पूर्व आदि आठ दिशाओं में तीन-तीन नक्षत्र लिखे उसका फल लिखते हैं । यदि दिन नक्षत्र पूर्व में पड़े तो खण्डित जल होवे। आग्नेय में स्वादुजल हो, दक्षिण में जलक्षय हो । नैर्ऋत्य में स्वादुजल हो, पश्चिम में क्षारजल हो, वायव्य में शिला निकले, उत्तर में मीठा जल हो और ईशान में क्षारजल हो । इसी प्रकार से सूर्य के नक्षत्र से तीन-तीन नक्षत्रों का फल जानिए ॥ १-२ ॥

सूर्य नक्षत्र से कूप-चक्र (१)।
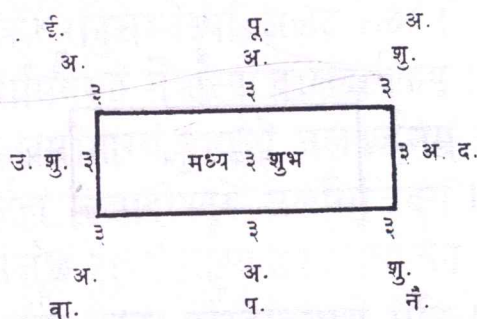
रोहिण्यादि से कूप-चक्र-विचार।

रोहिण्यादि लिखेच्चक्रं त्रयं मध्ये प्रतिष्ठितम्।
पूर्वादिदिक्षु सर्वासु सृष्टिमार्गेण दीयते ॥ १ ॥
मध्ये शीघ्रजलं स्वादु पूर्वे भूमिश्च खण्डिता।
आग्नेय्यां सुजलं प्रोक्तं दक्षिणे निर्जलं तथा ॥ २ ॥
नैर्ऋत्ये चामृतं वारि पश्चिमे शोभनं जलम्।
वायव्येऽपि जलं हन्ति चोत्तरे स्वादुकं जलम् ॥ ३ ॥
ईशाने कटुकक्षारं अल्पतीक्ष्णस्य सम्भवम् ॥ ४ ॥

रोहिणी आदि से दिन नक्षत्र तक कूपचक्र गिने। मध्य में तीन नक्षत्र स्थापित करे और पूर्वादि आठों दिशाओं में तीन तीन नक्षत्र देवे, उसका फल लिखते हैं ॥ १ ॥ मध्य में पड़े तो जल शीघ्र निकले और सुस्वाद हो, पूर्व में कोई विवर पड़े। आग्नेय में सुन्दर जल हो, दक्षिण में निर्जल होवे ॥ २ ॥ नैर्ऋत्य में मधुर जल हो, पश्चिम में अमृत तुल्य जल हो, वायव्य में जल न हो, उत्तर में मधुर जल हो ॥ ३ ॥ ईशान में कटु तथा खारी जल हो, थोड़ा और निकम्मा हो ॥ ४ ॥

रोहिण्यादि से कूप-चक्र (२) ।
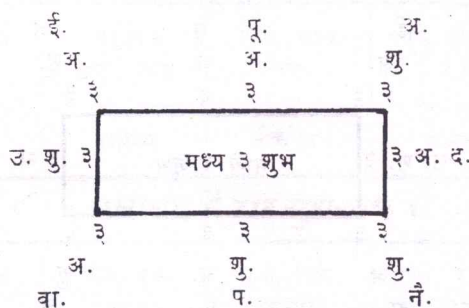
भौम-नक्षत्र से कूप-चक्र-विचार ।

शशिशराब्धित्रित्र्यब्धिगुणाब्धये
वधजलेषु ससिद्धिरभङ्गदम् ।
रुजमसिद्धियशोऽर्थप्रसिद्धये
जलविभङ्गकरः कुजभादिषु ॥ १ ॥

मङ्गल के नक्षत्र से दिन-नक्षत्र तक कूपचक्र विचारे । प्रथम में पड़े तो अशुभ जानिए । अगले पाँच में शुभ फल जानना । अगले चार में शुभ जानिए । अगले तीन में रोग होता है । फिर तीन में अशुभ जानिए । फिर चार में यश जानिए । फिर तीन नक्षत्रों में अर्थ की सिद्धि जानिए और फिर चार नक्षत्रों में जल-भङ्ग जानिए ॥ १ ॥

भौम नक्षत्र से कूप-चक्र (३) ।

१	५	४	३	३	४	३	४	नक्षत्र
अशुभ	शुभ	शुभ	रोग	अशुभ	यश	अर्थसिद्धि	जलभङ्ग	फल

राहु-नक्षत्र से कूप-चक्र-विचार ।

राहुऋक्षात्त्रयं पूर्वे त्रयमाग्नेयतः कमात् ।

मध्ये चत्वारि ऋक्षान्ते फलं वाच्यं शुभाशुभम् ॥ १ ॥
पूर्वे शोककः राहुराग्नेय्यां जलदं सदा।
दक्षिणे स्वामिमरणं नैर्ऋत्यां दुःखदायकम् ॥ २ ॥
पश्चिमे सुखसौभाग्यं वायव्ये जलवर्द्धनम्।
उत्तरे निर्जलं विद्यादीश्वरे जलसिद्धिदम् ॥ ३ ॥
मध्ये च सजलं वाच्यं नान्यथा रुद्रभाषितम्।
स्वयंरूपी सदा राहुः फलदस्तत्क्षणे भुवि ॥ ४ ॥
कूपचक्रं प्रवक्ष्यामि विज्ञेयं सर्वदा बुधैः ॥ ५ ॥

राहु के नक्षत्र से दिन के नक्षत्र तक कूप-चक्र विचारे। प्रथम तीन नक्षत्र कूप के पूर्वदिशा में दे और तीन-तीन नक्षत्र आग्नेय से सब दिशाओं में देना और पीछे के चार नक्षत्र मध्य में देना. उसका फल कहते हैं ॥ १ ॥ पूर्व में पड़े तो राहु शोक प्रदान करे, आग्नेय में जल-संपदा हो, दक्षिण में स्वामी का मरण हो, नैर्ऋत्य में दुःख-प्राप्ति हो, पश्चिम में सुखसौभाग्य हो, वायव्य में जल की वृद्धि हो, उत्तर में निर्जल हो, ईशान में जलसिद्ध हो और मध्य में पड़े तो जल निकले। इसमें अन्यथा वचन नहीं है। श्रीमहादेवजी कहते हैं कि अपने ही रूप से सदा राहु फल को देता है। पृथ्वी में यह कूप-चक्र जो कहा है इसे सब पण्डित लोग सदा विचार करें ॥ २-५ ॥

राहु के नक्षत्र से कूप-चक्र (४)।

पू०	आ०	द०	नै०	प०	वा०	उ०	ई०	मध्य	दिशा
३	३	३	३	३	३	३	३	४	नक्षत्र
अ०	शु०	अ०	अ०	शु०	शु०	अ०	शु०	शुभ	फल

पुनः कूप-मुहूर्त ।

हस्तात्तिस्रो वासवं वारुणं च
मित्रं षित्रं त्रीणि चैवोत्तराणि ।
प्राजापत्यं चापि नक्षत्रमाहुः
कूपारम्भे श्रेष्ठमाद्या मुनीन्द्राः ।। १ ।।

हस्त, चित्रा, स्वाती, धनिष्ठा, शतभिष, अनुराधा, मघा, तीनों उत्तरा, रोहिणी इन नक्षत्रों में कुवाँ का खोदना शुभ है, ऐसा मुनीन्द्र कहते हैं ।। १ ।।

गृह-कूप दिशा-फल ।

कूपे वास्तोर्मध्यदेशेऽर्थनाश-
स्त्वीशान्यादौपुष्टिरैश्वर्यवृद्धिः ।
सूनोर्नाशः स्त्रीविनाशो मृतिश्च
संपत्पीडा शत्रुतः स्याच्च सौख्यम् ।। १ ।।

गृह के मध्य में कुवाँ खोदे तो अर्थनाश हो, ईशान में पुष्टता हो, पूर्व में ऐश्वर्यवृद्धि हो, आग्नेय में पुत्रनाश हो, दक्षिण में स्त्री-विनाश हो, नैर्ऋत्य में गृहपति की मृत्यु हो, पश्चिम में संपदा हो, वायव्य में शत्रुपीड़ा हो और उत्तर में सुखप्राप्ति हो ।। १ ।।

तड़ाग-चक्र-विचार ।

तडागे च प्रवक्ष्यामि यदुक्तं ब्रह्मयामले ।
सूर्यभाच्चन्द्रभं यावद्गणयेत्सततं बुधैः ।। १ ।।
दिक्षु ऋक्षद्वये यस्य मध्ये पञ्च नियोजयेत् ।

षड्ऋक्षे वारिवाहे च फलं तत्र विचारयेत् ॥ २ ॥
पूर्वे तु बहुशोकश्च आग्नेय्यां सजलं बहु ।
दक्षिणे वारिनाशश्च नैर्ऋत्ये चामृतं जलम् ॥ ३ ॥
पश्चिमे च जलं स्वादु वायव्ये वारिशोषणम् ।
उत्तरे च स्थितं तोयमीशाने कुत्सितं जलम् ॥ ४ ॥
मध्ये छिद्रजलं याति वारिवाहेऽतिपूर्णता ॥ ५ ॥

सूर्य के नक्षत्र से चन्द्रमा के नक्षत्र तक तालाब का चक्र गिने ॥ १ ॥ पूर्वादि आठों दिशाओं में दो-दो नक्षत्र दे, मध्य में पाँच नक्षत्र दे और छः नक्षत्र वारिवाह में दे, उसका फल लिखते हैं ॥ २ ॥ पूर्व दिशा में पड़े तो बहुत शोक हो, आग्नेय में जल बहुत हो, दक्षिण में जलनाश करे, नैर्ऋत्य में मधुर जल होवे, पश्चिम में स्वादिष्ट जल हो, वायव्य में जल को सोखे, उत्तर में जल स्थित हो, ईशान में खारी जल होवे, मध्य में छिद्रजल अर्थात् खण्डित जल हो, वारिवाह में परे तो पूर्णजल हो । इस चक्र का विचार ब्रह्मयामल में कहा गया है ॥ ३-५ ॥

सूर्य के नक्षत्र से तड़ाग-चक्र ।

पूर्व	आ०	द०	नै०	प०	वा०	उ०	ई०	मध्य	वारिवाह	स्थान
२	२	२	२	२	२	२	२	५	६	नक्षत्र
बहुशोक	बहुजल	जलनाश	अमृतजल	स्वादुजल	जलशोष	जलस्थित	कुत्सित जल	छिद्रजल	पूर्णजल	फल

तड़ाग-मुहूर्त ।

ध्रुववसुजलपुष्यो नैर्ऋतं मैत्रसंज्ञकम् ।
नक्षत्रं शुभदं ज्ञेयं तडागे सर्वदा बुधैः ॥ १ ॥

ध्रुवसंज्ञक, धनिष्ठा, पूर्वाषाढ़, पुष्य, मूल और मैत्रसंज्ञक ये नक्षत्र तालाब खोदने में शुभदायक होते हैं ॥ १ ॥

निर्वार-चक्र-विचार ।

निर्वारे पूर्वतस्त्रीणि त्रीणि त्रीणि च सर्वतः ।
मध्ये चत्वारि देयानि राहुभाच्चन्द्रभं बुधैः ॥ १ ॥
मध्ये पूर्वजलं सौख्यं चोत्तरे धनवर्द्धनम् ।
याम्यनैर्ऋत्ययोर्दुःखं भयमग्नेः परासु च ॥ २ ॥

राहु के नक्षत्र से दिन के नक्षत्र तक निवार का चक्र गिने । पूर्व आदि आठों दिशाओं में तीन-तीन नक्षत्र दे और मध्य में चार नक्षत्र दे ॥ १ ॥

निर्वार-चक्र-फल ।

मध्य में या पूर्व में पड़े तो जल का सुख हो, उत्तर में धन की वृद्धि हो, दक्षिण तथा नैर्ऋत्य में दुःख हो । आग्नेय तथा और जो बाकी दिशाएँ हैं, उनमें भय होवे ॥ २ ॥

निर्वार-चक्र ।

पू०	आ०	द०	नै०	प०	वा०	उ०	ई०	मध्य	दिशा
३	३	३	३	३	३	३	३	४	नक्षत्र
जलसौख्य	भय	दुःख	दुःख	भय	भय	धनवर्द्धन	भय	जलसौख्य	फल

जलाशय-मुहूर्त ।

अनुराधामघाहस्तरेवतीषूत्तरात्रये ।
रोहिणीयुगले पुष्ये धनिष्ठाद्वितये तथा ॥ १ ॥
पूर्वाषाढाभिधेनैव शुभे मासि शुभे दिने ।
वापीकूपतडागानामारम्भः कथितो बुधैः ॥ २ ॥

अनुराधा, मघा, हस्त, रेवती, तीनों उत्तरा, रोहिणी, मृगशिरा, पुष्य, धनिष्ठा, शतभिष और पूर्वाषाढ़ इन नक्षत्रों में तथा शुभ मास व शुभ दिनों में बावली, कुवाँ, तालाब खुदवाना शुभ है ॥ १-२ ॥

वापी (बावली) का मुहूर्त ।

स्वात्यश्विपुष्यहस्तेषु मैत्रे चैव पुनर्वसौ ।
रेवत्यां वारुणो चैव वापीकर्म प्रशस्यते ॥ १ ॥

स्वाती, अश्विनी, पुष्य, हस्त, अनुराधा, पुनर्वसु, रेवती और शतभिष इन नक्षत्रों में बावली का कृत्य शुभ है ॥ १ ॥

कार्य-भेद से जन्म और नाम-राशि-निर्णय ।

देशे ग्रामे गृहे युद्धे सेवायां व्यवहारके ।
नामराशेःप्रधानत्वं जन्मराशेरतः परम् ॥ १ ॥

देश के कार्य, ग्राम के कार्य, गृह के कार्य तथा युद्धकार्य, नौकरी करना और व्यवहार (रोजगार) करना इन कार्यों में नाम-राशि प्रधान है और अन्यकार्यों में जन्म-राशि से बिचारना चाहिए ॥ १ ॥

दीक्षा-ग्रहण-मुहूर्त ।

आर्द्राचित्रात्र्युत्तरे रेवतीन्दु-
ब्राह्मे मित्रे वा धनिष्ठासु दीक्षा ।

ग्राह्या मार्गे फाल्गुने श्रावणोर्जे
माघे वारे मन्दमाहेयहीने ॥ १ ॥

आर्द्रा, चित्रा, तीनों उत्तरा, रेवती, मृगशिरा, रोहिणी, अनुराधा और धनिष्ठा, इन नक्षत्रों में दीक्षा लेना शुभ है। तथा अगहन, फाल्गुन, श्रावण, कार्त्तिक और माघ ये महीने शुभ हैं, तथा शनिवार और मंगलवार वर्जित हैं ॥ १ ॥

दीक्षा-मास-फल ।

मन्त्रस्वीकरणं चैत्रे बहुदुःखफलप्रदम् ।
वैशाखे रत्नलाभश्च ज्येष्ठे च मरणं ध्रुवम् ॥ १ ॥
आषाढे बन्धुनाशः स्याच्छ्रावणे च शुभावहम् ।
प्रजाहानिर्भाद्रपदे सर्वत्र सुखमाश्विने ॥ २ ॥
कार्त्तिके धनवृद्धिः स्यान्मार्गशीर्षे शुभप्रदम् ।
पौषे तु ज्ञानहानिः स्यान्माघे मेधाविवर्द्धनम् ॥ ३ ॥
फाल्गुने सुखसौभाग्यं सर्वत्र परिकीर्तितम् ॥ ४ ॥

चैत्र में दीक्षा ले तो बहुत दुःख प्राप्त हो, वैशाख में रत्नलाभ, ज्येष्ठ में मरण, आषाढ़ में बन्धुनाश, श्रावण में शुभ, भाद्र में पुत्रहानि, आश्विन में सर्वसुख, कार्त्तिक में धनवृद्धि, अगहन में शुभदायक, पौष में ज्ञानहानि, माघ में ज्ञानवृद्धि और फाल्गुन में सुख-सौभाग्य हो ॥ १-४ ॥

तैलाभ्यङ्ग-मुहूर्त और फल ।

तैलाभ्यङ्गे रवौ तापः सोमे शोभा कुजे मृतिः ।
बुधे धनं गुरौ हानिः शुक्रे दुःखं शनौ सुखम् ॥ १ ॥

रविवार को तेल लगावे तो ज्वर आवे, चन्द्रवार को शोभा हो, मङ्गलवार को मृत्यु हो, बुधवार को धन की प्राप्ति हो, बृहस्पतिवार को धन-हानि हो, शुक्रवार को दुःख हो और शनिवार को सुख प्राप्त हो ॥ १ ॥

तैलाभ्यङ्गपरिहार।

रवौ पुष्पं गुरौ दूर्वा भौमवारे च मृत्तिका।
शुक्रे तु गोमयं क्षिप्त्वा तैलदोषो न विद्यते ॥ १ ॥

रविवार को फूल छोड़कर तेल लगावे, मंगलवार को थोड़ी मिट्टी डाल तेल लगावे, बृहस्पतिवार को दूध डालकर लगावे, शुक्रवार को थोड़ा-सा गोबर डालकर तेल लगावे तो तेल लगाने का वार-दोष नहीं होता है ॥ १ ॥

राज्याऽभिषेकमुहूर्त।

राज्याभिषेकः शुभमुत्तरायणे
गुर्विन्दुशुक्रैरुदितैर्बलान्वितैः।
भौमार्कलग्नेशदशेशजन्मपै-
र्नो चैत्ररिक्तारनिशामलिम्लुचे ॥ १ ॥
शाक्रः श्रवःक्षिप्रमृदुध्रुवोडुभिः
शीर्षोदये चोपचये शुभस्तनौ।
पापैस्त्रिषष्ठायगतैः शुभग्रहैः
केन्द्रत्रिकोणायधनत्रिसंस्थितैः ॥ २ ॥
पापैस्तनौ रुङ् निधने मृतिः सुते
पुत्रार्तिरर्थव्ययगैर्दरिद्रता।
स्यात्खेऽलसो भ्रष्टपदो द्युनाम्बुगैः
सर्वं शुभं केन्द्रगतैः शुभग्रहैः ॥ ३ ॥

गुरुर्लग्नकोणे कुजारौ सितःखे
स राजा सदा मोदते राजलक्ष्म्या ।
तृतीयायगौ सौरिसूर्यौ खबन्ध्वो-
र्गुरुश्चेद्धरित्री स्थिरा स्यान्नृपस्य ॥ ४ ॥

राजगद्दी पर बैठने का मुहुर्त कहते हैं—उत्तरायण सूर्य हो, बृहस्पति, चन्द्रमा, शुक्र उदित हो, तथा मङ्गल, सूर्य और जन्मलग्न का स्वामी, महादशादिकों का स्वामी तथा जन्मराशि का स्वामी ये ग्रह बलान्वित हों, अर्थात् उच्चादिकस्थान में होवें व मित्र के घर में हों या अपने घर के हों, अथवा मित्रग्रह देखता हो तो बली जानना । चैत्रमास तथा रिक्ता तिथि वर्जित है । मङ्गलवार, रात्रि समय और मलमास भी वर्जित है ॥ १ ॥ ज्येष्ठा, श्रवण, क्षिप्रसंज्ञक, मृदुसंज्ञक, ध्रुवसंज्ञक ये नक्षत्र शुभ हैं । शीर्षोदयी उपचय लग्न हो, अर्थात् मिथुन, कन्या, तुला, वृश्चिक और कुम्भ ये लग्न शीर्षोदय कहाती हैं ।

अब उपचय लग्न लिखते हैं—जन्मलग्न तथा जन्मराशि से तीसरे, छठे, दशवें, ग्यारहवें जो लग्न हो वे उपचय लग्न कहाती हैं । तथा शुभग्रहों की लग्न हो और पापग्रह लग्न से तीसरे, छठे, ग्यारहवें हों, शुभग्रह केन्द्र १ । ४ । ७ । १० त्रिकोण ९ । ५ व ग्यारहवें व दूसरे, तीसरे हों, पापग्रह लग्न में पड़े तो राजा के रोग हो और आठवें जो पापग्रह पड़े तो मृत्यु हो, पाँचवें जो पापग्रह हो तो पुत्र को पीड़ा करे और दूसरे, बारहवें पापग्रह हो तो दरिद्रता हो, दशवें पापग्रह हो तो आलसी हो, चौथे व सातवें पापग्रह हो तो ऐश्वर्य भ्रष्ट करे और जो शुभग्रह केन्द्र में हो तो सब ग्रह शुभकारी हों ॥ २-३ ॥ बृहस्पति लग्न तथा त्रिकोण ९ । ५ में हो, मङ्गल छठे हो, तथा शुक्र दशवें हो

तो राजा सदा राजलक्ष्मी से आनन्दित हो, तीसरे शनैश्चर, ग्यारहवें सूर्य और दशवें या चौथे बृहस्पति हो तो राजा की पृथ्वी सदा स्थिर रहे ॥ ४ ॥

पशु-क्रय-विक्रय-मुहूर्त।

पूर्वामैत्रद्वयं मूलं वासवं रेवती करः।
पुनर्वसुद्वयं ग्राह्यं पशूनां क्रयविक्रये ॥ १ ॥

तीनों पूर्वा, अनुराधा, ज्येष्ठा, मूल, धनिष्ठा, रेवती, हस्त, पुनर्वसु और पुष्य ये नक्षत्र पशु बेचने तथा खरीदने में शुभ हैं ॥१॥

नृत्यारम्भ-मुहूर्त।

हस्तात्तिस्रो वासवं चानुराधा
ज्येष्ठा पौष्णं वारुणं चोत्तरा च।
पूर्वाचार्यैः कीर्तिताश्चन्द्रवर्ति-
नृत्यारम्भे शोभनस्त्वृक्षवर्गः ॥ १ ॥

हस्त, चित्रा, स्वाती, धनिष्ठा, अनुराधा, ज्येष्ठा, रेवती, शतभिष और तीनों उत्तरा इन नक्षत्रों में नृत्यारम्भ शुभ है। परन्तु चन्द्रमा को बली होना चाहिए, ऐसा आचार्य कहते हैं ॥ १ ॥

ऋण-ग्रहण और ऋण-दान-मुहूर्त।

स्वात्यादित्यमृदुद्विदैवगुरुभे कर्णत्रयाश्वे चरे
लग्ने धर्मसुताष्टशुद्धिसहिते द्रव्यप्रयोगः शुभः।
नीरे ग्राह्यमृणं तु संक्रमदिने वृद्धौ करेऽर्केऽह्नि य-
च्चद्रंशेषु भवेदृणं न च बुधे देयं कदाचिद्धनम् ॥१॥
तीक्ष्णाभिश्रध्रुवोग्रैर्यद्द्रव्यं दत्तं निवेशितम्।
प्रयुक्तं च विनष्टं च विष्टयां पाते च नाऽऽप्यते ॥ २ ॥

ऋणग्राहकनक्षत्रं प्रथममृणदस्य मात् ।
द्वितीयमृणसंबन्धो न कर्तव्यः कदाचन ।। ३ ।।

स्वाती, पुनर्वसु, मृदुसंज्ञक, विशाखा, पुष्य, श्रवण, धनिष्ठा, शतभिष और अश्विनी इन नक्षत्रों में और चर लग्न में ऋण ग्रहण करना शुभ है । परन्तु यदि ऋण लेने में लग्न से नवें, पाँचवें और आठवें घर में कोई ग्रह न हो तथा मङ्गलवार, संक्रान्ति, वृद्धियोग, हस्त नक्षत्र और इतवार दिन हो तो उसके वंश में ऋण बना रहे । एवं बुधवार को ऋण देना वर्जित है ।। १ ।। तीक्ष्णसंज्ञक, मिश्रसंज्ञक, ध्रुवसंज्ञक और उग्रसंज्ञक नक्षत्रों में यदि द्रव्य किसी को दे या गाड़ दे या किसी को ब्याज पर अथवा खो जावे तो द्रव्य फिर न मिले । यही फल भद्रा व पात का भी जानना ।। २ ।। यदि ऋणी के नक्षत्र से धनी का नक्षत्र दूसरा हो तो ऋण कभी न लेवे ।। ३ ।।

हल-प्रवाह-मुहूर्त ।

मूलद्वीशमघाचरध्रुवमृदुक्षिप्रैर्विनार्कं शनिं
पापैर्हीनबलैर्विधौ जललवे शुक्रे विधौ मांसले ।
लग्ने देवगुरौ हलप्रवहणं शस्तं न सिंहे घटे
कर्कार्जैणघटे तनौ क्षयकरं रिक्तासु षष्ठ्यां तथा ॥१॥

मूल, विशाखा, मघा, चरसंज्ञक, ध्रुवसंज्ञक, मृदुसंज्ञक और क्षिप्रसंज्ञक इन नक्षत्रों में हल-प्रवाह शुभ है । रविवार और शनिवार वर्जित है । पापग्रह बल से रहित हो और चन्द्रमा जलराशि के नवांश में हो अर्थात् मकर, कुम्भ, मीन, कर्क का नवांश जल राशि का होता है । नवांश का क्रम आगे लिखेंगे । शुक्र, चन्द्रमा बलिष्ठ हों, उच्चादिक में तथा लग्न में बृहस्पति हो तथा सिंह, कुम्भ, कर्क, मेष, मकर और तुला ये लग्न वर्जित हैं और

क्षय को करती हैं । रिक्ता तिथि ४ । ९ । १४ और छठ इनको भी क्षयकारक जानना चाहिए ।। १ ।।

बीजोप्ति-मुहूर्त ।

एष्वेव श्रुतिवारुणादितिविशाखोडूनि भौमं विना
बीजोप्तिर्गदिता शुभा त्वगुमतोऽष्टाग्नीन्दुरामेन्दवः ।
रामेन्द्वग्नियुगान्यसच्छुभकराण्युक्तौ हलेऽर्कोज्झिता-
द्व्राद्रामाष्टनवाष्टमानि मुनिभिः प्रोक्तान्यसत्सन्ति च ।।१।।

पहले हलप्रवाह में जो नक्षत्रादि कहे हैं उनमें बीजोप्ति भी करना चाहिए । परन्तु श्रवण, शतभिष, पुनर्वसु और विशाखा ये नक्षत्र बीजोप्ति में वर्जित करना उचित है । दिनों में मङ्गलवार वर्जित है । शेष सब तिथिवारादि हल-प्रवाह के जानना चाहिए ।

बीजोप्ति का चक्र ।

राहु के नक्षत्र से दिन के नक्षत्र तक गिनकर विचारना चाहिए । प्रथम आठ नक्षत्र अशुभ हैं, फिर तीन शुभ हैं, फिर एक अशुभ है, फिर तीन शुभ हैं, फिर एक अशुभ है, तीन शुभ हैं, फिर एक अशुभ है, तीन शुभ हैं और फिर चार अशुभ हैं । यह बीजोप्ति-चक्र है ।

बीजोप्ति-चक्र ।

८	३	१	३	१	३	१	३	४	नक्षत्र
अ.	शु.	अ.	शु.	अ.	शु.	अ.	शु.	अ.	फल

हल-चक्र ।

सूर्य के उज्झित नक्षत्र से अर्थात् जिस नक्षत्र के सूर्य हों उसके पहलेवाले नक्षत्र से गिनकर विचारना चाहिए । प्रथम तीन नक्षत्र अशुभ हैं, फिर आठ नक्षत्र शुभ हैं, फिर नव अशुभ हैं, फिर आठ शुभ हैं, इनको अभिजित् समेत अठ्ठाइस जानना चाहिए ।।१।।

हल-चक्र ।

३	८	९	८	नक्षत्र
अ.	शु.	अ.	शु.	फल

बीजोप्ति का निषेध ।

रवौ रौद्राद्यपादस्थे भूमेः संजायते रजः ।
तस्माद्दिनत्रयं तत्र बीजवापं परित्यजेत् ।। १ ।।

जब आर्द्रानक्षत्र में सूर्य का प्रवेश हो, तब से तीन दिन तक पृथ्वी रजस्वला-धर्म को प्राप्त होती है उसमें बीज बोना वर्जित है ।।१।।

धान्य-छेदन-मुहूर्त ।

तीक्ष्णाजपादकरवह्निवसुश्रुतीन्दु-
स्वातीमघोत्तरजलान्तकतक्षपुष्ये ।
मन्दाररिक्तरहिते दिवसेऽतिशस्ता
धान्यच्छिदा निगदिता स्थिरभे विलग्ने ।। १ ।।

तीक्ष्णसंज्ञक नक्षत्र तथा पूर्वभाद्रपद, हस्त, कृत्तिका, धनिष्ठा, श्रवण, मृगशिरा, स्वाती, मघा, तीनों उत्तरा, पूर्वाषाढ़, भरणी, चित्रा और पुष्य ये नक्षत्र और स्थिर लग्न अन्न काटने में शुभ हैं। परन्तु शनि और मङ्गलवार तथा रिक्तातिथि वर्जित है ।। १ ।।

द्वितीय प्रकार से हल-चक्र-विचार ।

त्रिभिस्त्रिभिस्त्रिभिः पञ्च त्रिभिः पञ्च त्रिभिर्द्वयम् ।
सूर्यभाद्दिनभं यावद्धानिवृद्धी हले क्रमात् ।। १ ।।

सूर्य के नक्षत्र से दिन-नक्षत्र तक हल-चक्र विचार कर उसका फल चक्र से समझ लेना चाहिए ।। १ ।।

हल-चक्र

३	३	३	५	३	५	३	२	नक्षत्र
हानि	वृद्धि	हानि	वृद्धि	हानि	वृद्धि	हानि	वृद्धि	फल

राजमार्तण्ड में धान्य-छेदन-मुहूर्त ।

रौद्रे पित्र्ये तथा सौम्ये हस्ते पुष्येऽनिले तथा ।
सस्यच्छेदं प्रशंसन्ति मूलश्रवणवासवे ॥ १ ॥
गुरौ शुक्रे शुभं हित्वा रिक्तां भौमशनैश्चरौ ॥ २ ॥

आर्द्रा, मघा, मृगशिरा, हस्त, पुष्य और स्वाती इन नक्षत्रों में नवीन धान्यच्छेदन शुभ है। मूल, श्रवण, धनिष्ठा भी धान्यच्छेदन के शुभ हैं। गुरुवार और शुक्रवार शुभ हैं तथा रिक्ता ४।९।१४ तिथि मङ्गलवार और शनिवार वर्जित हैं ॥१-२॥

मुहूर्तगणपति में धान्य-छेदन-मुहूर्त ।

पूर्वोत्तरामघाश्लेषाज्येष्ठार्द्राश्रवणद्वये ।
भरणीद्वितये मूले मृगे पुष्ये करत्रये ॥ १ ॥
धान्यच्छेदः शुभो रिक्तां हित्वा भौमशनैश्चरौ ॥ २ ॥

तीनों पूर्वा, तीनों उत्तरा, मघा, आश्लेषा, ज्येष्ठा, आर्द्रा, श्रवण, धनिष्ठा, भरणी, कृत्तिका, मूल, मृगशिरा, पुष्य, हस्त, चित्रा और स्वाती, इन नक्षत्रों में धान्यच्छेदन शुभ है। तथा रिक्ता ४।९।१४ तिथि, मङ्गलवार और शनिवार वर्जित हैं ॥ १-२ ॥

सस्य-रोपण-मुहूर्त ।

हस्तत्रयोत्तरामूले धनिष्ठारोहिणीमृगे ।
पुष्याश्विन्यनुराधायां मघायां शुभवासरे ॥ १ ॥
त्यक्त्वा रिक्तां शनिं भौमं सस्यस्याङ्कुररोपणम् ॥ २ ॥

हस्त, चित्रा, स्वाती, तीनों उत्तरा, मूल, धनिष्ठा, रोहिणी, मृगशिरा, पुष्य, अश्विनी, अनुराधा और मघा इन नक्षत्रों में तथा शुभ वारों में सस्य-रोपण शुभ है। रिक्तातिथि, शनिवार और मङ्गलवार वर्जित हैं ॥ १-२ ॥

सस्य, वृक्ष, लता आदि के सेचन का मुहूर्त ।

सस्यारोपोदिते काले हित्वा ज्ञार्कं मघा करम् ।
वृक्षसस्यलतादीनां प्रशस्तं जलसेचनम् ॥ १ ॥

सस्यारोपण में जो नक्षत्र आदि कहे हैं, उनमें खेती के वृक्ष लता आदि का सींचना शुभ है। परन्तु बुधवार और रविवार दिन तथा मघा और हस्त नक्षत्र वर्जित है ॥ १ ॥

कण-मर्दन-मुहूर्त ।

अनुराधाश्रवे मूले रेवत्यां च मघात्रिभे ।
ज्येष्ठायां चैव रोहिण्यां शुभं स्यात्कणमर्दनम् ॥ १ ॥

अनुराधा, श्रवण, मूल, रेवती, मघा, पूर्वाफाल्गुनी, उत्तरा-फाल्गुनी, ज्येष्ठा और रोहिणी इन नक्षत्रों में कण-मर्दन शुभ है ॥१॥

धान्य-स्थित-मुहूर्त ।

पुनर्भे मृगशीर्षेऽन्त्येऽनुराधाश्रवणत्रये ।
हस्तत्रयेऽश्विनीपुष्ये रोहिण्यामुत्तरात्रये ॥ १ ॥
गुरौ शुक्ररवीन्द्वोः सत्कोष्ठादौ धान्यरक्षणम् ॥ २ ॥

पुनर्वसु, मृगशिरा, रेवती, अनुराधा, श्रवण, धनिष्ठा, शत-भिष, हस्त, चित्रा, स्वाती, अश्विनी, पुष्य, रोहिणी और तीनों उत्तरा इन नक्षत्रों में गुरुवार, शुक्रवार, रविवार और सोमवार इन दिनों में कोष्ठ (बखारी, डहरा आदि) में अन्न का रखना शुभ है ॥ १-२ ॥

हवन-चक्र-विचार।

सूर्यभात्त्रित्रिभे चान्द्रे सूर्यविच्छुक्रपङ्गवः।
चन्द्रारेज्यागुशिखिनो नेष्टा होमाहुतिः खले॥ १॥

सूर्य के नक्षत्र से दिन-नक्षत्र तक होम-चक्र गिने। तीन-तीन नक्षत्र सूर्यादि ग्रहों में स्थापित करे। उसका फल चक्र न्यास से समझ लेना और ग्रह भी चक्र से जान लेना। क्रूरग्रह का अशुभ फल तथा शुभग्रह का शुभ फल जानिए॥ १॥

हवन-चक्र।

सू.	बु.	शु.	श.	चं.	मं.	बु.	रा.	के.	ग्रह
३	३	३	३	३	३	३	३	३	नक्षत्र
अ.	शु.	शु.	अ.	शु.	अ.	शु.	अ.	अ.	फल

अग्नि-वास-विचार।

सैका तिथिर्वारयुता कृताप्ता
शेषे गुणेऽभ्रे भुवि वह्निवासः।
सौख्याय होमे शशियुग्मशेषे
प्राणार्थनाशौ दिवि भूतले च॥ १॥

शुक्लपक्ष की परीवा से गिनकर जो तिथियाँ हों उनमें रविवार आदि की वार संख्या जोड़ देना। उसमें एक और जोड़ देना। फिर चार से भाग देना। जो शेष तीन बचें अथवा शून्य बचे तो अग्नि का वास पृथ्वी में जानना। उसमें हवन करने से सुख प्राप्त होता है। एक बचे तो अग्नि-वास आकाश में जानना। उसका फल प्राण-नाशक है। जो दो बचे तो पाताल में

अग्नि का वास जानना । उसका फल अर्थनाशक है ॥ १ ॥

कृष्णपक्ष का उदाहरण ।

श्रीसंवत् १९४८ शक १८१३ भाद्रकृष्णचतुर्दश्यां १४ रवाविष्टम् १ । १५ ॥

शुक्लपक्ष की प्रतिपदा से कृष्णपक्ष की चतुर्दशी तक २९ हुए । उसमें एक और जोड़ दिया तो ३० हुए, उसमें रविवार जोड़ दिया तो हुए ३१, इसमें चार का भाग दिया तो बचे तीन इसलिए अग्नि का वास पृथ्वी में जानिए ।

शुक्लपक्ष का उदाहरण ।

श्रीसंवत् १९४८ शक १८१३ भाद्रशुक्ल ८ शुक्रेष्टम् ४।००

तिथि अष्टमी में एक जोड़ दिया तो ९ हुए, उसमें वार का ६ अङ्क जोड़ दिया तो १५ हुए, फिर चार का भाग दिया तो शेष बचे तीन, इसलिए अग्नि का वास पृथ्वी में जानिए ।

नवान्न का मुहूर्त ।

नवान्नं स्याच्चरक्षिप्रमृदुभे सत्तनौ शुभम् ।
विनानन्दाविषघटीमधुपौषार्किभूमिजान् ॥ १ ॥

चरसंज्ञक, क्षिप्रसंज्ञक और मृदुसंज्ञक इन नक्षत्रों में तथा शुभ-ग्रहों की लग्नों में नवान्नकर्म शुभ है । परन्तु नन्दातिथि १।६।११ तथा विषघटी, चैत्र और पौष माष तथा शनिवार और मङ्गल-वार वर्जित हैं ॥ १ ॥

विष-घटी-दोष-विचार ।

खरांमतोऽन्त्यादितिवह्निपित्र्यमे
खवेदतः के, रदतंश्च सार्पभे ।

[५०]खबाणतोऽश्वे [१८]धृतितोऽर्यमाम्बुपे
[२०]कृतेभगत्वाष्ट्रभविश्वजीवभे ॥ १ ॥
[१४]मनोर्द्धिदैवानिलसौम्यशाक्रभे
[२१]कुपक्षतः शैवकरेष्टि[१६] तोऽजभे ।
[२४]युगाश्वितो बुध्न्यभतोययाम्यभे
[१०]खचन्द्रतो मित्रभवासवश्रुतौ ॥ २ ॥
मूलेऽ[५६]ङ्गबाणाद्विषनाडिकाः कृता
वर्ज्याः शुभेऽथो विषनाडिका ध्रुवाः ।
निघ्ना भभोगेन [६०]खर्तर्कभाजिताः
स्फुटा भवेयुर्विषनाडिकास्तथा ॥ ३ ॥

विषघटियों के जानने का उपाय।

रेवती, पुनर्वसु, कृत्तिका, मघा इन नक्षत्रों में ३० घटी के बाद की ४ घड़ी, रोहिणी में ४० घटी के बाद की ४ घड़ी, आश्लेषा में ३२ घटी के बाद की ४ घड़ी, अश्विनी में ५० घटी के बाद की ४ घड़ी, उत्तराफाल्गुनी और शतभिष में १८ घटी के बाद की ४ घड़ी, पूर्वाफाल्गुनी, चित्रा, उत्तराषाढ़, पुष्य इन नक्षत्रों में २० घटी के बाद की ४ घड़ी, विशाखा, स्वाती, मृगशिरा,ज्येष्ठा इन नक्षत्रों में १४ घटी के बाद की ४ घड़ी, आर्द्रा और हस्त इन दोनों में २१ घटी के बाद की ४ घड़ी, पूर्वाभाद्रपद में १६ घटी के बाद की ४ घड़ी, उत्तराभाद्रपद, पूर्वाषाढ़, भरणी इन नक्षत्रों में २४ घटी के बाद की ४ घड़ी, अनुराधा, धनिष्ठा, श्रवण इन नक्षत्रों में १० घटी के बाद की ४ घड़ी और मूल नक्षत्र में ५६ घटी के बाद की ४ घड़ी विषघटी कही जाती हैं।

इन विषघटिकाओं में विवाहादि शुभ कार्य नहीं करना चाहिए। परन्तु इसके विचार में विशेष बात यह है कि यदि पूर्वोक्त नक्षत्रों का प्रमाण पूरे ६० दण्ड का हो तभी पूर्वोक्त नक्षत्रों की उक्त घटियों के बाद ४ दण्ड विषघटीसंज्ञक होते हैं। यदि पूर्वलिखित नक्षत्रों का मान ६० दण्ड से न्यून किंवा अधिक हो तब उस नक्षत्र के प्रस्तुत मान को पहले कहे हुए उस नक्षत्र के अङ्क से गुणा करे। उस गुणा की हुई संख्या में ६० का भाग देने से जो लब्धि मिले उतने ही दण्ड के बाद की ४ घड़ी विषघटीसंज्ञक होती हैं।

विष-घटी-चक्र।

अ.	भ.	कृ.	रो.	मृ.	आ.	पु.	नक्षत्र.
५०	२४	३०	४०	१४	२१	३०	घटी.
पुष्य.	श्ले.	म.	पू. फा.	उ. फा.	ह.	चि.	नक्षत्र.
२०	३२	३०	२०	१८	११	२०	घटी.
स्वा.	वि.	अनु.	ज्ये.	मू.	पू. षा.	उ. षा.	नक्षत्र.
१४	१४	१०	१४	५६	२४	२०	घटी.
श्र.	ध.	श.	पू. भा.	उ. भा.	रे.	×	नक्षत्र.
१०	१०	१८	१६	२४	३०	×	घटी.

इन नक्षत्रों की पूर्वलिखित घटियों के अनन्तर चार घड़ी तक विषघटी होती हैं ॥ १-३ ॥

नवान्नचक्र-विचार।

बुधर्क्षात्पुत्रपुत्रेषु पुत्रवेदद्वयेन्दुकैः।

सच्छुमं शुभमर्थघ्नं शुभं व्यर्थं शुमं क्रमात् ॥ १ ॥
नवान्नचक्रं ज्ञातव्यं कथितं गणकोत्तमैः ॥ २ ॥

बुध के नक्षत्र से दिन के नक्षत्र तक गिने । प्रथम पाँच नक्षत्र शुभ हैं, फिर पाँच शुभ हैं, फिर पाँच शुभ हैं, फिर पाँच अर्थनाशक हैं, फिर चार शुभ हैं, फिर दो शुभ नहीं हैं, फिर एक शुभ है ॥ १ ॥ यह नवान्नचक्र विचारना चाहिए, ऐसा उत्तम पण्डितों ने कहा है ॥२॥

अथ नवान्न-चक्र ।

५	५	५	५	४	२	१	नक्षत्र
शुभ	शुभ	शुभ	अर्थनाश	शुभ	अशुभ	शुभ	फल.

अग्नि-विचार का परिहार ।

विवाहयात्राव्रतगोचरेषु चूडोपनीते ग्रहणे युगाद्यैः ।
दुर्गाविधानेन सुत प्रसूतौ नैवाग्निचक्रं परिचिन्तनीयम् १

विवाह का होम, यात्रा का होम, व्रत का होम, गोचर-के ग्रहों का होम, मुण्डन और जनेऊ का होम, ग्रहण का होम, युगादि तिथियों का होम, श्रीदुर्गाजी का होम तथा बालक के जन्मप्रसूति का होम अर्थात् मूलादिशान्ति इन कार्यों में अग्नि चक्र का विचार न करे ॥ १ ॥

युगादि और मन्वादि-तिथि-विचार

मन्वाद्यास्त्रितिथी मधौ तिथिरवी ऊर्जे शुचौ दिक्तिथी
ज्येष्ठेऽन्त्ये च तिथिस्त्विषे नवतपस्यश्वाः सहस्ये शिवाः ।
भाद्रेऽग्निश्च सिते त्वमाष्टनभसः कृष्णे युगाद्याः सिते
गोऽग्नीबाहुलराधयोर्मदनदशौं भाद्रमाघा सिते ॥ १ ॥

शुक्लपक्ष में मन्वादि तिथियाँ होती हैं—

चैत्र आदि में मन्वादि तिथियाँ ।

चैत्रमास में तृतीया तिथि, कार्त्तिक में पूर्णमासी तथा द्वादशी, आषाढ़ में दशमी व पूर्णमासी, ज्येष्ठ और फाल्गुन में पूर्णमासी, आश्विन में नवमी, माघ में सप्तमी, पौष में एकादशी और भाद्रपद में तृतीया तिथि मन्वादि होती हैं। एवं श्रावणमास के कृष्ण पक्ष में अमावस व अष्टमी तिथि मन्वादि होती है।

युगादिसंज्ञक तिथियाँ ।

शुक्लपक्ष में कार्त्तिक की नवमी और वैशाख की तीज युगादि होती है। कृष्णपक्ष में भाद्रपदमास की तेरस तथा माघ में अमावस की युगादिसंज्ञा है, इनमें पुण्यकाल होता है ॥ १ ॥

शुक्लपक्ष में मन्वादितिथि-चक्र ।

चैत्र	कार्तिक	आषाढ़	ज्येष्ठ	फाल्गुन	आश्विन	माघ	पौष	भाद्र	मास
३	१५ १	१० १५	१५	१५	९	७	११	३	तिथि

कृष्णपक्ष में मन्वादितिथि-चक्र ।

श्रावण	मास
३०।८	तिथि

शुक्लपक्ष में युगादितिथि-चक्र ।

कार्त्तिक	वैशाख	मास
९	३	तिथि

कृष्णपक्ष में युगादितिथि-चक्र ।

भाद्र	माघ	मास
१३	३०	तिथि

रोग-मुक्त के स्नान का मुहूर्त ।

इन्दोर्वारे भार्गवे च ध्रुवेषु
सार्पादित्यस्वातियुक्तेषु भेषु ।
पित्र्ये चान्त्ये चैव कुर्यात्कदाचि-
न्नैव स्नानं रोगमुक्तस्य जन्तोः ॥ १ ॥
लग्ने चरे सूर्यकुजेज्यवारे
रिक्तातिथौ चन्द्रबले च हीने ।
केन्द्रत्रिकोणार्थगते च पापे
स्नानं हितं रोगविमुक्तकानाम् ॥ २ ॥

सोमवार, शुक्रवार, ध्रुवसंज्ञक नक्षत्र, आश्लेषा, पुनर्वसु, स्वाती, मघा और रेवती ये नक्षत्र और वार रोगी के स्नान में वर्जित हैं ॥ १ ॥ चर लग्न १ । ४ । ७ । १० रविवार, मङ्गलवार और बृहस्पतिवार तथा रिक्ता ४ । ९ । १४ तिथि, ये शुभ हैं । तथा चन्द्रमा बल से हीन हो और केन्द्र १ । ४ । ७ । १० त्रिकोण ९ । ५ या अर्थ २ में पापग्रह होने चाहिए ॥ २ ॥

रोगोत्पन्न शुभाशुभविचार ।

स्वातिश्लेषारौद्रपूर्वात्रयेषु
शाक्रे भौमे सूर्यजे सूर्यवारे ।

नन्दा रिक्ता यस्य रोगस्य प्राप्ति-
मृत्युर्ज्ञेयः शङ्करो रक्षिताऽपि ॥ १ ॥
पक्षाद्धस्ते वासवेषु द्विदैवे
मूलाश्विन्योरग्निधिष्ण्ये नवाहात् ।
याम्ये त्वाष्ट्रे वैष्णवे वारुणे च
नैरुज्यं स्यान्नू नमेकादशाहात् ॥ २ ॥
अहिर्बुध्न्ये तिष्यसंज्ञे सभागे
प्राजापत्यादित्ययोः सप्तरात्रात् ।
रोगान्मुक्तिर्जायते मानवानां
निःसंदिग्धं जल्पितं गर्गमुख्यैः ॥ ३ ॥

स्वाती, आश्लेषा, आर्द्रा, तीनों पूर्वा, ज्येष्ठा ये नक्षत्र हों तथा मङ्गलवार, शनिवार और रविवार ये वार हों तथा नन्दा १ । ६ । ११ रिक्ता ४ । ९ । १४ तिथि हों तो इनमें जो रोग उत्पन्न हो उसे यदि महादेवजी भी रक्षा करें, तो न जीवे ॥ १ ॥ हस्त मे जो रोग उत्पन्न हो तो पन्द्रह दिन में आराम होवे । धनिष्ठा, विशाखा, मूल, अश्विनी और कृत्तिका इन नक्षत्रों में रोग उत्पन्न होवे तो नव दिन में आराम हो । भरणी, चित्रा, श्रवण और शतभिष इनमें यदि रोग उत्पन्न हो तो ग्यारह दिन में आराम हो ॥ २ ॥ उत्तराभाद्रपद, पुष्य, पुर्वाफाल्गुनी, अभिजित् और पुनर्वसु इनमें रोग होवे तो सात दिन रहे उसके बाद मनुष्य आराम होकर निःसंदेह जीवे । ऐसा गर्गादि आचार्य कहते हैं ॥ ३ ॥

सर्प-दंश का विचार ।

यः कृत्तिकामूलमघाविशाखा
सार्पान्तकार्द्रासु भुजङ्गदष्टः ।

स वैनतेयेन सुरक्षितोऽपि
प्राप्नोति मृत्योर्बदनं मनुष्यः ॥ १ ॥

कृत्तिका, मूल, मघा, विशाखा, आश्लेषा, भरणी और आर्द्रा इन नक्षत्रों में जिसको सर्प काटे उसकी रक्षा गरुड़ भी करें तो भी मरने से न बचे ॥ १ ॥

शिल्प-विद्या का मुहूर्त।

मृदुध्रुवक्षिप्रचरे ज्ञे गुरौ वा खलग्नगे।
विधौ ज्ञजीववर्गस्थे शिल्पविद्या प्रशस्यते ॥ १ ॥

मृदुसंज्ञक, ध्रुवसंज्ञक, क्षिप्रसंज्ञक और चरसंज्ञक नक्षत्रों में, लग्न में किंवा दशवें स्थान में बुध और बृहस्पति के रहते हुए, बुध और बृहस्पति के षड्वर्ग में चन्द्रमा के रहते, शिल्प-विद्या अर्थात् लकड़ी, पत्थर, चित्र इत्यादि की कारीगरी सीखना शुभदायक होता है ॥ १ ॥

मुद्रा-पातन का मुहूर्त।

चित्रामृगान्त्यकरपुष्यहयानुराधा-
धात्र्युत्तरे श्रवणतस्त्रितयेऽदितौ च।
स्वातौ विचन्द्ररविजेऽहनि पातनं स्या-
त्पूर्णासु सुष्ठु च जयासु सुमुद्रिकाणाम् ॥ १ ॥

चित्रा, मृगशिरा, रेवती, हस्त, पुष्य, अश्विनी, अनुराधा रोहिणी, तीनों उत्तरा, श्रवण, धनिष्ठा, शतभिष, पुनर्वसु और स्वाती इन नक्षत्रों में रुपया बनाना शुभ है। इस कार्य में चन्द्रवार और शनिवार वर्जित है। तथा पूर्णा तिथि ५। १०। १५ और जया तिथि ३। ८। १३ शुभ है ॥ १ ॥

काष्ठादि-स्थापन का विचार ।

सूर्यर्क्षाद्रसभैरधःस्थलगतैः पाको रसैः संयुतः
शीर्षे युग्ममितैः शवस्य दहनं मध्ये युगैः सर्पभीः ।
प्रागाशादिषु वेदभैः स्वसुहृदां स्यात्सङ्गमो रोगभीः
क्वाथादेः करणं सुखं च गदितं काष्ठादिसंस्थापने ॥१॥

पञ्चक-रहित सूर्य के नक्षत्र से दिन-नक्षत्र तक काष्ठचक्र गिने । छः नक्षत्र काष्ठ के नीचे स्थापित करे । उसका फल भोजन रस से संयुक्त हो । दो नक्षत्र शिर में देवे इसका फल मुर्दा के दाह में ईंधन लगे । मध्य में चार देवे उसका फल सर्प निकले । पूर्व आदि चारों दिशाओं में चार-चार नक्षत्र देवे उसका फल पूर्व में मित्र से मिलाप और दक्षिण में रोग हो । पश्चिम में रोग हो और उसका दवा में ईंधन लगे । उत्तर में पड़े तो सुख होय ॥ १ ॥

काष्ठादि-स्थापन का चक्र ।

अधः	शीर्ष	मध्य	पूर्व	दक्षिण	पश्चिम	उत्तर	स्थान
६	२	४	४	४	४	४	नक्षत्र
सरसपाक	शवदाहक	सर्प का भय	मित्रसंगम	रोग	क्वाथ	सुख	फल
शुभ	अशुभ	अशुभ	शुभ	अशुभ	अशुभ	शुभ	शुभाशुभ

प्रेत-कर्म का मुहूर्त।

क्षिप्राहिमूलेन्द्रहरीशवायुभे
प्रेतक्रिया स्याज्झषकुम्भगे विधौ।
प्रेतस्य दाहं यमदग्गिमं त्यजे-
च्छय्यावितानं गृहगोपनादि च ॥ १ ॥

क्षिप्रसंज्ञक, आश्लेषा, मूल, ज्येष्ठा, श्रवण, आर्द्रा और स्वाती इन नक्षत्रों में प्रेतकर्म शुभ है। परन्तु कुम्भ और मीन के चन्द्रमा में प्रेत का दाह त्याज्य है एवं दक्षिण दिशा की यात्रा भी वर्जित है। खटिया का बिनवाना, तंबू बनवाना और मकान छावना वर्जित है। आदि शब्द से सब तृण-क्रिया त्याज्य हैं ॥ १ ॥

नारायण-बलि का मुहूर्त।

शुक्रारार्किषु दर्शभूतमदने नन्दासु तीक्ष्णोग्रभे
पौष्णे वारुणमे त्रिपुष्करदिने न्यूनाधिमासेऽयने।
याम्येऽब्दात्परतश्च पातपरिघे देवेज्यशुक्रास्तके
भद्रावैधृतिके शवप्रतिकृतेर्दाहो न पक्षे सिते ॥ १ ॥
जन्मप्रत्यरितारयोर्मृति सुखान्त्येऽब्जे च कर्तुर्न स-
न्मध्योमित्रभगादिति ध्रुवविशाखाद्र्यङ्घ्रिज्ञभेऽपिच।
श्रेष्ठोऽर्केज्यविधोर्दिने श्रुतिकरस्वात्यश्विपुष्ये तथा
त्वाशौचात्परतो विचार्यमखिलं मध्ये यथासम्भवम् ॥२॥

शुक्र, मंगल और शनिवार तथा अमावस, चतुर्दशी, तेरस, नन्दा १। ६। ११ तिथि, तीक्ष्णसंज्ञक, उग्रसंज्ञक तथा रेवती और शतभिष ये नक्षत्र एवं त्रिपुष्कर दिन तथा क्षयमास और मलमास ये सम्पूर्ण वारादिक नारायण-बलि-क्रिया में वर्जित

हैं । वर्ष के उपरान्त दक्षिणायन सूर्य वर्जित हैं । पात व परिघ-योग व बृहस्पति और शुक्र का अस्त तथा भद्रा और वैधृतियोग तथा शुक्लपक्ष वर्जित हैं ॥ १ ॥ जन्मतारा व पाँचवाँ तारा और चौथा, आठवाँ, बारहवाँ चन्द्रमा ये कर्ता को अशुभ हैं । अनुराधा, पूर्वाफाल्गुनी, पुनर्वसु, ध्रुवसंज्ञक, विशाखा, मृगशिरा, चित्रा और धनिष्ठा इन नक्षत्रों में तथा बुधवार को दाह मध्यम है । रविवार, बृहस्पतिवार, चन्द्रवार ये दिन तथा श्रवण, हस्त, स्वाती, अश्विनी और पुष्य इन नक्षत्रों में नारायण-बलि शुभ है । तथा सूतक के अनन्तर सब विचार करना उचित है और सूतक के भीतर यथासंभव विचार करना चाहिए ॥ २ ॥

नौका-कर्म का मुहूर्त ।

शुभाह्ने विष्णुयुग्मेन्द्रमृगमैत्राश्विपाणिषु ।
चालनं घट्टनं स्थानान्नावः शुभतिथीन्दुषु ॥ १ ॥

शुभवार तथा श्रवण, धनिष्ठा, ज्येष्ठा, मृगशिरा, अनुराधा, अश्विनी और हस्त ये नक्षत्र एवं शुभतिथि तथा शुभचन्द्र में नाव का चलाना व बनाना शुभ है ॥ १ ॥

जलाशय, बाग, देवता आदि की प्रतिष्ठा का मुहूर्त ।

जलाशयारामसुरप्रतिष्ठा
सौम्यायने जीवशशाङ्कशुक्रे ।
दृश्ये मृदुक्षिप्रचरे ध्रुवे स्या-
त्पक्षे सितस्वर्क्षतिथिक्षणे वा ॥ १ ॥
रिक्तारवर्ज्ये दिवसेऽतिशस्ता
शशाङ्कपापैस्त्रिभवाङ्गसंस्थैः ।
व्यष्टान्त्यगैः सत्खचरैर्मृगेन्द्रे

सूर्यो घटे को युवतौ च विष्णुः ॥ २ ॥
३।६।९।१२
शिवो नृयुग्मे द्वितनौ च देव्याः
१।४।७।१० २।५।८।११
क्षुद्राश्चरे सर्व इमे स्थिरर्क्षे।
पुष्ये ग्रहा विघ्नपयक्षसर्प-
भूतादयोऽन्त्ये श्रवणेजिनश्च ॥ ३ ॥

जलाशय, बाग़ तथा देवता की प्रतिष्ठा का मुहूर्त लिखते हैं— उत्तरायण सूर्य हों, बृहस्पति, चन्द्रमा और शुक्र उदित हों, मृदुसंज्ञक, क्षिप्र-संज्ञक, चरसंज्ञक और ध्रुवसंज्ञक ये नक्षत्र शुभ हैं। शुक्लपक्ष हो, जिस नक्षत्र व जिस तिथि का स्वामी जो देवता है वही नक्षत्र व तिथ्यादिक भी प्रतिष्ठा में शुभ हैं। जिस मुहूर्त का जो देवता स्वामी है उस मुहूर्त में भी शुभ जानिए ॥ १ ॥ रिक्तातिथि ४।९।१४ और मङ्गलवार वर्जित है। चन्द्रमा व पापग्रह तीसरे, ग्यारहवें, छठे और शुभग्रह आठवें, बारहवें वर्जित हैं। सूर्य की प्रतिष्ठा सिंहलग्न में, ब्रह्मा की प्रतिष्ठा कुम्भलग्न में और कन्या लग्न में विष्णु की प्रतिष्ठा करे। मिथुनलग्न में महादेवजी की प्रतिष्ठा शुभ है। द्विस्वभावलग्न ३।६।९।१२ में देवीजी की प्रतिष्ठा शुभ है। क्षुद्रदेवता की प्रतिष्ठा चरलग्न में शुभ है। जो छोटे देवता हैं उनकी क्षुद्रसंज्ञा है और स्थिर-लग्न में सब देवताओं की प्रतिष्ठा शुभ है ॥२॥ पुष्य नक्षत्र में ग्रहस्थापन करे तथा गणेश, यज्ञ, सर्प, भूत आदि की प्रतिष्ठा रेवती नक्षत्र में करे और श्रवण नक्षत्र में जिन अर्थात् बुद्धदेव की प्रतिष्ठा शुभ है ॥ ३ ॥

सर्वारम्भ-मुहूर्त।

व्ययाष्टशुद्धोपंचये लग्नगे शुभदृग्युते।

चन्द्रे त्रिषड्दशायस्थे सर्वारम्भः प्रसिद्ध्यति ॥ १ ॥

लग्न से बारहवाँ और आठवाँ शुद्ध हो अर्थात् कोई ग्रह न हो, उपचय लग्न हो अर्थात् जन्मलग्न व जन्मराशि से तीसरा, छठा, दशवाँ, ग्यारहवाँ लग्न हो और शुभग्रहों की दृष्टि हो तथा शुभग्रहयुक्त हो, चन्द्रमा जन्मलग्न व जन्मराशि से तीसरे, छठे, दशवें, ग्यारहवें हो तो सर्वारंभ शुभ है। अर्थात् शुभाशुभ कार्य करना शुभ है ।। १ ।।

पादुका आदि के धारण का मुहूर्त ।

मैत्रेऽन्त्यचन्द्रयममादितिवाजिचित्रा-
हस्तोत्तरात्रयहरीज्यविधातृ मानि ।
एतेष्वतीवशयनासनपादुकानां
संभोगकार्यमुदितं मुनिभिः शुभाहे ॥ १ ॥

मुहूर्त-दीपिकाकार ने लिखा है कि अनुराधा, रेवती, मृगशिरा, भरणी, पुनर्वसु, अश्विनी, चित्रा, हस्त, तीनों उत्तरा, श्रवण, पुष्य, रोहिणी इन नक्षत्रों में और शुभ दिन में शय्या, आसन व खड़ाऊँ धारण करना शुभ है, ऐसा मुनि लोग कहते हैं ।। १ ।।

नवीनपात्र में भोजन का मुहूर्त ।

रोहिणीयुगले हस्तत्रितये रेवतीद्वये ।
श्रवणत्रितये पुष्ये पुनर्वस्वनुराधयोः ॥ १ ॥
त्र्युत्तरे बुधशुक्रेज्यवारे चामृतयोगके ।
सुवर्णरौप्यपात्रेषु भोजनादि शुभप्रदम् ॥ २ ॥

'मुहूर्त-गणपति'-कार ने लिखा है कि रोहिणी, मृगशिरा, हस्त, चित्रा, स्वाती, रेवती, अश्विनी, श्रवण, धनिष्ठा, शतभिष, पुष्य, पुनर्वसु, अनुराधा और तीनों उत्तरा,

ये नक्षत्र बुधवार, शुक्रवार और गुरुवार अथवा अमृतयोग में सोने तथा चाँदी के पात्र में भोजन करना शुभ है ॥ १-२ ॥

अमृत-सिद्धि योग ।

हस्ते रवौ शशधरे च मृगोत्तमर्क्षं
भौमेऽश्विनी बुधदिने च तथाऽनुराधा ।
तिष्यो गुरौ भृगुसुतेऽपि च पौष्णधिष्णं
रोहिण्यथार्कतनयेऽमृतसिद्धियोगाः ॥ १ ॥

रविवार के दिन हस्तनक्षत्र हो, चन्द्रवार को मृगशिरा, मङ्गल को अश्विनी, बुध को अनुराधा, बृहस्पति को पुष्य, शुक्र को रेवती और शनैश्चर को रोहिणी हो तो अमृतसिद्धि योग होता है । ऐसा 'रत्न-माला'-नामक ग्रन्थ में कहा है ॥ १ ॥

नवीन पात्र-चक्र ।

पात्रचक्रं प्रवक्ष्यामि यदुक्तं शक्तियामले ।
सूर्यभाच्चन्द्रपर्यन्तं गणनीयं सदा बुधैः ॥ १ ॥
दिक्षु दिक्षु द्वयं न्यस्य मध्ये चैकादशं न्यसेत् ।
वर्तुलाकारचक्रस्य भोक्तृपात्रस्य निर्णयः ॥ २ ॥
बन्धनं सौख्यहानी च लाभं सौख्यं मृतिस्तथा ।
पुत्रमायुश्शोकवृद्धी पूर्वादिक्रमतो भवेत् ।
रिक्तानष्टेन्दुषष्ठीश्च विष्णोः सुप्तं विवर्जयेत् ॥ ३ ॥

शक्तियामल में पात्र-चक्र के विषय में कहा है कि सूर्य के नक्षत्र से दिन के नक्षत्र तक गिने । पूर्वादि आठ दिशाओं में दो-दो नक्षत्र स्थापित करे और ग्यारह नक्षत्र मध्य में रखकर गोल-चक्र द्वारा भोजन-पात्र का निर्णय करे । पूर्व में पड़े तो बंधन हो,

आग्नेय में सुख, दक्षिण में हानि, नैर्ऋत्य में लाभ, पश्चिम में सुख, वायव्य में मृत्यु, उत्तर में पुत्र-लाभ, ईशान में शोक और मध्य में वृद्धि होवे। रिक्तातिथि ४।९।१४ अमावस, छठ और विष्णुशयन (अर्थात् आषाढ़ सुदी एकादशी से कार्त्तिक-सुदी एकादशी तक) ये सब भोजन-पात्र में वर्जित हैं ॥ १-३ ॥

नवीनपात्र-चक्र ।

पू०	आ०	द०	नै०	प०	वा०	उ०	ई०	मध्य	दिशा
२	२	२	२	२	२	२	२	११	नक्षत्र
अ०	शु०	अ०	शु०	शु०	अ०	शु०	अ०	शुभ	फल

नवाङ्गना-भोग का मुहूर्त ।

प्रथमाभिगमः शस्तो नवबध्वाः शुभेऽहनि ।
गर्भाधानोक्तनक्षत्रे शस्ते ज्योत्स्नाकरे निशि ॥ १ ॥

नवीन स्त्री का भोग गर्भाधान के नक्षत्रों में अर्थात् मृगशिरा, अनुराधा, श्रवण, रोहिणी, हस्त, तीनों उत्तरा, स्वाती, धनिष्ठा और शतभिष इन नक्षत्रों में शुभ है तथा चन्द्रशुद्धि और रात्रि का समय आवश्यक है ॥ १ ॥

ईंट पाथने का मुहूर्त ।

उत्तराश्विश्रवे पुष्ये ज्येष्ठान्त्ये रोहिणीकरे ।
स्थिरेऽङ्गेऽर्के गुरौ मन्दे इष्टिकारम्भणं चरेत् ॥ १ ॥

तीनों उत्तरा, अश्विनी, श्रवण, पुष्य, ज्येष्ठा, रेवती, रोहिणी और हस्त इन नक्षत्रों में ईंट पाथना शुभ है। स्थिर लग्न २।५ ८।११ तथा रविवार, गुरुवार और शनिवार शुभ है ॥ १ ॥

रत्न-परीक्षा का मुहूर्त ।

पुनर्भे शतहस्तर्क्षे श्रवे ज्येष्ठे परीक्षणम् ।
रत्नानामष्टमीं भूतं हित्वा भौमं शनैश्चरम् ॥ १ ॥

पुनर्वसु, शतभिष, हस्त, श्रवण और ज्येष्ठा इन नक्षत्रों में रत्न-परीक्षा शुभ है । अष्टमी और चतुर्दशी तिथि, मङ्गलवार और शनिवार वर्जित है ॥ १ ॥

कलश-चक्र का विचार ।

सूर्यभात्पञ्चरामाद्रिवसुपञ्च शुभाशुभम् ।
फलं क्रमाद्बुधैर्ज्ञेयं चक्रे कलशसंज्ञके ॥ १ ॥

सूर्य के नक्षत्र से दिन-नक्षत्र तक कलश-चक्र लिखे । प्रथम पाँच नक्षत्र शुभ, फिर तीन अशुभ, सात शुभ, आठ अशुभ और पाँच शुभ क्रम से जानना चाहिए ॥ १ ॥

कलश-चक्र ।

५	३	७	८	५	नक्षत्र
शुभ	अशुभ	शुभ	अशुभ	शुभ	फल

शस्त्र-घट्टन-मुहूर्त ।

कृत्तिकासु विशाखायां भौमार्कशनिवासरे ।
सल्लग्ने घट्टितं शस्त्रं नृपाणां जयदायकम् ॥ १ ॥

कृत्तिका और विशाखा नक्षत्र में तथा भौमवार, रविवार और शनिवार दिनों में, शुभग्रहों के लग्नों में हथियार बनावे तो राजाओं को विजयकारी होता है ॥ १ ॥

पुनर्वसुद्वये हस्ते चित्रायां रोहिणीद्वये ।
त्रिशाखादित्रये कुर्यात्त्र्युत्तरे रेवतीद्वये ॥ १ ॥
रिक्तां विना तिथौ सूर्यशुक्रजीवदिने तथा ।
सन्नाहच्छुरिकाखड्गकुन्तशस्त्रादिधारणम् ॥ २ ॥

पुनर्वसु, पुष्य, हस्त, चित्रा, रोहिणी, मृगशिरा, विशाखा, अनुराधा, ज्येष्ठा, तीनों उत्तरा, रेवती और अश्विनी इन नक्षत्रों में, रिक्ता तिथि को छोड़कर रविवार, शुक्रवार और गुरुवार को बख्तर, छुरी, तलवार, भाला इत्यादि शस्त्रों का धारण करना शुभ है ॥ १-२ ॥

अग्नि-शस्त्र के घट्टन और धारण का मुहूर्त ।

विशाखाकृत्तिकापूर्वा मघाश्लेषाश्विनीमृगे ।
मूलार्द्राभरणीज्येष्ठा सजीवे क्रूरवासरे ॥ १ ॥
घट्टनं धारणं प्रोक्तं वह्निशस्त्रस्य शोभनम् ॥ २ ॥

विशाखा, कृत्तिका, पूर्वा, मघा, आश्लेषा, मृगशिरा, मूल, आर्द्रा, भरणी और ज्येष्ठा इन नक्षत्रों में बृहस्पतिवार, रविवार, मङ्गलवार और शनिवार इन वारों में अग्नि-शस्त्र बनाना और धारण करना शुभदायक होता है ॥ १-२ ॥

शिकार खेलने का मुहूर्त ।

आश्लेषाभरणीज्येष्ठापूर्वार्द्रास्वातिमूलकैः ।
विशाखायां च पापेऽह्नि यायादाखेटकं नृपः ॥ १ ॥

आश्लेषा, भरणी, ज्येष्ठा, तीनों पूर्वा, आर्द्रा, स्वाती, मूल और विशाखा इन नक्षत्रों में, पाप-वारों में अर्थात् रविवार, भौमवार और शनिवार में राजा को शिकार खेलना शुभदायक होता है ॥ १ ॥

भूमि में धन स्थापित करने का मुहूर्त ।

धनिष्ठोफाविशाखाख्ये पूर्वाषाढाभिधेऽन्त्यभे ।
रोहिण्यां च निधेर्भूमौ स्थापनं शुभमीरितम् ॥ १ ॥

धनिष्ठा, उत्तराफाल्गुनी, विशाखा, पूर्वाषाढ़, रेवती और रोहिणी इन नक्षत्रों में भूमि में द्रव्य स्थापित करना शुभ है ॥१॥

वाणिज्य का मुहूर्त ।

अनुराधोत्तरापुष्ये रेवतीरोहिणीमृगे ।
हस्तचित्राश्विभे कुर्याद्वाणिज्यं दिवसे शुभे ॥ १ ॥

अनुराधा, तीनों उत्तरा, पुष्य, रेवती, रोहिणी, मृगशिरा, हस्त, चित्रा और अश्विनी इन नक्षत्रों तथा शुभ वारों में वाणिज्य का मुहूर्त शुभ है ॥ १ ॥

धर्म-क्रिया का मुहूर्त ।

धर्मक्रियामित्रमृगान्त्यचित्रा-
श्रुतित्रयस्वात्यदितौ कराश्वे ।
पुष्ये च सौम्येषु दिनेषु शस्ते-
त्याहुर्मुहूर्तागमकोविदेन्द्राः ॥ १ ॥

अनुराधा, मृगशिरा, रेवती, चित्रा, श्रवण, धनिष्ठा, शतभिष, स्वाती, पुनर्वसु, हस्त, अश्विनी और पुष्य इन नक्षत्रों में तथा शुभ वारों में धार्मिक कृत्य करना शुभ है। यह मुहूर्तविशारदों का निश्चय है ॥ १ ॥

जुलाब आदि का मुहूर्त ।

हस्तत्रयेऽश्विनीपुष्ये शतभे रोहिणीद्वये ।
श्रवणे चानुराधायां ज्येष्ठायां रक्तमोक्षणम् ॥ १ ॥

गुरुभौमार्कवारेषु कार्यं शुभतिथौ तथा ।
विरेको वमनं शुक्रे चन्द्रे चैवोक्तभादिषु ॥ २ ॥

हस्त, चित्रा, स्वाती, अश्विनी, पुष्य, शतभिष, रोहिणी, मृगशिरा, श्रवण, अनुराधा और ज्येष्ठा इन नक्षत्रों में रक्तमोक्षण अर्थात् फ़स्त खोलना शुभ है । गुरु, भौम और रविवार तथा शुभ तिथि हो और वमन (उलटी) करना व जुलाब लेना पूर्वोक्त नक्षत्रों में तथा शुक्रवार और सोमवार के दिन शुभ हैं ॥ १-२ ॥

मिलाप का मुहूर्त ।

अनुराधामघापुष्ये तिथ्यर्द्धे तैतिलाभिधे ।
लग्ने सद्दृष्टिगेऽष्टम्यां द्वादश्यां सन्धिरिष्यते ॥ १ ॥

अनुराधा, मघा और पुष्य नक्षत्र तथा तैतिल करण में मिलाप करना शुभ है । अष्टमी और द्वादशी तिथि शुभ है । लग्न पर शुभग्रहों की दृष्टि होना चाहिए ॥ १ ॥

कथाप्रारम्भचक्र-विचार ।

वेदाब्धिवेदश्रुतिवेदवेद-
फलं गुरोर्भाद्गुणमेव गण्यम् ।
अर्थश्च लाभश्च तथा च सिद्धि-
र्लाभो मृतीराजभयं च मोक्षः ॥ १ ॥
कथारम्भं प्रकुर्वीत प्रोक्तं पूर्वैर्महर्षिभिः ॥ २ ॥

बृहस्पति के नक्षत्र से दिन के नक्षत्र तक कथारम्भ-चक्र का विचार करना चाहिए । प्रथम चार नक्षत्र अर्थ के देनेवाले, फिर चार नक्षत्र लाभप्रद, फिर चार नक्षत्र सिद्धि के देनेवाले, ऐसे ही चार नक्षत्र लाभप्रद, चार नक्षत्र मृत्युकारक, चार नक्षत्र राज्यभय

को देनेवाले और तीन नक्षत्र मोक्ष को देनेवाले हैं। यह कथारम्भ-चक्र पूर्वाचार्यों ने कहा है ॥ १-२ ॥

कथारम्भ-चक्र ।

४	४	४	४	४	४	३	नक्षत्र
अर्थ	लाभ	सिद्धि	लाभ	मृत्यु	राजभय	मोक्ष	फल

नगाड़ा मृदङ्ग आदि के बजाने का मुहूर्त ।

हस्तत्रयेऽनुराधाऽन्त्ये पुनर्वसुयुगेऽश्विभे ।
श्रवत्रयमृगेऽर्केऽह्नि शुभे पूर्णाजयासु च ॥ १ ॥
शुभे दुन्दुभिभेर्यादिकरवाद्यं समीरितम् ।
वंश्याद्यं मुखवाद्यं तु पूर्वेष्वेव समीरितम् ॥ २ ॥

हस्त, चित्रा, स्वाती, अनुराधा, रेवती, पुनर्वसु, पुष्य, अश्विनी, श्रवण, धनिष्ठा, शतभिष और मृगशिरा इन नक्षत्रों में, रविवार समेत शुभ दिनों में, नगाड़ा व नफ़ीरी, मृदंग तथा वंशी इत्यादि बाजा बजाना शुभ है । पूर्णा ५।१०।१५ और जया ३।८।१३ ये तिथियाँ शुभ हैं ॥ १-२ ॥

शान्तिक-पौष्टिक कर्म का मुहूर्त ।

पुनर्वसुद्वये स्वातीत्र्युत्तरे श्रवणत्रये ।
रेवतीद्वितये हस्तेऽनुराधारोहिणीद्वये ॥ १ ॥
शान्तिकं पौष्टिकं कर्म पुण्याहे कीर्तितं बुधैः ॥ २ ॥

पुनर्वसु, पुष्य, स्वाती, तीनों उत्तरा, श्रवण, धनिष्ठा, शतभिष, रेवती, अश्विनी, हस्त, अनुराधा, रोहिणी और मृगशिरा इन नक्षत्रों में शान्तिकर्म और पुष्टिकर्म करना शुभ है। पुण्यदिन संक्रान्ति

इत्यादि तथा युगादि, मन्वादि तिथियों में इन कर्मों का करना श्रेष्ठ है ॥ १-२ ॥

वीर, वेताल आदि के साधन का मुहूर्त ।

मघार्द्राभरणीमूले मृगेऽङ्के सद्बुधे गते ।
शुद्धाष्टमे भृगौ तूर्ये वीरवेतालसाधनम् ॥ १ ॥

मघा, आर्द्रा, भरणी, मूल और मृगशिरा इन नक्षत्रों में तथा शुभग्रहों की लग्न हो और उसमें बुध बैठा हो, आठवाँ स्थान शुद्ध हो और चौथे शुक्र हो तो वीर, वेताल आदि का साधन शुभ है ॥ १ ॥

मन्त्र, यन्त्र, व्रत आदि का मुहूर्त ।

उफाहस्ताश्विनीकर्णविशाखामृगभेऽहनि ।
शुभे सूर्ययुते शस्तं मन्त्रयन्त्रव्रतादिकम् ॥ १ ॥

उत्तराफाल्गुनी, हस्त, अश्विनी, श्रवण, विशाखा और मृगशिरा इन नक्षत्रों में तथा रविवार के सहित शुभ दिनों में मन्त्र, यन्त्र और व्रत आदि का साधन शुभ है ॥ १ ॥

रजस्वला स्त्री के स्नान का मुहूर्त ।

ज्येष्ठानुराधाकररोहिणीषु
स्वातीधनिष्ठासु मृगोत्तरासु ।
रजोवतीस्नानविधिं प्रकुर्या-
च्छुभस्य वारे च शुभे तिथौ च ॥ १ ॥

ज्येष्ठा, अनुराधा, हस्त, रोहिणी, स्वाती, धनिष्ठा, मृगशिरा और तीनों उत्तरा इन नक्षत्रों में और शुभ वार तथा शुभ तिथि में रजस्वला स्त्री का स्नान शुभ है ॥ १ ॥

गर्भाधान का मुहूर्त ।

मृगानुराधाश्रुतिरोहिणीषु
हस्तोत्तरास्वातिवसौ शतर्क्षे ।
विहाय षष्ठीं शुभवासरेषु
गर्भस्य चाधानविधिं प्रकुर्यात् ॥ १ ॥
शुभे त्रिकोणकेन्द्रस्थे पापे षष्ठे त्रिलाभगे ।
पुत्रकामः स्त्रियं गच्छेन्नरो युग्मासु रात्रिषु ॥ २ ॥

मृगशिरा, अनुराधा, श्रवण, रोहिणी, हस्त, तीनों उत्तरा, स्वाती, धनिष्ठा, शतभिष ये नक्षत्र और छठ को छोड़कर शेष शुभ तिथि तथा शुभ दिन गर्भाधान में शुभ हैं। शुभ ग्रह केन्द्र १।४।७।१० व त्रिकोण ९।५ में हों, पापग्रह तीसरे, छठे, ग्यारहवें हों तो रजोधर्म के दिन से युग्म अर्थात् सम रात्रि में पुत्र की कामना वाला पुरुष स्त्रीप्रसंग करे ॥ १-२ ॥

सीमन्त-पुंसवन-कर्म मुहूर्त ।

आर्द्रात्रयं भाग्ययुग्मं मृगपूषाश्रुतिः करः ।
मूलत्रये गुरुः सूर्ये भौमे रिक्तां विना तिथिः ॥ १ ॥
आद्ये द्वये त्रये मासे लग्ने कन्याझषे स्थिरे ।
चापे पुंसवनं कुर्यात्सीमन्तं चाष्टमे तथा ॥ २ ॥

आर्द्रा, पुनर्वसु, पुष्य, पूर्वाफाल्गुनी, उत्तराफाल्गुनी, मृगशिरा, रेवती, श्रवण, हस्त, मूल, पूर्वाषाढ़, उत्तराषाढ़ ये नक्षत्र सीमन्त किंवा पुंसवन कार्य में शुभ हैं। गुरुवार, रविवार तथा मङ्गलवार शुभ है। रिक्ता तिथि वर्जित है। पहला दूसरा और तीसरा महीना गर्भ से पुंसवन में शुभ है। कन्या, मीन तथा स्थिर लग्न २।५।

८।११ शुभ हैं और धनु लग्न भी शुभ है। सीमन्त-कर्म गर्भ से आठवें महीने में शुभ है ॥ १-२ ॥

अन्य-मत से सीमन्त-पुंसवन कर्म-मुहूर्त ।

रवीज्यभौमे करमूलपुष्ये
श्रोत्रेऽदितौ पुंसवनं मृगर्क्षे ।
चरेषडर्काष्टतिथीन् विहाय
सीमन्तकर्माष्टमषष्ठमासे ॥ १ ॥

रविवार, बृहस्पतिवार और मङ्गलवार तथा हस्त, मूल, पुष्य, श्रवण, पुनर्वसु और मृगशिरा इन नक्षत्रों में पुंसवन शुभ है। छठ, द्वादशी तथा अष्टमी तिथियाँ वर्जित हैं। छठे और आठवें महीने में सीमन्त-कर्म शुभ है। नक्षत्रादि पुंसवन के जानना चाहिए ॥ १ ॥

जातकर्म-मुहूर्त ।

तज्जातकर्मादि शिशोर्विधेयं
पर्वाख्यरिक्तोनतिथौ शुभेऽह्नि ।
एकादशे द्वादशकेऽपि घस्रे
मृदुध्रुवक्षिप्रचरोडुषु स्यात् ॥ १ ॥

बालक का जातकर्म पूर्वोक्त पर्व व रिक्ता तिथि में वर्जित है। शुभ दिन हो और जन्म से ग्यारहवाँ-बारहवाँ दिन और मृदुसंज्ञक—मृगशिरा, रेवती, चित्रा, अनुराधा; ध्रुवसंज्ञक—तीनों उत्तरा और रोहिणी; क्षिप्रसंज्ञक—हस्त, अश्विनी, पुष्य, अभिजित् और चरसंज्ञक—स्वाती, पुनर्वसु, श्रवण, धनिष्ठा, शतभिष इन नक्षत्रों में शुभदायक है ॥ १ ॥

र्भ गर्भ

प्रसूता-स्नान-मुहूर्त ।

हस्ताश्विनीत्र्युत्तररोहिणीषु
मृगानुराधापवनान्त्यभेषु ।
स्नायात्प्रसूता गुरुभानुभौमे
त्यक्त्वा हरेर्वासरमष्टषष्ठीम् ॥ १ ॥

हस्त, अश्विनी, तीनों उत्तरा, रोहिणी, मृगशिरा, अनुराधा, स्वाती और रेवती ये नक्षत्र तथा गुरुवार, रविवार और मङ्गलवार प्रसूतास्नान में शुभ हैं। द्वादशी, अष्टमी और छठ ये तिथियाँ वर्जित हैं ॥ १ ॥

अन्य-मत से प्रसूता-स्नान-मुहूर्त ।

पौष्णध्रुवेन्दुकरवातहयेषु सूती-
स्नानं समित्रभरवीज्यकुजेषु शस्तम् ।
नार्द्रात्रिश्रुतिमघान्तकमिश्रमूल-
त्वाष्ट्रेज्ञसौरिवसुषड्विरिक्ततिथ्याम् ॥ १ ॥

रेवती, ध्रुवसंज्ञक—तीनों उत्तरा और रोहिणी, मृगशिरा, हस्त, स्वाती, अश्विनी, अनुराधा ये नक्षत्र तथा रविवार, बृहस्पतिवार और मङ्गलवार प्रसूता के स्नान में शुभ हैं। आर्द्रा, पुनर्वसु, पुष्य, श्रवण, मघा, भरणी, विशाखा, कृत्तिका, मूल और चित्रा वर्जित हैं। बुध और शनिवार तथा अष्टमी, छठ, द्वादशी और रिक्ता ये वर्जित हैं ॥ १ ॥

दत्तक-पुत्र लेने का मुहूर्त ।

हस्तादिपञ्चकभिषग्वसुपुष्यभेषु
सूर्यक्षमाजगुरुभार्गववासरेषु ।

रिक्ताविवर्जिततिथिष्वलिकुम्भलग्ने
सिंहे वृषे भवति दत्तसुतग्रहोऽयम् ॥ १ ॥

हस्त, चित्रा, स्वाती, विशाखा, अनुराधा, अश्विनी, धनिष्ठा और पुष्य ये नक्षत्र, रविवार, मङ्गलवार, बृहस्पतिवार और शुक्रवार ये वार दत्तक-पुत्र लेने में शुभ हैं। रिक्ता तिथि ४।९।१४ व कुंभ और वृश्चिक लग्न ये वर्जित हैं और सिंह तथा वृष लग्न शुभ हैं ॥ १ ॥

नामकरण-मुहूर्त ।

चित्रानुराधामृगरेवतीषु
धात्र्यश्विनीत्र्युत्तरहस्तपुष्ये ।
पुनर्वसौ च श्रवणत्रिके
बुधार्कचन्द्रेज्यसितेषु नाम ॥ १ ॥

चित्रा, अनुराधा, मृगशिरा, रेवती, रोहिणी, अश्विनी, तीनों उत्तरा, हस्त, पुष्य, पुनर्वसु, श्रवण, धनिष्ठा और शतभिष इन नक्षत्रों और बुधवार, रविवार, चन्द्रवार, बृहस्पतिवार और शुक्रवार इन वारों में बालक का नाम रखना शुभ है ॥ १ ॥

जल-पूजा-मुहूर्त ।

मूलादितिद्वयं ग्राह्यं श्रवणश्च मृगः करः ।
जलवाप्यर्चने हेयाः शुक्रमन्दार्कभूमिजाः ॥ १ ॥

मूल, पुनर्वसु, पुष्य, श्रवण, मृगशिरा और हस्त इन नक्षत्रों में प्रसूता स्त्री को जल-पूजा शुभ है। शुक्रवार, शनिवार, रविवार और मङ्गलवार वर्जित हैं ॥ १ ॥

अन्य-मत से जल-पूजा-मुहूर्त ।

कवीज्यास्तचैत्राधिमासे न पौषे
जलं पूजयेत्सूतिकामासपूर्तौ ।

बुधेन्द्विज्यवारे विरिक्ते तिथौ हि
श्रुतीज्यादितीन्द्वर्कनैर्ऋत्यमैत्रे ॥ १ ॥

शुक्र और बृहस्पति का अस्त, चैत्रमास, मलमास तथा पौष-मास जल-पूजा में वर्जित हैं। बालक के जन्म से पूरे मास में जल-पूजा शुभ है। बुधवार, चन्द्रवार और गुरुवार शुभ हैं। रिक्ता ४। ९। १४ तिथियाँ वर्जित हैं। श्रवण, पुष्य, पुनर्वसु, मृगशिरा, हस्त, मूल और अनुराधा इन नक्षत्रों में जल-पूजा शुभ है ॥ १ ॥

बालक-निष्काशन-मुहूर्त ।

मैत्रत्रये हरिद्वन्द्वे विधिद्वन्द्वेऽदितिद्वये ।
स्वातिहस्तोत्तराषाढपूर्वार्यमहयेषु सत् ॥ १ ॥
सिंहत्रये घटे लग्ने मासयोस्त्रिचतुर्थयोः ।
यात्रातिथौ च निष्काश्यः शिशुर्नैवार्किभौमयोः ॥ २ ॥

अनुराधा, ज्येष्ठा, मूल, श्रवण, धनिष्ठा, रोहिणी, मृगशिरा, पुनर्वसु, पुष्य, स्वाती, हस्त, उत्तराषाढ़, तीनों पूर्वा, उत्तरा-फाल्गुनी, अश्विनी, इन नक्षत्रों में बालक का निष्काशन शुभ है। सिंह, कन्या, तुला और कुम्भ ये लग्न शुभ हैं। जन्म से तीसरा, चौथा महीना हो और यात्रा की तिथि हो अर्थात् २। ५। ७। १०। ११। १३ और कृष्णपक्ष की प्रतिपदा भी श्रेष्ठ है। शनिवार और मङ्गलवार वर्जित हैं ॥ १-२ ॥

अन्य-मत से निष्काशन तथा दोलारोहण-मुहूर्त ।

३२ १२ १६ १८ १०
दन्तार्कभूप - धृतिदिग्मितवासरे स्या-
द्वारे शुभे मृदुलघुध्रुवभैः शिशूनाम् ।
दोलाधिरूढिरथ निष्क्रमणं चतुर्थ-
१२
मासे गभोक्तसमयेऽर्कमितेऽह्नि वा स्यात् ॥ १ ॥

जन्म के दिन से बत्तीसवाँ, बारहवाँ, सोलहवाँ, अठारहवाँ और दसवाँ दिन, बालक को झूला झुलाने में शुभ है। मृदुसंज्ञक—मृगशिरा, रेवती, चित्रा, अनुराधा, लघुसंज्ञक—हस्त, अश्विनी, पुष्य, अभिजित् और ध्रुवसंज्ञक नक्षत्र—तीनों उत्तरा और रोहिणी शुभ हैं। बालक का निष्काशन (बाहर निकालना) चौथे महीने या यात्रा के मुहूर्त में या बारहवें दिन शुभ है ॥ १ ॥

दोलारोहण-चक्र ।

दोलारोहेऽर्कभात्पञ्चशरपञ्चेषुसप्तभैः ।
नैरुज्यं मरणं कार्श्यं व्याधिः सौख्यं क्रमाच्छिशोः ॥१॥

सूर्य के नक्षत्र से दिन के नक्षत्र तक झूला के चक्र का विचार करे। प्रथम पाँच नक्षत्रों का फल नीरोगकारक है, फिर पाँच मरणप्रद हैं। इसी प्रकार पाँच में कृशता, पाँच में व्याधि और सात नक्षत्रों में सुख होता है ॥ १ ॥

दोला-चक्र ।

५	५	८	५	७	नक्षत्र
नीरोग	मरण	कृशता	व्याधि	सुख	फल

स्त्री-पुरुषों की कार्य के भेद से चन्द्रमा की शुद्धि ।

विवाहे गर्भसंस्कारे चन्द्रशुद्धिः स्त्रिया अपि ।
भूषाम्बरादिकार्येषु भर्तुश्चैवेन्दवं बलम् ॥ १ ॥

विवाह-संस्कार और गर्भ संस्कार इन कार्यों में चन्द्रबल स्त्री की राशि से लेना चाहिए और भूषण, वस्त्र आदि के धारण करने में पुरुष की राशि से चन्द्र-बल विचारना चाहिए ॥ १ ॥

ताम्बूल-भक्षण-मुहूर्त ।

वारे भौमार्कहीने ध्रुवमृदुलघुभैर्विष्णुमूलादितीन्द्र-
स्वातीवस्वम्बुपेतैर्मिथुनमृगसुताकुम्भगोमीनलग्ने ।
सौम्यैः केन्द्रत्रिकोणैः शुभगगनगतैः शत्रुलाभत्रिसंस्थै-
स्ताम्बूलं सार्द्धमासद्वयमितसमये प्रोक्तमन्नाशने वा ॥१॥

मङ्गलवार और शनिवार को ताम्बूल खिलाना वर्जित है। ध्रुव,[1] मृदु[2] और लघुसंज्ञक[3] नक्षत्र तथा श्रवण, मूल, पुनर्वसु, ज्येष्ठा, स्वाती, धनिष्ठा और शतभिष ये नक्षत्र शुभ हैं। मिथुन, कन्या, कुम्भ, वृष तथा मीन ये लग्न शुभ हैं। शुभग्रह केन्द्र १ । ४ । ७ । १०. त्रिकोण ९ । ५ में हों और पापग्रह दशवें, छठें, ग्यारहवें और तीसरे हों तो जन्म से अढ़ाई महीना में ताम्बूल का भक्षण शुभ है, अथवा अन्नप्राशन के दिन करे ॥ १ ॥

बालक को पृथ्वी पर बैठाने तथा करधनी बाँधने का मुहूर्त ।

पृथ्वीं वराहमभिपूज्य कुजे विशुद्धे
ऽरिक्ते तिथौ व्रजति पञ्चममासि बालम् ।
बध्वा शुभेऽह्नि कटिसूत्रमथ ध्रुवेन्दु-
ज्येष्ठर्क्षमैत्रलघुभैरुपवेशयेत्कौ ॥ १ ॥

पृथ्वी और वाराह की पूजा करके अपनी राशि से गोचरोक्त मङ्गल शुद्ध हो, रिक्ता तिथि न हो, जन्म से पाँचवाँ महीना हो, शुभ दिन हो और ध्रुवसंज्ञक नक्षत्र मृगशिरा, ज्येष्ठा, अनुराधा और लघुसंज्ञक ये नक्षत्र हों तो बालक के कटिसूत्र अर्थात् करधनी बाँधे और पृथ्वी पर बिठावे ॥ १ ॥

१—तीनों उत्तरा और रोहिणी । २—मृगशिरा, रेवती, चित्रा और अनुराधा । ३—हस्त, अश्विनी, पुष्य और अभिजित् ।

अन्नप्राशन का मुहूर्त ।

रिक्तानन्दाष्टदर्शं हरिदिवसमथो सौरिभौमार्कवारान्
लग्नं जन्मर्क्षलग्नाष्टमगृहलवगं मीनमेषालिकं च ।
हित्वा षष्ठात्समे मास्यथ हि मृगदृशां पञ्चमादोजमासे
नक्षत्रैः स्यात्स्थिराख्यैः समृदुलघुचरैर्बालकान्नाशनं सत्
केन्द्रत्रिकोणसहजेषु शुभैः खशुद्धे
लग्ने त्रिलाभरिपुगैश्च वदन्ति पापैः ।
लग्नाष्टषष्ठरहितं शशिनं प्रशस्तं
मैत्राम्बुपानिलजनुर्भमसञ्च केचित् ॥ २ ॥

रिक्तातिथि ४ । ९ । १४, नन्दा १ । ६ । ११, अष्टमी, अमावस, द्वादशी, रविवार, मङ्गलवार और जन्मलग्न, जन्मराशि से आठवाँ लग्न, आठवाँ नवमांश मीन, मेष, वृश्चिक लग्न ये संपूर्ण अन्नप्राशन में वर्जित हैं । छठे महीने से सम महीनों में अर्थात् छठे, आठवें, दशवें इत्यादि में लड़के का अन्नप्राशन करे । कन्या का अन्नप्राशन पाँचवें महीने से विषम महीनों में अर्थात् पाँचवें, सातवें, नवें इत्यादि में करे । स्थिरसंज्ञक, मृदुसंज्ञक, लघुसंज्ञक, चरसंज्ञक ये नक्षत्र शुभ हैं ॥ १ ॥ केन्द्र १।४।७।१० व त्रिकोण ९ । ५ व तीसरे शुभग्रह हों और दशवें कोई ग्रह न हो तथा पापग्रह तीसरे, ग्यारहवें, छठे हों और चन्द्रमा छठे, आठवें न हो, अनुराधा, शतभिष स्वाती व जन्म का नक्षत्र किसी आचार्य के मत से अशुभ हैं । दूसरे वचन से पाँचवें स्थान में क्षीणचन्द्रमा अर्थात् कृष्णपक्ष की दशमी से अमावस तक अन्नप्राशन में वर्जित हैं ॥ २ ॥

कर्णवेध का मुहूर्त ।

हित्वैतांश्चैत्रपौषावमहरिशयनं जन्ममासं च रिक्तां
युग्माब्दं जन्मतारामृतुमुनिवसुभिः संमिते मास्यथो वा ।
जन्माहात्सूर्यभूपैः परिमितदिवसे ज्ञेज्यशुक्रेन्दुवारेऽ-
थौजाब्दे विष्णुयुग्मादितिमृदुलघुभैः कर्णवेधः प्रशस्तः ॥

संशुद्धे मृतिभवने त्रिकोणकेन्द्र-
त्र्यायस्थैः शुभखचरैः कवीज्यलग्ने ।
पापाख्यैररिसहजायगेहसंस्थै-
र्लग्नस्थे त्रिदशगुरौ शुभावहः स्यात् ॥ २ ॥

चैत्रमास, पौषमास तथा अवम तिथि अर्थात् तिथि की हानि, हरिशयन अर्थात् आषाढ़ सुदी एकादशी से कार्त्तिक शुक्ल एकादशी तक, तथा जन्म का महीना व रिक्तातिथि ये समस्त कर्णवेध में वर्जित हैं। युग्मवर्ष अर्थात् जन्म से दूसरा, चौथा, छठा इस क्रम से युग्मवर्ष भी वर्जित हैं। जन्म तारा वर्जित है। जन्म से छठवाँ, सातवाँ और आठवाँ महीना शुभ है। जन्म से बारहवें, सोलहवें दिन भी शुभ हैं तथा बुधवार, बृहस्पतिवार, शुक्रवार और चन्द्रवार शुभ हैं। ओजवर्ष अर्थात् पहला, तीसरा, पाँचवाँ श्रेष्ठ हैं। श्रवण, धनिष्ठा, पुनर्वसु, मृदुसंज्ञक और लघुसंज्ञक इन नक्षत्रों में कर्णवेध शुभ है। लग्न से आठवें कोई ग्रह न हो, त्रिकोण ९। ५ केन्द्र १। ४। ७। १०, तीसरे, ग्यारहवें शुभग्रह हों और शुक्र, बृहस्पति का लग्न हो अर्थात् वृष, तुला, धन, मीन ये लग्न हों और पापग्रह छठें, तीसरे और ग्यारहवें हों, लग्न में बृहस्पति हो तो कर्णवेध शुभ है ॥ १-२ ॥

मुण्डन का मुहूर्त ।

चूडावर्षात्तृतीयात्प्रभवति विषमेऽष्टार्करिक्ताद्यषष्ठी
पर्वोनाहे विचैत्रोदगयनसमये ज्ञेन्दुशुक्रेज्यकानाम् ।
वारे लग्नांशयोश्च स्वभनिधनतनौ नैधने शुद्धियुक्ते
शाक्रोपेतैर्विमैत्रैर्मृदुचरलघुभैरायषट्त्रिस्थपापैः ॥ १ ॥

पञ्चमासाधिके मातुर्गर्भे चौलं शिशोर्न सत् ।
पञ्चवर्षाधिकस्येष्टं गर्भिण्यामपि मातरि ॥ २ ॥

तारादौष्ट्ये ऽब्जे त्रिकोणोच्चगे वा
क्षौरं सत्स्यात् सौम्यमित्रस्ववर्गे ।
सौम्येभेऽब्जे शोभने दुष्टतारा
शस्ता ज्ञेया क्षौरयात्रादिकृत्ये ॥ ३ ॥

ऋतुमत्याः सूतिकायाः सूनोश्चौलादि नाचरेत् ।
ज्येष्ठापत्यस्य न ज्येष्ठे कैश्चिन्मार्गेऽपि नेष्यते ॥ ४ ॥

विषम वर्ष में मुण्डन श्रेष्ठ है अर्थात् पहले, तीसरे, पाँचवें इस क्रम से विषम वर्ष जानिए । अष्टमी, द्वादशी, रिक्ता ४ । ९ । १४, परीवा और छठ पूर्वोक्त पर्व व चैत्रमास ये वर्जित हैं । उत्तरायण सूर्य शुभ हैं । बुधवार, चन्द्रवार, शुक्रवार तथा बृहस्पतिवार शुभ है । जन्म की लग्न व जन्म की राशि से आठवाँ लग्न वर्जित है । आठवाँ गृह शुद्ध हो अर्थात् कोई ग्रह न होय । ज्येष्ठा नक्षत्र से युक्त और अनुराधा नक्षत्र के विना मृदुसंज्ञक, चरसंज्ञक, लघुसंज्ञक नक्षत्र शुभ हैं । पापग्रह ग्यारहवें, छठे और तीसरे शुभ हैं । जिस बालक की माता के पाँच महीना से अधिक का गर्भ हो उस बालक का मुण्डन वर्जित है । जो पाँच वर्ष से बालक अधिक हो तो मुण्डन

श्रेष्ठ है तथा गर्भ का दोष नहीं है। जो तारा दुष्ट हो और चन्द्रमा त्रिकोण ९ । ५ व उच्च अर्थात् वृष का हो तो तारा का दोष नहीं है। अथवा चन्द्रमा शुभग्रह के षड्वर्ग में हो व मित्र के षड्वर्ग में हो व शुभग्रह की राशि में हो तो दुष्ट तारा भी मुण्डन, यात्रा आदि कर्मों में शुभ है। बालक की माता रजस्वला हो तो बालक का मुण्डन अशुभ है। जो आदि-गर्भ का बालक हो तो ज्येष्ठमास में मुण्डन अशुभ है। कोई आचार्य कहते हैं कि आदि-गर्भ का बालक हो तो अगहन में मुण्डन वर्जित है ॥ १-३ ॥

नित्यक्षौर का मुहूर्त ।

क्षौरे प्राणहरास्त्याज्या मघा मैत्रं च रोहिणी ।
उत्तरा कृत्तिका वारा भानुभौमशनैश्चराः ॥ १ ॥
रिक्ता हेयाऽष्टमी षष्ठी क्षौरे चन्द्रक्षयो निशा ।
सन्ध्याविष्टयन्तगण्डान्तो भोजनान्तश्च गोगृहम् ॥ २ ॥

मघा, अनुराधा, रोहिणी, तीनों उत्तरा और कृत्तिका ये नक्षत्र; रविवार, मङ्गलवार तथा शनिवार ये दिन नित्य-क्षौर अर्थात् हजामत बनाने में वर्जित हैं। रिक्ता तिथि ४ । ९ । १४, अष्टमी, छठ, अमावस, रात्रि, सन्ध्या, भद्रा, गण्डान्त और भोजन के पीछे तथा गोशाला में क्षौर-कर्म वर्जित है ॥ १-२ ॥

अन्य-मत से क्षौर का मुहूर्त ।

पुष्ये पौष्णे चरश्विनीष्वैन्दवे च
शाक्रे हस्ताद्ये त्रिके भेष्वदित्यः ।
क्षौरं कार्यं वैष्णवादित्रये च
हित्वा भौमादित्यपातङ्गिवारान् ॥ १ ॥

आज्ञया नरपतेर्द्धिजन्मनां दाहकर्ममृतसूतकेषु च ।
बन्धमोक्षमखदीक्षणेषु च क्षौरमिष्टमखिलेषु तुष्टिदम् ॥ २ ॥

पुष्य, रेवती, अश्विनी, मृगशिरा, ज्येष्ठा, हस्त, चित्रा, स्वाती, पुनर्वसु, धनिष्ठा और शतभिष, इन नक्षत्रों में क्षौरकर्म शुभ हैं। रविवार, भौमवार तथा शनिवार वर्जित हैं। राजा व ब्राह्मण की आज्ञा मानकर क्षौरकर्म शुभ है। दाहकर्म में, सूतकान्त में, बन्दीखाने से छूटने में, यज्ञ में और दीक्षा में क्षौरकर्म शुभ है। अर्थात् मुहूर्त के देखने की आवश्यकता नहीं ॥ १-२ ॥

अक्षरारम्भ का मुहूर्त ।

गणेशविष्णुवाग्रमाः प्रपूज्य पञ्चमाब्दके
तिथौ शिवार्कदिक्द्विषट्शरत्रिके रवावुदक् ।
लघुश्रवोऽनिलान्त्य भादितीशतक्षमित्रभे
चरोनसत्तनौ शिशोर्लिपिग्रहः सतां दिने ॥ १ ॥

गणेश, विष्णु, सरस्वती और लक्ष्मी का पूजन करके पञ्चम वर्ष में अक्षरारम्भ शुभ है। एकादशी, द्वादशी, दशमी, द्वितीया, छठ, पञ्चमी और तीज ये तिथियाँ शुभ हैं। उत्तरायण सूर्य हो लघुसंज्ञक नक्षत्र व श्रवण, स्वाती, रेवती, पुनर्वसु, चित्रा और अनुराधा ये नक्षत्र शुभ हैं। ऐसे शुभ दिनों में बालक लिखना प्रारम्भ करे। चरसंज्ञक लग्न १।४।७।१० वर्जित हैं ॥ १ ॥

विद्यारम्भ का मुहूर्त ।

मृगात्कराच्छ्रु तित्रयेऽश्विमूलपूर्विकात्रये
गुरुद्वयेऽर्कजीववित्सितेऽह्नि षड्शरत्रिके ।
शिवार्कदिग्द्विके तिथौ ध्रुवान्त्यमित्रभे परैः
शुभैरधीतिरुत्तमा त्रिकोणकेन्द्रगैः स्मृता ॥ १ ॥

मृगशिरा, आर्द्रा, पुनर्वसु, हस्त, चित्रा, स्वाती, श्रवण, धनिष्ठा, शतभिष, अश्विनी, मूल, तीनों पूर्वा, पुष्य और आश्लेषा इन नक्षत्रों में विद्यारम्भ शुभ है। रविवार, गुरुवार, बुधवार और शुक्रवार, ये दिन शुभ हैं। छठ, पञ्चमी, तीज, एकादशी, द्वादशी, दशमी, और द्वितीया ये तिथियां शुभ हैं। अन्य आचार्यों के मत से ध्रुवसंज्ञक नक्षत्र तथा रेवती व अनुराधा शुभ हैं और शुभग्रह त्रिकोण ९।५ व केन्द्र १।४।७।१० में होने चाहिए ॥ १ ॥

गणितारम्भ का मुहूर्त ।

शतद्वयेऽनुराधार्द्रे रोहिणीरेवतीकरे ।
पुष्ये जीवे बुधे कुर्यात्प्रारम्भं गणितादिषु ॥ १ ॥

शतभिष, पूर्वभाद्रपद, अनुराधा, आर्द्रा, रोहिणी, रेवती, हस्त और पुष्य इन नक्षत्रों में तथा गुरुवार और बुधवार को गणितारम्भ शुभ है ॥ १ ॥

व्याकरणारम्भ का मुहूर्त ।

रोहिणीपञ्चके हस्तात्पुनर्भे मृगभेऽश्विभे ।
पुष्ये शक्रेज्यविद्वारे शब्दशास्त्रं पठेत्सुधीः ॥ १ ॥

रोहिणी, हस्त, चित्रा, स्वाती, विशाखा, अनुराधा, पुनर्वसु, मृगशिरा, अश्विनी और पुष्य, इन नक्षत्रों में शुक्रवार, बृहस्पतिवार तथा बुधवार को व्याकरणशास्त्र का पढ़ना आरम्भ करना शुभ है ॥ १ ॥

न्यायादिशास्त्र के आरम्भ का मुहूर्त ।

त्र्युत्तरे रोहिणीपुष्यपुनर्भे श्रवणे करे ।
अश्विन्यां शतभे स्वातौ न्यायशास्त्रादिकं पठेत् ॥१॥

तीनों उत्तरा, रोहिणी, पुष्य, पुनर्वसु, श्रवण, हस्त, अश्विनी, शतभिष और स्वाती इन नक्षत्रों में न्यायशास्त्र आदि का पढ़ना आरम्भ करना शुभदायक है।

धर्मशास्त्र तथा पुराणारम्भ-मुहूर्त ।

हस्तादिपञ्चके पुष्ये रेवतीद्वितये मृगे ।
श्रवत्रये शुभारम्भो धर्मशास्त्रपुराणयोः ॥ १ ॥

हस्त, चित्रा, स्वाती, विशाखा, अनुराधा, पुष्य, रेवती, अश्विनी, मृगशिरा, श्रवण, धनिष्ठा और शतभिष, इन नक्षत्रों में धर्मशास्त्रारम्भ और पुराणारम्भ शुभ है ॥ १ ॥

वैद्य-विद्या तथा गारुडीविद्यारम्भ-मुहूर्त ।

हस्तत्रयेऽनुराधायां पुनर्भे श्रवणत्रये ।
मूले चान्त्येऽश्विनीपुष्ये ज्येष्ठाश्लेषार्द्रभे मृगे ॥ १ ॥
वैद्यविद्या कुजेऽब्जेऽर्केज्येष्ठाहीनेऽत्रगारुडी ॥ २ ॥

हस्त, चित्रा, स्वाती, अनुराधा, पुनर्वसु, श्रवण, धनिष्ठा, शतभिष, मूल, रेवती, अश्विनी, पुष्य, ज्येष्ठा, आश्लेषा, आर्द्रा और मृगशिरा, इन नक्षत्रों में वैद्यविद्या का आरम्भ शुभ है। मङ्गलवार, सोमवार और रविवार, ये दिन शुभ हैं। ज्येष्ठा के बिना इन्हीं नक्षत्रों में सर्प-विद्या भी शुभ है ॥ १-२ ॥

जैनविद्यारम्भ-मुहूर्त ।

श्रवत्रये मघापूर्वाऽनुराधारेवतीत्रये ।
पुनर्भे स्वातिभे सूर्ये शुक्रे जैनागमं पठेत् ॥ १ ॥

श्रवण, धनिष्ठा, शतभिष, मघा, पूर्वा, अनुराधा, रेवती, अश्विनी, भरणी, पुनर्वसु और स्वाती इन नक्षत्रों में तथा रविवार और शुक्रवार को जैन-विद्या का पढ़ना शुभदायक है ॥ १ ॥

फारसीविद्यारम्भ-मुहूर्त ।

ज्येष्ठाऽश्लेषा तथा पूर्वा रेवतीभरणीद्वये ।
विशाखार्द्रोत्तराषाढाशतभे पापवासरे ॥ १ ॥

लग्ने स्थिरे च चन्द्रे च फारसीमारवीं पठेत् ॥ २ ॥

ज्येष्ठा, आश्लेषा, तीनों पूर्वा, रेवती, भरणी, कृत्तिका, विशाखा, आर्द्रा, उत्तराषाढ़ और शतभिष, ये नक्षत्र शनिवार, मङ्गलवार और रविवार को फारसी तथा अरबी विद्या का आरम्भ शुभ है ॥ १-२॥

लेखनारम्भ-मुहूर्त ।

शुभे तिथौ शुभे वारे रेवतीयुगले तथा ।
श्रवणे चानुराधायां तथैवार्द्रादिषु त्रिषु ॥ १ ॥
हस्तादित्रितये कुर्याल्लेखनारम्भणं सुधीः ॥ २ ॥

शुभतिथि और शुभवारों में लेखनारम्भ शुभ है। रेवती, अश्विनी, श्रवण, अनुराधा, आर्द्रा, पुनर्वसु, पुष्य, हस्त, चित्रा और स्वाती, ये नक्षत्र लिखने में शुभ हैं ॥ १-२ ॥

जन्म-समय में अभुक्त-मूल का विचार ।

ज्येष्ठान्ते घटिकायुग्मं मूलादौ घटिकाद्वयम् ।
अभुक्तमूलमेतत्स्यादित्येवं नारदोऽब्रवीत् ॥ १ ॥
वशिष्ठस्तु तयोरन्त्याद्ययोरेकद्विनाडिकम् ।
अङ्गिराघटिकामेकामन्ये पट् चाष्ट तत्र तु ॥ २ ॥
जातं शिशुं त्यजेत्तातो न पश्येद्वाष्टहायनम् ॥ ३ ॥

ज्येष्ठा नक्षत्र के अन्त की दो घड़ी और मूल के आदि की दो घड़ी अभुक्तसंज्ञक मूल होती हैं, यह नारदजी का वचन है। वशिष्ठजी कहते हैं कि ज्येष्ठा के अन्त में एक घड़ी और मूल के आदि में दो घड़ी अभुक्तसंज्ञक मूल हैं। अङ्गिरा ऋषि कहते हैं कि ज्येष्ठान्त की एक घड़ी और मूलादि की एक घड़ी अभुक्तसंज्ञक मूल हैं। अन्य आचार्यों का तो मत यह है कि ज्येष्ठा के अन्त

की छः घड़ी और मूल के आदि की आठ घड़ी अभुक्तसंज्ञक हैं। ऐसे योग में बालक उत्पन्न हो तो पिता उस बालक को त्याग दे अथवा आठ वर्ष तक बालक को न देखे ॥१-३॥

मूल-संज्ञक नक्षत्रों के चरणों का फल।

मूलादिचरणे तातो द्वितीये जननी तथा।
तृतीये तु धनं नश्येच्चतुर्थं हि शुभावहम् ॥ १ ॥

मूल के पहले चरण में जन्म हो तो पिता का नाश हो, दूसरे में माता का नाश और तीसरे में धन का नाश हो, चौथा शुभ है ॥१॥

अन्य-मत से चरणों का फल।

आद्ये पिता नाशमुपैति मूल-
पादे द्वितीये जननी तृतीये।
धनं चतुर्थेऽस्य शुभोऽथ शान्त्या
सर्वत्र सत्स्यादहिभे विलोमम् ॥ १ ॥

मूल के पहले चरण में पिता का नाश हो, दूसरे में माता का नाश हो, तीसरे में धन का नाश हो, चौथा शुभ है। शान्ति करने से सब शुभ हैं। आश्लेषा का विलोम फल होता है अर्थात् पहला शुभ है, दूसरे चरण में धन का नाश, तीसरे चरण में माता का नाश और चौथे चरण में पिता का नाश होता है ॥ १ ॥

ज्येष्ठा के चरणों का फल।

आद्ये पादेऽग्रजं हन्ति ज्येष्ठायामनुजं द्विके।
तृतीये जननीं जातः स्वात्मानं च तुरीयके ॥ २ ॥

ज्येष्ठा के पहले चरण में बड़े भाई का, दूसरे में छोटे

भाई का और तीसरे में माता का नाश होता है; चौथे चरण में तो बालक स्वयं नष्ट हो जाता है ॥ १ ॥

मूल-वास-विचार ।

माघाषाढाश्विनो भाद्रपदे मूलं वसेद्दिवि ।
कार्त्तिके श्रावणे चैत्रे पौषमासे तु भूतले ॥ १ ॥
वैशाखे फाल्गुने ज्येष्ठे मार्गे पातालवर्ति तत् ।
भूतले वर्तमाने तु ज्ञेयो दोषोऽन्यथा न हि ॥ २ ॥

माघ, आषाढ़, आश्विन (क्वार) और भाद्रपद इन महीनों में मूल का वास आकाश में; कार्त्तिक, श्रावण, चैत्र और पौष में पृथ्वी पर; वैशाख, फाल्गुन, ज्येष्ठ तथा अगहन में मूल का वास पाताल में जानिए । जब पृथ्वी में मूल का वास हो तब दोष करता है अन्यथा दोष नहीं होता ॥ १-२ ॥

मूल-वास ।

आकाश	पृथ्वी	पाताल	मूल-वास
माघ, आषाढ़ आश्विन, भाद्र	कार्त्तिक, चैत्र श्रावण, पौष	फाल्गुन, ज्येष्ठ मार्गशीर्ष, वैशाख	मास

बालक के प्रथम दुग्ध-पान का मुहूर्त ।

जातकर्मोक्तनक्षत्रे श्रवणे च पुनर्वसौ ।
त्यक्त्वा स्वातीं स्तन्यपानं शुभं प्रोक्तं शुभेऽहनि ॥ १ ॥

जातकर्म में जो नक्षत्र कहे हैं तथा श्रवण और पुनर्वसु में बालक को माता का प्रथम दुग्ध-पान कराना शुभ है । स्वाती नक्षत्र वर्जित है तथा शुभ दिन अवश्य हो ॥ १ ॥

सूतिका को काढ़ा देने का मुहूर्त ।

भेषज्यगदिते धिष्णये वारे दुर्योगवर्जिते ।
आरोग्यहेतवे क्वाथः सूतिकायाश्च तच्छिशोः ॥ १ ॥

जो नक्षत्र तथा वार भैषज्य अर्थात् दवा के खाने में कहे हैं, उनमें सूतिका स्त्री को काढ़ा देना शुभ है। दुर्योग वर्जित करे। इसी मुहूर्त में बालक को भी आरोग्य के लिये काढ़ा इत्यादि देना चाहिए ॥ १ ॥

सूतिका के पथ्य का मुहूर्त ।

अन्नाशनोक्तनक्षत्रे शुभाहे सांशुमालिनि ।
हित्वा रिक्तां च दुर्योगं सूतिकापथ्यमीरितम् ॥ १ ॥

जो नक्षत्र अन्नप्राशन में कहे हैं उनमें सूतिका स्त्री को पथ्य देना शुभदायक है। रविवार के समेत शुभदिन होना चाहिए। दुष्टयोग व रिक्ता तिथि वर्जित हैं ॥ १ ॥

लिङ्गाण्डच्छेदन मुहूर्त ।

नराश्ववृषभादीनां लिङ्गाण्डच्छेदनं मतम् ।
अर्कारेज्यान्त्यपुष्यार्कस्वातीन्दुश्रुतिवासवैः ॥ १ ॥

मनुष्य, घोड़ा, वृष आदि का लिङ्गाण्डच्छेदन मुहूर्त यवनशास्त्र के मत से विचारें। रविवार, मङ्गलवार व गुरुवार तथा रेवती, पुष्य, हस्त, स्वाती, मृगशिरा, श्रवण, धनिष्ठा ये नक्षत्र और वार शुभ हैं ॥ १ ॥

फ़ारसी की शुभाशुभ तारीखों का विचार ।

तृतीया तथैवाष्टमी विश्वसंख्या
तथाष्टादशी च त्रयोविंशतिश्च ।

तथैवाष्टविंशत्तरीखा निषिद्धा
सदा यावनैः शास्त्रविद्भिः प्रदिष्टा ॥ १ ॥

फारसी मास की तीसरी, आठवीं, तेरहवीं, अठारहवीं, तेईसवीं और अट्ठाईसवीं ये तारीखें निषिद्ध हैं, ऐसा यवनशास्त्र में कहा है ॥ १ ॥

मूलसंज्ञक नक्षत्रों का विचार ।

ज्येष्ठाश्लेषारेवतीनामन्ते च घटिकाद्वयम् ।
आदौ मूलमघाश्वानां भगण्डो घटिकाद्वयम् ॥ १ ॥

ज्येष्ठा, आश्लेषा और रेवती इन नक्षत्रों के अन्त में दो घड़ी तथा मूल, मघा और अश्विनी की आदि में दो घड़ी नक्षत्रगण्डान्त होता है । ये छः नक्षत्र मूल के जानना चाहिए ॥ १ ॥

तिथि-गण्डान्त-विचार ।

नन्दिकायास्तिथेरादौ पूर्णानां च तथान्तिमे ।
घटिकैकाशुभे त्याज्या तिथिगण्डोऽयमुच्यते ॥ १ ॥

नन्दातिथि के आदि में और पूर्णातिथि के अन्त में एक-एक घड़ी तिथिगण्डान्त होता है ॥ १ ॥

लग्नगण्डान्त-विचार ।

मीनवृश्चिककर्कान्ते घटिकार्धं परित्यजेत् ।
आदौ मेषस्य चापस्य सिंहस्य घटिकार्धकम् ॥ १ ॥

मीन, वृश्चिक और कर्क के अन्त में आधी घड़ी लग्नगण्डान्त होता है । मेष, धन और सिंह के आदि में आधी घड़ी तक लग्न-गण्डान्त होता है ॥ १ ॥

गण्डान्तों के फल ।

तिथिगण्डे भगण्डे च लग्नगण्डे च जातकः ।
न जीवति तदा जातो जीविते च धनी भवेत् ॥ १ ॥

तिथिगण्डान्त व नक्षत्रगण्डान्त व लग्नगण्डान्त में बालक पैदा हो तो न जीवे और जीवे तो धनी होवे ॥ १ ॥

अग्निहोत्र-मुहूर्त ।

प्राजापत्ये पूषभे सद्विदैवे
पुष्ये ज्येष्ठाश्वेन्दवे कृत्तिकासु ।
अग्न्याधानं चोत्तराणां त्रयेऽपि
श्रेष्ठं प्रोक्तं प्राक्तनैर्विप्रमुख्यैः ॥ १ ॥

रोहिणी, रेवती, विशाखा, पुष्य, ज्येष्ठा, अश्विनी, मृगशिरा, कृत्तिका और तीनों उत्तरा, इन नक्षत्रों में अग्निहोत्र यज्ञ शुभ है। आचार्य लोग कहते हैं कि यह ब्राह्मणों का मुख्य यज्ञ है ॥ १ ॥

अन्य-मत से अग्निहोत्र-मुहूर्त ।

सौम्यायने विशाखायां कृत्तिकारोहिणीमृगे ।
त्र्युत्तरे रेवती ज्येष्ठा पुष्येऽग्न्याधानमिष्यते ॥ १ ॥
कुजेऽर्केऽब्जे गुरौ शुक्रे नो नीचास्तंगतेऽरिभे ।
नो रिक्तायां तिथौ कर्के लग्ने नैव मृगत्रये ॥ २ ॥
अग्न्याधानं प्रकुर्वीत नेन्दौ लग्नगतेऽपि च ।
त्रिकोणोपचये केन्द्रे सूर्यजीवकुजेन्दुषु ॥ ३ ॥
शेषे चोपचये शुद्धे रन्ध्रेऽग्न्याधानमुत्तमम् ॥ ४ ॥
लग्ने जीवे धनुर्गे वा द्यूने खे वा यमे कुजे ।
चन्द्रे वा त्रिषडायस्थे सूर्ये वा दीक्षितो भवेत ॥ ५ ॥

उत्तरायण सूर्यों में विशाखा, कृत्तिका, रोहिणी, मृगशिरा, तीनों उत्तरा, रेवती, ज्येष्ठा और पुष्य इन नक्षत्रों में अग्निहोत्र शुभ है। मङ्गल, सूर्य, चन्द्रमा, बृहस्पति और शुक्र ये न तो नीच

के हों और न अस्त हों न शत्रु की राशि में हो, और रिक्ता तिथि न हों तथा कर्क, मकर, कुम्भ और मीन ये लग्न वर्जित हैं। चन्द्रमा लग्न में न हो तथा त्रिकोण ९। ५ व उपचय लग्न अर्थात् जन्मलग्न व जन्मराशि से तीसरे, छठे, ग्यारहवें लग्न में व केन्द्र १। ४। ७। १० में सूर्य, बृहस्पति, मङ्गल और चन्द्रमा हों, और जो ग्रह बाकी रहे सो उपचय लग्न में हों, और आठवें घर में कोई ग्रह न हो तो अग्निहोत्र शुभ है। बृहस्पति लग्न में हो व धनुराशि का हो तथा सातवें, दशवें हो व मङ्गल दूसरे हो अथवा चन्द्रमा तीसरे, छठे, ग्यारहवें हो व सूर्य की दृष्टि चन्द्रमा पर हो तब शुभ होता है ॥ १-५ ॥

पुनः अन्य-मत से अग्निहोत्र-विचार।

पुष्योत्तराविशाखासु ज्येष्ठान्त्याग्निकचन्द्रभे।
अग्न्याधानमरिक्तासु कार्यं वा देवजेऽहनि ॥ १ ॥

पुष्य, तीनों उत्तरा, विशाखा, ज्येष्ठा, रेवती, कृत्तिका, रोहिणी और मृगशिरा इन नक्षत्रों में अग्निहोत्र शुभ है। रिक्तातिथि वर्जित है तथा बृहस्पतिवार शुभ है, ऐसा मुहूर्त-दीपिका में है ॥ १ ॥

यज्ञोपवीत-मुहूर्त।

पूर्वाषाढहरित्त्रयेऽश्विमृगभे हस्तत्रये रेवती
ज्येष्ठापुष्यभगेषु चोत्तरगते भानौ च पक्षे सिते।
गोमीनप्रमदाधनुर्वनचरे शुक्रे गुरौ भास्करे
पञ्चम्यां दशमीत्रये व्रतमहि श्रेष्ठं द्वितीयाद्वये।१।

पूर्वाषाढ़, श्रवण, धनिष्ठा, शतभिष, अश्विनी, मृगशिरा, हस्त, चित्रा, स्वाती, रेवती, ज्येष्ठा, पुष्य और पूर्वाफाल्गुनी ये नक्षत्र यज्ञोपवीत में शुभ हैं। तथा उत्तरायण सूर्य, शुक्लपक्ष, वृष, मीन, कन्या, धनु और सिंह ये लग्न शुभ हैं। शुक्रवार, बृहस्पतिवार

और रविवार शुभ हैं । पञ्चमी, दशमी, एकादशी, द्वादशी, द्वितीया और तीज ये तिथियाँ शुभ हैं ॥ १ ॥

पुनः यज्ञोपवीत-मुहूर्त* ।

क्षिप्रध्रुवाहिचरमूलमृदुत्रिपूर्वा
रौद्रेऽर्कविद्गुरुसितेन्दुदिने व्रतं सत् ।
द्वित्रीषुरुद्ररविदिक्प्रमिते तिथौ च
कृष्णादिमत्रिलवकेऽपि न चापराह्णे ॥ १ ॥
कवीज्यचन्द्रलग्नपा रिपौ मृतो व्रतेऽधमाः ।
व्ययेऽब्जभार्गवौ तथा तनौ मृतौ सुते खलाः ॥२॥
व्रतबन्धेऽष्टषड्रिष्फवर्जिताः शोभनाः शुभाः ।
त्रिषडाये खलाः पूर्णो गोकर्कस्थो विधुस्तनौ ॥३॥

क्षिप्रसंज्ञक, ध्रुवसंज्ञक, आश्लेषा, चरसंज्ञक, मूल, मृदुसंज्ञक, तीनों पूर्वा और आर्द्रा ये नक्षत्र यज्ञोपवीत में शुभ हैं । रविवार, बुधवार, गुरुवार, शुक्रवार तथा चन्द्रवार ये दिन शुभ हैं । द्वितीया, तृतीया, पञ्चमी, एकादशी, द्वादशी और दशमी ये तिथियाँ शुभ हैं । शुक्लपक्ष और कृष्णपक्ष की पञ्चमी तक शुभ है, शेष कृष्णपक्ष अशुभ जानना । अपराह्ण अर्थात् दिन के तीसरे भाग में वर्जित है अर्थात् दोपहर से पूर्व ही यज्ञोपवीत शुभ होता है ॥१॥

यज्ञोपवीत में लग्न से छठें और आठवें स्थान में स्थित शुक्र,

---

*यद्यपि सब वर्णों का यज्ञोपवीत-संस्कार क्षिप्रादि संज्ञक हस्त आदि नक्षत्रों में कहा जाता है तथापि ब्राह्मण बालकों का यज्ञोपवीत पुनर्वसु नक्षत्र में न होना चाहिए, ऐसा शिष्टाचार है । इसी प्रकार ग्रन्थान्तर से यह भी ज्ञात होता है कि ब्राह्मण का यज्ञोपवीत बसन्तऋतु में, क्षत्रिय का ग्रीष्म ऋतु में और वैश्य का शरद् ऋतु में उत्तम होता है । माघ से ज्येष्ठ तक ५ महीने ब्राह्मणादि के लिए साधारण कहे हैं ।

बृहस्पति, चन्द्रमा, लग्नेश और बारहवें स्थान में स्थित चन्द्रमा और शुक्र, तथा लग्न में किंवा आठवें और पाँचवें स्थान में पापग्रह स्थित हों तो अधम अर्थात् बालक के अनिष्टकारक होते हैं ॥ २ ॥

यज्ञोपवीत में लग्न से आठवें, छठें, बारहवें स्थान को छोड़कर अन्य स्थानों में शुभग्रह स्थित हों और तीसरे, छठे, ग्यारहवें स्थान में पापग्रह स्थित हों तो शुभ होते हैं। वृष और कर्क राशि में स्थित होकर पूर्णचन्द्र यदि लग्न में स्थित हो तो शुभ होता है ॥३॥

यज्ञोपवीत में नवांश* का फल।

क्रूरो जडो भवेत्पापः पटुः षट्कर्मकृद् वटुः।
यज्ञार्थभाक् तथा मूर्खो रव्याद्यंशे तनौ क्रमात् ॥ १ ॥

यज्ञोपवीत के लग्न में जो सूर्य के नवांश का उदय हो तो जिस बालक का यज्ञोपवीत करना है वह बालक क्रूर अर्थात् निर्दयी हो। चन्द्रमा के नवांश का उदय हो तो जड़ अर्थात् विचार-हीन हो। मङ्गल के नवांश का उदय हो तो पापी और बुध के नवांश के उदय में पण्डित हो। बृहस्पति के नवांश के उदय में षट्कर्म † करे और शुक्र के नवांश का उदय हो तो यज्ञ करनेवाला हो। शनैश्चर के नवांश के उदय में मूर्ख हो। इसलिए व्रतबन्ध के मुहूर्त लग्न में शुभग्रह के ही नवांश में यज्ञोपवीत करना उत्तम होता है ॥ १ ॥

यज्ञोपवीत में चन्द्र के नवांश का फल।

विद्यानिरतः शुभराशिलवे
पापांशगते हि दरिद्रतरः।

---

*रवि आदि के नवांशों का विचार इसी प्रकरण में करेंगे।

†यज्ञ करना, यज्ञ कराना, दान देना, दान लेना, पढ़ना, पढ़ाना ये छः कर्म हैं।

चन्द्रे स्वलवे बहुदुःखयुतः
कर्णादितिभे धनवान् स्वलवे ।। १ ।।

यज्ञोपवीतकाल में चन्द्रमा यदि शुभराशि के नवांश में स्थित हो तो बालक विद्यानिरत हो, पापराशि के नवांश में स्थित हो तो बहुत दरिद्र हो और जो अपनी राशि के अर्थात् कर्क के नवांश में स्थित हो तो बहुत दुःख को प्राप्त हो तथा श्रवण व पुनर्वसु नक्षत्र का चन्द्रमा होकर कर्क के नवांश में हो तो बालक धनवान् होवे ।। १ ।।

यज्ञोपवीत में कुयोग आदि का विचार ।

कृष्णे प्रदोषेऽनध्याये शनौ निश्यपराह्णके ।
प्राक् सन्ध्यागर्जिते नेष्टो व्रतबन्धो गलग्रहे ।। १ ।।

पञ्चमी तक को छोड़कर कृष्णपक्ष में और जिस दिन सायंकाल में प्रदोष हो उस दिन में और अनध्याय में शनिवार के दिन में और रात्रि में तथा मध्याह्न के बाद जिस दिन प्रातःकाल मेघ गर्जे उस दिन में यज्ञोपवीत अशुभ है । तथा गलग्रह में भी वर्जित है ।। १ ।।

गलग्रह-विचार ।

त्रयोदश्यादिचत्वारि सप्तम्यादिदिनत्रये ।
चतुर्थीमेकमेतेषु अष्टावेते गलग्रहाः ।। २ ।।

तेरस से चार तिथि अर्थात् त्रयोदशी, चतुर्दशी, पूर्णमासी और परीवा—कृष्णपक्ष में अमावास्या, सप्तमी से तीन तिथि अर्थात् सप्तमी, अष्टमी, नवमी तथा चतुर्थी ये आठ तिथियाँ गलग्रहसंज्ञक जानिए ।। २ ।।

प्रदोष का विचार ।

अर्कतर्कत्रितिथिषु प्रदोषः स्यात्तदग्रिमैः ।
रात्र्यर्धसार्धप्रहरयाममध्यस्थितैः क्रमात् ॥ १ ॥

द्वादशी तिथि में आधी रात से पहले यदि त्रयोदशी का प्रवेश हो तो प्रदोष होता है । षष्ठी तिथि में डेढ़ पहर रात्रि तक यदि सप्तमी का प्रवेश हो तो प्रदोष जानना । तृतीया तिथि में एक पहर रात्रि तक यदि चतुर्थी का प्रवेश हो तो भी प्रदोष जानना ॥१॥

यज्ञोपवीत में अनध्याय का विचार ।

शुचिशुक्रपौषतपसां दिगशिवरुद्रार्कसंख्यसितथियः ।
भूतादित्रितयाष्टमीसंक्रमणं च व्रतेष्वनध्यायाः ॥ १ ॥

आषाढ़ शुक्ल दशमी, ज्येष्ठ शुक्ल द्वितीया, पौष शुक्ल एकादशी और माघ शुक्ल द्वादशी ये सब यज्ञोपवीत में अनध्याय-संज्ञक हैं । चतुर्दशी से तीन तिथि अर्थात् चतुर्दशी, पौर्णमासी, कृष्णपक्ष में अमावास्या, प्रतिपदा व अष्टमी तथा सूर्यसंक्रान्ति का दिन ये भी यज्ञोपवीत में अनध्यायसंज्ञक हैं । इनका प्रयोजन कह आये हैं कि इनमें यज्ञोपवीत न करना चाहिए ॥ १ ॥

मुण्डन आदि में कुयोगों का विचार ।

नान्दीश्राद्धोत्तरं मातुः पुष्पे लग्नान्तरे नहि ।
शान्त्या चौलं व्रतं पाणिग्रहः कार्योऽन्यथा न सत् ॥१॥

नान्दीश्राद्ध के अनन्तर जिस बालक की माता रजस्वला हो जावे उस बालक का मुण्डन, यज्ञोपवीत और विवाह-संस्कार पूर्वनिश्चित मुहूर्त को छोड़कर दूसरे मुहूर्त में करना चाहिए । यदि दैवयोग से शुभ मुहूर्त शीघ्र न मिले तो धर्मशास्त्रोक्त शान्ति करके उसी मुहूर्त में मुण्डनादि संस्कार करे । यदि विना शान्ति-विधान

किये मुण्डनादि संस्कार करे तो शुभ नहीं होता है ॥ १ ॥

ग्रहयुक्त कुयोग का विचार ।

शुक्रे जीवे तथा चन्द्रे सूर्यभौमार्किसंयुते ।
निर्गुणः क्रूरचेष्टः स्यान्निर्घृणः सद्युते पटुः ॥ १ ॥

शुक्र, बृहस्पति और चन्द्रमा सूर्य के संग में हो तो बालक निर्गुण हो । शुक्र, बृहस्पति और चन्द्रमा मङ्गल के संग हों तो बालक क्रूरचेष्टा का हो । शुक्र, बृहस्पति और चन्द्रमा शनैश्चर के संग हों तो बालक निर्दयी हो । सब शुभग्रह एक घर में हों तो बालक पण्डित हो ॥ १ ॥

यज्ञोपवीत में गुर्वादित्य का विचार ।

गुरुसूर्यबलं ज्ञेयं विवाहे यद्विवक्ष्यते ।
चन्द्रताराबलं पूर्वमुक्तं ग्राह्यं वटोः शुभम् ॥ १ ॥
वटुकन्याजन्मराशेस्त्रिकोणायद्विसप्तगः ।
श्रेष्ठोः गुरुः खषट्त्र्याद्ये पूजयाऽन्यत्र निन्दितः ॥ २ ॥
चतुर्थे चाष्टमे चैव द्वादशस्थे दिवाकरे ।
विवाहितो नरो मृत्युं प्राप्नोत्यत्र न संशयः ॥ ३ ॥
जन्मन्यथो द्वितीये वा पञ्चमे सप्तमेऽपि वा ।
नवमे च दिवानाथे पूजया पाणिपीडनम् ॥ ४ ॥
एकादशे तृतीये वा षष्ठे वा दशमेऽपि वा ।
वरस्य शुभदो नित्यं विवाहे दिननायकः ॥ ५ ॥

जिस तरह विवाह में बृहस्पति और सूर्य का बल विचारा जाता है उसी तरह यज्ञोपवीत (जनेऊ) में भी विचारना चाहिए । पूर्वोक्त चन्द्रमा व तारा का बल भी लेना चाहिए । जब अच्छा हो तब

बालक का जनेऊ शुभ है । बालक व कन्या के जन्म-राशि से नवें, पाँचवें, ग्यारहवें, दूसरे और सातवें, इन स्थानों में बृहस्पति हो तो श्रेष्ठ है । दशवें, छठे, तीसरे और पहले हो तो दान देने से शुभ है तथा चौथे, आठवें और बारहवें अशुभ जानिए । जन्म-राशि से चौथे, आठवें और बारहवें सूर्य हो तो बालक की मृत्यु तथा जन्म का हो व दूसरे स्थान में हो व पाँचवें या सातवें हो व नवें हो तो पूजा करने से शुभ है तथा ग्यारहवें, तीसरे, छठे व दशवें सूर्य हो तो शुभ जानिए ।। १-५ ।।

गुरुबल-चक्र ।		**रविबल-चक्र ।**	
स्थान	फल	स्थान	फल
११।२।५।७।९	शुभ	११।३।६।१०	शुभ
६।१।३।१०	पूज्य	१।२।५।७।९	पूज्य
४।८।१२	नेष्ट	४।८।१२	नेष्ट

बृहस्पति का परिहार ।

स्वोच्चे स्वभे स्वमैत्रे वा स्वांशे वर्गोत्तमे गुरुः ।
रिष्फाष्टतुर्यगोऽपीष्टो नीचारिस्थःशुभोऽप्यासत् ।। १ ।।

बृहस्पति कर्कराशि का हो व धन और मीन-राशि का होवे अपने मित्र के घर में हो अर्थात् मेष और वृश्चिक का हो व धनु और मीन के नवांश में हो तथा वर्गोत्तम अर्थात् जिस राशि का बृहस्पति हो, उसी राशि का नवांश हो तो बारहवें, आठवें और चौथे शुभ जानिए । नीच अर्थात् मकरराशि का हो व शत्रु के घर में अर्थात् मिथुन, कन्या, तुला तथा वृष का हो तो शुभ होने पर भी अशुभ जानिए ।। १ ।।

यज्ञोपवीत-लग्न में केन्द्रस्थ ग्रहों के फल ।

राष्ट्रसेवी वैश्यवृत्तिः शस्त्रवृत्तिश्च पाठकः ।
प्राज्ञोऽर्थवान् म्लेच्छसेवी केन्द्रे सूर्यादिखेचरैः ॥१॥

लग्न, चौथा, सातवाँ और दशवाँ, इन स्थानों की केन्द्रसंज्ञा है। यदि यज्ञोपवीत-काल में सूर्य केन्द्र में स्थित हो तो बालक राजा का नौकर हो और चन्द्रमा केन्द्र में स्थित हो तो वैश्यवृत्ति-वाला हो, मङ्गल केन्द्र में हो तो हथियार उठानेवाला हो, बुध केन्द्र में स्थित हो पाठक अर्थात् पढ़ने व पढ़ानेवाला हो और बृहस्पति केन्द्र में हो तो पण्डित हो। यदि शुक्र केन्द्र में हो तो अर्थवान् हो तथा शनैश्चर केन्द्र में हो तो म्लेच्छों की नौकरी करे ॥ १ ॥

केन्द्रस्थ ग्रहों के फल का चक्र ।

सू०	चं०	मं०	बु०	बृ०	शु०	श०	ग्रह
राजसेवी	वैश्य-वृत्ति	शस्त्र-वृत्ति	पाठक	प्राज्ञ	अर्थवान्	म्लेच्छसेवी	फल

पुनः गुरु का परिहार ।

चैत्रे मासि रवौ मीने विबलेऽपि गुरौ वटोः ।
व्रतबन्धः प्रशस्तः स्याच्चैत्रे मीनयुतः शुभः ॥ १ ॥

चैत्र महीना हो, मीन के सूर्य हों तो बालक के बृहस्पति निर्बल होने पर भी जनेऊ शुभ जानिए। क्योंकि चैत्र में मीन के सूर्य बहुत शुभ होते हैं ॥ १ ॥

राजाओं के क्षुरिका-बन्धन का मुहूर्त ।

व्रतोक्तमासतिथ्यादौ विचैत्रे सबले कुजे ।
विभौमे क्षुरिकाबन्धः प्राग्विवाहान्महीभुजाम् ॥१॥

यज्ञोपवीत के मास, तिथि आदि हों परन्तु चैत्र के विना और मङ्गल राशि से गोचरोक्त बली हो, तो मङ्गलवार के विना विवाह के प्रथम राजाओं को क्षुरिका-बन्धन शुभ है ॥ १ ॥

विवाह-मुहूर्त ।

मूलानुराधामृगरेवतीषु
हस्तोत्तरास्वातिमघासु धात्र्ये ।
ज्येष्ठे तपः फाल्गुनराधमार्गे
शुचौ तु पाणिग्रहणं प्रशस्तम् ॥ १ ॥

मूल, अनुराधा, मृगशिरा, रेवती, हस्त, तीनों उत्तरा, स्वाती, मघा और रोहिणी ये नक्षत्र व ज्येष्ठ, माघ, फाल्गुन, वैशाख, अगहन और आषाढ़ इन महीनों में विवाह शुभ है ॥ १ ॥

वरवरण-मुहूर्त ।

उत्तरात्रितयपूर्विकात्रये
रोहिणीष्वनलभे वरणं सत् ।
योषितो गुरुरिनः पुरुषस्येन्दु-
र्द्वयोः परिणये सबलः सन् ॥ १ ॥

तीनों उत्तरा, तीनों पूर्वा, रोहिणी और कृत्तिका इन नक्षत्रों में टीका चढ़ाना (फलदान) शुभ है । स्त्री को गुरुबल और पुरुष को सूर्यबल लेकर विवाह का मुहूर्त शुभ है । जैसा विचार करना यज्ञोपवीत में कहा गया है वैसा ही विचार करना चाहिए। चन्द्रमा का बल दोनों को लेना चाहिए ॥ १ ॥

१—संवत्सर-प्रकरण में कह चुके हैं ।

अन्य प्रकार से वरण का मुहूर्त ।

धरणिदेवोऽथवा कन्यकासोदरः
शुभदिने गीतवाद्यादिभिः संयुतः ।
वरवृतिं वस्त्रयज्ञोपवीतादिना
ध्रुवयुतैर्वह्निपूर्वात्रयैराचरेत् ॥ १ ॥

तीनों उत्तरा, रोहिणी, कृत्तिका और तीनों पूर्वा इन नक्षत्रों में शुभदिन, शुभतिथि, शुभ लग्नादि में गीत और बाजा आदि से युक्त होकर ब्राह्मण और कन्या का भाई वस्त्र, यज्ञोपवीत तथा द्रव्य आदि से वर का वरण करे ॥ १ ॥

विवाह में जन्म-मास आदि का निषेध ।

आद्यगर्भसुतकन्ययोर्द्वयो-
र्जन्ममासभतिथौ करग्रहः ।
नोचितोऽथ विबुधैः प्रशस्यते
चेद् द्वितीयजनुषोः सुतप्रदः ॥ १ ॥

पहले पहल उत्पन्न हुए पुत्र या कन्या हों तो जन्म-मास व जन्म-नक्षत्र व जन्म-तिथि विवाह में वर्जित है । यदि दूसरे-दूसरे गर्भ के सुत-कन्या हों तो जन्ममास आदि पुत्रप्रद हैं । जन्ममास आदि में विवाह होने से पुत्र उत्पन्न हो ॥ १ ॥

ज्येष्ठ मास का निषेध ।

ज्येष्ठद्वन्द्वं मध्यमं संप्रदिष्टं
त्रिज्येष्ठं स्यान्नैव युक्तं कदापि
केचित्सूर्यं वह्निगं प्रोज्झ्यमाहु-
र्नैवाऽन्योन्यं ज्येष्ठयोः स्याद्विवाहः ॥ १ ॥

दो ज्येष्ठ में विवाह मध्यम है, अर्थात् वर-कन्या में से एक आदि गर्भ का उत्पन्न हो और ज्येष्ठ महीना भी हो तो उसे दो ज्येष्ठ कहते हैं । तीन ज्येष्ठ में विवाह वर्जित है अर्थात् वर-कन्या ज्येष्ठ हों और ज्येष्ठ महीना भी हो, इसको तीन ज्येष्ठ जानना । किसी आचार्य का यह भी मत है कि कृत्तिका नक्षत्र के सूर्य हों तो ज्येष्ठ में विवाह शुभ नहीं है और किसी आचार्य के मत से वर-कन्या ज्येष्ठ हों तो विवाह उत्तम नहीं है ॥ १ ॥

विवाह में मण्डप छवाने आदि का मुहूर्त ।

चित्रा विशाखाशततारकाश्विनी-
ज्येष्ठाभरण्यां शिवभाच्चतुष्टयम् ।
हित्वा प्रशस्तं फलतैलवेदिका-
प्रदानकं कण्डनमण्डपादिकम् ॥ १ ॥

चित्रा, विशाखा, शतभिष, अश्विनी, ज्येष्ठा, भरणी, आर्द्रा, पुनर्वसु, पुष्य और आश्लेषा इन नक्षत्रों को छोड़कर जो शेष नक्षत्र हैं उनमें फलदान, तैलपूजन, वेदी बनाना, कण्डन अर्थात् अन्न कूटना तथा मण्डप छवाना शुभ है । माँड़व सेरवाने का मुहूर्त व और जो विवाहसम्बन्धी कार्य हैं वे सब विवाह के कहे हुए नक्षत्रों में करना उचित है ॥ १ ॥

विवाह के अनन्तर अन्यसंस्कारों का निषेध ।

सुतपरिणयात्षण्मासान्तःसुताकरपीडनं
न च निजकुले तद्वद्धा मण्डनादपि मुण्डनम् ।
न च सहजयोर्देये भ्रात्रोः सहोदरकन्यके
न सहजसुतोद्वाहोऽब्दार्धे शुभे न पितृक्रिया ॥ १ ॥

चूडाव्रतं चापि विवाहतो व्रता-
च्चूडा च नेष्टा पुरुषत्रयान्तरे ।
वधूप्रवेशाच्च सुताविनिर्गमः
षण्मासतो वाऽब्दविभेदतः शुभः ॥ २ ॥

अपने कुल में बालक के विवाह से छः महीना तक कन्या का विवाह वर्जित है । उसी प्रकार विवाह से छः महीना तक मुण्डन वर्जित है । सगे दो भाइयों के साथ सगी दो बहिनों का विवाह वर्जित है । तथा छः मास के भीतर ही सहोदर दो भाइयों का विवाह, सगी दो बहिनों का विवाह करना उचित नहीं है । विवाह आदि शुभकार्यों में पितृश्राद्ध आदि अमाङ्गलिक क्रियाओं का करना उचित नहीं है । विवाह आदि का मुहूर्त ऐसा होना चाहिए कि जिस काल में पितृश्राद्ध आदि का दिन माङ्गलिक कृत्य में न पड़े ॥ १ ॥

पिता, पितामह और प्रपितामह इन तीन पुरुषों में किसी के विवाह होने के अनन्तर उस कुल में किसी का मुण्डन तथा यज्ञोपवीत और यज्ञोपवीत के अनन्तर छः मास के भीतर ही किसी का चूड़ाकर्म (मुण्डन) तथा वधूप्रवेश होने के अनन्तर छः मास तक लड़की का पति के घर भेजना शुभ नहीं है । यदि आवश्यक हो तो छः महीना के भीतर ही संवत्सर के भेद से शुभ होता है । जैसे माघ में किसी का विवाह हुआ हो तो संवत्सर के भेद से वैसाख में मुंडन, यज्ञोपवीत आदि पूर्वोक्त कार्य करना शुभ है ॥ २ ॥

पञ्चशलाकावेधचक्र और उसका फल ।

अपि तिर्यग्गतोर्ध्वपञ्चरेखाः
प्रतिकोणं द्वयमग्निमशिकोणे ।

इतराणि लिखेत्क्रमेण भानि
प्रथितं पञ्चशलाकचक्रमुक्तम् ॥ १ ॥
यद्दक्षगो यः खचरः स तत्र
प्रलेखनीयो गणकैस्तु पूर्वैः ।
या पौर्णमासी निकटे विवाहा-
त्तत्तारकस्थो विधुरत्र देवः ॥ २ ॥

पाँच रेखा बेड़ी करे, पाँच खड़ी रेखा करके पञ्चशलाकाचक्र बनावे, कोणों में दो-दो रेखा लिखे । उसमें ईशान दिशा से कृत्तिका आदि से अट्ठाइस नक्षत्र लिखे । जो ग्रह जिस नक्षत्र में हो वह लिखे । विवाह-मुहूर्त के समीप जो पूर्णमासी हो उस पूर्णमासी को जो नक्षत्र हो उसी नक्षत्र में चन्द्रमा लिख देना चाहिए ॥१-२॥

पञ्चशलाका-वेध का फल ।

एकरेखास्थितिर्वेधो दिननाथादिभिर्ग्रहैः ।
विवाहे तत्र मासान्ते न जीवति कदाचन ॥ १ ॥

एक रेखा में परस्पर विवाह का नक्षत्र और कोई ग्रह हो तो वेध होता है। उसमें विवाह हो तो एक महीना के बाद अशुभ होता है ॥१॥

पञ्चशलाका चक्र ।
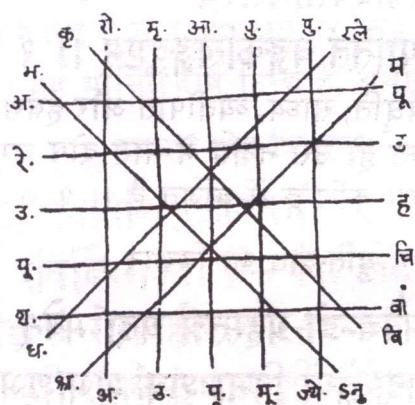
लत्ता-दोष का विचार ।

सूर्यो द्वादशमष्टमं रविसुतः षष्ठं गुरुर्भूमिज-
स्तार्तीयैकमथो निहन्ति पुरतो नक्षत्रकं लत्तया ।
द्वाविंशं तुहिनांशुकश्च नवमं राहुर्बुधः सप्तमं
शुक्रः पञ्चमकं तु पृष्ठत इह प्रायेण लत्तां त्यजेत् ।।१।।

सूर्य अपने नक्षत्र से बारहवें नक्षत्र को लत्ता मारता है। शनैश्चर आठवें नक्षत्र को मारता है। बृहस्पति छठे नक्षत्र को मारता है और मङ्गल तीसरे को मारता है। ये ग्रह अपने आगेवाले नक्षत्रों को मारते हैं। चन्द्रमा अपने अपने नक्षत्र से बाईसवें नक्षत्र को मारता है। राहु अपने नक्षत्र से नवें नक्षत्र को, बुध सातवें को तथा शुक्र पाँचवें नक्षत्र को लत्ता मारता है ये ग्रह अपने से पीछेवाले नक्षत्र को मारते हैं। ये लत्ता विवाह में वर्जित हैं ॥ १ ॥

पात-दोष का विचार ।

शूलस्य गण्डस्य च वैधृतेश्च
साध्यव्यतीपातकहर्षणानाम् ।
यत्तारकं स्यादवसानसंस्थं
तत्पातितं वङ्गकलिङ्गदुष्टम् ।। १ ।।

शूल, गण्ड, वैधृति, साध्य, व्यतीपात और हर्षण इन योगों का जिस नक्षत्र में अन्त हो उस नक्षत्र में पात दोष लगता है। यह पात दोष वङ्ग तथा कलिङ्ग में वर्जित है ॥ १ ॥

युति-दोष का विचार ।

यत्र गेहे भवेच्चन्द्रो ग्रहस्तत्र यदा भवेत् ।
युतिदोषस्तदा ज्ञेयो विना शुक्रं शुभाशुभम् ।। १ ।।

रविणा संयुतो हानिं भौमेन निधन शशी ।
करोति मूलनाशं च राहुकेतुशनैश्चरैः ।। २ ।।

जिस घर में चन्द्रमा हो उसी घर में कोई और ग्रह हो तो युतिदोष जानिए । परन्तु शुक्र को छोड़कर अन्य ग्रह अशुभ हैं अर्थात् शुक्र शुभ है । सूर्यसंयुक्त हो तो हानि, मङ्गलयुक्त हो तो मृत्यु तथा राहु, केतु, शनैश्चर युक्त हों तो मूल नाश करें ।।१-२।।

युति-दोष का परिहार ।

वर्गोत्तमगते चन्द्रे स्वोच्चे मित्रक्षर्गे तथा ।
युतिदोषश्च न भवेद्दम्पत्योः श्रेयसी सदा ।। ३ ।।

चन्द्रमा वर्गोत्तम हो अर्थात् जिसकी राशि हो उसी का नवांश हो अथवा उच्च का हो तथा मित्र के घर में हो तो युति-दोष नहीं होता है । दम्पति को कल्याणकारी होता है, अर्थात् स्त्री-पुरुष सुखी हों ।। ३ ।।

यामित्र-दोष का विचार ।

पाणिग्रहस्य शीतांशोर्नक्षत्रं यच्चतुर्दशम् ।
नक्षत्रं खेटयुक्तं चेद्यामित्रं स्याद्विगर्हितम् ।।

विवाह के नक्षत्र से चौदहवें नक्षत्र पर कोई ग्रह हो तो यामित्र-दोष जानिए । यह यामित्र दोष निन्द्य है, अर्थात् वर्जित है ।। १ ।।

पञ्चक-दोष-विचार ।

रविक्रान्तियातांशयुक्ताश्च तिथ्यो
रविर्दिग्गजाः सिन्धवः खेटभक्ताः ।।
भवेत्पञ्चकं रोगवह्नीशचौर-
मृतिर्दोषमेनं प्रजह्याद्विवाहे ।। १ ।।

सूर्य के गतांश और पन्द्रह व बारह व दश व आठ व चार इनको अलग-अलग रखकर जोड़ना, उन अङ्कों में नव का भाग देना, शेष पाँच बचें तो क्रम से पाँचोंस्थान में पाँच पञ्चक रोग १, अग्नि २, राज ३, चौर ४ और मृत्यु ५ होते हैं। ये पञ्चक विवाह में वर्जित हैं ॥ १ ॥

पञ्चक-दोष का परिहार ।

रात्रौ चौररुजौ दिवा नरपतिर्वह्निः सदा सन्ध्ययो-
र्मृयुश्चाथशनौ नृपो विदि मृतिर्भौमेऽग्निचौरौ रवो ।

रात्रि को चौर व रोगपञ्चक वर्जित है। दिन में नृपपञ्चक वर्जित है और अग्निपञ्चक हमेशा वर्जित है और दोनों संध्याओं में मृत्युपञ्चक वर्जित है।

वारपरक परिहार ।

शनिवार को नृपपञ्चक, बुधवार को मृत्युपञ्चक, मङ्गलवार को अग्नि व चौरपञ्चक और रविवार को रोगपञ्चक वर्जित है।

कार्य-भेद से पुनः परिहार ।

रोगोऽथ व्रतगेहगोपनृपसेवायानपाणिग्रहे
वर्ज्याश्चक्रमतोबुधैरुगनलक्ष्मापालचौरामृतिः ॥१॥

जनेऊ में रोगपञ्चक, मकान बनाने में अग्निपञ्चक, राजसेवा में नृपपञ्चक, यात्रा में चौरपञ्चक, तथा विवाह में मृत्युपञ्चक त्याज्य है ॥ १ ॥

विवाह-लग्न में ग्रहों का विचार ।

व्यये शनिः खेऽवनिजस्तृतीये
भृगुस्तनौ चन्द्रखला न शस्ताः ।

लग्नेट्कविग्लौश्च रिपौ मृतौ ग्लौ-
 र्लग्नेट्शुभाराश्च मदे च सर्वे ॥ १ ॥
किं कुर्वन्ति ग्रहाः सर्वे यस्य केन्द्रे बृहस्पतिः ।
 मत्तमातङ्गयूथानां शतं हन्ति च केसरी ॥ २ ॥
त्र्यायाष्टषट्सु रविकेतुतमोऽर्कपुत्रा-
 स्त्र्यायारिगाः क्षितिसुतो द्विगुणायगोऽब्जः ।
सप्तव्ययाष्टरहितौ ज्ञगुरू सितोऽष्ट-
 त्रिद्यूनषड्व्ययगृहान् परिहृत्य शस्तः ॥ ३ ॥
शुक्रो दशसहस्राणि बुधो दशशतानि च ।
 लक्षमेकं तु दोषाणां गुरुर्लग्ने व्यपोहति ॥ ४ ॥

बारहवें शनैश्चर, दशवें मङ्गल, तीसरे शुक्र, लग्न में चन्द्रमा व क्रूरग्रह शुभ नहीं हैं । लग्न का स्वामी व शुक्र व चन्द्रमा छठे शुभ नहीं हैं । आठवें स्थान में चन्द्रमा व लग्नेश व शुभग्रह व मङ्गल शुभ नहीं हैं । सातवें स्थान में सब ग्रह शुभ नहीं हैं । विवाह के लग्न में सप्तम स्थान को छोड़कर केन्द्र में यदि बृहस्पति हो तो अन्य ग्रह क्या कर सकते हैं । जिस तरह मत्त हाथियों के समूह को एक ही सिंह नाश कर देता है उसी तरह गुरु सर्व-दोषनाशक है । तीसरे, ग्यारहवें, आठवें, छठे, सूर्य, केतु, राहु, शनैश्चर हों; तीसरे, ग्यारहवें, छठे, मङ्गल हों; दूसरे, तीसरे, ग्यारहवें चन्द्रमा हो और सातवें, बारहवें, आठवें बुध और बृहस्पति न हों; शुक्र आठवें, तीसरे, सातवें, छठे, बारहवें वर्जित है । लग्न में शुक्र हो तो दश हजार दोष नष्ट करे । बुध लग्न में हो तो एक हज़ार दोष को नाश करे और जो बृहस्पति लग्न में हो तो एक लाख दोष को नाश कर देता है ॥ १-४ ॥

एकार्गल-दोष-विचार ।

विष्कुम्भ-वज्र-परिघ-व्यतिपात-शूल-
व्याघातवैधृतिषु गण्ड इहातिगण्डे ।
एकार्गलो भवति चेत्किल साभिजित्कः
पीयूषकान्तिरसमर्क्षगतो रवेर्भात् ।। १ ।।

विष्कुम्भ, वज्र, परिघ, व्यतीपात, शूल, व्याघात, वैधृति, गण्ड और अतिगण्ड इन योगों में एकार्गल होता है। सूर्य के नक्षत्र से चन्द्रमा के नक्षत्र तक अभिजित् सहित गिने। जो नक्षत्र विषमसंज्ञक हों और पूर्वोक्तयोग भी हो तो एकार्गल नामक दोष होता है। यह एकार्गल दोष विवाह में त्याज्य है ।। १ ।।

उपग्रह-दोष-विचार ।

शराष्टदिक्शक्रनगातिधृत्य-
स्तिथिर्धृतिश्च प्रकृतेश्च पञ्च ।
उपग्रहः सूर्यभतोऽब्जतारा
शुभा न देशो कुरुबाह्लिकानाम् ।। १ ।।

सूर्य के नक्षत्र से चन्द्रमा के नक्षत्र तक गिने, जो पाँच, आठ, दश, चौदह, सात, उन्नीस, पन्द्रह, अठारह, इक्कीस, बाईस, तेईस, चौबिस और पच्चीस इतने नक्षत्र हों तो उपग्रह दोष जानिए, यह दोष कुरु व बाह्लीक देश में शुभ नहीं होता ।। १ ।।

क्रान्ति-दोष-विचार ।

पञ्चास्याजौ गोमृगौ तौलिकुम्भौ
कन्यामीनौ कर्क्यली चापयुग्मे ।

तत्रान्योन्यं चन्द्रभान्वोर्निरुक्तं
क्रान्तेः साम्यं नो शुभं मङ्गलेषु ॥ १ ॥

सिंह और मेष इन दोनों में से किसी एक में चन्द्रमा और दूसरे में सूर्य स्थित हो तो क्रान्तिसाम्य योग होता है। ऐसे ही वृष-मकर, तुला-कुम्भ, कन्या-मीन, कर्क-वृश्चिक और धन-मिथुन इन दो-दो राशियों में से किसी एक में सूर्य और दूसरी राशि में चन्द्रमा हो तो क्रांतिसाम्य दोष होता है। वह विवाहादि शुभ कार्यों में शुभ नहीं होता है ॥ १ ॥

दग्धातिथि-विचार ।

मीने चापे द्वितीयार्के चतुर्थीवृषकुम्भयोः ।
मेषकर्कटयोः षष्ठी कन्यायां मिथुनेऽष्टमी ॥ १ ॥
दशमी वृश्चिके सिंहे द्वादशी मकरे तुले ।
एतास्तु तिथयो दग्धाः शुभे कर्मणि वर्जिताः ॥२॥

मीन व धन के सूर्यों में द्वितीया तिथि दग्धा होती है। वृष व कुम्भ के सूर्यों में चतुर्थी, मेष व कर्क के सूर्यों में छठ तथा कन्या व मिथुन के सूर्यों में अष्टमी दग्धा है। वृश्चिक और सिंह के सूर्यों में दशमी दग्धा है और मकर व तुला के सूर्यों में द्वादशी दग्धा है, ये सब शुभकर्म में वर्जित हैं ॥ १-२ ॥

लत्ता आदि दोषों का परिहार ।

लत्ता मालवके देशे पातश्च कुरुजाङ्गले ।
एकार्गलं च काश्मीरे वेधं सर्वत्र वर्जयेत् ॥ १ ॥

लत्तादोष मालव देश में वर्जित है, पातदोष कुरुजाङ्गल देश में वर्जित है। एकार्गल दोष काश्मीरदेश में वर्जित है और वेध दोष सब देशों में वर्जित है ॥ १ ॥

गान्धर्व-विवाह-चक्र-विचार ।

गान्धर्वादिविवाहेऽर्काद्देदनेत्रगुणेन्दवः ।
कुयुगाङ्गानि भूरामत्रिपद्यामशुभाः शुभाः ॥ १ ॥

सूर्य के नक्षत्र से चन्द्र नक्षत्र तक गान्धर्व विवाह का विचार करना । चार, दो, तीन, एक, एक, चार, छः, एक, तीन फिर तीन इस क्रम से प्रथम अशुभ फिर शुभ जानिए ॥ १ ॥

गान्धर्व-विवाह-चक

४	२	३	१	१	४	६	१	३	३
अ.	शु.	अ.	शु.	अ.	शु.	अ.	शु.	अ.	शु.

स्वयंवरकाल-मुहूर्त ।

पिता पितामहो भ्राता माता बन्धुर्यदा न हि ।
ऋतौ वर्षत्रयादूर्ध्वं कन्या कुर्यात्स्वयंवरम् ॥ २ ॥

कन्या का पिता व पितामह (पिता का पिता) व भाई व माता व कुटुम्बी, ये कोई न हों तो कन्या रजस्वला होने पर तीन वर्ष के अनन्तर अपने मन से पति कर लेवे ॥ १ ॥

गोधूलिका-विचार

यदा नास्तं गतो भानुर्गोधूल्या पूरितं नभः ।
सर्वमङ्गलकार्येषु गोधूलिः शस्यते सदा ॥ १ ॥

सूर्य जब अस्त होने पर हो, जिस समय गौओं की धूलि आकाश में पूरित हो, उस समय जितने मंगलकार्य हैं वे सब शुभ हैं ॥ १ ॥

अन्धादि-लग्न-विचार ।

दिने सदान्धा वृषमेषसिंहा
रात्रौ च कन्या मिथुनं कुलीरः ।
मृगस्तुलालिर्बधिरोऽपराह्णे
सन्ध्यासु कुब्जा घटधन्विमीनाः ।। १ ।।

दिन को वृष, मेष और सिंह लग्न सदा अन्धे होते हैं, रात्रि को कन्या, मिथुन और कर्क अन्धे होते हैं, अपराह्ण में मकर, तुला और वृश्चिक ये बहिरे होते हैं, तथा कुम्भ, धनु और मीन ये सन्ध्या में कुबरे होते हैं ।। १ ।।

अन्ध आदि लग्नों का फल ।

दारिद्र्यं बधिरतनौ दिवान्धलग्ने
वैधव्यं शिशुमरणं निशान्धलग्ने ।
पङ्ग्वङ्गे निखिलधनानि नाशमीयुः
सर्वत्राधिपगुरुदृष्टिभिर्न दोषः ।। २ ।।

बहिरे लग्न में विवाह होने से दारिद्रय आता है, दिन के अन्धलग्न वैधव्यकारक हैं, रात्रि के अन्ध लग्न बालकों के मृत्युकारक हैं और लँगड़े लग्न में धन-नाश होता है । यदि लग्न का स्वामी या बृहस्पति लग्न को देखता हो तो दोष नहीं है ।।२।।

अन्य प्रकार से लग्नों के फल ।

घस्रे तुलाली बधिरौ मृगाश्वौ
रात्रौ च सिंहाजवृषा दिवान्धाः ।

कन्यानृयुक्कर्कटका निशान्धा
दिने घटोऽन्त्ये निशि पंगुसंज्ञः ।। १ ।।

तुला और वृश्चिक ये दोनों लग्नें दिन में तथा धन और मकर रात्रि में बहिरी होती हैं । सिंह, मेष और वृष, ये दिन में अन्धे तथा कन्या, मिथुन और कर्क ये रात्रि में अन्धी होती हैं । कुम्भ लग्न दिन में तथा मीन लग्न रात्रि में लँगड़ी (पंगु) होती है ।

पंग्वादि लग्नों के फल ।

दिवान्धो वरहन्ता च रात्र्यन्धो धननाशकः ।
दुःखदो बधिरो लग्नः कुब्जावंशविनाशिनी ।। २ ।।

जो लग्नें दिन में अन्धी कही गई हैं, उनमें यदि विवाह करे तो कन्या विधवा होती है । जो लग्नें रात्रि में अन्धी कही गई हैं उनमें विवाह हो तो धन का नाश करे । बहिरी लग्न में विवाह हो तो दुःख हो और कुबरे लग्न में विवाह हो तो वंश का नाश हो ।। १ ।।

विवाह में कर्तरीदोष-विचार ।

लग्नात्पापावृज्वनृजू व्ययार्थस्थौ यदा तदा ।
कर्तरीनाम सा ज्ञेया मृत्युदारिद्र्यशोकदा ।। १ ।।

विवाह के लग्न से कर्तरीदोष का विचार करे अर्थात् पापग्रह मार्गी होकर लग्न के बारहवें हों और पापग्रह वक्री होकर लग्न के दूसरे घर में हों तो कर्तरीनाम का दोष होता है । यह कर्तरी दोष मृत्यु, दारिद्र्य और शोक को देनेवाला होता है ।। १ ।।

कुलिकयोग-विचार ।

सूर्ये च सप्तमी सोमे षष्ठी भौमे च पञ्चमी ।
बुधे चतुर्थी देवेज्ये तृतीया भृगुनन्दने ।। १ ।।

द्वितीया वर्जनीया च प्रतिपच्च शनैश्चरे ।
कुलिकाख्यो हि योगोऽयं विवाहादौ न शस्यते ।। २ ।।

रविवार को सप्तमी, सोमवार को छठ, मंगलवार को पञ्चमी, बुधवार को चौथ, गुरुवार को तीज शुक्रवार को द्वितीया को और शनिवार को परीवा होने पर कुलिकयोग होता है। यह विवाहादि शुभ कार्यों में शुभ नहीं होता है ।। १-२ ।।

कुलिकयोग ।

सू.	चं.	मं.	बु.	वृ.	शु.	श.	वार
७	६	५	४	३	२	१	तिथियाँ

नवांश-विचार ।

मेषसिंहधनुर्लग्ने नवांशा मेषतः स्मृताः ।
वृषकन्या मृगे लग्ने मकरान्नवमांशकाः ।। १ ।।
कर्कालिमीनलग्नेषु नवांशाःकर्कतः स्मृताः ।
नृयुग्मतौलिकाभेषु तौलितः स्युर्नवांशकाः ।। २ ।।

मेष, सिंह और धनु लग्न का नवांश मेष से गिनना। वृष, कन्या और मकर लग्न का नवांश मकर से गिनना। कर्क, वृश्चिक और मीन का नवांश कर्क से गिनना। मिथुन, तुला और कुम्भ का नवांश तुला से गिनना।

गिनने का क्रम यह है कि तीस अंश की लग्न होती है, उसका नवांश तीन अंश बीस कला का हुआ, उसे प्रथम नवांश जानिए। इसी क्रम से नव नवांश होते हैं।

'स्पष्ट लग्न में तथा स्पष्ट ग्रहों में जितने अंश व कला बीते हों उसका नवांश इसी रीति से विचारना चाहिए। यह चक्र से स्पष्ट हो जायगा ।। १-२ ।।

नवांश-चक्र ।

अंश कला	मे.	वृ.	मि.	क.	सिं.	कं.	तु.	वृ.	ध.	मं.	कुं.	मी.
३।२०	मे.	म.	तु.	क.	मे.	म.	तु.	क.	मे.	म.	तु.	क.
६।४०	वृ.	कुं.	वृ.	सिं.	वृ.	कुं.	वृ.	सिं.	वृ.	कुं.	वृ.	सिं.
१०।०	सि.	मी.	ध.	कं.	मि.	मी.	ध.	कं.	मि.	मी.	ध.	कं.
१३।२०	क.	मे.	म.	तु.	क.	मे.	म.	तु.	क.	मे.	म.	तु.
१६।४०	सिं.	वृ.	कु.	वृ.	सिं.	वृ.	कु.	वृ.	सिं.	वृ.	कु.	वृ.
२०।०	कं.	मि.	मी.	ध.	कं.	मि.	मी.	ध.	कं.	मि.	मी.	ध.
२३।२०	तु.	क.	मे.	म.	तु.	क.	मे.	म.	तु.	क.	मे.	म.
२६।४०	वृ.	सि.	वृ.	कु.	वृ.	सि.	वृ.	कुं.	वृ.	सि.	वृ.	कुं.
३०। ०	ध.	कं.	मि.	मी.	ध.	कं.	मि.	मी.	ध.	कं.	मि.	मी.

नवांश का उदाहरण ।

स्पष्ट लग्न ५ । १० । २० । २५

कन्या लग्न, दश अंश बीस कला, पच्चीस विकला स्पष्ट है, उसका नवांश कहो ।

उत्तर ।

कन्या लग्न का भोग दश अंश बीस-कला, पच्चीस विकला स्पष्ट है, तो तीन अंश बीस कला के क्रम से चौथा नवांश हुआ ।

क्रम से चौथा नवांश हुआ। कन्या का नवांश मकर से गिना जाता है, इसलिए मेष का नवांश हुआ और उसका स्वामी मङ्गल * है।

होरा-विचार और चक्र।

होरयोरोजराशौ तु रवीन्दू क्रमतः पती।
समराशौ तु चन्द्राकौं होरेशौ क्रमतो वदेत् ॥ १ ॥

विषम लग्न में पन्द्रह अंश तक सूर्य की होरा होती है, फिर पन्द्रह अंश चन्द्रमा की होरा होती है। समराशि में प्रथम पन्द्रह अंश तक चन्द्रमा की होरा होती है, फिर पन्द्रह अंश तक सूर्य की होरा होती है ॥ १ ॥

होरा-चक्र।

राशि	मे०	वृ०	मि०	क०	सिं०	कं०	तु०	वृ०	ध०	म०	कुं०	मी०
१५ अंश तक	सू.	चं.	सू.	चं.	सू.	चं.	सू.	चं.	सू.	चं.	सू.	चं.
३० अंश तक	चं.	सू.	चं.	सू.	चं.	सू.	चं.	सू.	चं.	सू.	चं.	सू.

द्रेष्काण-विचार।

द्रेष्काण आद्ये लग्नस्य द्वितीयः पञ्चमस्य च।
द्रेष्काणश्च तृतीयश्च लग्नान्नवमराशितः ॥ १ ॥

द्रेष्काण का प्रकार—राशि के तीन भाग करने से दस-दस अंश का एक द्रेष्काण होता है। उसमें प्रथम दस अंश तक जिस राशि का द्रेष्काण जानना है, उस लग्न का प्रथम द्रेष्काण होता है और उस राशि का स्वामी ही पहले द्रेष्काण का स्वामी होता है। दूसरे भाग में अर्थात् ग्यारह अंश से बीस अंश तक लग्न

* "मेषवृश्चिकयोर्भौम" इत्यादि राशियों के स्वामी पहले ही लिख चुके हैं।

से पाँचवाँ राशि का द्रेष्काण होता है। उस राशि का स्वामी दूसरे द्रेष्काण का स्वामी जानिए। तीसरे भाग अर्थात् इक्कीस अंश से तीस अंश तक लग्न से नवीं राशि का द्रेष्काण हुआ, उस राशि का स्वामी उस तीसरे द्रेष्काण का स्वामी होता है ॥ १ ॥

द्रेष्काण-चक्र ।

राशि	मे.	वृ.	मि.	कर्क	सिंह	कं.	तु.	वृ.	ध.	म.	कु.	मी.	०
प्रथम द्रेष्काण	मे.	वृ.	मि.	क.	सि.	कं.	तु.	वृ.	ध.	म.	कुं.	मी.	द्रेष्काण की राशि
१० अंशतक	मं.	शु.	बु.	चं.	सू.	बु.	शु.	मं.	बृ.	श.	श.	बृ.	द्रेष्काण का स्वामी
द्वितीय द्रेष्काण	सि.	कं.	तु.	वृ.	ध.	म.	कुं.	मी.	मे.	वृ.	मि.	क.	द्रेष्काण की राशि
२० अंशतक	सू.	बु.	शु.	मं.	बु.	श.	श.	बृ.	मं.	शु.	बु.	च.	द्रेष्काण का स्वामी
तृतीय द्रेष्काण	ध.	मं.	कुं.	मी.	मे.	वृ.	मि.	क.	सिं.	कं.	तु.	वृ.	द्रेष्काण की राशि
३० अंशतक	बृ.	श.	श.	वृ.	मं.	शु.	बु.	चं.	सू.	बु.	शु.	मं.	द्रेष्काण का स्वामी

त्रिंशांश-विचार ।

कुजार्कीज्यज्ञशुक्राणां बाणेष्वष्टाद्रिमार्गणः ।
भागाः स्युर्विषमे भे तु समराशौ विपर्ययात् ॥ १ ॥

कुजार्किगुरुविच्छुक्रास्त्रिंशांशपतयः क्रमात् ।
पञ्चपञ्चाष्टशैलेषु भागानां विषमे गृहे ।। २ ।।

मेष, मिथुन और सिंह आदि विषम राशियों का प्रथम त्रिशांश पाँच अंश का होता है, उसका स्वामी मङ्गल है । तदनन्तर पाँच अंश का स्वामी शनैश्चर, तदनन्तर आठ अंशों का स्वामी बृहस्पति, तदनन्तर सात अंशों का स्वामी बुध होता है । तदनन्तर पाँच अंशों का स्वामी शुक्र को जानिए । समराशि में विलोम अर्थात् विपरीत जानना ।

अब सुस्पष्ट समराशि का त्रिशांश लिखते हैं–समराशियों में प्रथम पाँच अंशों का स्वामी शुक्र, तदनन्तर सात अंशों का स्वामी बुध, तदनन्तर आठ अंशों का स्वामी बृहस्पति, फिर पाँच अंशों का स्वामी शनैश्चर, फिर पाँच अंशों का स्वामी मङ्गल को जानना ।। १-२ ।।

विषमत्रिशांश-चक्र ।

अंश	मे.	मि.	सि.	तु.	ध.	कु.	राशि
५	मं.	मं.	मं.	मं.	मं.	मं.	स्वामी
५	श.	श.	श.	श.	श.	श.	स्वामी
८	बृ.	बृ.	बृ.	बृ.	बृ.	बृ.	स्वामी
७	बु.	बु.	बु.	बु.	बु.	बु.	स्वामी
५	शु.	शु.	शु.	शु.	शु.	शु.	स्वामी

समत्रिंशांश-चक्र ।

अंश	वृष	कर्क	कन्या	वृश्चि.	मकर	मीन	राशि
५	शु.	शु.	शु.	शु.	शु.	शु.	स्वामी
७	बु.	बु.	बु.	बु.	बु.	बु.	स्वामी
८	बृ.	बृ.	बृ.	बृ.	बृ.	बृ.	स्वामी
५	श.	श.	श.	श.	श.	श.	स्वामी
५	मं.	मं.	मं.	मं.	मं.	मं.	स्वामी

द्वादशांश-विचार ।

स्याद्द्वादशांश इह राशित एव गेहं
होराऽथ दृक्कनवमांशकसूर्यभागाः ।
त्रिंशांशकश्च षडिमे कथितास्तु वर्गाः
सौम्यैः शुभं भवति चाशुभमेव पापैः ।। १ ।।

दो अंश तीस कलाओं का एक द्वादशांश होता है, इसलिए एक राशि में बारह द्वादशांश होते हैं। जिस राशि में द्वादशांशों का विचार करना है उसी राशि से लेकर क्रम से १२ राशियों के द्वादशांश सिद्ध होते हैं।

उदाहरण ।

मेष राशि में पहला द्वादशांश मेष का, दूसरा वृष का, तीसरा मिथुन का, चौथा कर्क का, पाँचवाँ सिंह का, छठा कन्या का, सातवाँ तुला का, आठवाँ वृश्चिक का, नवाँ धनु का, दशवाँ मकर का, ग्यारहवाँ कुम्भ का और बारहवाँ मीन का द्वादशांश होता है। इसी प्रकार वृष में, पहला वृष का, दूसरा मिथुन का, तीसरा कर्क का, चौथा सिंह का, इत्यादि क्रम से बारहवाँ मेष का द्वादशांश होता है। मिथुन इत्यादि सब राशियों का द्वादशांश चक्र से समझ लेना चाहिए।

षड्वर्ग ।

गेह, होरा, द्रेष्काण, नवांश, द्वादशांश और त्रिशांश ये छः वर्ग कहे हैं। इस षड्वर्ग में शुभग्रह हों तो शुभ जानिए तथा पापग्रह हों तो अशुभ फल देनेवाले जानिए ।। १ ।।

ग्रहों का गेह-चक्र ।

सू.	चं.	मं.	बु.	वृ.	शु.	श.	ग्रह
सिं.	कर्क	मे. वृ.	मि. कन्या	ध. मी.	वृ. तु.	म. कुं.	राशियाँ

द्वादशांक-चक्र ।

अंश कला	मे०	वृष	मि०	कर्क	सिं०	कं०	तु०	वृ०	ध०	मं०	कु०	मी.	लग्न
२।३०	१	२	३ बु०	४ चं०	५ सू०	६ बु०	७ शु०	८ मं०	९ बृ०	१० श०	११ श०	१२ बृ०	ग्रह
५	२ शु०	३ बु०	४ चं०	५ सू०	६ बु०	७ शु०	८ मं०	९ बृ०	१० श०	११ श०	१२ बृ०	१ मं०	ग्रह
७।३०	३ बु०	४ चं०	५ सू०	६ बु०	७ शु०	८ मं०	९ बृ०	१० श०	११ श०	१२ बृ०	१ मं०	२ शु०	ग्रह
१०	४ चं०	५ सू०	६ बु०	७ शु०	८ मं०	९ बृ०	१० श०	११ श०	१२ बृ०	१ मं०	२ शु०	३ बु०	ग्रह
१२।३०	५ सू०	६ बु०	७ शु०	८ मं०	९ बृ०	१० श०	११ श०	१२ बृ०	१ मं०	२ शु०	३ बु०	४ चं०	ग्रह
१५	६ बु०	७ शु०	८ मं०	९ बृ०	१० श०	११ श०	१२ बृ०	१ मं०	२ शु०	३ बु०	४ चं०	५ सू०	ग्रह
१७।३०	७ शु०	८ मं०	९ बृ०	१० श०	११ श०	१२ बृ०	१ मं०	२ शु०	३ बु०	४ चं०	५ सू०	६ बु०	ग्रह
२०	८ मं०	९ बृ०	१० श०	११ श०	१२ बृ०	१ मं०	२ शु०	३ बु०	४ चं०	५ सू०	६ बु०	७ शु०	ग्रह
२२।३०	९ बृ०	१० श०	११ श०	१२ बृ०	१ मं०	२ शु०	३ बु०	४ चं०	५ सू०	६ बु०	७ शु०	८ मं०	ग्रह
२५	१० श०	११ श०	१२ बृ०	१ मं०	२ शु०	३ बु०	४ चं०	५ सू०	६ बु०	७ शु०	८ मं०	९ बृ०	ग्रह
२७।३०	११ श०	१२ बृ०	१ मं०	२ शु०	३ बु०	४ चं०	५ सू०	६ बु०	७ शु०	८ मं०	९ बृ०	१० श०	ग्रह
३०	१२ बृ०	१ मं०	१ शु०	३ बु०	४ चं०	५ सू०	६ बु०	७ शु०	८ मं०	९ बृ०	१० श०	११ श०	ग्रह

विवाह में राशिमेलन-विचार ।

होड़ा-चक्र ।

मेष	वृष	मि.	कर्क	सिंह	कन्या	तुला	वृ.	धन	मकर	कुम्भ	मीन
चू	ई	का	ही	मा	टो	रा	तो	ये	भो	गू	दी
चे	ऊ	की	**पुन.**	मी	पा	री	**वि**	यो	जा	गे	**पू.भा.**
चो	ए	**मृ**	हू	मू	पी	**चित्रा**	ना	भा	जो	ध	दू
ला	**कृ.**	कू	हे	मे	**उ.फा.**	रू	नी	भी	**उ.षा**	गो	थ
अ.	ओ	घ	हो	**म.**	पू	रे	नू	**मूल**	जू	सा	झ
ली	वा	ङ	डा	मो	ष	रो	ने	भू	जे जो	सी	झ
लू	वी	छ	**पुष्य.**	टा	ण	ता	**अ.**	धा	**खा**	सू	**उ.भा.**
ले	वू	**आ.**	डी	टी	ठ	**स्वा.**	नो	फा	**अभि** **खी**	**शत**	दे
लो	**रो.**	के	डू	टू	**हस्त**	ती	या	ढा	**खू** **खे**	से	दो
भ.	वे	को	डे	**पू.फा.**	पे	तू	यी	**पू. षा.**	**खो**	सो	चा
आ	वो	हा	डो	टे	पो	ते	यू	भे	**श्र** गा	दा	ची
०	०	०	**श्ले**	०	०	०	**ज्ये**	०	गी	०	**रे.**

वर्ण आदि के गुणों का विचार ।

वर्णो[१] वश्यं[२] तथा तारा[३] योनिश्च[४] ग्रहमैत्रकम्[५] ।
गणमैत्रं[६] भकूटं[७] च नाडी[८] चैते गुणाधिकाः ॥ १ ॥

वर्ण, वश्य, तारा, योनि, ग्रहमैत्री, गणमैत्री, भकूट, नाड़ी ये वर्णादिक आठ कूट विवाह में अवश्य विचारना चाहिए । इनमें उत्तरोत्तर एक से एक अधिक गुणवाले होते हैं ॥ १ ॥

वर्ण-विचार ।

मीनालिकर्कटा विप्राः क्षत्री मेषो हरिर्धनुः ।
शूद्रयुग्मं तुलाकुम्भौ वैश्यकन्यावृषो मृगः ॥ १ ॥
नोत्तमामुद्वहेत्कन्यां ब्राह्मणीं च विशेषतः ।
म्रियते हीनवर्णश्च ब्रह्मणा सदृशो यदि ॥ २ ॥
विप्रवर्णेषु या नारी शूद्रवर्णेषु यः पतिः ।
ध्रुवं भवति वैधव्यं शुक्रस्य दुहिता यदि ॥ ३ ॥

मीन, वृश्चिक और कर्क ये राशि ब्राह्मणवर्ण हैं । मेष, सिंह और धनु क्षत्रियवर्ण हैं । मिथुन, तुला, कुम्भ शूद्रवर्ण हैं और कन्या, वृष, मकर वैश्यवर्ण हैं । वर्ण में श्रेष्ठ कन्या उत्तम नहीं है, ब्राह्मणी विशेष वर्जित है । वर्णहीन वर की मृत्यु होती है, चाहे वर ब्रह्मा के समान हो । ब्राह्मणवर्ण की स्त्री हो और उसका पति यदि शूद्रवर्ण हो तो शीघ्र ही विधवा हो जावे, चाहे वह शुक्राचार्य की कन्या क्यों न हो ॥ १-३ ॥

वर्ण-विचार-चक्र ।

वर्ण	ब्राह्मण	क्षत्रिय	वैश्य	शूद्र
राशि	१२।८।४	१।५।९	६।२।१०	३।७।११

वश्य-विचार ।

मकरस्य पूर्वभागो मेषसिंहो धनुर्वृषः ।
चतुष्पदाः कीटसंज्ञः कर्कः सर्पश्च वृश्चिकः ।।१।।
तुला च मिथुनं कन्या पूर्वार्धो धनुषस्तथा ।
द्विपदाख्याः पश्चिमार्धं मकरस्य तथा पुनः ।।२।।
कुम्भमीनौ जलचरा राशयः परिकीर्तिताः ।

मकरराशि का पहला भाग अर्थात् आधा मकर व मेष, सिंह, धनु का दूसरा भाग व वृष इन राशियों की चतुष्पद संज्ञा है । कर्क की कीट संज्ञा है । वृश्चिक की सर्प संज्ञा है । तुला, मिथुन, कन्या और धनु का पहला भाग इनकी द्विपद संज्ञा है । मकर का दूसरा भाग, कुम्भ और मीन जलचर हैं ।। १-२ ।।

वश्य-फल ।

सिंहं विना वशाः सर्वे द्विपदानां चतुष्पदाः ।। ३ ।।
भक्ष्या जलचरास्तेषां भयस्थाने सरीसृपाः ।। ४ ।।

द्विपद के सब वश्य हैं, एक सिंह वश में नहीं है । जलचर द्विपद के भोजन हैं और सर्प से द्विपद को भय होता है ।। ३-४ ।।

वश्य-चक्र ।

मकर का पूर्वार्धमेष, सिंह, धन का परार्ध और वृष	चतुष्पद
कर्क	कीट
वृश्चिक	सर्प
तुला, मिथुन, कन्या और धन का पूर्वार्ध	द्विपद
मकर का परार्ध, कुम्भ और मीन	जलचर

तारा-विचार ।

कन्यर्क्षाद्वरभं यावत्कन्याभं वरभादपि ।
गणयेन्नवहृत् शेषे त्रिपञ्चसप्तमे भमसत्स्मृतम् ।। १ ।।

कन्या के नक्षत्र से वर के नक्षत्र तक गिने और वर के नक्षत्र से कन्या के नक्षत्र तक गिने, दोनों अङ्क पृथक्-पृथक् स्थापित करे। उनमें नव का भाग देने पर तीन, पाँच व सात शेष रहें तो अशुभ तारा जानिए ।। १ ।।

योनि-विचार ।

अश्विन्याः शतभस्याश्वो महिषः स्वातिहस्तयोः ।
पूभाधनिष्ठयोः सिंहो भरण्यन्त्यभयोर्गजः ।। १ ।।
कृत्तिकापुष्ययोर्मेषः श्रुतिपूषाढयोः कपिः ।
उषाभिजिद्भयोर्बभ्रू रोहिणीमृगयोरहिः ।। २ ।।
ज्येष्ठानुराधयोरेणः श्वा मूलार्द्राभयोस्तथा ।
पुनराश्लेषयोरोतुराखुः पूफामघर्क्षयोः ।। ३ ।।
विशाखाचित्रयोर्व्याघ्रो गौरुफोत्तरभाद्रयोः ।
मैत्री वैरं विचार्यैवं भानां प्रोक्तास्तु योनयः ।। ४ ।।

अश्विनी और शतभिष अश्व (घोड़ा) योनि है। स्वाती और हस्त महिष योनि है। पूर्वाभाद्रपद और धनिष्ठा सिंह-योनि है। भरणी और रेवती हाथी योनि है। कृत्तिका और पुष्य मेष (मेढ़ा) योनि है। श्रवण और पूर्वाषाढ़ वानर योनि है। उत्तराषाढ़ व अभिजित् नेउला योनि है। रोहिणी और मृगशिरा सर्प योनि है। ज्येष्ठा और अनुराधा मृग (हरिण) योनि है। मूल और आर्द्रा कुत्ता योनि है। पुनर्वसु तथा आश्लेषा विलार योनि है। पूर्वाफाल्गुनी व मघा मूषक योनि

है । विशाखा और चित्रा व्याघ्र योनि है । उत्तराफाल्गुनी व उत्तराभाद्रपद की गो योनि है । इसी प्रकार से मैत्री व वैर का विचार नक्षत्र से कहा है ॥ १-४ ॥

योनिवैर-ज्ञान ।

गोव्याघ्रं महिषाश्वं च श्वैणं मार्जारमूषकम् ।
सिंहेभं कपिमेषं च वैरं तु नकुलोरगम् ॥ ५ ॥
त्याज्यं परस्परं वैरं दम्पत्योः स्वामिभृत्ययोः ॥ ६ ॥

गौ और बाघ का, महिष व घोड़ा का, कुत्ता व मृग का, सिंह व हस्ती का, वानर व मेढ़ा का और नेउला व सर्प का परम वैर होता है । इसलिए विवाह तथा नौकरी में ये सब वर्जित हैं ॥ ५-६ ॥

योनि-चक्र ।

योनि	नक्षत्र
अश्व	अ. श.
महिष	स्वा. ह.
सिंह	ध. पूर्वा. भा.
हस्ती	भ. रे.
मेष	पुष्य कृ.
वानर	श्र. पू. षा.
नकुल	उ. षा. अभि.
सर्प	मृ. रो.
हरिण	ज्ये. अनु.
श्वान	मू. आ.
मार्जार	पुनर्वसु. श्ले.
मूषक	म. पू. फा.
व्याघ्र	वि. चि.
गो	उ. भा. उ. फा

ग्रहमैत्री-विचार ।

मित्राणि द्युमणेः कुजेज्यशशिनः शुक्रार्कजौ वैरिणौ
सौम्यश्चास्य समो विधोर्बुधरवी मित्रे न चास्य द्विषत् ।
शेषाश्चास्य समाः कुजस्य सुहृदश्चन्द्रेज्यसूर्या बुधः
शत्रुःशुक्रशनी समौ च शशिभृत्सूनोः सिताहस्करौ ॥१॥

मित्रे चास्य रिपुः शशी गुरुशनिक्ष्माजाः समा गीष्पते-
र्मित्राण्यर्ककुजेन्दवो बुधसितौ शत्रू समः सूर्यजः ।
मित्रे सौम्यशनी कवेः शशिरवी शत्रू कुजेज्यौ समौ
मित्रेशुक्रबुधौशनेःरविशशिक्ष्माजाद्विषोऽन्यःसमः ॥२॥

सूर्य के मंगल, बृहस्पति और चन्द्रमा मित्र; बुध सम; शुक्र और शनैश्चर शत्रु हैं। चन्द्रमा के बुध और सूर्य मित्र; मंगल, बृहस्पति, शुक्र और शनि सम और शत्रु कोई नहीं है। मंगल के चन्द्रमा, बृहस्पति और सूर्य मित्र; बुध शत्रु; शुक्र और शनि सम हैं। बुध के शुक्र और सूर्य मित्र; चन्द्रमा शत्रु; बृहस्पति, शनैश्चर और मंगल सम हैं। बृहस्पति के सूर्य, मंगल और चन्द्रमा मित्र; बुध और शुक्र शत्रु तथा शनैश्चर सम हैं। शुक्र के बुध, शनैश्चर मित्र; चन्द्रमा, सूर्य शत्रु; मंगल और बृहस्पति सम हैं। शनैश्चर के शुक्र, बुध मित्र; सूर्य, चन्द्रमा, मंगल शत्रु और बृहस्पति सम हैं ॥ १-२ ॥

ग्रहमैत्री-चक्र ।

सू.	चं.	मं.	बु.	बृ.	शु.	श.	ग्रह
मं.बृ.चं.	सू. बु.	चं. वृ. सू.	सू. शु.	सू.मं.चं.	बु. श.	बु. शु.	मित्र
बु.	मं. बृ. शु. श.	शु. श.	मं. बृ. श.	श.	मं. बु.	बृ.	सम
शु. श.	००	बु.	चं.	बु. शु.	चं. सू.	सू. चं. मं.	शत्रु

गणमैत्री-विचार ।

रक्षोनरामरगणाः क्रमतो मघाहि-
वस्विन्द्रमूलवरुणानिलतक्षराधाः ।

पूर्वोत्तरात्रयविधातृयमेशभानि
मैत्रादितीन्दुहरिपौष्णमरुल्लघूनि ॥ १ ॥

मघा, आश्लेषा, धनिष्ठा, ज्येष्ठा, मूल, शतभिष, कृत्तिका, चित्रा और विशाखा इन नक्षत्रों का राक्षसगण; तीनों पूर्वा, तीनों उत्तरा, रोहिणी, भरणी और आर्द्रा इन नक्षत्रों का मनुष्यगण; अनुराधा, पुनर्वसु, मृगशिरा, श्रवण, रेवती, स्वाती, हस्त, अश्विनी और पुष्य इन नक्षत्रों का देवतागण है ॥ १ ॥

फल ।

निजनिजगणमध्ये प्रीतिरत्युत्तमा स्या-
दमरमनुजयोः सा मध्यमा संप्रदिष्टा ।
असुरमनुजयोश्चेन्मृत्युरेवप्रदिष्टो
दनुजविबुधयोः स्याद्वैरमेकान्ततोऽत्र ॥ २ ॥

अपने-अपने गण में अति उत्तम प्रीति हो अर्थात् वर-कन्या का जन्म-नक्षत्र एक ही गण में हो तो विवाह होने पर वर-कन्या दोनों की प्रगाढ़ प्रीति होती है । वर-कन्या इन दोनों में से किसी का जन्म-नक्षत्र देवतागण में हो और किसी का मनुष्य-गण में हो तो मध्यम प्रीति होती है । किसी का जन्म-नक्षत्र राक्षसगण में हो और किसी का मनुष्यगण में हो तो वर-कन्या की मृत्यु होती है । यदि वर-कन्या इन दोनों में एक का जन्म-नक्षत्र राक्षसगण में हो और दूसरे का देवतागण में हो तो दोनों का परस्पर वैर रहता है ॥ २ ॥

पूर्वोत्तरात्रयविधातृयमेशभानि
मैत्रादितीन्दुहरिपौष्णमरुल्लघूनि ॥ १ ॥

मघा, आश्लेषा, धनिष्ठा, ज्येष्ठा, मूल, शतभिष, कृत्तिका, चित्रा और विशाखा इन नक्षत्रों का राक्षसगण; तीनों पूर्वा, तीनों उत्तरा, रोहिणी, भरणी और आर्द्रा इन नक्षत्रों का मनुष्यगण; अनुराधा, पुनर्वसु, मृगशिरा, श्रवण, रेवती, स्वाती, हस्त, अश्विनी और पुष्य इन नक्षत्रों का देवतागण है ॥ १ ॥

फल ।

निजनिजगणमध्ये प्रीतिरत्युत्तमा स्या-
दमरमनुजयोः सा मध्यमा संप्रदिष्टा ।
असुरमनुजयोश्चेन्मृत्युरेवप्रदिष्टो
दनुजविबुधयोः स्याद्वैरमेकान्ततोऽत्र ॥ २ ॥

अपने-अपने गण में अति उत्तम प्रीति हो अर्थात् वर-कन्या का जन्म-नक्षत्र एक ही गण में हो तो विवाह होने पर वर-कन्या दोनों की प्रगाढ़ प्रीति होती है । वर-कन्या इन दोनों में से किसी का जन्म-नक्षत्र देवतागण में हो और किसी का मनुष्य-गण में हो तो मध्यम प्रीति होती है । किसी का जन्म-नक्षत्र राक्षसगण में हो और किसी का मनुष्यगण में हो तो वर-कन्या की मृत्यु होती है । यदि वर-कन्या इन दोनों में एक का जन्म-नक्षत्र राक्षसगण में हो और दूसरे का देवतागण में हो तो दोनों का परस्पर वैर रहता है ॥ २ ॥

गणबोधक-चक्र ।

मं.	श्ले.	ध.	ज्ये.	मू.	श.	कृ.	चि.	वि.	राक्षस
पू. भा.	पू. षा.	पू. फा.	उ. भा.	उ. षा.	उ. फा.	रो.	भ.	आ.	मनुष्य
अनु.	पुन.	मृ.	श्र.	रे.	स्वा.	ह.	अ.	पुष्य	देवता

भकूट का ज्ञान ।

मृत्युः षडष्टके ज्ञेयोऽपत्यहानिर्नवात्मजे ।
द्विर्द्वादशे निर्धनत्वं द्वयोरन्यत्र सौख्यकृत् ॥ १ ॥

कन्या की जन्म-राशि से वर की जन्म-राशि और वर की जन्म-राशि से कन्या की जन्म-राशि छठी या आठवीं हो तो दोनों की मृत्यु; नवीं या पाँचवीं हो तो सन्तान की हानि; दूसरी या बारहवीं हो तो दोनों निर्धन होते हैं। इनसे अतिरिक्त हो तो दोनों सुखी रहते हैं ॥ १ ॥

मृत्युषडष्टक-विचार ।

कन्यामेषे वृषे चापे कामालिघटकर्कटे ।
मृगसिंहे तुलामीने त्यजेन्मृत्युषडष्टके ॥ १ ॥

कन्या—मेष, वृष—धनु, मिथुन—वृश्चिक, कुंभ—कर्क, मकर—सिंह और तुला—मीन इन दो-दो राशियों को मृत्युषडष्टक कहते हैं ॥१॥

वृद्धिषडष्टकविचार ।

मेषालिमकरे युग्मे कन्याकुम्भतुले वृषे ।
सिंहमीने धने कर्के षडष्टं प्रतिवृद्धिदम् ॥ १ ॥

मेष, वृश्चिक; मकर, मिथुन; कन्या, कुम्भ; तुला, वृष; सिंह, मीन; धनु और कर्क इनको परस्पर वृद्धिषडष्टक जानना चाहिए ॥ १ ॥

वर्गगुण-विचार ।

अकचटतपयशवर्गाः खगेशमार्जारसिंहशुनाम् ।
सर्पाखुमृगावीनां निजपञ्चमवैरिणामष्टौ ॥ १ ॥

अवर्ग, कवर्ग, चवर्ग, टबर्ग, तवर्ग, पवर्ग, यवर्ग और शवर्ग ये आठ वर्ग होते हैं । इनमें गरुड़ का अवर्ग, बिलार का कवर्ग, सिंह का चवर्ग, श्वान का टवर्ग, साँप का तवर्ग, मूषक का पवर्ग, हरिण का यवर्ग और भेड़ का शवर्ग है । इनमें अपने से पाँचवाँ वैरी होता है । जैसे गरुड़ का साँप, विलार का मूषक, सिंह का हरिण, श्वान का भेंड़, साँप का गरुड़, मूषक का विलार, हरिण का सिंह और भेंड़ का श्वान (कुत्ता) वैरी होता है । इसलिए कन्या के नाम का पहला अक्षर जिस वर्ग का हो, उससे वर के वर्ग को पाँचवाँ न होना चाहिए । यदि कन्या और वर के नाम का पहला अक्षर एक ही वर्ग का हो तो विवाह होने पर दोनों की परस्पर प्रीति होती है ॥ १ ॥

वर्गचक्र ।

अ इ उ ए ओ	गरुड़	१	त थ द ध न	सर्प	५
क ख ग घ ङ	मार्जार	२	प फ ब भ म	मूषक	६
च छ ज झ ञ	सिंह	३	य र ल व	मृग	७
ट ठ ड ढ ण	श्वान	४	श ष स ह	मेष	८

नाड़ी का विचार ।

ज्येष्ठा रौद्रार्यमाम्भःपतिभयुगयुगं दास्रभं चैकनाडी
पुष्येन्दुत्वाष्ट्र मित्रान्तकवसुजलभं योनिबुध्न्ये च मध्या ।
वाय्वग्निव्यालविश्वोडुयुगयुगमथो पौष्णभंचापरास्या
दंपत्यो रेकनाड्यांपरिणयनमसन्मध्यनाड्यांहि मृत्युः ॥ १ ॥

ज्येष्ठा, मूल, आर्द्रा, पुनर्वसु, शतभिष, पूर्वाभाद्रपद, उत्तराफाल्गुनी, हस्त और अश्विनी इन नक्षत्रों की आदि नाड़ी; पुष्य-मृगशिरा, चित्रा, अनुराधा, भरणी, धनिष्ठा, पूर्वाषाढ़, पूर्वाफाल्गुनी और उत्तराभाद्रपद इनकी मध्य नाड़ी; स्वाती, विशाखा, कृत्तिका, रोहिणी, श्लेषा, मघा, उत्तराषाढ़, श्रवण और रेवती इनकी अन्त नाड़ी है ।

फल ।

एक नाड़ी में वर कन्या का नक्षत्र हो तो विवाह अशुभ और मध्य नाड़ी में हो तो मृत्यु होती है ॥ १ ॥

नाड़ी-चक्र ।

अ.	आ.	पुन.	उ. फा.	ह.	ज्ये.	मू.	श.	पू. भा.	आदिनाड़ी
भ.	मृ.	पुष्य	पू. फा.	चि.	अनु.	पू. षा.	ध.	उ. भा.	मध्य नाड़ी
कृ.	रो.	श्ले.	म.	स्वा.	वि.	उ. षा.	श्र.	रे.	अन्त्य नाड़ी

वर का निषिद्ध नक्षत्र ।

भामिनीजन्मनक्षत्राद्द्वितीयं पतिजन्मभम् ।
न शुभं भर्तृनाशाय कथितं ब्रह्मयामले ॥ १ ॥

ब्रह्मयामल में कहा है कि स्त्री के जन्म-नक्षत्र से दूसरा नक्षत्र पति का हो तो विवाह-शुभ नहीं किन्तु पतिनाशक है ॥ १ ॥

दुष्ट भकूट का परिहार ।

प्रोक्ते दुष्टभकूटके परिणयस्त्वेकाधिपत्ये शुभो-
ऽथोराशीश्वरसौहृदेऽपि गदितो नाड्यर्क्षशुद्धिर्यदि ।
अन्यर्क्षांशपयोर्बलित्वसखिते नाड्यर्क्षशुद्धौ तथा
ताराशुद्धिवशेन राशिवशिताभावे निरुक्तौ बुधैः ॥ १ ॥

जो दुष्टभकूट कहा गया है उसका परिहार इस प्रकार है—

यदि वर-कन्या की राशियों का स्वामी एक ही हो, जैसे मेष-वृश्चिक का भौम और वृष-तुला का शुक्र तो विवाह शुभ होता है । राशीशों की मैत्री हो तो भी शुभ है । यदि नाड़ीशुद्धि और नक्षत्रशुद्धि हो और उक्त राशीश और अंशों के देश की परस्पर मैत्री हो, बलवान् भी हों, नाड़ीशुद्धि और ताराशुद्धि हो एवं राशिवश्यता भी उचित हो तो ग्रहों के शत्रुभाव का दोष नहीं होता । यहाँ ग्रहमैत्री-मित्रषट्काष्टक १, एकाधिपत्य २, सबलांशेशमैत्री ३, राशिवश्यता ४ और ताराशुद्धि ५, ये षट्काष्टकों के परिहार हैं । इनमें से एक के होने में भी षट्काष्टक दोष नहीं होता ॥ १ ॥

गण-परिहार ।

मैत्र्यां राशिस्वामिनोरंशनाथ-
द्वन्द्वस्यापि स्याद्गणानां न दोषः ।
खेटारित्वं नाशयेत्सद्भकूटं
खेटप्रीतिश्चापि दुष्टं भकूटम् ॥ १ ॥

दोनों राशियों के स्वामियों से और दोनों राशियों के नवांश के स्वामियों से मित्रता हो तो गणों का दोष नहीं होता । यदि शुभ भकूट हो अर्थात् कन्या की जन्मराशि से वर की जन्मराशि, वर के जन्मराशि से कन्या की जन्मराशि तीसरी, चौथी, सातवीं, दशवीं और ग्यारहवीं हो तो वर कन्या के जन्मराशि के स्वामियों की शत्रुता का विनाश करता है और यदि दोनों जन्मराशीशों की परस्पर मित्रता हो तो दुष्ट भकूट का विनाश करती है ॥१॥

नाडी-दोष तथा गण-दोष का परिहार ।

राश्यैक्ये चेद्भिन्नमृक्षं द्वयोः स्या-
न्नक्षत्रैक्ये राशियुग्मं तथैव ।
नाडीदोषो नो गणानां च दोषो
नक्षत्रैक्ये पादभेदे शुभं स्यात् ॥ १ ॥

जो वर कन्या की राशि एक हो और जन्म-नक्षत्र भिन्न हो तथा नक्षत्र दोनों का एक हो, राशि ही भिन्न हो तो नाड़ी दोष और गण का दोष नहीं होता । जो दोनों का नक्षत्र एक हो परन्तु चरण का भेद हो तब भी विवाह शुभ होता है ॥ १ ॥

वर्ण आदि के दोष का परिहार ।

गणदोषो योनिदोषो वर्णदोषः षडष्टकम् ।
चत्वारि नैव दुष्यन्ति राशिमैत्री यदा भवेत् ॥ १ ॥

गणदोष, योनिदोष, वर्णदोष और षडष्टक ये चारों गुण ग्रह-मैत्री होने पर दोष नहीं कर सकते हैं ॥ १ ॥

पुनः परिहार।

न वर्गवर्णो न गणो न योनि-
र्द्विर्द्वादशे नैव षडष्टके वा।
ताराविरुद्धे नवपञ्चमे वा
मैत्री यदा स्याच्छुभदो विवाहः ॥ १ ॥

वर्ग, वर्ण, गण, योनि, द्विर्द्वादश, षडष्टक, तारा और नवपञ्चक सब दोष होने पर भी यदि केवल ग्रहमैत्री बनती हो तो विवाह शुभदायक होता है ॥ १ ॥

नव-पञ्चक-परिहार।

वरस्य पञ्चमे कन्या कन्याया नवमे वरः।
एतत्त्रिकोणकं ग्राह्यं पुत्रपौत्रसुखावहम् ॥ १ ॥

वर के पञ्चम राशि में कन्या हो और कन्या की राशि से नवीं राशि वर की हो तो नवपञ्चक शुभ होता है। यह पुत्र-पौत्र का सुख देनेवाला होता है ॥ १ ॥

मङ्गली-विचार।

लग्ने व्यये च पाताले जामित्रे चाष्टमे कुजे।
पत्नी हन्ति स्वभर्तारं भर्तुर्भार्या न जीवति ॥ १ ॥

१—मीन-मेष, वृष-मिथुन, कर्क-सिंह, कन्या-तुला, वृश्चिक-धनु और मकर-कुम्भ ये दो-दो राशियाँ 'द्विर्द्वादश' कहलाती हैं।

२—मेष-कन्या, तुला-मीन, मिथुन-वृश्चिक, मकर-सिंह, कुंभ-कर्क और वृष-धन इन दो-दो राशियों की 'मृत्युषडष्टक' संज्ञा है।

३—मीन-वृश्चिक, कर्क-मीन, कर्क-वृश्चिक, कुंभ-मिथुन और मकर-कन्या इन दो-दो राशियों की 'नवपंचक' संज्ञा है।

एवंविधे कुजे संख्ये विवाहो न कदाचन ।
कार्यो वा गुणबाहुल्ये कुजे वा तादृशे द्वयोः ॥ २ ॥

यदि स्त्री के जन्मलग्न में या बारहवें, सातवें, चौथे तथा आठवें मङ्गल हो तो पति का विनाश करे। जो पति के जन्म-लग्न आदि में मंगल हो तो स्त्री का विनाश करे अर्थात् इन स्थानों में यदि मंगल हो तो कभी विवाह न करे। अथवा बहुत गुण मिलें तो विवाह करे, या दोनों मङ्गली हों तो शुभ होता है ॥ १-२ ॥

मंगल का परिहार ।

जामित्रे च यदा सौरिर्लग्ने वा हिबुकेऽथवा ।
नवमे द्वादशे चैव भौमदोषो न विद्यते ॥ १ ॥

जिसके जन्मलग्न से सातवें तथा लग्न में या चौथे, नवें तथा बारहवें शनैश्चर हो तो मङ्गल का दोष नहीं होता है ॥ १ ॥

नाड़ी आदि के दान का विधान ।

दोषापनुत्तये नाड्या मृत्युञ्जयजपादिकम् ।
विधाय ब्राह्मणांश्चैव तर्पयेत्काञ्चनादिना ॥ १ ॥
हिरण्मयीं दक्षिणां च दद्याद्वर्णादिकूटके ।
गावोऽन्नं वसनं हेमं सर्वदोषापहारकम् ॥ २ ॥

नाड़ी-दोष में मृत्युञ्जय का जप करना चाहिए और ब्राह्मण को सुवर्ण (सोना) देना उचित है। वर्णादिकूट में अर्थात् वर्णादि दोष में सुवर्ण (सोना) दान देवे और गो-दान, अन्न-दान, वस्त्र-दान और सुवर्ण के दान करने से सर्वदोष नष्ट होते हैं ॥ १-२ ॥

गुणों के अनुसार शुभाशुभ-फल ।

साम्ये च वर्णोत्तमजे वरे भू-
गुणोऽथ वश्याशनके गुणार्धम् ।
एकोऽरिवश्ये द्वितयं सखित्वे
स्याद्वैरभक्ष्ये गुणहानिरेव ॥ १ ॥
ताराशुभेऽथो वरकन्ययोस्तु
त्रयस्तदर्धं सदसद्वसत्वे ।
महारि वैरे सममित्रतायाः
खेन्दुत्रिकाम्बुप्रमिता गुणाः स्युः ॥ २ ॥
वैरेऽरिसाम्येऽरिसुहृत्त्वकेऽपि
द्वयोश्च साम्ये सममित्रतायाम् ।
एकाधिपत्योभयमित्रतायां
खैकद्विवह्न्यम्बुशरा गुणाः स्युः ॥ ३ ॥
साम्ये च षड्नामनुजश्च देवी
पत्नीशराः स्युः विपरीतके षट् ।
दैव्यङ्गनाराक्षसनात्र चैको
गुणोऽन्यथा खं त्वथ दुष्टकूटे ॥ ४ ॥
चेद्योनिमैत्री रमणी सुदूरं
वेदानचेत्खं त्वनयोः पदैकम् ।
भूरिक्षपादैक्य अभाव इष्टे
चेत्कएटके भारिनृदूरते षट् ॥ ५ ॥
भिन्नर्क्षराश्यैक्य इषून्मिताः स्यु-

स्त्वन्यस्य सप्ताथ च नाडिभेदे ।
गजांगुणैक्यं धृतितोऽधिकं चे-
त्स्त्रीकान्तयोःसौख्यकरं प्रदिष्टम् ॥ ६ ॥

वर कन्या दोनों का वर्ण एक ही हो तथा वर का वर्ण उत्तम हो तो एक गुण होता है, वश्य जो भक्षक हो तो आधा गुण होता है, शत्रु वश्य हो तो एक गुण होता है और मित्र वश्य हो या सम वश्य हो तो दो गुण होते हैं।

तारा के गुण ।

जो वर, कन्या दोनों का तारा शुभ हो तो तीन गुण होते हैं। एक तारा शुभ एक अशुभ हो तो डेढ़ गुण होता है। अन्यथा शून्य जानिए॥ १॥

योनि के गुण ।

महावैर योनि हो तो शून्य गुण तथा वैर में एक गुण होता है। सम योनि में तीन गुण होते हैं और मित्रयोनि में चार गुण होते हैं॥ २॥

मैत्री के गुण ।

दोनों वर कन्या की राशि से शत्रुता हो तो शून्य गुण होता है। एक शत्रु हो एक सम हो तो एक गुण होता है। एक शत्रु एक मित्र हो तो दो गुण होते हैं। दोनों सामान्य हों तो तीन गुण होते हैं। एक सम हो एक मित्र हो तो चार गुण होते हैं। दोनों राशियों का स्वामी एक ही हो तथा दोनों राशियों के स्वामियों से मित्रता हो तो पाँच गुण होते हैं।

गण-मैत्री के गुण ।

दोनों वर कन्या का सम गण हो तो छः गुण होते हैं।

वर मनुष्यगण हो, कन्या देवतागण हो तो पांच गुण होते हैं । वर देवतागण हो, कन्या मनुष्यगण हो तो छः गुण होते हैं । कन्या देवतागण, वर राक्षस गण हो तो एक गुण होता है । यदि अन्यथा हो अर्थात् मनुष्य राक्षस हो तो शून्य गुण होता है ।। ३ ।।

भकूट के गुण ।

वर कन्या से षडष्टकादि दुष्टभकूट हो परन्तु पुरुष की राशि से स्त्री की राशि दूर हो और दोनों से योनि में मैत्री हो अर्थात् योनिगुण में मित्रता हो तो चार गुण होते हैं । ये बातें न हों तो शून्य गुण जानना चाहिए । जो वर कन्या का नक्षत्र एक हो और चरणभेद हो तो एक गुण होता है । दोनों का नक्षत्र व चरण अभाव हो अर्थात् और-और हों तो भी एक गुण होता है । दुष्टकूट हो, राशीश से शत्रुता हो और स्त्री से पुरुष दूर हो तो छः गुण होते हैं । नक्षत्र भिन्न हो राशि एक ही हो तो पाँच गुण होते हैं । इनसे अन्य हो तो सात गुण होते हैं ।

नाड़ी के गुण ।

नाड़ी दोनों वर कन्या की अन्य-अन्य हो तो आठ गुण और जो एक नाड़ी हो तो शून्य गुण होता है । ये ऊपर लिखे सब गुणों का जोड़ यदि अठारह से अधिक हो तो विवाह शुभ अर्थात् स्त्री पुरुष को सुखदायक है । जो अठारह से कम गुण हों तो विवाह अशुभ है और जो अठारह पूरे हों तो मध्यम जानना चाहिए ।। ४–६ ।।

वर्ण-दोष का परिहार ।

हीनवर्णो यदा राशी राशीशो वर्णमुत्तमम् ।
तदा राशीश्वरो ग्राह्यस्तस्य राशिं न चिन्तयेत् ॥ १ ॥

राशि से जिसका वर्ण हीन हो और राशिस्वामी का वर्ण उत्तम हो तो विवाह शुभ है इसमें राशि का विचार न करे; स्वामी का ग्रहण करे ।। १ ।।

राशि, स्वामी और वर्ण का चक्र ।

१ । ८	२ । ७	३ । ६	९ । १२	१०।११	४	५	राशि
मं०	शु०	बु०	बृ०	श०	चं०	सू०	स्वामी
क्षत्रिय	ब्राह्मण	शूद्र	ब्राह्मण	शूद्र	वैश्य	क्षत्रिय	वर्ण

वधू-प्रवेश-मुहूर्त ।

समाद्रिपञ्चाङ्कदिने विवाहा-
द्वधूप्रवेशोष्टिदिनान्तराले ।
शुभः परस्ताद्विषमाब्दमास-
दिनेऽक्षवर्षात्परतो यथेष्टम् ॥ १ ॥
क्षिप्रमृदुश्रोत्रवसुमूलमघानिले ध्रुवे ।
वधूप्रवेशः सन्नेष्टो रिक्तारार्के बुधे परैः ॥ २ ॥

विवाह के दिन से सोलह दिन के भीतर सम दिन में अर्थात् दूसरे, चौथे, छठे, आठवें, दशवें, बारहवें, चौदहवें, सोलहवें और सातवें, पाँचवें, नवें दिन में और सोलह दिनों के बाद पहले, तीसरे, पाँचवें वर्ष में और पहले, तीसरे, पाँचवें, सातवें, नवें, ग्यारहवें महीने में वधूप्रवेश शुभ होता है। पाँच वर्ष बीतने के बाद अपनी इच्छा के अनुसार सम-विषम वर्ष-मास आदि का विचार न करके किंवा जहाँ तक वधूप्रवेश के मुहूर्त मिल सकें, वहाँ तक वर्ष-मास आदि का विचार करके वधूप्रवेश शुभ होता है ।। १ ।।

ध्रुवसंज्ञक[1] नक्षत्र, क्षिप्रसंज्ञक[2] और मृदुसंज्ञक[3] तथा श्रवण, धनिष्ठा, मूल, मघा और स्वाती इन नक्षत्रों में वधू-प्रवेश शुभ होता है। चतुर्थी, नवमी और चतुर्दशी इन रिक्ता तिथियों में; रविवार, भौमवार इन दिनों में और किसी आचार्य के मत से बुध दिन में भी बधूप्रवेश अशुभ होता है ॥ २ ॥

द्विरागमन-मुहूर्त।

विवाहाद्विषमे वर्षे कुम्भमेषालिगे रवौ।
बलिन्यर्के विधौ जीवे शुभाहे चाश्विनीमृगे ॥ १ ॥
रेवतीरोहिणीपुष्ये त्र्युत्तरे श्रवणत्रये।
हस्तत्रये पुनर्वस्वौ तथा मूलानुराधयोः ॥ २ ॥
कन्यामीनतुले युग्मे वृषे प्रोक्तबलान्विते।
लग्ने पद्मदलाक्षीणां द्विरागमनमिष्यते ॥ ३ ॥
संमुखे दक्षिणे शुक्रे नो गच्छेत्तु कदाचन।
गर्भिणी तु विगर्भा स्यान्नवोढा वन्ध्यतामियात्।
बालकश्चेद्विपद्येत विगेहादपि चेद्व्रजेत् ॥ ४ ॥

विवाह से विषम वर्ष में द्विरागमन शुभ है। कुम्भ, मेष और वृश्चिक के सूर्य हों; सूर्य, चन्द्रमा और बृहस्पति बली हों और शुभ दिन हों; अश्विनी, मृगशिरा, रेवती, रोहिणी, पुष्य, तीनों उत्तरा, श्रवण, धनिष्ठा, शतभिष, हस्त, चित्रा, स्वाती, पुनर्वसु, तथा मूल और अनुराधा ये नक्षत्र शुभ हैं। कन्या, मीन, तुला, मिथुन तथा वृष ये लग्न स्त्रियों के द्विरागमन में शुभ हैं। संमुख

१—रोहिणी और तीनों उत्तरा ये नक्षत्र ध्रुवसंज्ञक हैं।
२—हस्त, अश्विनी, पुष्य और अभिजित् ये नक्षत्र क्षिप्रसंज्ञक हैं।
३—मृगशिरा, चित्रा, अनुराधा और रेवती ये मृदुसंज्ञक नक्षत्र हैं।

और दक्षिण शुक्र में कभी न जाये । यदि गर्भिणी स्त्री जाये तो विना गर्भ की हो जाये और जो नवीन अर्थात् बिना गर्भवाली जाये तो बन्ध्या हो । यदि बालक को साथ ले जाये तो बालक की मृत्यु हो जाय ।। १-४ ।।

शुक्र का परिहार ।

एकग्रामे चतुष्कोणे दुर्भिक्षे राजविग्रहे ।
विवाहे तीर्थयात्रायां प्रतिशुक्रो न विद्यते ॥ १ ॥

एक ग्राम में, चारों कोणों में तथा दुर्भिक्ष में, राजा से बिगाड़ होने में और विवाह में अर्थात् बधूप्रवेशादि में या तीर्थयात्रा आदि में शुक्र के संमुख तथा दक्षिण का दोष नहीं होता ।। १ ।।

गोत्र-भेद से शुक्र-परिहार ।

कश्यपेषु वशिष्ठेषु भृगुष्वाङ्गिरसेषु च ।
भरद्वाजेषु वत्सेषु प्रतिशुक्रो न विद्यते ।। १ ।।

कश्यपगोत्र, वशिष्ठगोत्र, भृगुगोत्र, आङ्गिरसगोत्र, भरद्वाजगोत्र व वत्सगोत्र इन गोत्रों में शुक्र के संमुख तथा दक्षिण का दोप नहीं होता है ।। १ ।।

पुनः शुक्र का परिहार ।

पित्र्ये गृहे चेत्कुचपुष्पसम्भवः
स्त्रीणां न दोषः प्रतिशुक्रसंभवः ।
भृग्वङ्गिरावत्सवशिष्ठकश्यपा-
त्रीणां भरद्वाजमुनेः कुले तथा ।। १ ।।

जिस स्त्री के कुच पिता के घर में उठें या रजस्वला हो उस स्त्री के लिए शुक्र के सम्मुख और दक्षिण का दोष नहीं है । भृगु-गोत्र, आङ्गिरस-गोत्र, वत्स-गोत्र, वशिष्ठ-गोत्र, कश्यप-गोत्र,

अत्रि-गोत्र, भरद्वाजगोत्र इन गोत्रों में सम्मुख दक्षिण शुक्र का दोष नहीं होता है ॥ १ ॥

शुक्रान्ध के अनुसार परिहार।

रेवत्यादिमृगान्ते च यावत्तिष्ठति चन्द्रमाः।
तावच्छुक्रो भवेदन्धः सम्मुखे दक्षिणे शुभः ॥ १ ॥

रेवती से मृगशिरा तक नक्षत्रों में चन्द्रमा हो तो शुक्र अन्ध होता है, वह सम्मुख और दक्षिण शुभदायक होता है ॥ १ ॥

शुक्रान्ध-विचार।

यावच्चन्द्रः पूषभात्कृत्तिकाद्ये
पादे शुक्रोऽन्धो न दुष्टोग्रदक्षे।
मध्ये मार्गे भार्गवास्तेऽपि राजा
तावत्तिष्ठेत्सम्मुखत्वेऽपि तस्य ॥ १ ॥

चन्द्र नक्षत्र, रेवती से कृत्तिका के पहले चरण तक शुक्र अन्ध रहता है। उसमें यात्रा करने से संमुख और दाहिने शुक्र का दोष नहीं होता है। राजा की यात्रा में मध्यमार्ग में ही यदि शुक्र अस्त हो जाय तो राजा ठहर जाय अर्थात् जब तक उदय न हो तब तक वास करे अथवा सम्मुख रहे तब तक वास करे ॥ १ ॥

दान द्वारा शुक्र का परिहार।

सितमश्वं सितं छत्रं हेममौक्तिकसंयुतम्।
ततो द्विजायते दद्यात्प्रतिशुक्रप्रशान्तये ॥ २ ॥

'दीपिका' में लिखा है कि सफ़ेद घोड़ा, सफेद छाता, मोतीसंयुक्त सोना ब्राह्मण को देने से सम्मुख-दक्षिण शुक्र का दोष शान्त हो जाता है ॥ २ ॥

त्रिरागमन-मुहूर्त ।

आदित्यहस्तेऽन्त्यमृगाश्विमैत्रे
तथा श्रविष्ठास्वपि वातपित्र्ये ।
वध्वास्तृतीयं गमनं प्रशस्तं
स्याद्योगिनी शूलतमोविशुद्धौ ।। १ ।।

पुनर्वसु, हस्त, रेवती, मृगशिरा, अश्विनी, अनुराधा, धनिष्ठा, स्वाती और मघा इन नक्षत्रों में वधू का त्रिरागमन (थवन) शुभ है। योगिनी, दिशाशूल और राहु का शुद्ध होना आवश्यक है ।।१।।

त्रिरागमन में मासिक राहु का विचार ।

आद्येऽर्के भ्रमते राहुः पूर्वाशादिक्चतुष्टये ।
सम्मुखे दक्षिणे त्याज्यस्तृतीयगमने स्त्रियाः ॥ १ ॥

मेष-राशि के सूर्य से पूर्वादि चारों दिशाओं में राहु बसता है। वह स्त्रियों के थवने में सम्मुख दाहिने वर्जित है। चक्र से प्रत्यक्ष जानना ।। १ ।।

मासिक राहु-वास का चक्र ।

पूर्व	दक्षिण	पश्चिम	उत्तर	राहुदिशावास
मेष, सिंह, धनु	वृष, कन्या, मकर	मिथुन, तुला, कुम्भ	कर्क, वृश्चिक, मीन	सूर्य-राशि

राहु का फल ।

अग्रे राहौ च वैधव्यं दक्षिणे दुःखदो भवेत् ।
पृष्ठे पुत्रवती नारी वामे सौभाग्यशालिनी ।। १ ।।

सम्मुख राहु हो तो वैधव्य करे, दाहिने हो तो दुःख दे, पीछे हो तो पुत्रवती स्त्री हो और बायें हो तो सौभाग्यशालिनी हो ।। १ ।।

त्रैमासिक राहु-विचार।

गमोक्ततिथ्यादिषु कारयेद्बुधो
वध्वास्तृतीयः पतिवेश्मनो गमः।
तत्रालितास्त्रित्रिभसंस्थिते रवौ
प्रागादि राहुर्न शुभोऽग्रदक्षे॥ १॥

यात्रा की तिथ्यादिकों में पति के घर में वधू-प्रवेश तीसरी बार अर्थात् थवने में प्रवेश करावे तथा वृश्चिक के सूर्यों से तीन-तीन महीना राहु पूर्वादि चारों दिशाओं में वास करता है। वह राहु संमुख और दाहिने वर्जित है, चक्र में प्रत्यक्ष देखना॥ १॥

त्रैमासिक राहु का चक्र।

पूर्व	दक्षिण	पश्चिम	उत्तर	राहुदिशावास
वृश्चिक, धनु, मकर	कुम्भ, मीन, मेष	वृष, मिथुन, कर्क	सिंह, कन्या तुला	सूर्यराशि

गृहारम्भ का मुहूर्त।

मृगे धातृचित्रानुराधोत्तरान्त्ये
धनिष्ठाकरस्वातिपुष्याम्बुपेषु।
नभोमार्गवैशाखपौषे तपस्ये
समन्दे शुभाहे गृहारम्भणं सत्॥ १॥

मृगशिरा, रोहिणी, चित्रा, अनुराधा, तीनों उत्तरा, रेवती, धनिष्ठा, हस्त, स्वाती, पुष्य और शतभिष ये नक्षत्र गृहारम्भ में शुभ हैं। श्रवण, अगहन, वैशाख, पौष और फाल्गुन ये मास शुभ हैं। तथा शनिवार-समेत शुभ दिन होने चाहिए॥ १॥

गृहारम्भ में भूमि का लक्षण ।

श्वेता शस्ता द्विजेन्द्राणां रक्ता भूमिर्महीभुजाम् ।
विशां पीता च शूद्राणां कृष्णान्येषां तु मिश्रिता ॥ १ ॥

ब्राह्मण को सफेद भूमि, क्षत्रिय को लालवर्ण, वैश्य को पीतवर्ण और शूद्रों को कृष्णवर्ण श्रेष्ठ है। अन्य वर्णों को मिश्रित अर्थात् मिली हुई शुभ है ॥ १ ॥

ग्रहों का विचार ।

भौमार्करिक्तामाद्यूने चरोनेङ्गे विपञ्चके ।
व्यष्ट्यान्त्यस्थैः शुभैर्गेहारम्भस्त्र्यायारिगैः खलैः ॥ २ ॥

गृहारंभ में मङ्गलवार, रविवार, रिक्तातिथि, चर लग्न और पञ्चक ये वर्जित हैं। आठवें तथा बारहवें शुभ-ग्रह अशुभ हैं और तीसरे, ग्यारहवें और छठे पापग्रह शुभ हैं ॥ १ ॥

ग्रहारम्भ-चक्र ।

गेहाद्यारम्भेऽर्कभाद्वत्सशीर्षे
रामैर्दाहो वेदभैरग्रपादे ।
शून्यं वेदैः पृष्ठपादे स्थिरत्वं
रामैः पृष्ठे श्रीर्युगैर्दक्षकुक्षौ ॥ १ ॥
लाभो रामैः पुच्छगैः स्वामिनाशो
वेदैर्नैःस्वं वामकुक्षौ मुखस्थैः ।
रामैः पीडा सन्ततं वार्कधिष्ण्या-
दश्वैरुद्रैर्दिग्भिरुक्तं त्वसत्सत् ॥ २ ॥

सूर्य के नक्षत्र से गृहारम्भ का वत्सचक्र विचारे। तीन नक्षत्र

वत्स के शीर्ष में दे, उसका फल दाहकारक है । चार नक्षत्र अग्र-पाद में देवे, उसका फल शून्य है और चार नक्षत्र पृष्ठपाद में दे, उसका फल स्थिरता है और तीन नक्षत्र पृष्ठ में दे, उसका फल लक्ष्मीप्रद है । चार नक्षत्र दाहिनी कोख में दे, उसका फल लाभ-प्रद है । तीन नक्षत्र पृच्छ में दे, उसका फल स्वामि-नाशक है । चार नक्षत्र वाम कोख में दे, उसका फल निःस्वताकारक अर्थात् दरिद्रता है । तीन नक्षत्र मुख में दे, उसका फल सन्तानपीडक है अथवा सूर्य के नक्षत्र से सात नक्षत्र अशुभ हैं, फिर ग्यारह शुभ हैं, फिर दश अशुभ हैं, इसी क्रम से जानना चाहिए ॥ १-२ ॥

सूर्य-नक्षत्र से गृहारम्भचक्र का न्यास ।

शीर्ष	अग्र पाद	पृष्ठ पाद	पृष्ठ	दक्षिण-कुक्षि	पुच्छ	वाम-कुक्षि	मुख	अङ्ग
३	४	४	३	४	३	४	३	नक्षत्र
दाह	शून्य	स्थिरता	लक्ष्मी	लाभ	स्वामि-नाश	दरि-द्रता	संतान पीड़ा	फल

पुनः चक्र ।

७	११	१०	नक्षत्र
अशुभ	शुभ	अशुभ	फल

ग्राम का ऋण-धन-विचार ।

स्ववर्गं द्विगुणं कृत्वा परवर्गेण संयुतम् ।
अष्टभिस्तु हरेद्भागं योऽधिकः स ऋणी भवेत् ॥ १ ॥

अवर्ग आदि जो आठ वर्ग विवाह में कह आये हैं उनसे ग्राम

का ऋण-धन विचारे। अपने नाम का वर्ग दूना करे, फिर उसको ग्राम के वर्गाङ्क में जोड़ दे, उसमें आठ का भाग दे, जो शेष बचे, वह अलग धरे, फिर ग्राम के वर्गाङ्क को दूना करके अपने वर्गाङ्क में जोड़ दे, उसमें आठ का भाग दे, जो शेषाङ्क बचे उसे अलग धरे, दोनों अङ्क में देखे जो अधिक हो सो ऋणी होता है और जो कम हो वह धनी होता है।

उदाहरण ।

जैसे ग्राम का नाम लखनऊ है, और नाम है मुंशी नवलकिशोर साहब, तो लखनऊ का वर्ग सातवाँ अङ्क हुआ और नवलकिशोर साहब का वर्गाङ्क पाँचवाँ हुआ (देखो वर्ग चक्र पृ. १८३)। पहले ग्राम के अङ्क को दूना किया तो हुआ १४, इनमें नाम के वर्गाङ्क जोड़ने से हुए १९, उसमें आठ का भाग दिया तो शेषाङ्क रहा तीन, ये ग्राम के अङ्क हुए। अब नाम के वर्गाङ्क को दूना किया तो दस हुए, उसमें ग्राम का वर्गाङ्क जोड़ा तो १७ हुए, उसमें आठ का भाग दिया तो शेषाङ्क एक बचा। दोनों अङ्कों में ग्राम का अङ्क अधिक आया और मुंशी नवलकिशोर साहब का न्यून हुआ इसलिए इनको धनी और ग्राम को ऋणी जानना चाहिए ॥ १ ॥

गृहारम्भ में [1]पूर्वोक्त राहुमुख-चक्र ।

ईशान	वायव्य	नैर्ऋत्य	आग्नेय	दिशा
सिंह, कन्या, तुला	वृश्चिक, धनु, मकर	कुम्भ, मीन, मेष	वृष, मिथुन, कर्क	सूर्य-राशि

१—पहले इसी प्रकरण में 'देवालये गेहविधौ' इत्यादि श्लोक द्वारा राहु के वास आदि का वर्णन कर चुके हैं। देखो पृष्ठ ८६ ।

जिस दिशा में मुख हो उसकी पहली दिशा में खात होता है, उसमें खोदना शुभ है तथा पूर्वोक्त भूमिसुप्त[1] भी विचारना चाहिए।

दूसरे के हाथ में मकान जाने का योग।

द्यूनाम्बरे यदैकोऽपि परांशस्थो ग्रहो गृहम्।
अब्दान्तः परहस्तस्थं कुर्याच्चेद्वर्णपोऽबलः॥ १॥

जिस घर के प्रारम्भ काल में कोई एक भी ग्रह शत्रु के नवांश में स्थित होकर लग्न से सातवें और दशवें स्थान में स्थित हो तो वह ग्रह वर्ष के भीतर ही घर को, बनवानेवाले के हाथ से दूसरे के हाथ में कर देता है। यदि उसके वर्ण का स्वामी बली हो तो शुभ होता है। शुक्र और बृहस्पति ब्राह्मण के स्वामी; मङ्गल और सूर्य क्षत्रिय के स्वामी; चन्द्रमा वैश्य का स्वामी और बुध शूद्र का स्वामी है॥ १॥

राक्षसों और भूतों के निवास का विचार।

अजैकपादहिर्बुध्न्यशक्रमित्रानिलान्तकैः।
समन्दैर्मन्दवारे स्याद्रक्षोभूतयुतं गृहम॥ १॥

शनियुक्त पूर्वाभाद्रपद, उत्तराभाद्रपद, ज्येष्ठा, अनुराधा, स्वाती और भरणी इन नक्षत्रों में तथा शनिवार के दिन आरम्भ किये हुए घर में राक्षसों और भूतों का निवास रहता है।॥ १॥

ग्राम-वास का फल।

ग्रामो यत्र भवेदृक्षे तदाद्याः सप्त मस्तके।
पृष्ठे सप्त हृदि[2] सप्त सप्त पादे च तारकाः॥ १॥

१—इसका विवरण राहुवास के प्रथम ही इसी प्रकरण में 'प्रद्योतनात्पञ्च' इत्यादि श्लोक द्वारा कर आए हैं। देखो पृष्ठ ८३।

२—'हृदि-सप्त' यहाँ पर यद्यपि यति-भङ्ग है, पर सौ वर्ष के ऊपर की लिखित शीघ्रबोध की प्रति में भी यही पाठ है, इसलिए संग्रह है।

मस्तके च धनी मान्यः पृष्ठे हानिश्च निर्धनः ।
हृदये सुखसंपत्तिः पादे पर्यटनं फलम् ।। २ ।।

ग्राम के नक्षत्र से सात नक्षत्र ग्राम के मस्तक पर दीजिए और सात नक्षत्र पीठ में देना; सात हृदय में स्थापित करना और सात नक्षत्र चरण में देना चाहिए ।। १ ।।

फल ।

अपना नक्षत्र यदि ग्राम के मस्तक में पड़े तो धनी हो और ग्राम में सम्मान पावे, पीठ में पड़े तो हानि हो और निर्धन हो, हृदय में पड़े तो सुख सम्पदा हो और चरण में पड़े तो विदेश में भ्रमण कराये ।। २ ।।

ग्राम-राशि-विचार ।

एकभे सप्तमे ग्रामे वैरं हानिस्त्रिषष्ठगे ।
तुर्याष्टद्वादशे रोगः शेषस्थाने सुखं भवेत् ।। १ ।।

अपने नाम-राशि से ग्राम की राशि एक ही हो या सातवीं हो तो विरोध हो, तीसरे और छठे हो तो हानि हो, चौथे, आठवें और बारहवें हो तो रोग हो और शेष स्थान सुखकारक होते हैं ।। १ ।।

ग्राम-निवास में दिग्विचार ।

मध्ये ग्रामस्य गोद्वन्द्वनक्रसिंहाख्यराशयः ।
मीनालिकन्यकाः पूर्वे दक्षिणे कर्कराशिकः ।। १ ।।
धन्विनः पश्चिमे मेषस्तुलाकुम्भस्तथोत्तरे ।
नो वसेयुर्नराः सौख्यधनलाभात्मजार्थिनः ।। २ ।।

वृष, मिथुन, मकर और सिंह राशिवाले नगर के मध्य में निवास न करें। मीन, वृश्चिक, कन्या राशिवाले पूर्व दिशा में निवास न करें और कर्क राशिवाले दक्षिण दिशा में निवास न

करें । धनु राशिवाले पश्चिम दिशा में निवास न करें तथा मेष, तुला और कुम्भ राशिवाले उत्तर दिशा का परित्याग करें । जो मनुष्य सुख, धन और सन्तान को चाहें उनको इन दिशाओं में निवास करना उचित नहीं है ।। १-२ ।।

वैनतेयमुखा वर्गा बलिष्ठाः पूर्वतः क्रमात् ।
स्वदिशास्य गृहं श्रेष्ठं पञ्चम्यां दिशि मृत्युदम् ॥ ३ ॥

पूर्व आदि आठ दिशाओं के क्रम से गरुड़ आदि आठ वर्ग उत्तरोत्तर बली हैं । यह विषय नीचे लिखे चक्र से भली भाँति विदित हो जायेगा । जिस वर्ग की जो दिशा है वही श्रेष्ठ है, परन्तु अपने से पाँचवी दिशा को मृत्युदायक समझना चाहिए ।।३।।

वर्ग-दिशा श्रेष्ठता चक्र ।

गरुड़	बिडाल	सिंह	श्वान	सर्प	मूषक	मृग	मेष	वर्ग
पूर्व	आग्नेय	दक्षिण	नैऋत्य	पश्चिम	वायव्य	उत्तर	ईशान	दिशा
अ	क	च	ट	त	प	य	श	वर्ण
इ	ख	छ	ठ	थ	फ	र	ष	वर्ण
उ	ग	ज	ड	द	ब	ल	स	वर्ण
ए	घ	झ	ढ	ध	भ	व	ह	वर्ण
ओ	ङ	ञ	ण	न	म	०	०	वर्ण
१	२	३	४	५	६	७	८	वर्गाङ्क
०	०	०	०	०	०	०	०	०

पिण्डविचार ।

१५२
एकोनितेष्टर्क्षहताद्धितिथ्यो
१ ८१
रूपोनितेष्टायहतेन्दुनागैः ।
१७
युक्ता घनैश्चापि युता विभक्ता
२१६
भूपाश्विभिः शेषमितो हि पिण्डः ॥ १ ॥
स्वेष्टायनक्षत्रभवोऽथ दैर्घ्यह-
तस्याद्विस्तृतिर्विस्तृतिहृच्च दीर्घता ।
आया ध्वजो धूमहरिश्वगोखरे-
भध्वांक्षकाः पिण्ड इहाष्टशेषिते ॥ २ ॥

जिस प्रकार विवाह में वर-कन्या के जन्म-नक्षत्र से मेलापक का विचार किया जाता है, वैसे ही ग्राम आदि के निवास में भी ग्राम के प्रसिद्ध नाम से तथा निवास करनेवाले के प्रसिद्ध नाम से विचार करना चाहिए ।

ग्राम के नाम-नक्षत्र को इष्ट मानकर उस इष्ट नक्षत्र की संख्या में एक घटा दे, जो शेष रहे उससे एक सौ बावन को गुणा करे, फिर उसे अलग रख देना और अपने इष्ट आय में एक घटा देना, उसे इक्यासी से गुणा करना, फिर दोनों अङ्कों को जोड़कर उसमें सत्रह और जोड़ देना और उसमें दोसौ सोलह का भाग देना शेष पिण्ड (क्षेत्रफल) होता है ।

पिण्ड के अङ्क में व इष्ट आय नक्षत्र के अङ्क में अर्थात् जिसमें दो सौ सोलह का भाग दिया है वही अङ्क इष्ट आय नक्षत्र का है । उसमें कल्पित हाथों की लम्बाई का भाग देने से लब्ध चौड़ाई आयेगी । चौड़ाई का भाग देने से लम्बाई सिद्ध होगी । शेषाङ्क को चौबीस से गुणा करके पूर्वप्रकार से भाग देने से लम्बाई-चौड़ाई के अंगुल निकलेंगे । कमती-बढ़ती, लम्बाई-चौड़ाई किया

चाहे तो पूर्वोक्त अङ्क में दो सौ सोलह घटा-बढ़ा ले, फिर उसमें भाग देकर अपने कार्यार्थ लम्बाई-चौड़ाई निकाल ले, यह ऊपर से ज्ञात होता है। पिण्ड में आठ का भाग देने से लब्ध ध्वजादिक आठ आय होते हैं।

क्रम से नाम ध्वज १ धूम २ हरि ३ श्वान ४ गो ५ खर ६ हाथी ७ काक ८ इस क्रम से शेषाङ्क में आठ आय जानना चाहिए ॥ १–२ ॥

आय और द्वार-विचार ।

ध्वजादिकाः सर्वदिशि ध्वजे मुखं
कार्यं हरौ पूर्वयमोत्तरे तथा ।
प्राच्यां वृषे प्राग्यमयोर्गजेऽथवा
पश्चादुदक्पूर्वयमे द्विजादितः ॥ १ ॥

पूर्वोक्त ध्वज आय का चारों दिशाओं में द्वार प्रसिद्ध है तथा सिंह आय का मुख, पूर्व-दक्षिण-उत्तर प्रसिद्ध है। वृष आय का पश्चिम मुख का द्वार प्रधान है। गज आय का पूर्व दक्षिण मुख प्रधान है। ब्राह्मण को पश्चिम मुख, क्षत्रिय को उत्तर मुख, वैश्य को पूर्व मुख और शूद्र को उत्तर मुख द्वार करना उचित है ॥ १ ॥

अन्य प्रकार से आय का विचार ।

विस्तारगुणितं दैर्घ्यं गृहक्षेत्रफलं लभेत् ।
तत्पृथग्वसुभिर्भक्तं शेषमायो ध्वजादिकः ॥ १ ॥
ध्वजो धूम्रोऽथ सिंहः श्वा सौरभेयः खरो गजः ।
ध्वांक्षश्चैव क्रमेणैतदायाष्टकमुदीरितम् ॥ २ ॥
ध्वजे कृतार्थो मरणं च धूमे
सिंहे जयश्चाथ शुनि प्रकोपः ।

वृषे च राज्यं च खरे च दुःखं
ध्वांक्षे मृतिश्चैव गजे सुखं स्यात् ॥ ३ ॥
ब्राह्मणस्य ध्वजो ज्ञेयो सिंहो वै क्षत्रियस्य च ।
वृषभश्चैव वैश्यस्य सर्वेषां तु गजः स्मृतः ॥ ४ ॥

कल्पित लम्बाई-चौड़ाई को अथवा चौड़ाई-लम्बाई को आपस में गुणने से क्षेत्रफल होता है। उसी में आठ का भाग देने से जो बाकी बचे वे ध्वज आदि आय होती हैं। ध्वज १, धूम २, सिंह ३, श्वान ४, बैल ५, खर ६, हाथी ७, काक ८, ये आठ आय क्रम से जानिए।

आय-फल ।

ध्वजसंज्ञक आय का फल कृतार्थ अर्थात् प्रसन्नता, धूम का फल मरण, सिंह आय का फल जयकारक, श्वान आय का फल कोप, वृष का फल राज्य, खर आय का फल दुःख, ध्वांक्ष आय का फल मृत्यु और राज आय का फल सुख होता है। ब्राह्मण-वर्ण को ध्वज आय, क्षत्रिय को सिंह आय और वैश्य को वृष आय शुभ है तथा संपूर्ण वर्णों को गज आय शुभ है ॥ १–४ ॥

इष्टर्क्षज्ञान ।

पुष्याश्विनीवारुणपूर्वभाद्र-
मित्राणि पूर्वोत्तरहस्तचित्राः ।
ज्येष्ठार्यमामित्रशशाङ्कमूल-
कर्णौ धनिष्ठाभगभं मघा च ॥ १ ॥
श्लेषान्त्यपूभान्त्यमथाम्बुपेश-
मूलेन्दुपौष्णोत्तरभाद्रभानि ।
अश्वादिनक्षत्रसमुद्भवाना-
मिष्टर्क्षभानां क्रमशो गृहेषु ॥ २ ॥

अश्विन्यादि सत्ताइस नक्षत्रों का इष्टर्क्ष इस चक्र के क्रम से जानना चाहिए । जैसे अश्विनी जिसका नाम नक्षत्र हो, उसका इष्टर्क्ष पुष्य हुआ । उसका अङ्क आठ हुआ । भरणी का अश्विनी १ इष्टर्क्ष है । शेष चक्र से अर्थ जान लेना चाहिए ॥ १-२ ॥

इष्टर्क्ष का चक्र ।

अ.	भ.	कृ.	रो.	मृ.	आ.	पुन.	पुष्य	श्ले.	मघा.	पू. फा.	उ. फा.	हस्त	चित्रा	नक्षत्र
पुष्य ८	अ. १	श. २४	पू. भा. २५	अनु. १७	पू. फा. ११	उ. फा. १२	हस्त १३	चित्रा १४	ज्ये. १८	उ. फा. १२	अनु. १७	मृ. ५	मूल १९	इष्टर्क्ष
स्वा.	वि.	अनु.	ज्ये.	मू.	पू. षा.	उ. षा.	श्र.	ध.	श.	पू. भा.	उ. भा.	रेवती	०	नक्षत्र
श्र. १२	ध. २३	पू. फा. ११	मं. १०	श्ले. ९	रेवती २७	पू. भा. २५	रेवती २७	श. २४	मूल १९	मृ. ५	रेवती २७	उ. भा. २६	० ०	इष्टर्क्ष

खनन का प्रकार ।

जलान्तं प्रस्तरान्तं वा पुरुषान्तमथापि वा ।
क्षेत्रं संशोध्य चोद्धृत्य शल्यं सदनमारभेत् ॥ १ ॥

जलान्त तक अथवा जहाँ पत्थर मिले वहाँ तक, एक पुरुष की गहराई तक खोदकर जगह शुद्ध करे और शल्प अर्थात् हाड़ निकालकर मकान बनाना उचित है ॥ १ ॥

शुभाशुभ भूमि का विचार ।

खन्यमाने यदा क्षेत्रे पाषाणः प्राप्यते तदा ।
धनायुश्चिरता वै स्यादिष्टकासु धनागमः ॥
कपालाङ्गारकेशादौ व्याधिना पीडितो भवेत् ॥ १ ॥

यदि क्षेत्र के खोदने पर पत्थर निकलें तो धन क्षौर आयु की वृद्धि हो । यदि ईंट निकलें तो धन की प्राप्ति हो । कपाल, कोइला और केश आदि निकलें तो रोग से पीड़ा हो ॥ १ ॥

घर में स्नान-गृह आदि का विचार ।

स्नानस्य पाकशयनास्त्रभुजेश्च धान्य-
भाण्डारदैवतगृहाणि च पूर्वतः स्युः ।
तन्मध्यतस्तु मथनाज्यपुरीषविद्या-
भ्यासाख्यरोदनरतौषधसर्वधाम ॥ १ ॥

पूर्वदिशा में स्नान-गृह, आग्नेय में पाक-गृह अर्थात् रसोईघर, दक्षिण में शयन-गृह, नैर्ऋत्य में शस्त्र-गृह, पश्चिम में भोजन-गृह, वायव्य में धान्य-संग्रह, उत्तर में भाण्डार-गृह अर्थात् बरतन रखना आदि और ईशान में देवता-गृह होना चाहिए । इन सबके बीच में क्रम से दधि-मथन-गृह, घृत-संग्रह-गृह, पुरीष-गृह अर्थात् विष्ठा के त्याग का घर व विद्याभ्यास का घर, रोदन-गृह, रतिगृह

तथा औषध-गृह और सर्वधाम-गृह ये सब होने चाहिए । यह बात 'गृह-चक्र' से स्पष्ट ज्ञात हो जावेगी ॥ १ ॥

गृह-निर्माण-चक्र ।

पूर्व	आग्नेय	दक्षिण	नैर्ऋत्य	पश्चिम	वायव्य	उत्तर	ईशान्य	पूर्व	दिशा
स्नान गृह	पाक गृह	शयन गृह	शस्त्र गृह	भोजन गृह	धान्य संग्रह गृह	भाण्डार गृह	देवता गृह	..	स्थान
दधि मथन	घृत	पुरीष	विद्या	रोदन	रति	औषध		सर्व-धाम	मध्य स्थान गृह

गृहायु का विचार ।

जीवार्कविच्छुक्रशनैश्चरेषु
लग्नारिजामित्रसुखत्रिगेषु ।
स्थितिः शतं स्याच्छरदां सितार्का-
रेज्ये तनुत्र्यङ्गसुतं शते द्वे ॥ १ ॥

लग्नाम्बरायेषु भगुज्ञभानुभिः
केन्द्रे गुरौ वर्षशतायुरालयम् ।
बन्धौ गुरुर्व्योम्नि शशी कुजार्कजौ
लाभे तदाऽशीतिसमायुरालयम् ॥ २ ॥

स्वोच्चे शुक्रे लग्नगे वा गुरौ वेश्मगतेऽथवा ।
शनौ स्वोच्चे लाभगे वा लक्ष्म्या युक्तं चिरं गृहम् ॥ ३ ॥

गृहारम्भ के समय लग्न में बृहस्पति, छठे सूर्य, सातवें बुध, चौथे शुक्र और तीसरे शनि हो तो गृह की आयु सौ वर्ष की हो ।

यदि लग्न में शुक्र, तीसरे सूर्य, छठे मङ्गल और पाँचवें बृहस्पति हो तो मकान की आयु दो सौ वर्ष की हो ॥ १ ॥

यदि लग्न में शुक्र, दसवें बुध, ग्यारहवें सूर्य और केन्द्र अर्थात् १ । ४ । ७ । १० में बृहस्पति हो तो सौ वर्ष की आयु हो ।

यदि चौथे बृहस्पति, दशवें चन्द्रमा और मङ्गल तथा शनैश्चर ग्यारहवें हो तो अस्सी वर्ष की आयु होती है ॥ २ ॥

यदि उच्च का शुक्र अर्थात् मीनराशि का होकर लग्न में पड़े, बृहस्पति चौथे और शनैश्चर उच्च का अर्थात् तुला का होकर ग्यारहवें हो तो मकान लक्ष्मीयुक्त और चिरस्थायी हो ॥ १ ॥

गृह-नाशयोग ।

गृहेशतत्स्त्रीसुखवित्तनाशो-
ऽर्केन्दीज्यशुक्रे विबलेऽस्तनीचे ।
कर्तुः स्थितिर्नो विधुवास्तुनोर्भे
पुरःस्थिते पृष्ठगते खनिः स्यात् ॥ १ ॥

गृहारम्भ के समय यदि सूर्य, चन्द्रमा, बृहस्पति और शुक्र निर्बल, अस्त किंवा नीच के हों तो क्रम से गृहेश, गृहेश की स्त्री, सुख और धन का नाश करें । चन्द्रनक्षत्र द्वार के सम्मुख पड़े तो कर्ता (मकान बनानेवाले) की स्थिति न रहे । यदि पीछे पड़े तो मकान खोदा जाये ॥ १ ॥

चन्द्रनक्षत्रज्ञान ।

कृत्तिका आदि सात-सात नक्षत्र पूर्व आदि चारों दिशाओं में

१—चन्द्रमा और वास्तु नक्षत्रों के जानने की रीति 'मुहूर्तचिन्तामणि' में विशद रूप से वर्णित है ।

वास करते हैं, यह जानना चाहिए। गृह का द्वार पहले निश्चित करके विचार लेना। नींव देने के समय विचारना कि नींव का नक्षत्र किस दिशा में है। वह द्वार के संमुख व दक्षिण शुभ तथा वाम व पृष्ठ अशुभ होता है।

मकान के ध्रुव आदि नामों का विचार।

दिक्षु पूर्वादितः शालाध्रुवा भू[१] द्वौ[२] कृता[४] गजाः[८] ।
शालाध्रुवाङ्कसंयोगः सैको वेश्मध्रुवादिकम् ॥ १ ॥
ध्रुवधान्ये जयनन्दौ खरकान्तमनोरमम् ।
सुमुखं दुर्मुखोग्रं च रिपुदं धनदं क्षयम् ॥ २ ॥
आक्रन्दं विपुलं ज्ञेयं विजयं चेति षोडश ।
गृहं ध्रुवादिकं ज्ञेयं नामतुल्यफलप्रदम् ॥ ३ ॥

पूर्व आदि चारों दिशाओं में शाला के अङ्क क्रम से जोड़ दे। पूर्व में १, दक्षिण में २, पश्चिम में ४ और उत्तर में ८। जिस दिशा में शाला हो उस दिशा के अङ्क जोड़कर एक और जोड़ दे। जितने अङ्क हों वे ही ध्रुव आदि गृह के नाम होते हैं—

ध्रुव १, धान्य २, जय ३, नन्द ४, खर ५, कान्त ६, मनोरम ७, सुमुख ८, दुर्मुख ९, उग्र १०, रिपुद ११, धनद १२, क्षय १३, आक्रन्द १४, विपुल १५ और विजय १६ ये सोलह नाम हैं। इनका फल नाम के तुल्य ही जानना चाहिए ॥ १-३ ॥

गृहाख्य शुभाशुभ फल का चक्र ।

ध्रुव १	धान्य २	जय ३	नन्द ४	खर ५	कान्त ६	मनोरम ७	सुमुख ८	गृह-नाम
शुभ	शुभ	शुभ	शुभ	अशुभ	शुभ	शुभ	शुभ	फल
दुर्मुख ९	उग्र १०	रिपुद ११	धनद १२	क्षय १३	आक्रन्द १४	विपुल १५	विजय १६	गृह-नाम
अशुभ	अशुभ	अशुभ	शुभ	अशुभ	अशुभ	शुभ	शुभ	फल

अंश-फल-विचार ।

भं नागतष्टं व्यय ईरितोऽसौ
ध्रुवादिनामाक्षरयुक्स पिण्डः ।
तष्टो गुणैरिन्द्रकृतान्तभूपा
ह्यंशा भवेयुर्न शुभोऽन्तकोऽत्र ॥ १ ॥

पूर्व कहे हुए—इष्ट नक्षत्र की संख्या में आठ का भाग देने से जो शेष बचे वही व्यय कहा जाता है। इसका प्रयोजन यह है कि आय की अपेक्षा न्यून व्ययवाला घर शुभ होता है। व्यय में ध्रुवादिकों के नाम के अक्षर जोड़ना, उस अङ्क में पिण्ड जोड़ देना, उसमें तीन का भाग देना, एक शेष रहे तो इन्द्र का अंश, दो शेष बचें तो यमराज का अंश और तीन बचें तो राजा का अंश होता है। जिस घर में यम का अंश रहता है वह घर शुभ नहीं होता है ॥१॥

ध्रुवादिकों के नामाक्षर जानने की संख्या ।

ध्रुव, धान्य, जय, नन्द, खर, कान्त इनके नामों में दो अक्षर, मनोरम में चार अक्षर, सुमुख व दुर्मुख में तीन अक्षर, उग्र में दो

अक्षर, रिपुद में तीन अक्षर, धनद में तीन अक्षर, क्षय में दो अक्षर; आक्रन्द, विपुल और विजय में तीन अक्षर होते हैं ।

पृथ्वी शोधन-प्रकरण ।

कुण्डार्थपृथ्वीपरिशोधहेतवे
प्रष्टुर्मुखाद्यः प्रथमं स्फुटीभवेत् ।
वर्गादिवर्णैः किल तद्दिशि स्मृतं
शल्यं मुनीन्द्रैर्हपयैस्तु मध्यतः ॥ १ ॥

नवीन मकान के लिए प्रथम पृथ्वी शोधन करे । प्रश्नकर्ता के मुख से जो आदि अक्षर निकले उसी से प्रश्न विचारे । अवर्गादि जो आठ वर्ग हैं उनसे पूर्वादि आठों दिशाओं में शल्य क्रम से जानना चाहिए । और ह, प और य, ये अक्षर मध्य में जानना ॥ १ ॥

स्मृत्वेष्टदेवतां प्रष्टुर्वचनस्याद्यमक्षरम् ।
गृहीत्वा तु ततः शल्याशल्यं सम्यग्विचार्यते ॥ २ ॥

पहले प्रश्नकर्ता इष्ट देवता का स्मरण करके प्रश्न करे । प्रश्न के आदि अक्षर से शल्याशल्य का विचार करे ॥ २ ॥

प्रश्नाक्षरों के फल ।

पृच्छायां यदि अः प्राच्यां नरशल्यं तदा भवेत् ।
सार्द्धहस्तप्रमाणेन तच्च मानुष्यमृत्युकृत् ॥ ३ ॥

प्रष्टा के मुख से आदि अक्षर अवर्ग का निकले तो पूर्वदिशा में डेढ़ हाथ गहरा खोदने से मनुष्य की हड्डियाँ निकलेंगी, उनको मृत्युकारक जानना चाहिए ॥ ३ ॥

आग्नेय्यां दिशि कः प्रश्ने खरशल्यं करद्वये ।
राजदण्डो भवेत्तत्र भयं नैव निवर्त्तते ॥ ४ ॥

यदि पहला अक्षर कवर्ग का निकले तो आग्नेय कोण में दो हाथ खोदने पर गदहे की हड्डियाँ निकलेंगी, उससे राज-दण्ड का भय कभी निवृत्त नहीं होता है ॥ ४ ॥

याम्यायां दिशि च प्रश्ने तदा स्यात्कटिसंस्थितम् ।
नरशल्यं गृहे तस्य मरणं चिररोगतः ॥ ५ ॥

यदि आदि का अक्षर चवग का हो तो दक्षिण दिशा में कमर के बराबर गहरे में मनुष्य की हड्डी निकले, उससे चिरकाल के रोग में मरण हो ॥ ५ ॥

नैर्ऋत्यां यदि टः प्रश्ने सार्द्धहस्तादधःस्थले ।
शुनोऽस्थि जायते तत्र बालानां जायते मृतिः ॥ ६ ॥

यदि आदि में टवर्ग निकले तो नैर्ऋत्य दिशा में डेढ़ हाथ खोदने से कुत्ते की हड्डी निकले, उसका फल बालकों की मृत्यु है ॥ ६ ॥

तः प्रश्ने पश्चिमायां तु शिशोः शल्यं प्रजायते ।
सार्द्धहस्ते गृहस्वामी न तिष्ठति सदा गृहे ॥ ७ ॥

तवग का उच्चारण करे तो पश्चिमदिशा में डेढ़ हाथ गहरे में बालक की हड्डी निकलेगी, उसका फल घर का स्वामी सदा घर में न रह सके ॥ ७ ॥

वायव्यां दिशि पः प्रश्ने तुषाङ्गारश्चतुष्करे ।
कुर्वन्ति मित्रनाशं च दुःस्वप्नदर्शनं सदा ॥ ८ ॥

पवर्ग का उच्चारण हो तो वायव्यदिशा में चार हाथ के गहरे में जरी हुई धान की भूसी व कोइला निकले, उसका फल मित्रनाशक तथा दुःस्वप्नप्रदर्शक है ॥ ८ ॥

उदीच्यां दिशि यः प्रश्ने विप्रशल्यं करादधः ।
तच्छीघ्रं निर्धनत्वाय कुबेरसदृशस्यहि ॥ ९ ॥

यवर्ग का उच्चारण हो तो उत्तरदिशा में एक हाथ गहरे में ब्राह्मण की हड्डियाँ निकलें, इसका फल कुबेर के समान धनाढय भी निर्धनी हो जाये ॥ ९ ॥

ईशान्यां यदि शः प्रश्ने गोशल्यं सार्द्धहस्ततः ।
तद्गोधनस्य नाशाय जायते गृहमेधिनः ॥ १० ॥

शवर्ग का उच्चारण हो तो ईशान दिशा में डेढ़ हाथ खोदने से गौ के हाड़ निकलें, उनका फल गोधन का नाश है ॥ १० ॥

हपयाः कोष्ठमध्ये च वक्षोमात्रं भवेदधः ।
नृकपालमथो भस्मलोहं तत्कुलनाशकृत् ॥ ११ ॥

ह, प और य का उच्चारण आदि प्रश्न में हो तो घर के बीच में छाती के बराबर गहरे में मनुष्य की खोपड़ी व भस्म व लोह निकले, उसका फल कुल का नाश है ॥ ११ ॥

द्वार-मुहूर्त ।

अश्विन्यामुत्तराहस्तपुष्यश्रुतिमृगेषु च ।
स्वातौ पौष्णे च रोहिण्यां द्वारशाखावरोपणम् ॥१॥

अश्विनी, तीनों उत्तरा, हस्त, पुष्य, श्रवण, मृगशिरा, स्वाती, रेवती और रोहिणी इन नक्षत्रों में द्वार रखना शुभ है ॥ १ ॥

द्वार-चक्र ।

सूर्यभाद्वेदभैः शीर्षे संस्थितैर्धनसम्पदः ।
गृहस्योद्वसनं तस्मादष्टभिः कोणसंस्थितैः ॥ १ ॥

शाखास्वष्टामितैस्तस्माद्धनं सौख्यं भवेद्गृहे ।
देहल्यां तु त्रिभिर्धिष्ण्यैर्मृत्युर्गृहपतेर्भवेत् ॥ २ ॥
चतुर्भिर्मध्यगैस्तस्माद्द्रव्यलाभं सुखं भवेत् ।
एतच्चक्रं विचार्यादौ द्वारं कुर्यात्स्वमन्दिरे ॥ ३ ॥

सूर्य-नक्षत्र से दिन-नक्षत्र तक द्वार-चक्र गिने अर्थात् जिस नक्षत्र में सूर्य स्थित हो उससे लेकर चार नक्षत्र द्वार के शिर अर्थात् उत्तरंग में दे, उसका फल लक्ष्मीदायक है। आठ नक्षत्र चारों कोणों में दे, उसका फल उजाड़ है। आठ नक्षत्र शाखा (बाजू) में दे, उसका फल धन और सुख है। तीन नक्षत्र देहली (चौखट) में दे, उसका फल गृहेश की मृत्यु है। चार नक्षत्र मध्य में दे, उसका फल द्रव्य का लाभ तथा सुख है। इस प्रकार मकान के द्वार को विचार कर मकान का दरवाजा स्थापित करना चाहिए।।१-३।।

सूर्य-नक्षत्र से द्वार-चक्र-न्यास ।

शिर	कोण	बाजू	देहली	मध्य	स्थान
४	८	८	३	४	नक्षत्र
लक्ष्मी	उद्वसन	सुख	गृहपतिमरण	सुख	फल

कपाट-चक्र ।

कृताकराब्धियुग्मराममन्तकाश्च वारिधी
करौ समुद्रसूर्यभाद्दिनर्क्षकं फलं वदेत् ।
धनागमं विनाशसौख्यबन्धनं मृतिः क्षतिः
शुभं च मन्दमङ्गलं शुभं कपाटचक्रयोः ॥१॥

सूर्य के नक्षत्र से दिन-नक्षत्र तक किवाड़ का चक्र विचारना चाहिए। प्रथम चार नक्षत्र धनागम करते हैं, फिर दो नक्षत्र विनाश

करते हैं, फिर चार नक्षत्र सुखकारी हैं। फिर दो नक्षत्र बन्धन करते हैं, फिर तीन नक्षत्र मृत्युदायक हैं, फिर दो नक्षत्र घाव देते हैं, फिर चार नक्षत्र शुभदायक हैं, फिर दो नक्षत्र मङ्गल-कारक हैं, फिर चार नक्षत्र शुभ होते हैं॥ १॥

कपाटचक्र का न्यास।

४	२	४	२	३	२	४	२	४	नक्षत्र
शुभ	अशुभ	शुभ	अशुभ	अशुभ	अशुभ	शुभ	शुभ	शुभ	फल

द्वार-मुख-विचार।

कर्के कुम्भे च सिंहे च मकरे च दिवाकरे।
पूर्वे वा पश्चिमे वापि द्वारं कुर्याच्च वेश्मनः॥ १॥
मेषे वृषे वृश्चिके च तुले चापि यदा रविः।
गृहद्वारं तदा कुर्यादुत्तरं वापि दक्षिणम्॥ २॥
धनुर्मिथनकन्यासु मीने च यदि भानुमान्।
न कर्तव्यं तदा गेहं कृते दुःखमवाप्नुयात्॥ ३॥

कर्क, कुम्भ, सिंह और मकर इन राशियों के सूर्य हों तो पूर्व व पश्चिम दिशा में द्वार करना चाहिए। मेष, वृष, वृश्चिक और तुला इन राशियों के सूर्य हों तो उत्तर-दक्षिण द्वार शुभ है। धनु, मिथुन, कन्या और मीन इनके सूर्य में गृह न बनाये। यदि बनाये तो दुःख पाये॥ १-३॥

द्वार-विचार।

द्विजो वैश्यस्तथा शूद्रः क्षत्रियो राशिजो नरः।
द्वा ं च पूर्वतः कुर्याद्दिशानां च चतुष्टयम्॥ १॥

जो राशि ब्राह्मण-वर्ण है अर्थात् मीन, वृश्चिक और कर्क

राशि का द्वार पूर्व-मुख, वैश्य-वर्ण-राशि अर्थात् कन्या, वृष और मकर राशि का द्वार दक्षिण-मुख, शूद्र-वर्ण-राशि अर्थात् मिथुन, तुला और कुम्भ राशि का द्वार पश्चिम-मुख, क्षत्रिय-वर्ण-राशि अर्थात् मेष, सिंह और धनु राशि का द्वार उत्तर-मुख शुभ होता है ॥ १ ॥

द्वार-विचार-चक्र ।

ब्राह्मण	वैश्य	शूद्र	क्षत्रिय	वर्ण
मीन, वृश्चिक, कर्क	मकर, कन्या, वृष	मिथुन, तुला, कुम्भ	मेष, सिंह, धनु	राशि
पूर्व	दक्षिण	पश्चिम	उत्तर	द्वार-दिशा

प्लव (पनारे) का विचार ।

पूर्वे प्लवो वृद्धिकरो धनदश्चोत्तरे प्लवः ।
दक्षिणे मृत्युदश्चैव धनहा पश्चिमे प्लवः ॥ १ ॥
ईशाने प्रागुदक्प्लवस्त्वत्यन्तवृद्धिदो नृणाम् ।
अन्यदिक्षु प्लवो नेष्टः शश्वदत्यन्तहानिदः ॥ २ ॥

पूर्व दिशा में पनारा निकाले तो वृद्धि करे, उत्तर दिशा में धन दे, दक्षिण दिशा में मृत्यु दे, पश्चिम दिशा में धन-हानि हो । ईशान, पूर्व और उत्तर दिशा में पनारा शुभ तथा अत्यन्त वृद्धिदायक है । अन्य दिशाओं में अशुभ और हानिकारक है ॥ १-२ ॥

गृह-प्रवेशमुहूर्त ।

तपः फाल्गुने ज्येष्ठराधेषु पौष्णे
मृगे ब्राह्म्यचित्रानुराधोत्तरासु ।

सिते रौहिणेये शनौ शीतभानौ
सुरेज्ये प्रवेशः शुभः सद्मनि स्यात् ॥ १ ॥

माघ, फाल्गुन, ज्येष्ठ और वैशाख इन महीनों में रेवती, मृगशिरा, रोहिणी, चित्रा, अनुराधा और तीनों उत्तरा इन नक्षत्रों में शुक्रवार, बुधवार, शनिवार, सोमवार और गुरुवार इन दिनों में गृहप्रवेश शुभ होता है ॥ १ ॥

गृह-प्रवेश-विचार।

त्रिकोणकेन्द्रायधनत्रिगैः शुभै-
र्लग्ने त्रिषष्ठायगतैश्च पापकैः।
शुद्धाम्बुरन्ध्रे विजनुर्भमृत्यौ
व्यर्कारिरिक्ताचरदर्शचैत्रे ॥ १ ॥

त्रिकोण ९। ५ व केन्द्र १। ४। ७। १० इनमें तथा ग्यारहवें व दूसरे और तीसरे शुभग्रह हों तथा लग्न में, तीसरे, छठे तथा ग्यारहवें पापग्रह भी शुभ हैं। चौथे और आठवें स्थान में कोई ग्रह न होना चाहिए और जन्म की लग्न व जन्म की राशि से आठवाँ लग्न वर्जित है। रविवार, भौमवार, रिक्तातिथि, चरलग्न, अमावस्या और चैत्रमास ये भी गृहप्रवेश में वर्जित हैं ॥१॥

गृहप्रवेश में कुम्भ-चक्र।

वक्त्रे भू रविभात्प्रवेशसमये कुम्भेऽग्निदाहः कृताः
प्राच्यामुद्वसनं कृता यमगता लाभः कृताः पश्चिमे।
श्रीर्वेदाः कलिरुत्तरे युगमिता गर्भे विनाशो गुदे
रामाः स्थैर्यमतः स्थिरत्वमनलाः कण्ठे भवेत्सर्वदा ॥१॥

गृह-प्रवेश समय में घड़े के समान कलश-चक्र बनाना चाहिए। जिसमें—मुख, पूर्व, दक्षिण, पश्चिम, उत्तर, गर्भ, गुदा और कंठ का विभाग करके जिस नक्षत्र में सूर्य स्थित हो उसको कंठ में स्थापित करे, उस नक्षत्र में यदि गृह-प्रवेश हो तो घर अग्नि से जले। इसके बाद के चार नक्षत्र चक्र के पूर्व स्थापित करे, इनमें गृह-प्रवेश हो तो घर उजड़ जाय। बाद चार नक्षत्र को दक्षिण में स्थापित करे, इनमें गृहप्रवेश हो तो लाभ हो। इनके बाद के चार नक्षत्र पश्चिम दिशा में स्थापित करे, इनमें गृह-प्रवेश हो तो घर में सम्पत्ति हो। इनके बाद के चार नक्षत्र उत्तर दिशा में स्थापित करे, इनमें यदि गृह-प्रवेश हो तो घरवालों में झगड़ा हो। इनके बाद के चार नक्षत्र चक्र के मध्य में स्थापित करे, इन नक्षत्रों में गृह-प्रवेश हो तो विनाश हो। इनके बाद के तीन नक्षत्र गुदा में और बाद के तीन नक्षत्र कंठ में स्थापित करे, इनका फल घर की स्थिरता है ॥ १ ॥

सूर्य-नक्षत्र से कलश-चक्र ।

मुख	पूर्व	दक्षिण	पश्चिम	उत्तर	गर्भ	गुदा	कंठ	अंग
१	४	४	४	४	४	३	३	नक्षत्र
अग्नि-दाह	उद्वसन	लाभ	श्रीलाभ	कलि-प्रद	विनाश कारक	स्थिरत्व	सर्वदा स्थिरत्व	फल

वाम-रवि-विचार ।

वामो रविर्मृत्युसुतार्थलाभतोऽ-
र्के पञ्चभे प्राग्वदनानि मन्दिरे ।
पूर्णातिथौ प्राग्वदने गृहे शुभो
नन्दादिके याम्यजलोत्तराननै ॥ १ ॥

प्रवेश-लग्न से आठवें, नवें, दशवें, ग्यारहवें और बारहवें स्थान में स्थित सूर्य पूर्व द्वारवाले घर में प्रवेश करनेवाले के वाम; लग्न से पाँचवें, छठे, सातवें, आठवें और नवें स्थान में स्थित सूर्य दक्षिण द्वारवाले घर में प्रवेश करनेवाले के वाम; लग्न से दूसरे, तीसरे, चौथे, पाँचवें और छठे स्थान में स्थित सूर्य पश्चिम द्वारवाले घर में प्रवेश करनेवाले के वाम; लग्न से ग्यारहवें, बारहवें, पहले, दूसरे और तीसरे स्थान में स्थित सूर्य उत्तर द्वारवाले घर में प्रवेश करनेवाले के वाम पड़ता है। वाम सूर्य प्रवेश करनेवाले को अति शुभ फल देता है। पञ्चमी, दशमी और पूर्णमासी में पूर्वद्वारवाले घर में ; परिवा, छठि और एकादशी में दक्षिण द्वारवाले घर में; द्वितीया, सप्तमी और द्वादशी में पश्चिम द्वारवाले घर में; तृतीया, अष्टमी और त्रयोदशी में उत्तर द्वार-वाले घर में प्रवेश करना शुभ होता है ॥ १ ॥

ग्रहबलाबल-विचार ।

८ ५ ६ ४ ७ १
गजशरर्तुयुगाश्वमहीगुणा
२
द्विसहिता मघवादिदिशः क्रमात् ।
गृहपतेरवधापुरदिङ्मति-
८
र्वसुहतास्य ग्रहस्य दशा भवेत् ॥ १ ॥

पूर्व आदि आठों दिशाओं में अङ्क स्थापित करे । क्रम से पूर्व में आठ, आग्नेय में पाँच, दक्षिण में छः, नैर्ऋत्य में चार, पश्चिम में सात, वायव्य में एक, उत्तर में तीन, ईशान में दो ये अङ्क पूर्व आदि दिशाओं के होते हैं । जिस दिशा का मकान विचारे उस दिशा का अङ्क धरे और गृहपति के नामोद्भव वर्ग का अङ्क धरे, क्रम से अवर्गादि आठ वर्ग हैं । वे आठ अङ्क हैं । उसका क्रम लिखते हैं:—

अवर्ग में आठ, कवर्ग में पाँच, चवर्ग में छः, टवर्ग में चार, तवर्ग में सात, पवर्ग में एक, यवर्ग में तीन, शवर्ग में दो, इसी प्रकार से पुर का नाम जिस वर्ग का हो वह अङ्क धरे । इन तीनों अङ्कों को जोड़कर आठ का भाग दे । शेष जो बचे वह अष्टोत्तरी दशा के क्रम से दशा होती है । उसका फल शुभ-ग्रह की दशा हो तो शुभ है, पापग्रह की दशा हो तो अशुभ है और अपनी राशि के स्वामी की हो तो शुभ जानना चाहिए । इसी प्रकार सब दिशाओं की शाला को विचार लेना चाहिए ॥ १ ॥

दशा-चक्र ।

१	२	३	४	५	६	७	८	शेषाङ्क
सू०	चं०	मं०	बु०	श०	बृ०	रा०	शु०	दशा

देवालय आदि के आरम्भ का मुहूर्त ।

गृहारम्भोक्तनक्षत्रैर्मठं कुर्यात्तु साश्विभैः ।
सर्वदेवालयं तैस्तु पुनर्भश्रवणान्वितैः ॥ १ ॥

गृहारम्भ में जो नक्षत्र कहे हैं वे शिवालय व ठाकुरद्वारा के बनाने में भी शुभ हैं तथा अश्विनी, पुनर्वसु और श्रवण इन नक्षत्रों में सर्व देवालयों का आरम्भ करना शुभ है ॥ १ ॥

यात्रा-मुहूर्त-विचार ।

धनुर्मेषसिंहेषु यात्रा प्रशस्ता
शनिज्ञोशनोराशिगे चैव मध्या ।
रवौ कर्कमीनालिसंस्थेऽतिदीर्घा
जनुःपञ्चसप्तत्रिताराश्च नेष्टाः ॥ १ ॥

धनु, मेष और सिंह के सूर्यों में यात्रा उत्तम; मकर, कुम्भ, मिथुन, कन्या, वृष और तुला के सूर्यों में मध्यम; कर्क, मीन, और वृश्चिक के सूर्यों में दीर्घ यात्रा जाननी चाहिए। अर्थात् यात्रा में बहुत दिन लगें। यात्रा में पहली और पाँचवीं, सातवीं और तीसरी तारा निषिद्ध है ॥ १ ॥

न षष्ठी न च द्वादशी नाष्टमी नो
सिताद्या तिथिः पूर्णिमामा न रिक्ता ।
हयादित्यमित्रेन्दुजीवान्त्यहस्त-
श्रवोवासवैरेव यात्रा प्रशस्ता ॥ २ ॥

छठ, द्वादशी, अष्टमी और शुक्लपक्ष की प्रतिपदा, पूर्णमासी, अमावास्या, रिक्ता ४ । ९ । १४ ये तिथियाँ यात्रा में वर्जित हैं। अश्विनी, पुनर्वसु, अनुराधा, मृगशिरा, पुष्य, रेवती, हस्त, श्रवण और धनिष्ठा ये नक्षत्र यात्रा में शुभ हैं ॥ २ ॥

दिक्शूल-विचार ।

शनौ चन्द्रे त्यजेत्पूर्वां दक्षिणां च दिशं गुरौ ।
सूर्ये शुक्रे पश्चिमां च बुधे भौमे तथोत्तराम् ॥ १ ॥

पूर्वदिशा में शनि-सोम को, दक्षिण दिशा में बृहस्पति को, पश्चिम दिशा में रवि-शुक्र को, उत्तरदिशा में बुध-मंगल को, दिशाशूल होता है, अर्थात् इन दिनों में पूर्व आदि दिशाओं की यात्रा वर्जित है ॥ १ ॥

वार-नक्षत्र-शूल-चक्र ।

पूर्व	दक्षिण	पश्चिम	उत्तर	दिशा
ज्ये.	पू. भा.	रो.	उ. फा.	नक्षत्रशूल
ग. चं.	बृ.	शु. र.	मं. बु.	वारशूल

विदिक्शूल-विचार ।

आग्नेय्यां च गुरौ चन्द्रे नैर्ऋत्यां रविशुक्रयोः ।
ईशान्यां चन्द्रजे वायौ मङ्गले गमनं त्यजेत् ॥ १ ॥

बृहस्पति और सोमवार को आग्नेय में; रविवार और शुक्रवार को नैर्ऋत्य में, बुध को ईशान में और मङ्गलवार को वायु कोण में दिक्शूल होता है ॥ १ ॥

शूल-दोष-निवारणार्थ भक्ष्य ।

सूर्यवारे घृतं पीत्वा गच्छेत्सोमे पयस्तथा ।
गुडमङ्गारके वारे बुधवारे तिलानपि ॥ १ ॥
गुरुवारे दधि ज्ञेयं शुक्रवारे यवानपि ।
माषान्भुक्त्वा शनौ गच्छेच्छूलदोषोपशान्तये ॥ २ ॥

रविवार को घी, सोम को दूध, मंगल को गुड़, बुध को तिल, बृहस्पति को दही, शुक्र को जव और शनैश्चर को उड़द भक्षण करके यात्रा करे तो शूल-दोष शान्त हो जाता है ॥ १–२ ॥

सर्वदिग्गमन-नक्षत्र-विचार ।

सर्वदिग्गमने हस्तः पूषाश्वौ श्रवणो मृगः ।
सर्वसिद्धिकरः पुष्यो विद्यायां च गुरुर्यथा ॥ १ ॥

हस्त, रेवती, अश्विनी, श्रवण और मृगशिरा ये नक्षत्र सब दिशाओं की यात्रा में शुभ हैं। पुष्य नक्षत्र, विद्यारम्भ में बृहस्पति के समान, यात्रा में सिद्धिकारक है ॥ १ ॥

योगिनी-विचार ।

नव भूम्यः शिववह्नयोऽक्षविश्वेऽ-
र्ककृताः शक्ररसास्तुरङ्गतिथ्यः ।
द्वि दिशोऽमावसवश्च पूर्वतः स्यु-
स्तिथयोः संमुखवामगा न शस्ताः ॥ १ ॥

नवमी-प्रतिपदा को पूर्व दिशा में, एकादशी-तृतीया को आग्नेय दिशा में, त्रयोदशी-पञ्चमी को दक्षिण दिशा में, द्वादशी-चतुर्थी को नैर्ऋत्य दिशा में, चतुर्दशी-षष्टी को पश्चिम दिशा में, पूर्णमासी-सप्तमी को वायव्य दिशा में, दशमी-द्वितीया को उत्तर दिशा में और अमावस-अष्टमी को ईशान दिशा में योगिनी का वास होता है, यह यात्रा में संमुख और बायें अशुभ होती है ॥ १ ॥

योगिनी-चक्र ।

पू०	आ०	द०	नै०	प०	वा०	उ०	ई०	दिशा
९।१	३।११	१३।५	१२।४	१४।६	१५।७	१०।२	३०।८	तिथि

काल-पाशयोग विचार ।

कौबेरीतो वैपरीत्येन कालो
वारेऽर्काद्ये संमुखे तस्य पाशः ।

---

*तथा चोक्तं विजयकल्पलतायाम्—
पृष्ठतो दक्षिणे वापि योगिनी गमने हिता ।
वामसंमुखयोर्नेष्ठा वायुमेवं विचिन्तयेत् ॥ १ ॥

रात्रावेतौ वैपरीत्येन गण्यौ
यात्रायुद्धे संमुखे वर्जनीयौ ॥ १ ॥

उत्तर दिशा से लेकर रवि-चन्द्र आदि, वारों में कालयोग विपरीत क्रम से रहता है, उसका क्रम इस प्रकार है—

रविवार को उत्तर में, सोमवार को वायव्य में, मंगल को पश्चिम में, बुध को नैर्ऋत्य में, बृहस्पति को दक्षिण में, शुक्र को आग्नेय में और शनैश्चर को पूर्वदिशा में काल रहता है।

काल के संमुख पाश रहता है उसका क्रम यह है—

रवि को दक्षिण में, सोम को आग्नेय में, मंगल को पूर्व में, बुध को ईशान में, बृहस्पति को उत्तर में, शुक्र को वायव्य में और शनैश्चर को पश्चिम में पाश रहता है।

काल और पाश दोनों रात्रि में विपरीत रहते हैं। जैसे—रविवार की रात्रि को दक्षिण में काल और उत्तर में पाश रहता है। इसी प्रकार सोम आदि की रात्रि में भी काल-पाश का विचार जान लेना चाहिए। काल और पाश दोनों ही यात्रा और युद्ध में संमुख वर्जित हैं।। १ ।।

काल-पाश-चक्र ।

र०	चं०	मं०	बु०	बृ०	शु०	श०	वार
उ०	वा०	प०	नै०	द०	आ०	पू०	दिन में काल की दिशा
द०	आ०	पू०	ई०	उ०	वा०	प०	दिन में पाश की दिशा
द०	आ०	पू०	ई०	उ०	वा०	प०	रात्रि में काल की दिशा
उ०	वा०	प०	नै०	द०	आ०	पू०	रात्रि में पाश की दिशा

यात्रा में अनिष्ट लग्न-विचार ।

कुम्भकुम्भांशकौ त्याज्यौ सर्वथा यत्नतो बुधैः ।
तत्र प्रयातुर्नृपतेरर्थनाशः पदे पदे ॥ १ ॥

कुम्भ-लग्न और कुम्भ-राशि का नवांश इन दोनों का त्याग यात्रा में अवश्य करे । क्योंकि इन दोनों में यात्रा करनेवाले राजा का मनोरथ पद-पद में नष्ट होता है ॥ १ ॥

मृत्यु-योग ।

जन्मराशितनुतोऽष्टमेऽथवा
स्वारिभाच्च रिपुभे तनुस्थिते ।
लग्नगास्तदधिपा यदाथवा
स्युर्गतं हि नृपतेर्मृतिप्रदम् ॥ १ ॥

जन्म-राशि से किंवा जन्मलग्न से आठवाँ लग्न यात्रा का हो अथवा शत्रु की राशि से छठा लग्न यात्रा का हो अथवा इन राशियों के स्वामी लग्न में हों तो यात्रा करनेवाले राजा की यात्रा मृत्यु देनेवाली होती है ॥ १ ॥

वाञ्छित योग ।

लग्ने चन्द्रे वापि वर्गोत्तमस्थे
यात्रा प्रोक्ता वाञ्छितार्थैकदात्री ।
अम्भोराशौ वा तदंशे प्रशस्तं
नौकायानं सर्वसिद्धिप्रदायि ॥ १ ॥

मीन और कुम्भ लग्न तथा जलचर-राशि के नवांश को छोड़ अन्य लग्न हो अथवा लग्न में चन्द्रमा हो किंवा वर्गोत्तम में हो अर्थात् जिस राशि का चन्द्रमा हो उसी राशि का नवांश हो तो यात्रा वाञ्छित फल को देनेवाली होती है ।

जलचर राशि कें नवांश में की हुई नाव की यात्रा सब सिद्धियों की देनेवाली होती है ।। १ ।।

लग्न-फल ।

दिग्द्वारभे लग्नगते प्रशस्ता
यात्रार्थदात्री जयकारिणी च ।
हानिं विनाशं रिपुतो भयं च
कुर्यात्तथा दिक्प्रतिलोमलग्ने ॥ १ ॥

यात्रा काल में दिग्द्वार राशि की लग्न में यात्रा करे तो शुभ है। अर्थात् जिस दिशा को जानेवाला हो उसी दिशा की लग्न हो तो दिग्द्वार जानिए तथा दाहिने हो तो भी शुभ है। उस लग्न में यात्रा करने से अर्थ और जय की प्राप्ति हो तथा विलोम अर्थात् पीछे, बायें लग्न का वास हो तो हानि, विनाश और शत्रुभय होता है। इसी प्रकार चन्द्रमा भी विचारना चाहिए ।। १ ।।

लग्नवास-चन्द्रवास-चक्र ।

पूर्व	दक्षिण	पश्चिम	उत्तर	दिशा
मेष सिंह धनु	वृष कन्या मकर	मिथुन तुला कुम्भ	कर्क वृश्चिक मीन	राशि

यात्रा में वर्जित काल-विचार ।

उषःकालो विना पूर्वां गोधूलिः पश्चिमां विना ।
विनोत्तरां निशीथः सन् याने याम्यां विनाभिजित् ॥१॥

पूर्व दिशा को छोड़, अन्य दिशाओं में यात्रा करने के लिये प्रातःकाल, पश्चिम को छोड़ अन्य दिशाओं की यात्रा में गोधूलि

काल, उत्तर दिशा को छोड़ अन्य दिशाओं की यात्रा में निशीथ (आधीरात का समय), दक्षिण को छोड़ अन्य दिशाओं की यात्रा में अभिजित् मुहूर्त * शुभ होता है। अर्थात् प्रातःकाल पूर्व दिशा को, सायंकाल पश्चिम दिशा को, अर्द्धरात्रि में उत्तर दिशा को और अभिजित् मुहूर्त में दक्षिण दिशा को न जाय ॥ १ ॥

वर्णानुसार मुहूर्त-विचार।

योगात्सिद्धिर्धरणिपतीना-
मृक्षगुणैरपि भूदेवानाम्।
चौराणामपि शकुनैरुक्ता
भवति मुहूर्तादपि मनुजानाम् ॥ १ ॥

राजाओं को योगसिद्धि, ब्राह्मणों को नक्षत्र गुण, चोरों को शकुनबल और मनुष्यों को मुहूर्तबल लेना चाहिए ॥ १ ॥

दिशा-क्रम से वाहन विचार।

प्राच्यां गच्छेद् गजेनैव दक्षिणस्यां रथेन हि।
दिशि प्रतीच्यामश्वेन तथोदीच्यां नरैर्नृपः ॥ १ ॥

पूर्वदिशा में हाथी की सवारी पर, दक्षिणदिशा में रथ पर, पश्चिम में घोड़े पर, उत्तर में पालकी आदि की सवारी पर राजा को यात्रा करनी चाहिए ॥ १ ॥

यात्रा में दिशा-दोहद।

आज्यं तिलौदनं मत्स्यं पयश्चापि यथाक्रमम्।
भक्षयेद्दोहदं दिश्यमाशां पूर्वादिकं व्रजेत् ॥ १ ॥

---

*अभिजित् मुहूर्त का विवरण संवत्सर प्रकरण में आ चका है। देखो पृ. ६०। उसका आशय यह है कि दिन के आठवें मुहूर्त का नाम अभिजित् है तथा दिन के पन्द्रहवें भाग को मुहूर्त कहते हैं।

पूर्व दिशा में घी, दक्षिण में तिल-चावल, पश्चिम में मछली खाकर तथा उत्तर में दूध पीकर यात्रा करे ॥ १ ॥

दिशा-दोहदचक्र ।

पूर्व	दक्षिण	पश्चिम	उत्तर	दिशा
घृत	तिल. चावल	मछली	दूध	भक्ष्य

चन्द्रवास-विचार ।

मेषे च सिंहे धनुपूर्वभागे
वृषे च कन्या मकरे च याम्ये ।
युग्मे तुलायां च घटे प्रतीच्यां
कर्कालिमीने दिशि चोत्तरस्याम् ॥ १ ॥

मेष, सिंह और धनु राशि का चन्द्रमा पूर्व दिशा में; वृष, कन्या और मकर राशि का चन्द्रमा दक्षिण दिशा में; तुला, मिथुन और कुम्भ का चन्द्रमा पश्चिम में; कर्क, वृश्चिक और मीन का चन्द्रमा उत्तर दिशा में वास करता है ॥ १ ॥

चन्द्रवास-चक्र ।

पूर्व	दक्षिण	पश्चिम	उत्तर	दिशा
१ ५ ९	२ ६ १०	३ ७ ११	४ ८ १२	राशि

चन्द्र-फल ।

सम्मुखे त्वर्थलाभाय दक्षिणे सुखसम्पदः ।
पृष्ठे शोकश्च सन्तापो वामे चन्द्रे धनक्षयः ॥ १ ॥

सम्मुख चन्द्रमा अर्थलाभकारक, दक्षिण चन्द्र सुखसम्पत्ति देनेलाला, पृष्ठ चन्द्र शोकसन्ताप देनेवाला और वाम चन्द्रमा धन का क्षय करनेवाला है ॥ १ ॥

प्रस्थान-प्रकार ।

कार्याद्यैरिह गमनस्य चेद्विलम्बो
भूदेवादिभिरुपवीतमायुधं च ।
क्षौद्रं चामलफलमाशु चालनीयं
सर्वेषां भवति यदेव हृत्प्रियं वा ॥ १ ॥

यात्राकाल के निश्चित होने पर किसी आवश्यक कार्य से यदि यात्रा में विलम्ब हो तो ब्राह्मण जनेऊ, क्षत्रिय हथियार, वैश्य शहद, शूद्र उत्तम फल अथवा जो वस्तु अधिक प्रिय हो उस वस्तु का प्रस्थान यात्रा की दिशा में करे। उसके बाद आवश्यक कार्य हो जाने पर यात्रा करे ॥ १ ॥

प्रस्थानदिन-प्रमाण ।

पूर्वे दिनानि सप्तैव याम्ये पञ्च दिनानि च ।
पश्चिमे दिवसांस्त्रीन्वै दिनानां द्वयमुत्तरे ॥ १ ॥

पूर्वदिशा का प्रस्थान सात दिन तक, दक्षिण दिशा का पाँच दिन तक, पश्चिमदिशा का तीन दिन तक और उत्तर-दिशा का प्रस्थान दो दिन तक रखना उचित है ॥ १ ॥

प्रस्थानप्रमाण-विचार ।

प्रस्थानमत्र धनुषां हि शतानि पञ्च
केचिच्छतद्वयमुशन्ति दशैव चान्ये ।
सम्प्रस्थितो य इह मन्दिरतः प्रयातो
गन्तव्यदिक्षु तदपि प्रयतेन कार्यम् ॥ १ ॥

पाँच सौ धनुष पर्यन्त प्रस्थान धरे। धनु चार हाथ लम्बा होता है। कोई आचार्य कहते हैं कि दो सौ धनुष पर प्रस्थान करे और किसी का मत यह है कि दश धनुष पर्यन्त प्रस्थान करना उचित है। अपने मकान से यात्रा करनेवाली दिशा में प्रस्थान रखना चाहिए ।। १ ।।

यात्रा में वर्जित दुग्धादि ।

दुग्धं त्याज्यं पूर्वमेव त्रिरात्रं
क्षौरं त्याज्यं पञ्चरात्रं च पूर्वम् ।
क्षौद्रं तैलं वासरेऽस्मिन्वमिश्च
त्याज्यं यत्नाद्भूमिपालेन नूनम् ॥ १ ॥

यात्रा के तीन दिन पूर्व दूध और पाँच दिन पहिले क्षौर वर्जित है। यात्रा के दिन शहद, तेल और वमन यत्नपूर्वक राजा को वर्जित करना चाहिए ।। १ ।।

वार-दोहद ।

रसालां पायसं काञ्जीं शृतं दुग्धं तथा दधि ।
पयोऽश्रितं तिलान्नं च भक्षयेद्वारदोहदम् ॥ १ ॥

रविवार को शिखरन, सोम को खीर, भौम को काँजी, बुध को पका हुआ दूध, बृहस्पति को दही, शुक्रवार को कच्चा दूध, शनैश्चर को तिल मिला भात दोहद है। जिस दिन यात्रा करनी हो उस दिन में कहे हुए दोहद को भक्षण करके यात्रा करे तो शुभ होता है ।। १ ।।

वार-दोहद-चक्र ।

र०	चं०	मं०	बु०	बृ०	शु०	श०	वार
शिखरन	खीर	कांजी	पक्का दूध	दही	कच्चा दूध	तिलान्न	दोहद

नक्षत्र-दोहद ।

कुल्माषांस्तिलतण्डुलानपि तथा माषांश्च गव्यं दधि
त्वाज्यं दुग्धमथैणमांसमपरं तस्यैव रक्तं तथा ।
तद्वत्पायसमेव चाषपललं मार्गं च शाशं तथा
षाष्ठिक्यं च प्रियंग्वपूपमथवा चित्राण्डजान् सत्फलम् ॥१॥
कौर्मं सारिकगौधिकं च पललं शाल्यं हविष्यं हया-
द्वृक्षे स्यात्कृशरान्नमुद्गमपि वा पिष्टं यवानां तथा ।
मत्स्यान्नं खलु चित्रितान्नमथवा दध्यन्नमेवं क्रमा-
द्भक्ष्याभक्ष्यमिदं विचार्य मतिमान्भक्षेत्तथाऽऽलोकयेत् ॥२॥

अश्विनी में कुलथी, भरणी में तिल मिले चावल, कृत्तिका में उड़द, रोहिणी में गौ का दही, मृगशिरा में गौ का घी, आर्द्रा में गौ का दूध, पुनर्वसु में हरिण का मांस, पुष्य में हरिण का रुधिर, आश्लेषा में खीर, मघा में नीलकण्ठ पक्षी का मांस, पूर्वाफाल्गुनी में मृग (हरिण) का मांस, उत्तराफाल्गुनी में खरगोश का मांस, हस्त में साठी का चावल, चित्रा में काकुनि, स्वाती में अपूप (पुआ), विशाखा में अनेक प्रकार के पक्षियों का मांस, अनुराधा में उत्तम फल, ज्येष्ठा में कछुआ का मांस, मूल में मैना पक्षी का मांस, पूर्वाषाढ़ में गोह का मांस, उत्तराषाढ़ में शाही जानवर का मांस, अभिजित् में मूँग आदि हविष्यान्न, श्रवण में खिचड़ी, धनिष्ठा में मूँग-भात, शतभिषा में जौ का आटा, पूर्वभाद्रपद में मछली-भात, उत्तरभाद्रपद में अनेक प्रकार का मिश्रित अन्न, रेवती में दही-भात दोहद है। जिस नक्षत्र में, जिस दोहद का बखान है उसमें उस दोहद का भक्षण करे। यदि भक्षण के योग न हो तो उस दोहद-वस्तु को देखकर यात्रा करे ॥ १-२ ॥

नक्षत्रदोहद-चक्र ।

नक्षत्र	दोहद	नक्षत्र	दोहद
अ.	कुलथी	स्वा.	अपूप अर्थात् पुआ
भ.	तिल-चावल	वि.	अनेक प्रकार के पक्षियों का मांस
कृ.	उड़द	अनु.	उत्तम फल
रो.	गौ का दही	ज्येष्ठा	कछुआ का मांस
मृ.	गोघृत	मू.	मैना पक्षी का मांस
आ.	गोदुग्ध	पू. षा.	गोह का मांस
पुन.	हरिण का मांस	उ. षा.	शाही का मांस
पुष्य	हरिण का रुधिर	अभिजित्	मूंग आदि हविष्यान्न
आश्लेषा	खीर	श्र.	कृशरान्न (खिचड़ी)
मघा	नीलकण्ठ पक्षी का मांस	ध.	मूंग-भात
पू. फा.	मृग का मांस	श.	यवपिष्ट (जौ का आटा)
उ. फा.	खरगोश का मांस	पू. भा.	मछली-भात
ह.	साठी का चावल	उ. भा.	अनेक प्रकार का मिश्रित अन्न
चि.	काकुनि	रे.	दही-भात

पक्षादितोऽर्कदलतण्डुलवारिसर्पिः
श्राणा हविष्यमपि हेमजलं त्वपूपम् ।
भुक्त्वा व्रजेद्द्रुचकमम्बु च धेनुमूत्रं
यावान्नपायसगुडानसृगन्नमुद्गान ॥ १ ॥

प्रतिपदा को मदार का पत्र, द्वितीया को चावल धोया जल, तृतीया को घी, चौथ को पतला हलुआ, पञ्चमी को हविष्यान्न, छठ को सुवर्ण धोया जल, सप्तमी को पुआ, अष्टमी को बिजौरा नींबू, नवमी को कमल-जल, दशमी को गोमूत्र, एकादशी को जौ का भात, द्वादशी को खीर, त्रयोदशी को गुड़, चतुर्दशी को रुधिर और पूर्णमासी तथा अमावास्या को मूंग-भात दोहद है। जिस तिथि में यात्रा करनी हो उसमें कहे हुए दोहद का भक्षण, स्पर्श तथा अवलोकन आदि करके यात्रा करने से कार्य-सिद्धि होती है ॥ १ ॥

तिथिदोहद-चक्र ।

१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	१५ ३०
मदार का पत्र	चावल धोयाजल	घृत	पतला हलुआ	हविष्यान्न	सुवर्ण धोयाजल	अपूप (पुआ)	बिजौरा नींबू	कमल का जल	गोमूत्र	जौ का भात	पायस (खीर)	गुड़	रुधिर	मूंग-भात

परिघदण्ड-विचार ।

भानि स्थाप्यान्यब्धिदिक्षु सप्त सप्तानलर्क्षतः ।
वायव्याग्नेयदिक्संस्थं पारिघं नैव लङ्घयेत् ॥ १ ॥

पूर्वादि चारों दिशाओं में कृत्तिका आदि सात-सात नक्षत्र वास करते हैं और वायव्य दिशा से आग्नेय दिशा तक गई हुई

रेखा का नाम परिघ-दण्ड है, उसका उल्लंघन (नाँघना) यात्रा में वर्जित है । उत्तर-पूर्व के नक्षत्रों में दक्षिण-पश्चिम की यात्रा और दक्षिण-पश्चिम के नक्षत्रों में उत्तर-पूर्व की यात्रा वर्जित है ॥ १ ॥

परिघदण्ड-चक्र ।
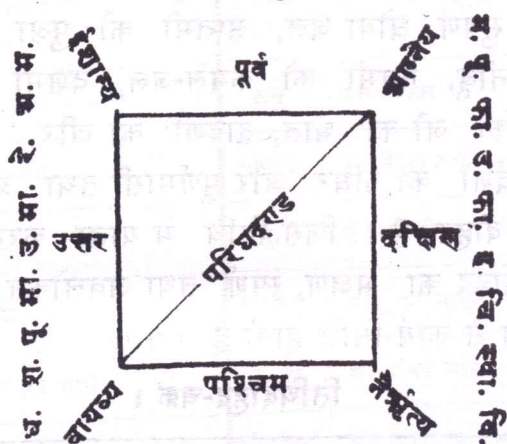
सूर्य-होराफल ।

काकत्रयं विप्रचतुष्टयं च
बभ्रु द्वयश्चाष्टवृषाम्बराणि ।
मिलन्ति मार्गे रजकी कुमारी
सूर्यस्य होराचलितस्य पुंसः ॥ १ ॥

सूर्य की होरा में यात्रा करे तो तीन कौवा, चार ब्राह्मण, दो नेवले, आठ बैल, वस्त्र तथा धोबी की कन्या रास्ते में मिलते हैं ॥१॥

चन्द्र-होराफल ।

गोपुष्पमेषाश्च मृदङ्गभेरी
नारीद्वयं बभ्रुखगः क्रमेण ।
काकस्तुरङ्गो द्विजयुग्ममिन्दो-
र्होराप्रयाणे चलितस्य पुंसः ॥ १ ॥

चन्द्र की होरा में यात्रा करे तो गौ, फूल, मेढ़ा, मृदङ्ग, बड़ा नगाड़ा या ढोल, दो स्त्री, नेवला, पक्षी, कौवा, घोड़ा और दो ब्राह्मण ये जीव मार्ग में मिलते हैं ।। १ ।।

भौम-हौराफल ।

मार्जारयुद्धं कलहं कुटुम्बे
रजस्वलानारित्रयं च षण्ढः ।
रण्डाग्निनग्नं भवनस्य दाहः
कुजस्य होराचलितस्य पुंसः ॥ १ ॥

मङ्गल की होरा में यात्रा करने से बिलार-युद्ध, कुटुम्ब में कलह, तीन रजस्वला स्त्रियाँ, नपुंसक (हिजड़ा), विधवा स्त्री, अग्नि, नङ्गा, जलता हुआ मकान इतने पदार्थ मार्ग में मिलते हैं ।। १ ।।

बुध-होराफल ।

बाला सलज्जा जलपूर्णकुम्भे
पुष्पान्नवामे खलु चाषपक्षी ।
श्रीमान् कुमारो विधुनन्दनस्य
होराप्रयाणे शकुना मिलन्ति ॥ १ ॥

बुध की होरा में यात्रा करे तो लज्जाशील स्त्री, जल-पूर्ण

कलश, फूल, अन्न, वाममार्ग में नीलकण्ठ पक्षी, धनवान् और बालक, इतने पदार्थ मार्ग में मिलते हैं ॥ १ ॥

गुरु-होराफल ।

दवज्ञधेनुद्विजबभ्रुवाहा
राज्ञः कुमारः खलु पुष्पकं च ।
सपुत्रका स्त्री च घटाऽम्बुपूर्णः
सुरेज्यहोरा शकुनं करोति ॥ १ ॥

बृहस्पति की होरा में यात्रा करने से ज्योतिषी पण्डित, गौ, ब्राह्मण, नेवला, सवारी, राजा का बालक, फूल, पुत्र-समेत स्त्री और जल भरा घट ये शकुन मार्ग में मिलते हैं ॥ १ ॥

शुक्र-होराफल ।

धेनुर्द्विजः काकचतुष्टयं च
नपुंसको वा गणितागमज्ञः ।
मद्यं च मांसं गणिका च शूद्रा
मिलन्ति मार्गे यदि शुक्रहोरा ॥ १ ॥

शुक्र की होरा में यात्रा करने से गौ, ब्राह्मण, चार कौआ, नपुंसक, ज्योतिषी, मदिरा, मांस, वेश्या और शूद्र, इतने पदार्थ मार्ग में मिलते हैं ॥ १ ॥

शनि-होराफल ।

खरः पिशाचो यदि वाऽथ वह्नि-
र्नपुंसको वा पुरुषः प्रमत्तः ।

रजस्वला भानुसुतस्य होरा
प्रस्थानकाले शकुनं करोति ॥ १ ॥

शनैश्चर की होरा में यात्रा करने से गधा, पिशाच, अग्नि, नपुंसक, मतवाला पुरुष, रजस्वला स्त्री इतने पदार्थ मार्ग में मिलते हैं ॥ १ ॥

मार्ग में शुभशकुन-विचार।

लग्ने गीष्पतिशुक्राणां ब्राह्मणाः सम्मुखाः स्त्रियः।
बुधशुक्रौ च केन्द्रस्थौ सवत्सा गौः प्रदृश्यते ॥ १ ॥
चन्द्रसूर्यौ च भवतो दशमस्थौ यदाऽथवा।
दीपादर्शौ सुमनसो रजका धौतवाससः ॥ २ ॥
सुतस्थाने यदा सौम्यो वृषो वृद्धस्तु सम्मुखः।
गुरुश्चेत्पञ्चनवमो दक्षभागे च वायसः ॥ ३ ॥
चन्द्रो गुरुश्च सहजे श्वानो वामाङ्गभागतः।
सर्वे कर्मायभवने भारद्वाजोऽथ नाकुलः ॥ ४ ॥
चाषस्य दर्शनं वा स्याद्वामाङ्गेऽत्यन्तदुर्लभम्।
आदित्यो राहुसौरी च सहजस्थौ कुमारिका ॥ ५ ॥
प्रौढानां सुभगानां वा दर्शनं सर्वकामदम्।
षष्ठे तृतीये कर्माये भौमश्चेत्तत्फलं भवेत् ॥ ६ ॥
दास्यो वेश्या सुरा मांसं लाभश्चैव सुनिश्चितः।
सप्ताष्टपञ्चमे यस्य जीवो ज्ञो वात्र वर्त्तते ॥ ७ ॥
आदर्शपुष्पमांसानि सुरादर्शश्च लाभदः।
राहुर्भौमश्च मन्दश्च लग्नाद्यदि तृतीयगः ॥

उद्धृतं गोमयं पश्येच्छीघ्रं लाभं धनं दिशेत् ॥ ८ ॥

प्रमिताक्षरा में लिखा है कि यात्रा के लग्न में बृहस्पति और शुक्र हो तो सम्मुख ब्राह्मण और स्त्री मिले। बुध शुक्र केन्द्र में हों तो बछड़ा के सहित गऊ मिले। चन्द्रमा और सूर्य दशवें हों तो दीपदर्शन हो किंवा फूल नजर में आवे अथवा कपड़ा धोता धोबी मिले। पञ्चम स्थान में बुध हो तो संमुख बँधा बैल मिले। बृहस्पति यदि पाँचवें या नवें स्थान में हो तो दक्षिण भाग में कौवा मिले। चन्द्रमा और बृहस्पति तीसरे स्थान में हों तो वामभाग में कुत्ता मिले। संपूर्ण ग्रह यदि दशवें या ग्यारहवें स्थान में हों तो भर्दूल पक्षी मिले, किंवा नेवला मिले अथवा नीलकण्ठ पक्षी वाममार्ग में मिले वह अत्यन्त दुर्लभ है। सूर्य, राहु और शनैश्चर तीसरे हों तो कुमारिका मिले, किंवा युवती स्त्री अथवा सौभाग्यवती स्त्री मिले, इनका दर्शन सब कामनाओं को पूर्ण करने वाला होता है व छठे, तीसरे और दशवें मङ्गल हो तो भी पूर्वोक्त फल का लाभ हो तथा दासी, वेश्या और मदिरा-मांस देखे तो वे भी लाभदायक हैं। सातवें, आठवें और पाँचवें बृहस्पति व बुध हों तो दर्पण, फूल, मांस व मदिरा देखे तो वे भी लाभकारी हैं। राहु, मङ्गल और शनैश्चर लग्न से तीसरे स्थान में हों तो पशु को गोबर करते देखे, वह शीघ्र ही धन-लाभ कराता है ॥ १-८ ॥

पुनः शुभशकुन-विचार ।

विप्राश्वेभफलान्नदुग्धदधिगोसिद्धार्थपद्माम्बरं
वेश्यावाद्यमयूरचाषनकुलाबद्धैकपश्वामिषम् ।
सद्वाक्यं कुसुमेक्षुपूर्णकलशच्छत्राणि मृत्कन्यका
रत्नोष्णीषसितोक्षमद्यससुतस्त्रीदीप्तवैश्वानराः ॥ १ ॥
आदर्शाञ्जनधौतवस्त्ररजका मीनाज्यसिंहासनं
शावं रोदनवर्जितं ध्वजमधुच्छागास्त्रगोरोचनम् ।

भारद्वाजनृयानवेदनिनदा माङ्गल्यगीताङ्कुशा
दृष्टाः सत्फलदाः प्रयाणसमये रिक्तो घटः स्वानुगः ॥२॥

ब्राह्मण, घोड़ा, हाथी, फल, अन्न, दूध, दही, गो, सरसों, कमल, वस्त्र, वेश्या, बाजा, मोर पक्षी, नीलकण्ठ, नेवला, बँधा हुआ पशु, मांस, शुभवचन, कुसुम (फूल), ऊख, पूर्णकलश, छत्र, मिट्टी, कन्या, रत्न, पगड़ी, सफेद बैल, मदिरा, बालक समेत स्त्री, जलती हुई अग्नि, दर्पण, अञ्जन, धुले वस्त्र लिये धोबी, मछली, घी, सिंहासन, रोदन रहित मुर्दा, पताका, शहद, छाग, अस्त्र, गोरोचन, भर्दूलपक्षी, पालकी, वेदध्वनि, माङ्गल्यगीत और अंकुश, इतने शकुन यात्रा के समय में मिलें तो शुभ फल देते हैं। यदि छूँछा घड़ा अपने पीछे मिले तो भी शुभ है ॥ १-२ ॥

अशुभशकुन-विचार ।

वन्ध्याचर्मतुषास्थिसर्पलवणाङ्गारेन्धनक्लीबविट्
तैलोन्मत्तवसौषधारिजटिलप्रव्राट्तृणव्याधिताः ।
नग्नाभ्यक्तविमुक्तकेशपतितव्यङ्गक्षुधार्त्ता असृक्
स्त्रीपुष्पं सरटः स्वगेहदहनं मार्जारयुद्धं क्षुतम् ॥ १ ॥
काषायी गुडतक्रपङ्कविधवा कुब्जा कुटुम्बे कलि-
र्वस्त्रादेः स्खलनं लुलायसमरं कृष्णानि धान्यानि च ।
कार्पासं वमनं च गर्दभरवो दक्षेऽतिरुङ्गर्भिणी
मुण्डार्द्राम्बरदुर्वचोऽन्धबधिरोदक्या न दृष्टाः शुभाः ॥२॥

बाँझ स्त्री, चमड़ा, भूसा, हाड़, सर्प, नमक, अङ्गार (निर्धूम अग्नि), इंधन, हिजड़ा, विष्ठा, तेल, मतवाला, चर्बी, औषध, शत्रु, जटाधारी, संन्यासी, तृण, रोगी, नंगा, उबटन लगाये हुए

मनुष्य, खुले बालवाला, अङ्गरहित, भूखा, रुधिर, स्त्री का रज, गिरगिट, अपना घर जलना, विलार की लड़ाई, छींक, लाल वस्त्र पहिने मनुष्य, गुण, माठा, कीचड़, विधवा स्त्री, कुबड़ी स्त्री, अपने कुटुम्ब में झगड़ा, वस्त्रादि का देह पर से गिर पड़ना, भैंसों की लड़ाई, काला अन्न, कपास, वमन होना, दाहिनी ओर गधे का शब्द होना, क्रोध की अधिकता, गर्भवती स्त्री, मुण्डे शिरवाला, ओदे वस्त्रवाला, दुर्वचन, अन्धा, बहिरा और रजस्वला स्त्री, इतने दुःशकुन यात्रा में शुभ नहीं हैं ॥ १–२ ॥

दुःशकुन-परिहार ।

आद्येऽपशकुने स्थित्वा प्राणानेकादशं व्रजेत् ।
द्वितीये षोडश प्राणांस्तृतीये न क्वचिद् व्रजेत् ॥ १ ॥

पहले पहल कोई दुःशकुन हो तो स्थिर होकर ग्यारह श्वासें लेकर चले, दूसरे बार दुःशकुन हो तो स्थिर होकर सोलह श्वासें लेकर चले तथा तीसरी बार दुःशकुन हो तो कभी यात्रा न करे अर्थात् लौट आये ॥ १ ॥

चन्द्रघात-विचार ।

१ ५ ९ २ ६ १० ३ ७
भूपञ्चाङ्कद्व्यङ्गदिग्वह्निसप्त-
४ ८ ११ १२
वेदाष्टेशार्काश्च घाताख्यचन्द्रः ।
मेषादीनां राजसेवाविवदे
वर्ज्यो युद्धाद्ये च नान्यत्र वर्ज्यः ॥ १ ॥

मेष राशि का पहला, वृष का पाँचवाँ, मिथुन का नवाँ, कर्क का दूसरा, सिंह का छठा, कन्या का दशवाँ, तुला का तीसरा, वृश्चिक का सातवाँ, धनु का चौथा, मकर का आठवाँ, कुम्भ राशि

का ग्यारहवाँ और मीन का बारहवाँ चन्द्रमा घातक होता है। यह घात चन्द्र राजसेवा, विवाद, यात्रा और युद्ध में वर्जित है। अन्य कार्यों में निषिद्ध नहीं है ॥ १ ॥

घातचन्द्र-चक्र ।

मे.	वृ.	मि.	क.	सि.	कं.	तु.	वृ.	ध.	म.	कुं.	मी.	रा.
१	५	९	२	६	१०	३	७	४	८	११	१२	घात

तिथिघात-विचार ।

गो स्त्री झषे घाततिथिस्तु पूर्णा
भद्रा नृयुक्कर्कटकेऽथ नन्दा ।
कौर्प्याजयोर्नक्रघटे च रिक्ता
जया धनुः कुम्भहरौ न शस्ताः ॥ १ ॥

वृष, कन्या और मीनराशिवाले प्राणियों को पूर्णातिथि घात है, मिथुन व कर्क को भद्रा घात है। वृश्चिक व मेष को नन्दा घात है, मकर व तुला को रिक्ता घात है। धनु, कुम्भ और सिंह को जया घात है, इस कारण यात्रा आदि में वर्जित हैं ॥ १ ॥

तिथिघात-चक्र ।

वृष, कन्या, मीन	मिथुन, कर्क	वृश्चिक, मेष	मकर, तुला	धनु, कुम्भ, सिंह	राशि
पूर्णा ५।१०।१५	भद्रा २।७।१२	नन्दा १।६।११	रिक्ता ४।९।१४	जया ३।८।१३	घात तिथि

नक्षत्रघात-विचार ।

मघाकरस्वातिमैत्रमूलश्रुत्यम्बुपान्त्यभम् ।
याम्यब्राह्मेशसार्पं च मेषादेर्घातभं न सत् ॥ १ ॥

मेषराशिवाले मनुष्य को मघा नक्षत्र घात, वृषराशि को हस्त घात, मिथुनराशि को स्वाती घात, कर्क को अनुराधा घात, सिंह को मूल घात, कन्या को श्रवण घात, तुला को शतभिष घात, वृश्चिक को रेवती घात और धनु को भरणी घात जानना चाहिए। मकरराशिवाले को रोहिणी नक्षत्र घात, कुम्भ को आर्द्रा घात और मीन को आश्लेषा घात जानिए, ये सब यात्रा में अशुभ हैं ॥ १ ॥

नक्षत्रघात-विचार ।

मेष	वृष	मि.	कर्क	सिंह	कं.	तु.	वृ.	ध.	म.	कुं.	मी.	राशि
म.	ह.	स्वा.	अनु.	मू.	श्र.	श.	रे.	भ.	रो.	आ.	श्ले.	घातनक्षत्र

घातलग्न ।

१ २ ४ ७ १० १२ ६ ८ ९ ११ ३ ५

भूमिद्व्यब्ध्यद्रि दिक्सूर्याङ्गाष्टाङ्केशाग्निसायकाः ।
मेषादिघातलग्नानि यात्रायां वर्जयेत्सुधीः ॥ १ ॥

मेषराशिवाले को मेषलग्न घात है। वृषराशि को वृष लग्न घात है। मिथुनराशिवाले को कर्क लग्न घात है। कर्कराशि को तुला लग्न घात है। सिंहराशिवाले को मकर लग्न घात है। कन्याराशि को मीन लग्न घात है। तुलाराशि को कन्या लग्न घात है। वृश्चिक राशि को वृश्चिक लग्न घात है। धनुराशि को धनु लग्न घात है। मकरराशि को कुम्भ लग्न घात है। कुम्भराशि को मिथुन लग्न घात है और मीनराशिवाले को सिंह लग्न घात है। यह घात लग्नें यात्रा में त्याज्य हैं ॥ १ ॥

घातलग्न-चक्र ।

मेष	वृष	मि.	कर्क	सिंह	कं.	तु.	वृ.	ध.	म.	कुं.	मी.	राशि
मेष	वृष	कर्क	तु.	म.	मीन	कं.	वृ.	ध.	कुं.	मी.	सिं.	घात लग्न

सर्वाङ्क-विचार ।

तिथ्यर्क्षवारयुतिरद्रिगजाग्नितष्टा
स्थानत्रयेऽत्र वियतिप्रथमेऽतिदुःखी ।
मध्ये धनक्षतिरथो चरमे मृतिः स्या-
त्स्थानत्रयेऽङ्कयुजि सौख्यजयौ निरुक्तौ ॥१॥

जिस दिन यात्रा करनी हो उस दिन में शुक्लपक्ष की परीवा से लेकर जो तिथि हो और अश्विनी से लेकर जो नक्षत्र हो, रविवार से लेकर जो वार हो, इनकी संख्याओं के योग को तीन स्थानों में स्थापन करके प्रथम स्थान में सात का, दूसरे स्थान में आठ का और तीसरे स्थान में तीन का भाग दे । उन तीनों स्थानों में से पहले स्थान में जो शून्य बचे तो यात्रा करनेवाला दुःख पाये । दूसरे स्थान में शून्य बचे तो धन का क्षय हो । तीसरे स्थान में शून्य बचे तो मृत्यु हो । यदि तीनों स्थानों में अङ्क शेष बचें तो यात्रा करनेवाला सुखी और विजयी होता है ॥ १ ॥

नक्षत्रों की निषिद्ध नाड़ियाँ ।

पूर्वाग्निपित्र्यन्तकतारकाणां
भूपप्रकृत्युग्रतुरङ्गमाः स्युः ।
स्वातीविशाखेन्द्रभुजङ्गमानां
नाड्यो निषिद्धा मनुसंमिताश्च ॥ १ ॥

तीनों पूर्वाओं की आदि की सोलह घड़ी, कृत्तिका की इक्कीस घड़ी, मघा की ग्यारह घड़ी, भरणी की सात घड़ी और स्वाती, विशाखा, ज्येष्ठा और आश्लेषा इन नक्षत्रों की चौदह-चौदह घड़ियाँ यात्रा में निषिद्ध होती हैं ॥ १ ॥

नक्षत्रनाड़ीनिषिद्ध-चक्र ।

पू. ३	कृ.	मघा	भ.	स्वाती	वि.	ज्येष्ठा	आश्लेषा	नक्षत्र
१६	२१	११	७	१४	१४	१४	१४	त्याज्यघटिका

महाडल-दोष ।

रवेर्भतोऽब्जभोन्मितिर्नगावशेषिता द्व्यगा ।
महाडलो न शस्यते त्रिषण्मिता भ्रमो भवेत् ॥ १ ॥

जिस नक्षत्र में सूर्य स्थित हो उससे लेकर चन्द्रमा के नक्षत्र तक जितनी संख्या हों उनमें सात का भाग देने से यदि दो या सात बचें तो महाडल दोष होता है । यदि तीन व छः बचें तो भ्रमण दोष होता है । ये दोनों दोष यात्रा में निषिद्ध होते हैं ॥ १ ॥

हिम्बर-योग ।

शशाङ्कभं सूर्यभतोऽत्र गण्यं
पक्षादितिथ्या दिनवासरेण ।
युतं नवाप्तं नगशेषकं चे-
त्स्याद्धिम्बरं तद्गमनेऽतिशस्तम् ॥ १ ॥

सूर्य के नक्षत्र से चन्द्रमा के नक्षत्र तक गिने, जितनी संख्या हों उनमें शुक्ल या कृष्ण पक्ष की वर्तमान तिथि की संख्या को जोड़-

कर नव का भाग देने से यदि सात शेष बचें तो हिम्बर योग होता है, वह यात्रा में अति शुभ है ॥ १ ॥

पन्थाराहु-विचार ।

स्युर्धर्मे दस्रपुष्योरगवसुजलपद्वीशमैत्राण्यथार्थे
याम्याजांघ्रीन्द्रकर्णादितिपितृपवनोऽन्यथोभानिकामे ।
वह्न्याद्रार्बुध्न्यचित्रानिर्ऋतिविधि भगाख्या निमोक्षेऽथरोहि
ण्यर्यम्णाप्येन्दुविश्वान्तिमभदिनकरर्क्षाणिपंथादिराहौ १

अश्विनी, पुष्य, आश्लेषा, धनिष्ठा, शतभिष, विशाखा और अनुराधा इन नक्षत्रों की धर्मसंज्ञा है। भरणी, पूर्वभाद्रपद, ज्येष्ठा, श्रवण, पुनर्वसु, मघा और स्वाती इनकी अर्थसंज्ञा है। कृत्तिका, आर्द्रा, उत्तराभाद्रपद, चित्रा, मूल, अभिजित् और पूर्वाफाल्गुनी इनकी कामसंज्ञा है। रोहिणी, पूर्वाषाढ़, मृगशिरा, रेवती, उत्तराषाढ़, उत्तराफाल्गुनी और हस्त इनकी मोक्षसंज्ञा है। यही पन्था राहुचक्र है, इसे यात्रा में विचारना चाहिए ॥ १ ॥

पन्थाराहु-चक्र ।

अ.	पुष्य	आश्लेषा	वि.	अनु.	ध.	श.	धर्म
भ.	पुन	मघा	स्वाती	ज्येष्ठा	श्र.	पू. भा.	अर्थ
कृ.	आ.	पू. फा.	चित्रा	मूल	अभि	उ. षा.	काम
रोहिणी	मृ.	उ. फा.	हस्त	पू. षा.	उ. षा.	रेवती	मोक्ष

पन्थाराहुफल ।

धर्मगे भास्करे वित्तमोक्षे शशी
वित्तगे धर्ममोक्षस्थितिः शस्यते ।

कामगे धर्ममोक्षार्थगः शोभनो
मोक्षगे केवलं धर्मगः प्रोच्यते ॥ १ ॥

इस पहले चक्र में धर्ममार्ग में सूर्य के रहते यदि चन्द्रमा अर्थ व मोक्ष में स्थित हो तो यात्रा शुभ होती है। अर्थमाग में सूर्य हो, धर्म व अर्थ में चन्द्रमा हो तो भी शुभ जानिए। काम में सूर्य हो, धर्म, मोक्ष और अर्थ में चन्द्रमा हो तो यात्रा को शुभ जानिए। मोक्ष में सूर्य हो तथा धर्मसंज्ञक नक्षत्र में चन्द्रमा हो तो भी शुभ जानिए, अन्यथा अशुभ जानिए ॥ १ ॥

द्वितीय प्रकार से पन्थाराहु-फल।

धर्ममार्गे गते सूर्ये अर्थांशे चन्द्रमा यदि।
तदा शत्रुभयं तस्य ज्ञेयं तु विविधैः शुभैः ॥ १ ॥

यदि धर्ममार्ग में सूर्य और अर्थमार्ग में चन्द्रमा हो तो यात्रा करने से शत्रुभय होता है ॥ १ ॥

धर्ममार्गे गते सूर्ये चन्द्रे तत्रैव संस्थिते।
संहारश्च भवेत्तत्र भङ्गो हानिः प्रजायते ॥ २ ॥

यदि धर्ममार्ग में सूर्य और उसी में चन्द्रमा भी हो तो संहार, भङ्ग और हानि होती है ॥ २ ॥

अर्थमार्गे गते सूर्ये चन्द्रे धर्मस्थिते यदि।
गजलाभो भवेत्तस्य तत्र श्रीः सर्वतोमुखी ॥ ३ ॥

यदि अर्थमार्ग में सूर्य और धर्ममार्ग में चन्द्रमा हो तो यात्रा करने से हाथी और बहुत सुख प्राप्त हों ॥ ३ ॥

अर्थमार्गे गते सूर्ये चन्द्रे तत्रैव संस्थिते।
प्रथमं जायते कार्यं पुनर्भङ्गो भविष्यति ॥ ४ ॥

यदि अर्थमार्ग में सूर्य हो और उसी में चन्द्रमा भी हो तो यात्रा करने से पहले कार्य हो फिर भङ्ग हो ।। ४ ।।

अर्थमार्गे गते सूर्ये चन्द्रे मोक्षस्थिते यदि ।
भूमिलाभो भवेत्तस्य हर्षयुक्तः सुखी भवेत् ॥ ५ ॥

यदि अर्थमार्ग में सूर्य हो और मोक्षमार्ग में चन्द्रमा हो तो यात्रा करने से भूमि-लाभ, हर्षयुक्त और सुखी हो ।। ५ ।।

काममार्गे गते सूर्ये चन्द्रे धर्मे च संस्थिते ।
गजाश्वाश्च विलभ्यन्ते राजसम्मानसंभवात् ॥ ६ ॥

यदि काममार्ग में सूर्य हो और धर्ममार्ग में चन्द्रमा हो तो यात्रा करने से राजसम्मान तथा हाथी घोड़ा भी मिलें ।। ६ ।।

काममार्गे गते सूर्ये चन्द्रे चैवार्थसंस्थिते ।
सकलं जायते तस्य विघ्नभङ्गो विनिर्दिशेत् ॥ ७ ॥

यदि काममार्ग में सूर्य हो और चन्द्रमा अर्थमार्गी हो तो सब कार्यों की सिद्धि और विघ्नभङ्ग हो ।। ७ ।।

काममार्गे गते सूर्ये चन्द्रे तत्रैव संस्थिते ।
विग्रहं दारुणं चैव कार्यनाशं विनिर्दिशेत् ॥ ८ ॥

यदि काममार्ग में सूर्य हो और चन्द्रमा भी काममार्गी हो तो दारुण विग्रह और कार्यनाश हो ।। ८ ।।

काममार्गे गते सूर्ये चन्द्रे मोक्षगतेऽपि वा
राज्ञो लाभो भवेत्तस्य स्वेष्टलाभं विनिर्दिशेत् ॥ ९ ॥

यदि काममार्गी सूर्य हो और मोक्षमार्गी चन्द्रमा हो तो राज्यलाभ और इष्ट लाभ हो ।। ९ ।।

मोक्षमार्गे गते सूर्ये चन्द्रे धर्मस्थिते यदि ।
हेमलाभो भवेत्तस्य सर्वकार्यं प्रसिद्ध्यति ॥ १० ॥

यदि मोक्षमार्ग में सूर्य हो और धर्ममार्ग में चन्द्रमा हो तो सोना लाभ हो और सब कार्यों की सिद्धि हो ॥ १० ॥

मोक्षमार्गे गते सूर्ये अर्थांशे चन्द्रमा यदि ।
विफलं तस्य कार्यं च चौरराजरिपोर्भयम् ॥ ११ ॥

यदि मोक्षमार्ग में सूर्य हो और अर्थमार्ग में चन्द्रमा हो तो कार्य निष्फल हो; चोर, राजा, और शत्रु से भय हो ॥ ११ ॥

मोक्षमार्गे गते सूर्ये चन्द्रे कामस्थिते यदि ।
सर्वसिद्धिमवाप्नोति कार्ये च जयमेव च ॥ १२ ॥

यदि मोक्षमार्ग में सूर्य हो और काममार्ग में चन्द्रमा हो तो यात्रा करने से सब कार्य सिद्ध होते हैं और कार्य में विजय होती है ॥ १२ ॥

मोक्षमार्गे गते सूर्ये चन्द्रे तत्रैव संस्थिते ।
विग्रहं दारुणं चैव विघ्नस्तस्य भविष्यति ॥ १३ ॥

यदि मोक्षमार्ग में सूर्य हो और मोक्षमार्गी चन्द्रमा भी हो तो यात्रा करने से दारुण विग्रह तथा विघ्न हो ॥ १३ ॥

यात्रायुद्धे विवाहे च प्रवेशे नगरादिषु ।
व्यापारेषु च सर्वेषु पन्थाराहुः प्रशस्यते ॥ १४ ॥

यात्रा, युद्ध और विवाह में, ग्रामादि प्रवेश में और व्यापार में पन्थाराहु का विचार करना उचित है ॥ १४ ॥

ग्रहानुसार यात्रा में शुभयोग-विचार ।

स्थाने यदा स्युर्गुरुसौम्यशुक्राः
सिद्ध्यन्ति कार्याणि च पञ्चमेऽह्नि ।
राज्यास्पदं वा सुखदेशलाभं
मासस्य मध्ये ग्रहभावयुक्तम् ॥ १ ॥

यात्रा के लग्न में गुरु, बुध और शुक्र स्थित हों तो पाँचवें दिन कार्य सिद्ध करें। राज्य, सुख और देश का लाभ करें अथवा एक मास में ग्रहभाव के युक्त होने से फल जानना चाहिए ॥ १ ॥

योग, अधियोग और योगाधियोग-विचार ।

बुधेज्यभृगुपुत्राणामेकश्चेत्केन्द्रकोणगः ।
तदा योगोऽत्र गमने क्षेमो भवति भूभुजाम् ॥ १ ॥
अधियोगो भवेद्द्वाभ्यामत्र क्षेमजयो ध्रुवम् ।
त्रिभिर्योगाधियोगोऽत्र यशःक्षेमधनागमः ॥ २ ॥

बुध, बृहस्पति और शुक्र इन तीन ग्रहों में से एक ग्रह केन्द्र १।४।७।१० व त्रिकोण ९।५ में हो तो योगसंज्ञक योग होता है। इसमें यात्रा करने से राजाओं का कल्याण होता है। इन तीनों ग्रहों में से दो ग्रह केन्द्र व त्रिकोण में हों तो अधियोगसंज्ञक योग होता है। इसमें यात्रा करने से क्षेम और जय हो तथा तीनों ग्रह केन्द्र व त्रिकोण में हों तो योगाधियोग-संज्ञक योग होता है। उसमें यात्रा करने से यश, क्षेम और धन-लाभ होता है। किसी आचार्य के मत से योगाधियोग में यात्रा करने से भूमि का भी लाभ होता है ॥ १–२ ॥

मोक्षमार्गे गते सूर्ये चन्द्रे धर्मस्थि

हेमलाभो भवेत्तस्य सर्वकार्यं

यदि मोक्षमार्ग में सूर्य हो और

सोना लाभ हो और सब कार्य

मोक्षमार्गे गते

विफलं तस्

यदि म

तो कार्य

लाभः कष्टद्रव्यलाभो सुखं च

कष्टं सौख्यं क्लेशलाभौ सुखं च ॥ ३ ॥

सौख्यं लाभः कार्यसिद्धिश्च कष्टं

क्लेशः कष्टात्सिद्धिरर्थो धनं च ।

मृत्युर्लाभो द्रव्यलाभश्च शून्यं

शून्यं सौख्यं मृत्युरत्यन्तकष्टम् ॥ ४ ॥

पौष मास से बारह महीनों का चक्र लिखे । उसके नीचे पौष महीने से बारह तिथि खड़ी परीवा से लिखे और माघ से द्वितीया आदि लेकर बेंड़ी तिथि लिखे । इसी प्रकार सब चक्र भरे अर्थात् फाल्गुन में तीज से खड़ी तिथि लिखे तथा चैत्र में चौथ से लिखे, इसी तरह से सब महीनों में लिखे । तेरस और तीज का एक फल

जानिए। चौथ और चतुर्दशी का एक फल जानिए और पञ्चमी पूर्णमासी का एक फल जानिए। एक पंक्ति में पूर्व आदि चारों दिशाओं का फल चक्र के क्रम से जानना ॥ १-४ ॥

तिथि-चक्र ।

मा.	पौ.	मा.	फा.	चै.	वै.	ज्ये.	आ.	श्रा.	भा.	आ.	का.	मा.	पूर्व	दक्षिण	पश्चिम	उत्तर
ति.	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	सौख्य	क्लेश	भीति	अर्थागम
ति.	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१	शून्य	दरिद्रता	दरिद्रता	मित्र मिलाप
ति.	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१	२	द्रव्य-क्लेश	दुःख	इष्टाप्ति	अर्थ
ति.	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१	२	३	लाभ	सुख-प्राप्ति	मंगल	धनलाभ
ति.	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१	२	३	४	लाभ	द्रव्याप्ति	धन	सौख्य
ति.	६	७	८	९	१०	११	१२	१	२	३	४	५	भीति	लाभ	मृत्यु	अर्थागम
ति.	७	८	९	१०	११	१२	१	२	३	४	५	६	लाभ	कष्ट	द्रव्यलाभ	सुख
ति.	८	९	१०	११	१२	१	२	३	४	५	६	७	कष्ट	सौख्य	क्लेश से लाभ	सुख
ति.	९	१०	११	१२	१	२	३	४	५	६	७	८	सौख्य	लाभ	कार्य सिद्धि	कष्ट
ति.	१०	११	१२	१	२	३	४	५	६	७	८	९	क्लेश	कष्ट-सिद्धि	अर्थ	धनलाभ
ति.	११	१२	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	मृत्यु	लाभ	द्रव्यलाभ	शून्य
ति.	१२	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	शून्य	सौख्य	मृत्यु	अत्यन्त कष्ट

युद्ध-यात्रा-विचार ।

राहुभुक्तानि ऋक्षाणि जीवपक्षस्त्रयोदश ।
मृतपक्षस्तु भोग्यानि कर्तरी तदधिष्ठितम् ॥ १ ॥
ततः पञ्चदशे ग्रस्तं चिन्त्यं युद्धे गमादिषु ।
जीवपक्षः शुभो ज्ञेयो मृतपक्षस्त्वशोभनः ॥ २ ॥
मृतपक्षाच्छुभं ग्रस्तं ग्रस्तभात्कर्तरी शुभा ।
मृतपक्षे सहस्रांशौ जीवपक्षे विधौ स्थिते ॥ ३ ॥
यात्रायां विजयस्तत्र विपरीते पराजयः ।
उभौ चेज्जीवपक्षस्थौ यात्रा तत्रापि शोभना ॥ ४ ॥
चेदुभौ मृत्युपक्षस्थौ रवीन्दू तत्र कष्टदौ ।
यायिनो जयदश्चन्द्रो जीवपक्षे व्यवस्थितः ।
भानुमान् जीवपक्षस्थः स्थायिनो विजयावहः ॥ ५ ॥

राहु के नक्षत्र से पहलेवाले तेरह नक्षत्र जीवपक्षसंज्ञक और आगेवाले तेरह नक्षत्र मृतपक्षसंज्ञक हैं। जिस नक्षत्र में राहु स्थित हो वह नक्षत्र कर्तरीसंज्ञक और राहु के नक्षत्र से पन्द्रहवाँ नक्षत्र ग्रस्तसंज्ञक है। इनका युद्ध, यात्रा आदि में विचार करना उचित है। जीवपक्ष शुभ और मृतपक्ष अशुभ है। मृतपक्ष से ग्रस्त और ग्रस्त से कर्तरी शुभ है। मृतपक्ष में सूर्य और जीवपक्ष में चन्द्रमा हो तो यात्रा करने से युद्ध में जय हो। इसके विपरीत हो अर्थात् मृतपक्ष में चन्द्रमा और जीवपक्ष में सूर्य हो तो यात्रा में पराजय हो। यदि सूर्य चन्द्रमा दोनों जीवपक्ष में हों तो यात्रा शुभ है। यदि चन्द्रमा सूर्य दोनों मृत्युपक्ष में हों तो भी कष्टदायक है। जीवपक्ष

युद्ध-यात्रा-विचार ।

ाणि जीवपक्षस्त्रयोदश ।
ानि कर्तरी तदधिष्ठितम् ॥ १ ॥
स्तं चिन्त्यं युद्धे गमादिषु ।
ज्ञेयो मृतपक्षस्त्वशोभनः ॥ २ ॥
स्तं ग्रस्तभात्कर्तरी शुभा ।
ौ जीवपक्षे विधौ स्थिते ॥ ३ ॥
स्तत्र विपरीते पराजयः ।
स्थौ यात्रा तत्रापि शोभना ॥ ४ ॥
स्थौ रवीन्दू तत्र कष्टदौ ।
चन्द्रो जीवपक्षे व्यवस्थितः ।
पक्षस्थः स्थायिनो विजयावहः ॥ ५ ॥

से पहलेवाले तेरह नक्षत्र जीवपक्षसंज्ञक और
क्षत्र मृतपक्षसंज्ञक हैं। जिस नक्षत्र में राहु
नक्षत्र कर्तरीसंज्ञक और राहु के नक्षत्र से
ग्रस्तसंज्ञक है। इनका युद्ध, यात्रा आदि में
चित है। जीवपक्ष शुभ और मृतपक्ष अशुभ
स्त और ग्रस्त से कर्तरी शुभ है। मृतपक्ष में
क्ष में चन्द्रमा हो तो यात्रा करने से युद्ध
के विपरीत हो अर्थात् मृतपक्ष में चन्द्रमा और
हो तो यात्रा में पराजय हो। यदि सूर्य
वपक्ष में हों तो यात्रा शुभ है। यदि चन्द्रमा
क्ष में हों तो भी कष्टदायक है। जीवपक्ष

में चन्द्रमा हो तो युद्ध में जानेवाले को अर्थात् युद्ध पर चढ़ जाने-वाले को जयदायक है। यदि सूर्य जीवपक्ष में हो तो स्थायी अर्थात् जो अपने किले में बैठा है उसी की जीत हो ॥ १-५ ॥

यामराहु-विचार ।

अष्टासु प्रहरार्द्धेषु प्रथमाद्येष्वहर्निशम् ।
पूर्वस्यां वामतो राहुस्तुर्यां तुर्यां दिशं व्रजेत् ॥ १ ॥
यात्रायां दक्षिणे राहुर्युद्धकाल जयी भवेत् ।
पृष्ठे च समता ज्ञेया सम्मुखे वाममृत्युदः ॥ २ ॥

आठ प्रहरार्द्ध अर्थात् आधे-आधे पहर से पूर्व आदि चौथी-चौथी दिशा में राहु चलता है। युद्ध और यात्रा में दाहिने राहु जीत को देने-वाला तथा पीछे सामान्य और सम्मुख या बायें मृत्युदायक है ॥१-२॥

राहु-चक्र ।

पू.	वा.	द.	ई.	प.	आ.	उ.	नै.	दिशा
॥	१	१॥	२	२॥	३	३॥	४	दिनप्रहरार्द्ध
४॥	५	५॥	६	६॥	७	७॥	८	रात्रिप्रहरार्द्ध

पञ्चस्वरचक्र-विचार ।

कादिहान्तांल्लिखेद्वर्णान् स्वराधोङञणोज्झितान् ।
तिर्यक्पंक्तिक्रमेणैव पञ्चत्रिंशत्प्रकोष्ठके ॥ १ ॥
नरनामादिमो वर्णो यस्मात्स्वरादधः स्थितः ।
स स्वरस्तस्य वर्णस्य वर्णस्वर इहोच्यते ॥ २ ॥
न प्रोक्ता ङञणा वर्णा नामादौ सन्ति ते नहि ।
चेद्भवन्ति तदा ज्ञेया गजडास्ते यथाक्रमम् ॥ ३ ॥

यदि नाम्नि भवेद्वर्णः संयुक्ताक्षरलक्षणः ।
ग्राह्यस्तदादिमो वर्ण इत्युक्तं ब्रह्मयामले ॥ ४ ॥
अस्वरो मेषसिंहालीरिः कन्यायुग्मकर्कटाः ।
धनुर्मीनावुकारः स्यादेकारश्च तुलावृषौ ॥ ५ ॥
ओस्वरो मृगकुम्भौ च राशीशास्तु ग्रहस्वराः ।
स्वराधः स्थापयेत्खेटान् राशेर्यो यस्य नायकः ॥६॥
अकारे सप्त ऋक्षाणि रेवत्यादिक्रमेण च ।
पञ्च पञ्च इकारादावेवमृक्षस्वरोदयः ॥ ७ ॥
अकारादिक्रमान्न्यस्य नन्दादितिथिपञ्चकम् ।
दिनस्वरोदयो नित्यं स्वस्वतिथ्यादिजायते ॥ ८ ॥
नभस्य मार्गवैशाखेष्वकारस्योदयो भवेत् ।
आश्विनश्रावणाषाढेष्विकारो नायकः स्मृतः ॥९॥
उकारश्चैत्रपौषे स्यादेकारो ज्येष्ठकार्त्तिके ।
ओकार उदयं याति माघफाल्गुनमासयोः ॥ १० ॥
आद्यो बालः कुमारश्च युवा वृद्धो मृतस्तथा ।
किञ्चिल्लाभकरो बालःकुमारस्त्वर्धलाभदः ॥ ११ ॥
सर्वसिद्धो युवा प्रोक्तो वृद्धो मध्योऽधमोऽन्तिमः ।
युद्धकाले विचिन्त्येषु तिथिमार्गेण निश्चितम् ॥ १२॥

स्वरों के नीचे का आदि अक्षर लिखे, ङ ञ ण इन अक्षरों को छोड़कर लिखे, तिरछी पंक्ति के क्रम से पैंतीस कोठे का चक्र भरे, नर के नाम का आदि अक्षर जिस स्वर के नीचे हो वही उसका वर्णज स्वर अर्थात् बालस्वर जानिए । ङ ञ ण अक्षर स्वरों में नहीं कहे हैं, परन्तु जिसके नामादि में हों तो ग ज ड इस क्रम से

जान ले अर्थात् ङ के जगह में ग और ञ के जगह में ज तथा ण के जगह में ड अक्षर का ग्रहण करना चाहिए। यदि नाम के अक्षर में दो अक्षर मिले हों तो आदि का अक्षर ग्रहण करना ब्रह्मयामल में कहा है।

अकार स्वर में मेष, सिंह और वृश्चिक लग्न स्थापित करे तथा कन्या, मिथुन, कर्क इकार स्वर के नीचे लिखे। धनु-मीन उकार स्वर के नीचे लिखे, तुला-वृष एकार स्वर में लिखे तथा मकर-कुम्भ ओकार स्वर के नीचे लिखे। उसके नीचे ग्रह स्थापित करे, इसी क्रम से जिस राशि का स्वामी जो ग्रह हो उसी ग्रह को उस राशि के साथ स्थापित करना अकारादि स्वरों में चक्र से जानना। अकार स्वर के नीचे रेवत्यादि सात नक्षत्र स्थापित करें और पुनर्वसु से पाँच नक्षत्र इकार स्वर में लिखे तथा उत्तराफाल्गुनी से पाँच नक्षत्र उकार स्वर में लिखें दे। अनुराधा से पाँच नक्षत्र एकार स्वर में स्थापित करना व श्रवण से पाँच नक्षत्र ओकार स्वर में लिखना। अकारादि स्वरों में नन्दादि पाँच तिथियाँ क्रम से लिखें वही नित्य दिन और स्वरोदय है। अपने-अपने स्वर सै चक्र में जानिये। भाद्र, अगहन और वैशाख ये महीना अकार स्वर के नीचे लिखे तथा कुँवार, श्रावण और आषाढ़ इकार स्वर में लिखें। चैत्र और पौष उकार स्वर में स्थापित करें। ज्येष्ठ, कार्त्तिक एकार स्वर में लिखना, माघ, फाल्गुन महीना उकार स्वर में स्थापित करें। प्रथम कोठा में बालस्वर, दूसरे में कुमार, तीसरे में युवा, चौथे में वृद्धा और पाँचवें में मृता जानिए। बालस्वर थोड़ा लाभ करता है, कुमारसंज्ञक आधा लाभ करता है, युवा स्वर सर्व सिद्धिकारक है तथा वृद्धास्वर मध्यम है और मृतास्वर अधम जानिए। युद्धकाल में विशेष विचार करना उचित है। तिथि से जानना तथा युद्धकाल में नामादि अक्षर से लेना तथा गोचर में जन्मनामाक्षर से विचारना उचित है॥ १-१२॥

पञ्चस्वरचक्र-न्यास ।

बाल	कुमार	युवा	वृद्धा	मृता	स्वर
अ	इ	उ	ए	ओ	वर्ण
क	ख	ग	घ	च	वर्ण
छ,	ज	झ	ट	ठ	वर्ण
ड	ढ	त	थ	द	वर्ण
ध	न	प	फ	ब	वर्ण
भ	म	य	र	ल	वर्ण
व	श	प	स	ह	वर्ण
नन्दा १।६।११	भद्रा २।७।१२	जया ३।८।१३	रिक्ता ४।९।१४	पूर्णा ५।१०।१५	तिथि
र. मं.	बु. चं.	बृ.	शु.	श.	वार
रेवत्यादि ७	अदित्यादि ५	अर्यमादि ५	मित्रादि ५	श्रवणादि ५	नक्षत्र
मे. सिं. वृश्चिक	कन्या. मि. कर्क	ध. मो.	तु. वृ.	म. कुं.	लग्न
मार्ग. वै. भाद्र.	आषा. श्रा. आश्विन	चै. पौष	ज्ये. कार्त्तिक	मा. फा.	मास

युद्ध-यात्रा में अकुलादि नक्षत्र-विचार।

स्वात्यन्तकाहिवसुपौष्णकरानुराधा-
दित्यध्रुवाणि विषमास्तिथयोऽकुलाः स्युः।
सूर्येन्दुमन्दगुरवश्च कुलाकुलाख्यो
मूलाम्बुपेशविधिभं दशषड्द्वितिथ्यः॥ १॥
पूर्वाश्वीज्यमघेन्दुकर्णदहनद्वीशेन्द्रचित्रास्तथा
शुक्रारौ कुलसंज्ञकाश्च तिथयोऽर्काष्टेन्द्रवेदैर्मिताः।
यायी स्यादकुले जयी च समरे स्थायी च तद्वत्कुले
सन्धिः स्यादुभयोःकुलाकुलगणे भूमीशयोर्युध्यतोः॥२॥

स्वाती, भरणी, आश्लेषा, धनिष्ठा, रेवती, हस्त, अनुराधा, पुनर्वसु व ध्रुवसंज्ञक नक्षत्र तथा विषम तिथि १। ३। ५। ७ ९। ११। १३ वार सूर्य, चन्द्र, शनि और गुरु इन नक्षत्रादिकों की अकुलगणसंज्ञा है। मूल, शतभिष, आर्द्रा और अभिजित् ये नक्षत्र; दशमी, छठ और द्वितीया तिथि और बुधवार, इनकी कुलक गणसंज्ञा है। तीनों पूर्वा, अश्विनी, पुष्य, मघा, मृगशिरा, श्रवण, कृत्तिका, विशाखा, ज्येष्ठा और चित्रा ये नक्षत्र; शुक्र व मङ्गलवार तथा द्वादशी, अष्टमी, चतुर्दशी और चौथ तिथि इनकी कुलाकुलगण संज्ञा है। जानेवाले को अकुलसंज्ञक नक्षत्रादिकों में जीत होती है। युद्धसमय में तथा स्थायी अर्थात् स्थिर होनेवाले को कुलगण के नक्षत्रादिकों में जीत होती है और कुलाकुलगण में राजाओं के युद्ध में दोनों से मिलाप होता है॥ १-२॥

घातवार-विचार।

मेषे रविर्बुधः कर्के मिथुने चन्द्र एव च।
कन्यावृषभसिंहेषु शनिः स्यान्मकरे कुजः॥ १॥

धनुर्वृश्चिकमीनेषु शुक्रोऽथ तुलकुम्भयोः ।
जीवश्चैते जन्मराशौ घातवारा बुधैः स्मृताः ॥ २ ॥

मेषराशिवाले को रविवार घात है, कर्क को बुधवार, मिथुन को चन्द्रवार, कन्या, वृष और सिंह को शनिवार घात है । मकर को मङ्गलवार, धनु, वृश्चिक और मीन को शुक्रवार घात है तथा तुला व कुम्भ को बृहस्पतिवार घात है । इन जन्मराशियों पर पण्डित घातवार कहते हैं ॥ १-२ ॥

घातवार-चक्र ।

मेष	वृष	मि.	कर्क	सिंह	कं.	तु.	वृ.	ध.	म.	कुं.	मी.	राशि
र.	श.	चं.	बु.	श.	बृ.	बृ.	शु.	शु.	मं.	बृ.	शु.	वार

ग्रहयोग-विचार ।

तनौ जीव इन्दुर्मृतो वैरिगोऽर्कः
प्रयातो महीन्द्रो जयत्येव शत्रुम् ॥ १ ॥
लग्ने गुरौ रिपौ भौमे लाभेऽर्के सहजे शनौ ।
जयत्याशु रिपून् यानेऽनुकूलो यदि भार्गवः ॥ २ ॥
गुरौ लग्नेऽष्टमे चन्द्रे षष्ठे सूर्ये जयत्यरीन् ।
तनौ जीवेऽथवा शेषैर्वित्तायस्थैर्जयोगमे ॥ ३ ॥
लग्ने सूर्ये त्रिधौ द्यूने धनस्थैर्ज्ञेज्यभार्गवैः ।
प्रयाति नृपतिः सोऽरीञ्जयेत्तार्क्ष्य इवोरगान् ॥ ४ ॥
मन्दारौ त्रिषडायस्थौ बलिनो ज्ञेज्यभार्गवाः ।
प्रयाणे भूपतेर्यस्य वसुधा तस्य हस्तगा ॥ ५ ॥
लग्ने जीवे विधौ द्यूने चतुर्थे ज्ञे तथा भृगौ ।
पापैस्त्रिगैर्महीपालः प्रस्थितो लभते श्रियम् ॥ ६ ॥

लाभेऽर्के खे बुधे शुक्रे दुश्चिक्ये भूमिजे शनौ ।
द्यूनेऽब्जे तनुगे जीवे प्रस्थितस्य भवेज्जयः ॥ ७ ॥
लग्नेऽब्जे वा गुरौ षष्ठे सूर्ये व्योमगते शनौ ।
सुतेज्ये हिबुके शुक्रे राजा हन्ति गमे रिपून् ॥ ८ ॥
शुक्रे तुर्ये त्रिलाभस्थे केन्द्रस्थगुरुवीक्षिते ।
सप्ताष्टाङ्कगतः पापैर्योगोऽयं बहुलाभदः ॥ ९ ॥
शुक्रार्केज्यैस्त्रितुर्यस्थैः शत्रुस्थे मन्दभूमिजे ।
यात्रा भूमिभुजां शस्ता शत्रुवृन्दविदारिणी ॥ १० ॥

लग्न में बृहस्पति और चन्द्रमा हों, छठे, आठवें सूर्य हों ऐसे योग में यात्रा करने से राजा शत्रु को जीते । लग्न में बृहस्पति, छठे मङ्गल, ग्यारहवें सूर्य और तीसरे शनैश्चर हों तो ऐसे योग में यात्रा करने से शत्रु को जीते, परन्तु शुक्र बायें या पीछे हो, बृहस्पति लग्न में हो, आठवें चन्द्रमा हो, छठे सूर्य हो तो शत्रु को जीते अथवा लग्न में बृहस्पति हो, शेषग्रह राहु और केतु छोड़कर दूसरे, ग्यारहवें हों तो जीत हो । लग्न में सूर्य हो, सातवें चन्द्रमा हो तथा दूसरे बुध, बृहस्पति और शुक्र हों ऐसे योग में राजा यात्रा करे तो जिस प्रकार गरुड़ सर्पों को जीतते हैं उसी प्रकार शत्रु को जीते । शनैश्चर और मङ्गल तीसरे, छठे और ग्यारहवें हों; बुध, बृहस्पति और शुक्र बली हों, ऐसे योग में राजा यात्रा करे तो पृथ्वी-लाभ हो । लग्न में बृहस्पति हो, चन्द्रमा सातवें हो, चौथे बुध और शुक्र हों, पापग्रह तीसरे हों ऐसे योग में यात्रा करे तो लक्ष्मी प्राप्त हो । ग्यारहवें सूर्य हो, दशवें बुध व शुक्र हों, तीसरे मङ्गल व शनैश्चर हों, सातवें चन्द्रमा हो, बृहस्पति लग्न में हो तो यात्रा करने से जय हो । लग्न में चन्द्रमा हो व गुरु हो तथा छठे सूर्य हो, दशवें

शनैश्चर हो, पाँचवें, चौथे शुक्र हो ऐसे योग में राजा यात्रा करे तो शत्रु को जीते। शुक्र चौथे, तीसरे, ग्यारहवें हों और केन्द्र में होकर बृहस्पति शुक्र को देखता हो; सातवें, आठवें और नवें पापग्रह हों तो यात्रा करने से बहुत लाभ हो। शुक्र, सूर्य और बृहस्पति तीसरे चौथे हों और शनैश्चर तथा मङ्गल छठे हों तो राजाओं की यात्रा शुभ है, शत्रु का समूह नाश करनेवाली है ॥ १–१० ॥

शत्रुञ्जय-योग ।

सिते लग्नगते सूर्ये लाभगे हिबुके विधौ ।
ततो राजा रिपून् हन्ति केशरीवेभसंहतिम् ॥ १ ॥

लग्न में शुक्र हो, सूर्य लाभस्थान में हो तथा चन्द्रमा चौथे हो ऐसे योग में राजा यात्रा करे तो जिस प्रकार सिंह हाथी को मार डालता है उसी प्रकार शत्रु को मारे ॥ १ ॥

शत्रुञ्जय-योग-चक्र ।
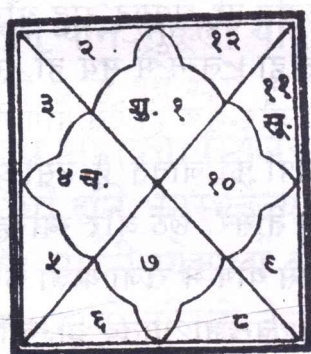
पुण्डरीक-योग ।

गुरौ कर्कटगे लग्ने भानावेकादशास्थिते ।
पुण्डरीको महायोगः शत्रुपक्षविनाशकृत् ॥ १ ॥

कर्कराशि का बृहस्पति लग्न में हो और ग्यारहवें सूर्य हो तो पुण्डरीक महायोग होता है। वह शत्रुपक्ष का नाशकारक है ॥ १ ॥

पुण्डरीकयोग चक्र ।
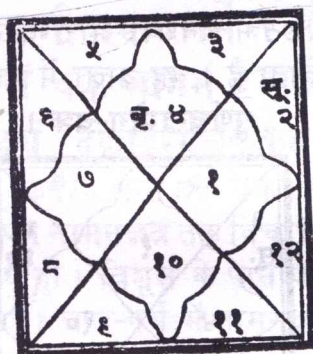
कामद-योग ।

वृषराशिगते चन्द्रे लाभस्थे केन्द्रगे गुरौ ।
कामधेनुरयं योगः कामदो यायिनो रणे ॥ १ ॥

वृषराशि का चन्द्रमा होकर ग्यारहवें हो और केन्द्र में बृहस्पति हो तो कामधेनुसंज्ञक योग जानिए। इस योग में जानेवालों को रण में कामना की सिद्धि होती है ॥ १ ॥

कामदयोग-चक्र ।
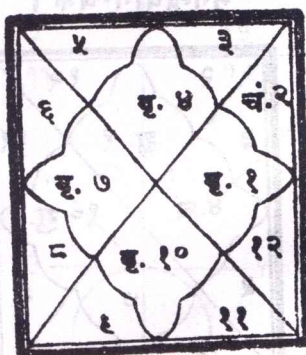
पूर्णचन्द्रयोग ।

त्रिषष्ठलाभगेष्वेषु रविमन्दकुजेषु च ।
पूर्णचन्द्रो महायोगः पूर्णराज्यप्रदः सदा ॥ १ ॥

तीसरे में सूर्य, छठे में शनैश्चर और ग्यारहवें में मङ्गल हो तो पूर्णचन्द्र महायोग होता है। वह यात्रा में राज्यदायक है ॥ १ ॥
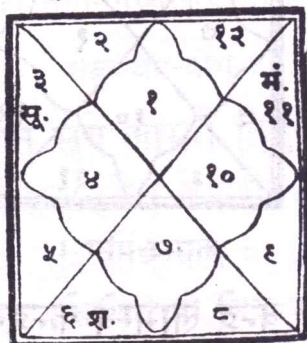
पूर्णचन्द्रयोग-चक्र ।

मृगेन्द्रयोग ।

लग्ने शुक्रे शशी बन्धौ कर्मस्थाने गुरुर्यदा ।
मृगेन्द्रयोगो विख्यातो यातुः सर्वार्थसाधकः ॥ १ ॥

लग्न में शुक्र हो, चन्द्रमा चौथे हो और दशवें बृहस्पति हो तो मृगेन्द्रसंज्ञक योग होता है। उसमें यात्रा सर्वार्थ-साधिका होती है।।१।।
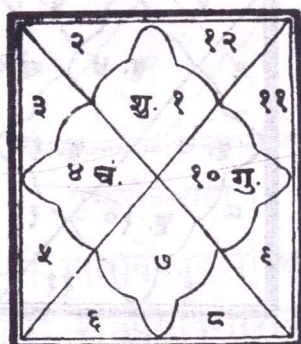
मृगेन्द्रयोग-चक्र ।

पूर्णचन्द्रयोग ।

नगेष्वेषु रविमन्दकुजेषु च ।

महायोगः पूर्णराज्यप्रदः सदा ॥ १ ॥

, छठे में शनैश्चर और ग्यारहवें में मङ्गल हो तो होता है । वह यात्रा में राज्यदायक है ॥ १ ॥

पूर्णचन्द्रयोग-चक्र ।

मृगेन्द्रयोग ।

के शशी बन्धौ कर्मस्थाने गुरुर्यदा ।

गो विख्यातो यातुः सर्वार्थसाधकः ॥ १ ॥

हो, चन्द्रमा चौथे हो और दशवें बृहस्पति हो तो होता है । उसमें यात्रा सर्वार्थ-साधिका होती है ॥१॥

मृगेन्द्रयोग-चक्र ।
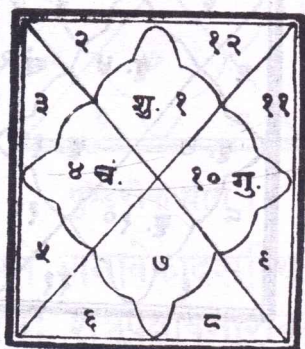
चन्द्रकालानल-चक्र ।

पूर्वत्रिशूलमध्यान्तं दिनऋक्षादि गण्यते ।
त्रिशूलानां भवेन्मृत्युर्मध्यमं बहिरष्टकम् ॥ १ ॥
लाभक्षेमं विजानीयाच्चन्द्रगर्भे न संशयः ।
चन्द्रकालानलं चक्र नामभं दृश्यते रणे ।
गर्भे द्वयं द्वयं दद्यादन्यत्रैकैकमेव च ॥ २ ॥

पूर्व के त्रिशूल से मध्य के अन्त तक चक्र लिखे। अभिजित्समेत चन्द्रमा के नक्षत्र से अपने नामनक्षत्र तक विचारे। नाम नक्षत्र त्रिशूल में पड़े तो युद्ध में मृत्यु हो। त्रिशूल के पास जो एक शूली है उसमें पड़े तो मध्यम जानिए। चन्द्र-गर्भ में नामनक्षत्र पड़े तो लाभक्षेम जानिए। इस चन्द्रकालानल-चक्र में नामनक्षत्र युद्ध में देखना उचित है। गर्भ में दो-दो नक्षत्र दे, अन्यत्र एक-एक दे ।। १-२ ।।
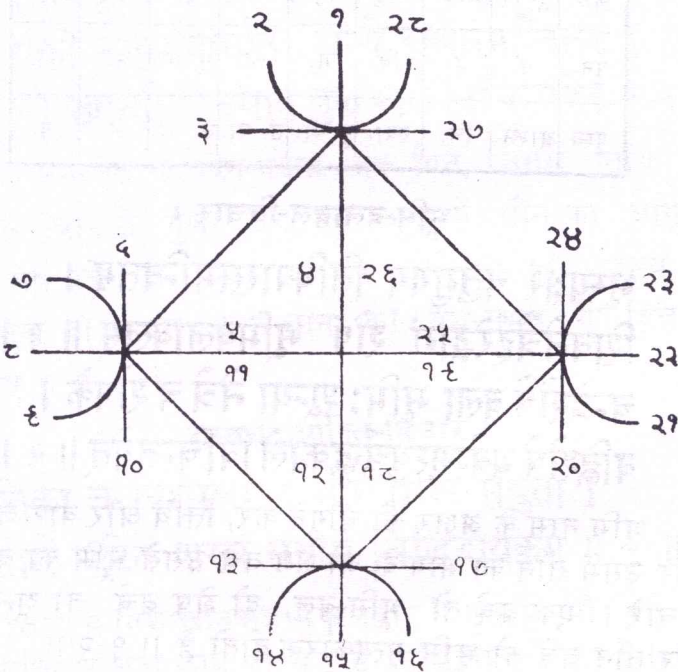
युद्धनाड़ी-विचार ।

आर्द्रादौ मृगपर्यन्तं मध्ये मूलं प्रतिष्ठितम् ।
रवीन्दुनामनक्षत्रं यद्येको नाडिगो भवेत् ।
तस्य मृत्युर्न सन्देहो रोगाद्वाथ रणेऽपि वा ॥ १ ॥

आर्द्रा नक्षत्र के आदि से मृगशिरा के अन्त तक त्रिनाड़ीचक्र लिखे तथा बीचोबीच में मूल नक्षत्र स्थापित करे ।

फल ।

सूर्य-चन्द्रमा का नक्षत्र तथा नाम-नक्षत्र एक नाड़ी में पड़े तो मृत्यु हो । युद्ध और रोग में नाड़ी-चक्र विचारना चाहिए ॥ १ ॥

युद्धनाड़ी-चक्र ।

आ.	पू. फा.	उ. फा.	अनु.	ज्ये.	ध.	श.	भ.	कृ.
पुन.	म.	ह.	वि.	मू.	श्र.	पू. भा.	अ.	रो.
पुष्य	आश्ले.	चि.	स्वा.	पू. षा.	उ. षा.	उ. भा.	रे.	मृ.

भूमि-बलाबल-विचार ।

भूम्यक्षरं चतुर्गुण्यं तिथिवारसमन्वितम् ।
शिवनेत्रैर्हरेद्भागं शेषं भूमिबलाबलम् ॥ १ ॥
चन्द्रशेषे बला भूमिः शून्या नेत्रे च शेषके ।
वह्निशेषे भवेन्मृत्युर्युद्धकाले विचिन्तयेत् ॥ २ ॥

भूमि नाम के अक्षर को चौगुने करे, तिथि और वार जोड़ दे । फिर उसमें तीन का भाग दे, जो शेष बचे उससे भूमि का बलाबल विचारे । एक बचे तो भूमि-बल, दो शेष बचें तो शून्य-भूमि और तीन बचें तो भूमि मृत्युकारक होती है ॥ १-२ ॥

युद्ध में नारद-विचार।

तिथिवारयुतं कार्यं त्रिभिर्भागो विधीयते।
स्वर्गपातालमृत्युश्च क्रमतो याति नारदः।
मृत्युलोके यदा तिष्ठेत्तदा युद्धं न संशयः ॥ १ ॥

तिथि-वार जोड़कर उसमें तीन का भाग दे, शेष क्रम से नारद जानिए। एक बचे तो स्वर्ग में, दो बचें तो पाताल में और तीन बचें तो मृत्युलोक में जानिए। मृत्युलोक में जब नारद हों तब युद्ध होने में कुछ संदेह नहीं है ॥ १ ॥

युद्धकाल-विचार।

जन्मभाद्दिनभं यावद्गणनीयं यथाक्रमात्।
तिथियुक्तं च वेदघ्नं त्रिभिर्भागो विधीयते ॥ १ ॥
एको मृत्युर्द्वयोर्घातं शून्ये सुखसमन्वितम्।
कालज्ञानमितिख्यातं युद्धकाले विचिन्तयेत् ॥ २ ॥

जन्म-नक्षत्र से दिन-नक्षत्र तक गिने, उसमें तिथि जोड़ दे, उसे चार से गुणा करे, उस अङ्क में तीन का भाग दे। एक शेष बचे तो मृत्यु, दो बचें तो घात और शून्य बचे तो सुख हो। इस काल-ज्ञान को युद्ध-समय में विचारना चाहिए ॥ १-२ ॥

शस्त्रघट्टनयुक्ति-विचार।

कृत्तिका च विशाखा च भौमवारेण संयुता।
तद्योगे घटितं शस्त्रं संग्रामे सिद्धिदायकम् ॥ १ ॥

कृत्तिका व विशाखानक्षत्र मङ्गलवार से युक्त हो और यदि उसी दिन हथियार गढ़ा जाय तो युद्ध में सिद्धिदायक होता है ॥ १ ॥

शस्त्रलेपन-विचार

अपामार्गरसेनैव यानि शस्त्राणि लेपयेत् ।
जायन्ते यानि संग्रामे वज्रसाराणि निश्चितम् ॥ १ ॥

लटजीरे के रस से शस्त्र-लेपन करे तो युद्ध में वज्र के समान हो जाय ॥ १ ॥

यात्रा के अन्त में गृहप्रवेशमुहूर्त ।

हरेर्वासरं चाष्टषष्ठीं च रिक्तां
विहाय प्रभुः सन्निवृत्तः प्रयाणात् ।
शुभाहे विशेन्मन्दिरं मित्रचित्रा-
मृगात्र्युत्तरारेवतीरोहिणीषु ॥ १ ॥
प्रवेशान्निर्गमस्तस्मात्प्रवेशं नवमे तिथौ ।
नक्षत्रे च तथा वारे नैव कुर्यात्कदाचन ॥ २ ॥

जब राजा यात्रा से लौट आये तो गृहप्रवेश में द्वादशी, अष्टमी, छठ और रिक्ता ४ । ९ । १४ इन तिथियों को वर्जित करे । शुभ-दिन में मन्दिर में प्रवेश करे । अनुराधा, चित्रा, मृगशिरा, तीनों उत्तरा, रेवती और रोहिणी के नक्षत्र शुभ हैं । प्रवेश से यात्रा व यात्रा से प्रवेश नवें दिन व नवें नक्षत्र तथा नवें तिथि में वर्जित हैं ॥ १-२ ॥

——:०:——

शिवद्विघटिकामुहूर्तं ।

त्रिपुरहरमुहूर्तं केन दृष्टं श्रुतं वा
सकलमपि हि दिष्टं शम्भुना भूतहेतोः ।
यदि शुभमशुभं वा यादृशं तादृशं वा
तदिदमपि नरेन्द्रैः सर्वदा चिन्तनीयम् ॥ १ ॥

श्रीमहादेवजी के द्विघटिका मुहूर्त को किसने देखा व सुना है। इसे रुद्रयामलतन्त्र में प्राणियों के कल्याणार्थ श्रीमहादेवजी ने कहा है। शुभ किंवा अशुभ चाहे जैसा कार्य हो उसमें राजाओं को चाहिए कि इस मुहूर्त का विचार कर लिया करें ॥ १ ॥

श्रीपार्वत्युवाच—

श्रीशम्भो प्राणनाथेश वद मे करुणानिधे ।
त्रिपुरस्य वधे प्रोक्ता मुहूर्ता ये शुभप्रदाः ॥ २ ॥
भूतानामुपकारार्थं सर्वकालेष्टसिद्धिदम् ।
पुरुषार्थप्रदं ब्रूहि करुणाकर शङ्कर ॥ ३ ॥

श्रीपार्वतीजी श्रीमहादेवजी से प्रश्न करती हैं कि हे प्राणनाथ, दया के समुद्र, श्रीशम्भो ! जो मुहूर्त त्रिपुर दैत्य के वध में कहे गये हैं जो कि शुभ के देनेवाले, सर्वकालिक सिद्धि के देनेवाले और पुरुषार्थ के देनेवाले हैं, ऐसे इन मुहूर्तों को प्राणियों के उपकार के लिए दयानिधान शंकरजी ! आप मुझसे वर्णन कीजिये ॥ २-३ ॥

ईश्वर उवाच—

शृणु देवि प्रवक्ष्यामि ज्ञानं त्रैलोक्यदीपकम् ।
ज्योतिःसारस्य यत्सारं देवानामपि दुर्लभम् ॥ ४ ॥
न तिथिर्न च नक्षत्रं न योगः करणं तथा ।
कुलिकं यमयोगश्च न भद्रा न च चन्द्रमाः ॥ ५ ॥

न शूलं योगिनी राशिर्न होरा न तमोगुणः ।
व्यतीपाते च संक्रान्तौ भद्रायामशुभे दिने ॥ ६ ॥
शिवालिखितमित्येतत्सर्वविघ्नोपशान्तये ।
कदाचिच्चलते मेरुः सागराश्च महीधराः ॥ ७ ॥

श्रीमहादेवजी उत्तर देते हैं कि हे देवि ! तुम सुनो, मैं तीन लोक के प्रकाशक ज्ञान को कहता हूँ, जो कि ज्योतिःसार का सार है, अर्थात् ज्योतिःशास्त्र के सारांश का सारांश अर्थात् उससे भी सूक्ष्म (संक्षिप्त) है और निश्चय करके देवताओं को भी दुर्लभ है। इस मुहूर्त में तिथि, नक्षत्र, योग, करण, कुलिक, यम-योग, काल, चन्द्रमा, दिशाशूल, योगिनी, राशि अर्थात् लग्न, काल-होरा, तमोगुण, व्यतीपात, संक्रान्ति, भद्रा और अशुभ दिन इतने कुयोग इस मुहूर्त में नहीं विचारने योग्य हैं । शिवजी का लिखा हुआ यह मुहूर्त सब प्रकार के विघ्नों की शान्ति करने वाला है, चाहे सुमेरु पर्वत चलायमान हो किंवा समुद्र और पर्वत चलने लगें, पर ये वाक्य अटल हैं ॥ ४-७ ॥

सूर्यः पतति वा भूमौ वह्निर्वा याति शीतताम् ।
निश्चलश्च भवेद्वायुर्नान्यथा मम भाषितम् ॥ ८ ॥
तत्रादौ कथयिष्यामि मुहूर्तानि च षोडश ।
गुणत्रयप्रयोगेन चलन्त्येव अहर्निशम् ॥ ६ ॥

चाहे सूर्य पृथ्वी पर गिर पड़ें किंवा अग्नि ठंढी हो जाय व वायु निश्चल हो जाय, परन्तु हमारा वाक्य अन्यथा न होगा । ऐसा श्रीमहादेवजी कहते हैं । आदि में सोलह मुहूर्त हैं जो कि तीन गुणों के प्रयोग विधि से दिन रात्रि में चलते हैं ॥ ८-९ ॥

षोडश मुहूर्त-विचार ।

रौद्रं श्वेतं तथा मैत्रं चार्वटं च चतुर्थकम् ।
पञ्चमं जयदेवं च षष्ठं वैरोचनं तथा ॥ १० ॥
तुरगं सप्तमं चैव ह्यष्टमं चाभिजित्तथा ।
रावणं नवमं प्रोक्तं बालवं दशमं तथा ॥ ११ ॥
विभीषणं रुद्रसंज्ञं द्वादशं च सुनन्दनम् ।
याम्यं त्रयोदशं ज्ञेयं सौम्यं प्रोक्तं चतुर्दशम् ॥ १२ ॥
भार्गवं तिथिसंज्ञं च सविता षोडशं तथा ।
एतानि प्रोक्तकार्येषु नियोज्यानि यथाक्रमात् ॥ १३ ॥

रौद्र १ श्वेत २ मैत्र ३ चार्वट ४ जयदेव ५ वैरोचन ६ तुरगदेव ७ अभिजित् ८ रावण ९ बालव १० विभीषण ११ सुनन्दन १२ याम्य १३ सौम्य १४ भार्गव १५ सावित्र १६ ये सोलह मुहूर्त उक्त कार्यों में क्रम से योजित करे ।। १०-१३ ।।

मुहूर्तकर्म-विचार ।

रौद्रे रौद्रतरं कार्यं श्वेते कुञ्जरबन्धनम् ।
स्नानदानादिकं मैत्रे चार्वटे स्तम्भनं भवेत् ॥ १४ ॥
कार्यं यज्जयदेवसंज्ञकवरे सर्वार्थकं साधये-
त्तद्वैरोचनसंज्ञके प्रभवति पट्टाभिषेकं क्रमात् ।
ज्ञात्वैवं तुरदेवनाम्नि विदिते शस्त्रास्त्रकं साधयेत्
कार्यं स्यादभिजिन्मुहूर्तकवरे ग्रामप्रवेशं सदा ॥ १५ ॥

रौद्र-मुहूर्त में घोर-कार्य शुभ है तथा श्वेत में हाथी-बन्धन शुभ है। मैत्र में स्नानदानादि श्रेष्ठ है तथा चार्वट में स्तम्भन-

प्रतिष्ठादि शुभ हैं । जयदेव में सब कार्य शुभ तथा वैरोचन में राजगद्दी शुभ है । तुरदेव में शस्त्राभ्यास शुभ है तथा अभिजित् मुहूर्त में ग्रामप्रवेश सदा शुभ है ॥ १४-१५ ॥

रावणे साधयेद्वैरं युद्धकार्यं च बालवे
विभीषणे शुभं कार्यं यन्त्रकार्यं सुनन्दने ॥ १६ ॥
याम्ये भवेन्मारणकार्यमुग्रं
सौम्ये सभायामुपवेशनं स्यात् ।
स्त्रीसेवनं भार्गवके मुहूर्ते
सावितृनाम्नि प्रपठेत्सुविद्याम् ॥ १७ ॥

रावण में वैरसाधन, वालव में युद्ध-कार्य, विभीषण में शुभ कार्य तथा सुनन्दन में यन्त्र अर्थात् पेंच चलाये । याम्य में मारण कार्य करे, सौम्य में सभाप्रवेश करे तथा भार्गव में स्त्रीप्रसङ्ग करे और सावित्र मुहूर्त में विद्या पढ़े ॥ १६-१७ ॥

वारक्रम से मुहूर्तोदय-विचार ।

उदये रौद्रमादित्ये मैत्रं सोमे प्रकीर्तितम् ।
जयदेवं कुजे वारे तुरदेवं बुधे स्मृतम् ॥ १८ ॥
रावणं च गुरौ ज्ञेयं भार्गवे च विभीषणम् ।
शनौ याम्यं मुहूर्तं च दिवारात्रिप्रयोगतः ॥ १९ ॥
दिनादौ यत्प्रवर्त्तेत रात्र्यादौ तदनन्तरम् ।
दिनान्ते यः समायाति तस्मादेकान्तरेण वै ॥ २० ॥

रविवार के उदय में प्रथम रौद्र-मुहूर्त का प्रवेश, सोमवार के उदय में मैत्रमुहूर्त, मङ्गलवार के उदय में जयदेव और बुधवार के उदय में तुरदेव होता है । बृहस्पति के उदय में रावण मुहूर्त, शुक्र के उदय

में विभीषणसंज्ञक और शनैश्चर के उदय में याम्य मुहूर्त होता है । इसी प्रकार दिन-रात्रि के क्रम से मुहूर्तवास जानिए ।

दिनमान में सोलह का भाग देना, जो लब्ध मिले वही मुहूर्त का प्रमाण जानिए । दिनमान को साठ में घटा देना, जो शेष रहे वही रात्रिमान है । उसमें सोलह का भाग देकर जो लब्ध मिले उसी के प्रमाण से रात्रि में भी सोलह मुहूर्त होते हैं । दिन रात्रि के प्रयोग से; दिन के आदि में जो मुहूर्त हो उससे दूसरा रात्रि के आदि में होता है । जो मुहूर्त दिन के अन्त में होता है वह एक मुहूर्त छोड़कर रात्रि के अन्त में होता है ।। १८–२० ।।

गुणोदय तथा वास-विचार ।

गुरुसोमदिने सत्त्वं रजश्चाङ्गारके भृगौ ।
रवौ मन्दे बुधे वारे तमो नाडीचतुष्टयम् ॥ २१ ॥

बृहस्पति और सोमवार के उदय में दो मुहूर्त तक सतोगुण का निवास, मङ्गल व शुक्र को दो मुहूर्त तक रजोगुण का वास तथा रविवार, शनैश्चर और बुधवार को दो मुहूर्त तक तमोगुण का वास जानना चाहिए ।। २१ ।।

गुणों के वर्ण ।

सत्त्वं गौरं रजः श्यामं तामसं कृष्णमेव च ।
इमं वर्णं विजानीयात्सत्त्वादीनां यथोदितम् ॥ २२ ॥

सतोगुण गौरवर्ण का, रजोगुण श्यामवर्ण का और तमोगुण कृष्ण वर्ण का है । ये वर्ण सत्त्वादि अर्थात् सतोगुण आदि के जानिए ।।२२।।

गुणों का फल ।

सत्त्वेन साधयेत्सिद्धिं रजसा धनसम्पदाम् ।
तमसा छेदभेदादि साधयेन्मोक्षमार्गकम् ॥ २३ ॥

सतोगुण में सिद्धि का और रजोगुण में धन-सम्पदा का साधन करे । तमोगुण में छेद-भेदादि अर्थात् काट छाँट और तोड़फोड़ करे तथा मोक्षमार्ग साधन करे ॥ २३ ॥

मुहूर्तों की रेखाएँ ।

शून्य नभः खाभ्रभिरेव वर्णै-
र्विघ्नं धनुर्युग्मगणाधिपाद्यैः ।
मृत्युस्तथा पादयमादिवर्णैः
श्रीविष्णुनामामृतसंज्ञसिद्धिः ॥ २४ ॥

शून्य, नभ व ख संज्ञा तथा अभ्रसंज्ञा ये नाम शून्यरेखा के हैं । विघ्न, धनु, युग्म तथा गणाधिप ये विघ्नरेखा के नाम हैं । मृत्यु, पाद और यम ये नाम कालरेखा के हैं । श्री, विष्णु और अमृतसिद्धि ये अमृतरेखा के नाम हैं ॥ २४ ॥

रेखाओं का स्वरूप ।

अमृतश्चोर्ध्वरेखैका कालरेखात्रयं भवेत् ।
विघ्नमावर्त्तकं ज्ञेयं शून्ये शून्यमितिक्रमः ॥ २५ ॥

एक रेखा ऊर्ध्व करने से अमृतरेखा का स्वरूप होता है, तीन रेखा ऊर्ध्व करने से कालसंज्ञक अर्थात् मृत्युसंज्ञक जानिए । गोल रेखा करने से विघ्नसंज्ञक होती है, इसी को धनु रेखा भी जानिये और शून्य का स्वरूप लिखने से शून्यसंज्ञक जानिए ॥ २५ ॥

रेखाओं का फल ।

शून्ये नैव भवेत्कार्यं विघ्नमावर्त्तके भवेत् ।
स्यान्मृत्युः कालरेखायां सर्वसिद्धिस्तथामृते ॥ २६ ॥

शून्य में कार्य न हो और गोल अर्थात् विघ्नरेखा से विघ्न हो। कालरेखा में मृत्यु और अमृतरेखा में सर्वसिद्धि जानिए॥ २६॥

राशियों के घात-गुण ।

धनुमीनकर्कटानां सत्त्वे घातो विनिर्दिशेत् ।
तुलालिवृषमेषानां घातो रजसि निश्चितम् ॥ २७ ॥
कन्यामिथुनसिंहानां कुम्भस्य मकरस्य च ।
घातस्तमसि वेलायां विपरीतं शुभावहम् ॥ २८ ॥

धनु, मीन और कर्क राशियों का सतोगुण घात है । तुला, वृष, मेष और वृश्चिक इनका रजोगुण घात है। कन्या, मिथुन, सिंह, कुम्भ और मकर इनका तमोगुण घात है । इनके विपरीत अर्थात् इनको छोड़कर शेष शुभ है ।। २७-२८ ।।

राशियों के वर्ण ।

धनुकर्कटमीनाख्या गौरवर्णाः प्रकीर्तिताः ।
वृषमेषतुलाश्चैव वृश्चिकः श्यामवर्णकः ॥ २९ ॥
मिथुनो मकरः कुम्भः कन्या सिंहश्च कृष्णकः ।
गौरश्च म्रियते सत्त्वे श्यामवर्णो रजोगुणे ।
कृष्णस्तामसवेलायां म्रियते नात्र संशयः ॥ ३० ॥

धनु, कर्क और मीन राशि का गौर वर्ण है तथा वृष, मेष, तुला और वृश्चिक का श्यामवर्ण है । मिथुन, मकर, कुम्भ, कन्या और सिंह का कृष्ण वर्ण है ।

फल ।

गौरवर्ण राशि का सतोगुण मृत्युकारक, श्यामवर्ण का रजोगुण मृत्युकारक और कृष्णवर्ण का तमोगुण मृत्युकारक जानिए ।। २९-३० ।।

महीनों में मुहूर्त-व्यवस्था ।

माघफाल्गुनचैत्रेषु वैशाखे श्रावणे तथा ।
नभस्यमासि वाराणां मुहूर्तानि यथाक्रमात् ॥ ३१ ॥

माघ, फाल्गुन, चैत्र, वैशाख, श्रावण तथा भाद्रपद इन महीनों में रविवारादि मुहूर्त यथाक्रम पूर्वोक्त प्रकार से जानिये ॥ ३१ ॥

रव्यादिवारों में क्रम से दिनरात्रि-रेखा ।

रवौ नभः केशवविघ्नराजो
गोविन्दनामा नभश्राखुगामी ।
रात्रौ नृसिंहो युगलं नभः प-
ल्लक्ष्मीशलम्बोदररामसंज्ञौ ॥ ३२ ॥
सोमे हरिर्विघ्नपतिः सुरेशः
शून्यं च गौरीसुतविष्णुसंज्ञौ ।
पदं निशायां खखविष्णुशून्यं
युग्मं च नारायणविघ्ननाथौ ॥ ३३ ॥

रविवार के दिन प्रथम मुहूर्त में शून्यरेखा होती है, फिर तीन मुहूर्त तक अमृतरेखा, फिर चार मुहूर्त तक विघ्नरेखा, फिर तीन मुहूर्त तक अमृतरेखा, फिर एक मुहूर्त में शून्यरेखा तथा शेष में विघ्नरेखा जानिये । रात्रि को प्रथम तीन मुहूर्त में अमृतरेखा, फिर दो मुहूर्त तक विघ्नरेखा, फिर एक मुहूर्त शून्यरेखा, फिर एक मुहूर्त कालरेखा, फिर तीन मुहूर्त अमृतरेखा, फिर चार मुहूर्त तक विघ्नरेखा होती है, तत्पश्चात् दो मुहूर्त तक अमृतसंज्ञा जानिए ।

सोमवार के दिन प्रथम दो मुहूर्त अमृतरेखा, फिर चार मुहूर्त

तक विघ्नरेखा, फिर तीन मुहूर्त अमृतरेखा, फिर एक मुहूर्त शून्य-रेखा, फिर चार मुहूर्त तक विघ्नरेखा, फिर दो मुहूर्त तक अमृत-रेखा जानिये। रात्रि को प्रथम मुहूर्त कालरेखा, फिर दो मुहूर्त शून्यरेखा, फिर दो मुहूर्त अमृतरेखा, फिर एक मुहूर्त शून्यरेखा होती है। उसके बाद दो मुहूर्त तक विघ्नरेखा, फिर चार मुहूर्त तक अमृतरेखा और शेष में विघ्नरेखा होती है॥ ३२-३३॥

भौमे यमौ मारमणोऽथ युग्मं
युग्मं हरिश्चैव गजाननश्च।
नक्तं च विघ्नो द्विपदं मुकुन्दः
पदत्रयं श्रीपतिखंनभश्रीः॥ ३४॥
बुधे धनुः कृष्णयमौ च सौरिः
सिद्धिर्धनुः सौरियमौ च सिद्धिः।
रात्रौ सुपर्णध्वज एव युग्मं
नभोऽथ दामोदरकुञ्जरास्यौ॥ ३५॥

मङ्गल के दिन प्रथम दो मुहूर्त कालरेखा, फिर चार मुहूर्त अमृतरेखा, फिर चार मुहूर्त विघ्नसंज्ञक, फिर दो मुहूर्त अमृत-रेखा, शेष विघ्नरेखा हैं। रात्रि को प्रथम दो मुहूर्त तक विघ्न-रेखा, फिर दो मुहूर्त कालरेखा, फिर तीन मुहूर्त अमृतरेखा, फिर तीन मुहूर्त कालरेखा, फिर तीन मुहूर्त अमृतरेखा, फिर दो मुहूर्त तक शून्यरेखा, फिर एक मुहूर्त अमृतरेखा होती है।

बुध के दिन प्रथम दो मुहूर्त तक विघ्नरेखा, फिर दो मुहूर्त अमृतरेखा, फिर दो मुहूर्त कालरेखा, फिर तीन मुहूर्त अमृतरेखा, फिर दो मुहूर्त तक विघ्नसंज्ञा, फिर दो मुहूर्त अमृतरेखा जानिए।

उसके बाद दो मुहूर्त तक कालरेखा, शेष अमृतरेखा जानिये । रात्रि को प्रथम पाँच मुहूर्त तक अमृतरेखा, फिर दो मुहूर्त तक विघ्न-रेखा, फिर एक मुहूर्त शून्यरेखा है, फिर चार मुहूर्त अमृतरेखा होती है । शेष विघ्नरेखा जानना ।। ३४-३५ ।।

गुरौ गोपिनाथस्तथा विघ्नराजो
नभः केशवः कुञ्जरास्यस्तथैव ।
निशायां पदं नन्दजः सूर्यसूनु-
र्नभोमाधवश्चापेमक हरिश्च ॥ ३६ ॥
शुक्रे कृष्णः स्याद्यमः खं मुरारि-
र्गौरीपुत्रः श्रीपतिः शून्यमेकम् ।
नक्तं कालः कसहा खं च युग्मं
पादद्वन्द्वो वामनः खं च पादौ ॥ ३७ ॥

बृहस्पति के दिन प्रथम चार मुहूर्त अमृतरेखा, फिर चार मुहूत विघ्नरेखा, फिर एक मुहूर्त शून्यरेखा, फिर तीन मुहूर्त अमृतरेखा है, शेष विघ्नरेखा जानिए । रात्रि को प्रथम एक मुहूर्त कालरेखा, फिर तीन मुहूर्त अमृतरेखा, फिर चार मुहूर्त कालरेखा जानिए । फिर एक मुहूर्त शून्यसंज्ञक, फिर तीन मुहूर्त अमृतरेखा जानना । फिर दो मुहूर्त तक विघ्न है, शेष अमृत जानना ।

शुक्र के दिन प्रथम दो मुहूर्त अमृतरेखा, फिर दो मुहूर्त कालरेखा, फिर एक मुहूर्त शून्यरेखा, फिर तीन मुहूर्त अमृतरेखा जानना। फिर चार मुहूर्त विघ्नसंज्ञक, फिर तीन मुहूर्त अमृतसंज्ञक, शेष शून्यरेखा जानिए । रात्रि को प्रथम दो मुहूर्त कालरेखा, फिर तीन मुहूर्त अमृतरेखा, फिर एक मुहूर्त शून्यरेखा, फिर दो मुहूर्त

विघ्नसंज्ञक रेखा जानिये, फिर दो मुहूर्त कालरेखा होती है। इसके बाद तीन मुहूर्त तक अमृतरेखा और फिर एक मुहूर्त शून्य रेखा है। शेष कालरेखा जानिए ॥ ३६-३७ ॥

शनौ पदं श्रीः खनभोनभः खं
नारायणः खं हरिखं हरिश्च ।
रात्रौ च शून्यं यमयुग्ममाधवो
खविघ्नराजौ नृहरिश्च पादौ ॥ ३८ ॥

शनैश्चर के दिन प्रथम एक मुहूर्त कालरेखा, फिर एक मुहूर्त अमृतरेखा, फिर चार मुहूर्त तक शून्यरेखा, फिर चार मुहूर्त अमृतरेखा होती है। उसके बाद एक मुहूर्त शून्यरेखा, फिर दो मुहूर्त अमृतरेखा, फिर एक मुहूर्त शून्यरेखा होती है। शेष अमृतरेखा का वास जानिये। रात्रि को प्रथम एक मुहूर्त शून्यरेखा, फिर दो मुहूर्त कालरेखा, फिर तीन मुहूर्त अमृतरेखा, उसके बाद एक मुहूर्त शून्यरेखा जानिए; फिर चार मुहूर्त तक विघ्नरेखा तत्पश्चात् फिर तीन मुहूर्त अमृतरेखा होती हैं। शेष कालरेखा जानना ॥ ३८ ॥

आश्विन, कार्त्तिक आदि के रविवार आदि की मुहूर्त-रेखाओं का विचार।

अथाश्विने कार्त्तिकमार्गपौष-
सूर्यादिवारेषु मुहूर्तरेखाः ।
नामाक्षराणां वचनप्रवृत्त्या
विचारपूर्वं विबुधैर्विचिन्त्यम् ॥ ३९ ॥
सूर्ये नृसिंहो द्विपदश्च चापो
हरिर्नभः खं पदमच्युतोऽङ्घ्रिः ।

रात्रौ पदं चापखमच्युतं च
युग्मं यमौ विष्णुखसिद्धिसंज्ञौ ॥ ४० ॥

आश्विन, कार्तिक, अगहन और पौष इन महीनों के रविवारादि मुहूर्त रेखा का विचार पूर्वाचार्य कहते हैं कि नाम के तथा वचन के प्रमाण से रेखा जानना अर्थात् रेखा के दूसरे नाम में जितने अक्षर हों उतने मुहूर्त तक वही रेखा जानिए तथा वचन अर्थात् जो प्रथम प्रधान नाम रेखाओं के कह आये हैं उनमें से किसी का नाम पाठ में आवे तो एक मुहूर्त तक वही रेखा जानिये । विघ्न-रेखा धन्वाकार होती है उससे दो मुहूर्त तक वास करती है अर्थात् धन्वा की प्रत्यञ्चा दोनों भ्रमर अर्थात् दोनों तरफ से जुड़ी होती है इससे दो कोठों में स्थापित हैं । यह व्याख्यान ऊपर से जानना ।

रविवार के दिन प्रथम तीन मुहूर्त तक अमृतरेखा, फिर दो मुहूर्त तक कालरेखा, फिर दो मुहूर्त तक विघ्नरेखा जानिए । फिर दो मुहूर्त तक अमृतरेखा होती है, उसके बाद दो मुहूर्त तक शून्यरेखा वास करती है । फिर एक मुहूर्त कालरेखा, फिर तीन मुहूर्त अमृतरेखा होती है, शेष कालरेखा जानिए । तथा रात्रि को प्रथम कालरेखा एक मुहूर्त, फिर दो मुहूर्त विघ्नरेखा, फिर एक मुहूर्त शून्यरेखा का होता है । फिर तीन मुहूर्त अमृतरेखा, फिर दो मुहूर्त तक विघ्नरेखा जानिए । फिर दो मुहूर्त तक कालरेखा, फिर दो मुहूर्त अमृतरेखा, फिर एक मुहूर्त शून्यरेखा का होता है । शेष में अमृतरेखा जानिए ॥ ३९-४० ॥

सोमेऽङ्घ्रिचापं खनभोमुकुन्दो
नमश्च युग्मं हरिखं हरिश्च ।

पदं निशायां खयुगं मुरारि-
र्विनायको विष्णुनभश्च विष्णुः ॥ ४१ ॥
भौमे तथेभास्यनभोऽथ विष्णु-
र्नभोयुगं गोपतिखं गणेशः ।
नक्तं गजेन्द्रास्यखमच्युतं च
युग्मं च शून्यं नृहरिश्च शून्यम् ॥ ४२ ॥

सोमवार के दिन प्रथम मुहूर्त में कालरेखा, फिर दो मुहूर्त विघ्नरेखा, फिर दो मुहूर्त शून्यरेखा, फिर तीन मुहूर्त अमृतरेखा, फिर एक मुहूर्त शून्यरेखा, फिर दो मुहूर्त विघ्नरेखा, फिर दो मुहूर्त अमृतरेखा, फिर एक मुहूर्त शून्यरेखा है, शेष अमृतरेखा जानना।

मंगल के दिन प्रथम चार मुहूर्त तक विघ्नरेखा, फिर एक मुहूर्त शून्यरेखा, फिर दो मुहूर्त अमृतरेखा, फिर एक मुहूर्त शून्यरेखा, फिर दो मुहूर्त विघ्नरेखा, फिर तीन मुहूर्त अमृत-रेखा, फिर एक मुहूर्त शून्यरेखा जानिए, शेष विघ्नरेखा होती हैं। रात्रि को प्रथम चार मुहूर्त विघ्नरेखा, फिर एक मुहूर्त शून्यरेखा, फिर तीन मुहूर्त अमृतरेखा, फिर दो मुहूर्त विघ्नरेखा, फिर एक मुहूर्त शून्यरेखा, फिर तीन मुहूर्त अमृतरेखा के होते हैं, शेष विघ्नरेखा जानना ॥ ४१-४२ ॥

बुधे धनुः श्रीपतिपादयुग्मं
नारायणः स्याद्गणनाथसिद्धिः ।
रात्रौ तु कालौ हरिशून्यकालौ
गोविन्दगौरीसुतशून्यसिद्धिः ॥ ४३ ॥

गुरौ हरिः शून्ययुगं सुरेशः
श्रीविघ्नराजो गगनं तथा श्रीः ।
निश्यंघ्रिदैत्यारिखकार्मुकं च
पदे मुरारिः खयुगं पुनः श्रीः ॥ ४४ ॥

बुध के दिन प्रथम दो मुहूर्त विघ्नरेखा, फिर तीन अमृतरेखा, फिर दो मुहूर्त कालरेखा, फिर चार मुहूर्त अमृतरेखा, उसके बाद चार मुहूर्त तक विघ्नरेखा जानिए, शेष शून्यरेखा होती हैं। रात्रि को प्रथम दो मुहूर्त कालरेखा, फिर दो मुहूर्त अमृतरेखा, फिर एक मुहूर्त शून्यरेखा, फिर दो मुहूर्त कालरेखा, फिर तीन मुहूर्त अमृतरेखा, फिर चार मुहूर्त तक विघ्नरेखा, फिर एक मुहूर्त-शून्यरेखा की होती है, शेष अमृतरेखा के मुहूर्त जानिए ।

बृहस्पति के दिन प्रथम दो मुहूर्त अमृतरेखा, फिर एक मुहूर्त शून्यरेखा, फिर दो मुहूर्त तक विघ्नरेखा, फिर चार मुहूर्त तक अमृतरेखा, फिर चार मुहूर्त विघ्नरेखा, उसके बाद दो मुहूर्त शून्यरेखा के होते हैं, शेष अमृतरेखा का मुहूर्त जानिए। रात्रि को प्रथम एक मुहूर्त काल का वास, फिर तीन मुहूर्त तक अमृतरेखा, फिर एक मुहूर्त तक शून्यरेखा होती है, फिर दो मुहूर्त तक विघ्नरेखा, उसके बाद दो मुहूर्त तक कालरेखा, फिर तीन मुहूर्त तक अमृतरेखा, फिर एक मुहूर्त शून्यरेखा, फिर दो मुहूर्त विघ्नरेखा जानिए, शेष में अमृतरेखा वास करती है ।।४३-४४।।

शुक्रेऽमृतं चापमरिन्दमश्च
लम्बोदरः केशवशून्यपादम् ।

नक्तं च युग्मं नृहरिः खयुग्मं
नृसिंहयुग्मं गगनं च युग्मम् ॥ ४५ ॥
शनौ पदं श्रीर्न नभो न कृष्णः
खं श्रीपदं विष्णुनभो हरिः पत् ।
रात्रौ पदं खं पदनन्दसूनु-
र्गजाननौ गोपतिशून्यपादाः ॥ ४६ ॥

शुक्र के दिन प्रथम एक मुहूर्त अमृतरेखा, फिर दो मुहूर्त विघ्नरेखा, फिर चार मुहूर्त अमृतरेखा, फिर चार मुहूर्त विघ्न-रेखा, फिर तीन मुहूर्त अमृतरेखा, फिर एक मुहूर्त शून्यरेखा होती है, शेष में कालरेखा जानिए । रात्रि को प्रथम दो मुहूर्त तक विघ्न-संज्ञक रेखा वास करती है, फिर तीन मुहूर्त अमृतरेखा, फिर एक मुहूर्त शून्यरेखा, फिर दो मुहूर्त विघ्नरेखा, फिर तीन मुहूर्त अमृतरेखा, फिर दो मुहूर्त विघ्नरेखा, फिर एक मुहूर्त तक शून्य-रेखा होती है । शेष विघ्नरेखा के मुहूर्त जानिए ।

शनैश्चर के दिन प्रथम एक मुहूर्त कालरेखा, फिर एक मुहूर्त अमृतरेखा, फिर एक मुहूर्त शून्यरेखा, फिर एक मुहूर्त अमृतरेखा, फिर एक मुहूर्त शून्यरेखा, फिर दो मुहूर्त अमृतरेखा के होते हैं । फिर एक मुहूर्त शून्यरेखा, फिर एक मुहूर्त अमृतरेखा, फिर एक मुहूर्त कालरेखा, फिर दो मुहूर्त अमृतरेखा, फिर एक मुहूर्त शून्यरेखा का होता है । फिर दो मुहूर्त अमृत-रेखा, शेष कालरेखा जानिए । रात्रि को प्रथम एक मुहूर्त कालरेखा, फिर एक मुहूर्त शून्यरेखा, फिर एक मुहूर्त काल-रेखा, फिर चार मुहूर्त अमृतरेखा, फिर चार मुहूर्त

विघ्नरेखा फिर तीन मुहूर्त अमृतरेखा, फिर एक मुहूर्त शून्यरेखा का होता है, शेष कालरेखा जानिए ॥ ४५-४६ ॥

ज्येष्ठ और मलमास आदि की रेखाएँ ।

ज्येष्ठे मासे तथाऽऽषाढे तथा वै मलमासके ।
सूर्यादिवारे संशोध्याः क्रमशो नामभादिमे ॥ ४७ ॥
अर्के शून्ये च कृष्णो युगपदयुगलं खं हरिर्विष्णुचापं
रात्रौ लक्ष्मीशयुग्मं युगलहरियुगं युग्मकृष्णं च शून्यम् ।
सोमे चापद्वयं नो नृहरिखयुगलं पीतवासाश्च शून्यं
चापं द्वन्द्वंनिशायामजपदखमजं चापपद्मेशपादाः ॥४८॥

ज्येष्ठमास, आषाढ़मास तथा मलमास में रविवार के क्रम से नाम की राशि से द्विघटिका मुहूर्त का विचार करे। रविवार के दिन प्रथम दो मुहूर्त शून्यरेखा, फिर दो मुहूर्त अमृतरेखा, फिर दो मुहूर्त विघ्नरेखा, फिर एक मुहूर्त कालरेखा, फिर दो मुहूर्त विघ्नरेखा, फिर एक मुहूर्त शून्यरेखा, फिर चार मुहूर्त अमृतरेखा के हैं, शेष विघ्नरेखा जानिए। रात्रि को प्रथम तीन मुहूर्त तक अमृतरेखा, फिर चार मुहूर्त विघ्नरेखा, फिर दो मुहूर्त अमृतरेखा, फिर चार मुहूर्त विघ्नरेखा, उपरान्त इसके दो मुहूर्त तक अमृतरेखा है, शेष शून्यरेखा जानना।

सोमवार के दिन प्रथम चार मुहूर्त विघ्नरेखा, फिर एक मुहूर्त शून्यरेखा, फिर तीन मुहूर्त अमृतरेखा, फिर एक मुहूर्त शून्य-रेखा, फिर दो मुहूर्त तक विघ्नरेखा, फिर चार मुहूर्त तक अमृत-रेखा, शेष शून्यरेखा जानिए। तथा रात्रि को प्रथम चार मुहूर्त

विघ्नरेखा, फिर दो मुहूर्त अमृतरेखा, फिर एक मुहूर्त कालरेखा, फिर एक मुहूर्त शून्यरेखा, फिर दो मुहूर्त अमृतरेखा, फिर दो मुहूर्त तक विघ्नरेखा, फिर तीन मुहूर्त अमृतरेखा होती है, शेष कालरेखा जानना ॥ ४७-४८ ॥

भौमे शून्ये च कृष्णो युगगगनहरिस्त्रीणिचापानिसिद्धि-
र्नक्तं युग्मं द्विशून्यं युगयुगलपदं श्रीखचापं हरिश्च ।
सौम्ये श्रीविघ्ननाथोऽथ हरिगणपतिः पद्मनाभश्च पादा
दोषायांसिद्धियुग्मंहरिखगजमुखाः कृष्णशून्येचकृष्णः ॥४९॥
जीवे विष्णुश्च चापोगगनमजितखङ्गाङ्घ्रिपादौनृसिंहो
रात्रौनोखंमुरारिर्गगन युगगजोविष्णुचापाङ्घ्रियुग्मम् ।
शुक्रे युग्मं मुरारिर्गगनयुगगजो रामचापोऽथ पादौ
तद्रात्रौ युग्मगोपीपतियुगगगनं श्रीवरः खंपदे श्रीः ॥५०॥

मङ्गल के दिन प्रथम दो मुहूर्त शून्यरेखा, फिर दो मुहूर्त अमृतरेखा, फिर दो मुहूर्त विघ्नरेखा, फिर एक मुहूर्त शून्यरेखा, फिर दो मुहूर्त अमृतरेखा, फिर छः मुहूर्त तक विघ्नरेखा जानिए, शेष अमृतरेखा जानिए । रात्रि को प्रथम चार मुहूर्त तक विघ्न-रेखा, फिर एक मुहूर्त तक शून्यरेखा, फिर चार मुहूर्त तक विघ्न-रेखा जानिए, फिर एक मुहूर्त तक कालरेखा होती है । इसके उपरान्त एक मुहूर्त तक अमृतरेखा, फिर एक मुहूर्त शून्यरेखा फिर दो मुहूर्त विघ्नरेखा और शेष अमृतरेखा जानिए ।

बुध के दिन प्रथम एक मुहूर्त अमृतरेखा, फिर चार मुहूर्त तक विघ्नरेखा, फिर दो मुहूर्त अमृतरेखा के होते हैं, फिर चार

मुहूर्त विघ्नरेखा, फिर चार मुहूर्त तक अमृतरेखा, शेष काल-रेखा होती है। रात्रि को प्रथम अमृतरेखा, फिर दो मुहूर्त विघ्नरेखा, फिर दो मुहूर्त अमृतरेखा, फिर एक मुहूर्त शून्यरेखा होती है, फिर चार मुहूर्त तक विघ्नरेखा, फिर दो मुहूर्त अमृतरेखा, फिर दो मुहूर्त शून्यरेखा, शेष मुहूर्त अमृतरेखा के जानना चाहिए।

बृहस्पति के दिन प्रथम दो मुहूर्त अमृतरेखा, फिर दो मुहूर्त विघ्नरेखा, फिर एक मुहूर्त शून्यरेखा, फिर तीन मुहूर्त अमृतरेखा, फिर एक मुहूर्त शून्यरेखा होती है। चार मुहूर्त तक कालरेखा, शेष अमृतरेखा के मानिए। रात्रि को प्रथम दो मुहूर्त शून्यरेखा, फिर तीन मुहूर्त अमृतरेखा, फिर एक मुहूर्त शून्यरेखा, फिर चार मुहूर्त विघ्नरेखा, फिर दो मुहूर्त अमृतरेखा, फिर दो मुहूर्त विघ्नरेखा के होते हैं, शेष कालरेखा के मुहूर्त जानिए।

शुक्र के दिन प्रथम दो मुहूर्त विघ्नरेखा, फिर तीन मुहूर्त अमृतरेखा, फिर एक मुहूर्त शून्यरेखा, इसके बाद चार मुहूर्त तक विघ्नरेखा होती है। फिर दो मुहूर्त अमृतरेखा, फिर दो मुहूर्त विघ्नरेखा, शेष कालरेखा जानिए। तथा रात्रि को प्रथम दो मुहूर्त विघ्नरेखा, फिर चार मुहूर्त अमृतरेखा, फिर दो मुहूर्त विघ्नरेखा, फिर एक मुहूर्त शून्यरेखा, फिर तीन मुहूर्त अमृतरेखा, फिर एक मुहूर्त शून्यरेखा, फिर दो मुहूर्त तक कालरेखा होती है, शेष अमृतरेखा के जानिए॥ ४९-५०॥

मन्दे श्रीयुग्मसिद्धिः खहरिहरिनभः शौरिखंसिद्धिखंवा।

नवतं श्रीयुग्मसिद्धिः खलयुगलहरि-
व्योमगोविन्दशून्यम् ॥ ५१ ॥

शनैश्चर के दिन प्रथम मुहूर्त अमृतरेखा, फिर दो मुहूर्त विघ्नरेखा, फिर दो मुहूर्त अमृतरेखा, फिर एक मुहूर्त शून्यरेखा, फिर चार मुहूर्त अमृतरेखा, फिर एक मुहूर्त शून्यरेखा, फिर दो मुहूर्त तक अमृतरेखा, फिर एक मुहूर्त शून्यरेखा, फिर एक मुहूर्त तक अमृतरेखा होती है, शेष शून्यरेखा के मुहूर्त जानिए। रात्रि में प्रथम एक मुहूर्त अमृतरेखा, फिर दो मुहूर्त विघ्नरेखा, फिर दो मुहूर्त अमृतरेखा, फिर दो मुहूर्त शून्यरेखा, फिर दो मुहूर्त विघ्नरेखा, फिर दो मुहूर्त अमृतरेखा, फिर एक मुहूर्त शून्यरेखा, फिर तीन मुहूर्त अमृतरेखा, शेष शून्यरेखा जानिए ॥ ५१ ॥

रुद्रप्रोक्तमिदं ज्ञानं शिवायै रुद्रयामले ।
गोपनीयं प्रयत्नेन सद्यः प्रत्ययकारकम् ॥ ५२ ॥

यह द्विघटिका मुहूर्त का ज्ञान रुद्रयामल ग्रन्थ में श्रीमहादेवजी ने श्रीपार्वतीजी से वर्णन किया है अतः इसे यत्न से गुप्त रखना चाहिए, यह शीघ्र सिद्धिकारक है ॥ ५२ ॥

इति प्रकीर्णके शिवद्विघटिका समाप्ता ।

——:o:——

शिवप्रोक्तद्विघटिकामुहूर्त-चक्र ।

षोडशमुहूर्त-चक्र ।

रौद्र	श्वेत	मैत्र	चार्वट	जय देव	वैरो-चन	तुरग	अभि-जित्	रावण	बालव	विभी-षण	सुनन्दन	याम्य	सौम्य	भार्गव	सावित्र	मु.
रौद्रकार्य	कुञ्जरबन्धन	स्नानदानादि शुभकार्य	स्तम्भन	सर्वकार्यसिद्धि	शुभपट्टाभिषेक (राजगद्दी)	शस्त्रसाधन	ग्रामप्रवेश	वैरकार्य	युद्धकार्य	शुभकार्य	यन्त्रचालन	मारणकर्म	सभाप्रवेश	स्त्रीसेवा	विद्यारंभ	फल

मुहूर्तोदय चक्र ।

रवि	चन्द्र	भौम	बुध	गुरु	शुक्र	शनि	वार
रौद्र	मैत्र	जयदेव	तुरदेव	रावण	विभीषण	याम्य	मुहूर्तोदय

मुहूर्त प्रकरण।

गुणोदय-चक्र और फल।

र०	च०	मं०	बु०	बृ०	शु०	श०	वार
तमो गुण कृष्णवर्ण	सतो गुण गौर वर्ण	रजो गुण श्यामवर्ण	तमो गुण कृष्णवर्ण	सतो गुण गौर वर्ण	रजो गुण श्यामवर्ण	तमो गुण कृष्णवर्ण	गुणोदय
अशुभ कर्म	सिद्धि	धन सम्पत्ति	अशुभ कर्म	सिद्धि	धन सम्पत्ति	अशुभ कर्म	फल

रेखा-ज्ञान-चक्र।

अमृत	काल	विघ्न	शून्य	रेखा-नाम
सिद्धिकर	मृत्युकर	विघ्नकर	कार्यहानि	फल
श्रीकृष्ण अमृत, सिद्धि	मृत्यु० पात, यम, काल	विघ्न, धनु, यग्म, गणाधिप	शून्य, नभ, ख, अभ्र	रेखा-संज्ञा

राशियों के अनुसार गुण, गुणवर्ण घात लग्न और राशिवर्ण-विचार।

सतो गुण	रजः गुण	तमो गुण	गुण
गौर	श्याम	कृष्ण	गुणवर्ण
धनु-मीन-कर्क	तुला-वृष-मेष वृश्चिक	कन्या-सिंह-मिथुन कुम्भ-मकर	घात लग्न
गौरवर्ण	श्यामवर्ण	कृष्णवर्ण	राशिवर्ण

अथ माघ-फाल्गुन-चैत्र-वैशाख-श्रावण-भाद्रपद मासेषु, आश्विन-कार्तिक मार्गशीर्ष-पौषमासेषु-ज्येष्ठाषाढ मलमासेषु च सूर्यादिवारे मुहूर्तानि नामराशितः शोध्यानि।

रवि-दिन मुहूर्त-चक्र।

०=शून्यरेखा, ८=अमृतरेखा, ꝏ=विद्धरेखा, ♉=कालरेखा।

रौद्र	श्वेत	मैत्र	चारभट	जयदेव	वैरोचन	तुष्ट	अभिजित	रावण	बालव	विभीषण	सुनन्दन	याम्य	सौम्य	भार्गव	सविता	मुहूर्त
त.	त.	स.	स.	र.	र.	त.	त.	स.	स.	र.	र.	त.	त.	स.	स.	गुण
०	८	८	८	ꝏ		ꝏ		८	८	८	०	ꝏ		ꝏ		माघ-फा-चै. वै. श्रा-भाद्रेषु
८	८	८	♉	♉	ꝏ		८	८	०	०	♉	८	८	८	♉	आश्विन कार्तिक मार्गशीर्ष पौषेषु
०	०	८	८	ꝏ		♉	ꝏ		०	०	८	८	८	ꝏ		ज्येष्ठा-षाढ-मल मासेषु

रविरात्रि-मुहूर्त-चक्र।

श्वे.	मै.	चा.	ज.	वै.	तु	अ.	रा.	बा.	वि.	सु.	या.	सौ.	भा.	स.	रौ.	मु०
र.	र.	त.	त.	स.	स.	र.	र.	त.	त.	स.	स.	र.	र.	त	त.	गु.
८	८	८	ꝏ		०	♉	८	८	८	ꝏ		ꝏ		८	८	माघ फा. चै. वै. श्रा. भाद्रेषु
♉	ꝏ		०	८	८	८	ꝏ		♉	♉	८	८	०	८	८	आश्विन का. मार्गशीर्ष पौषेषु
८	८	८	ꝏ		ꝏ		८	८	ꝏ		ꝏ		८	८	०	ज्येष्ठा-षाढ मल मासेषु

मुहूर्त प्रकरण।

चन्द्र-दिन-मुहूर्त-चक्र।

मै.	चा.	ज.	वै.	तु.	अ.	रा.	वा.	वि.	सु.	या.	सौ.	भा.	स.	रौ.	श्वे.	मु.
स.	स.	र.	र.	त.	त.	स.	स.	र.	र.	त.	त.	स.	स.	र.	र.	गु.
ऽ	ऽ	⌒		⌒		ऽ	ऽ	ऽ	o	⌒		⌒		ऽ	ऽ	माघ-फा. चै. वै. श्रा. भाद्रेषु
४	⌒		o	o	ऽ	ऽ	ऽ	o	⌒		ऽ	ऽ	o	ऽ	ऽ	आश्विन का-मार्ग पौषेषु
⌒		⌒		o	ऽ	ऽ	ऽ	o	⌒		ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	o	ज्येष्ठा षाढ मल मासेषु

चन्द्र-रात्रि-मुहूर्त-चक्र।

चा.	ज.	वै.	तु.	अ.	रा.	वा.	वि.	सु.	या.	सौ.	भा.	स.	रौ.	श्वे.	मै.	मु.
त.	त.	स.	स.	र.	र.	त.	त.	स.	स.	र.	र.	त.	त.	स.	स.	गु.
४	o	o	ऽ	ऽ	o	⌒		ऽ		ऽ	ऽ	⌒		⌒		माघ-फा. चै. वै.-श्रा. भाद्रेषु
o	o	⌒		ऽ	ऽ	ऽ	⌒		⌒		ऽ	ऽ	o	ऽ	ऽ	आश्विन का-मार्ग. पौषेषु
⌒		⌒		ऽ	ऽ	४	o	ऽ	ऽ	⌒		ऽ	ऽ	ऽ	४	ज्येष्ठा. षाढ मल. मासेषु

भौम-दिन-मुहूर्त-चक्र।

ज·	वै·	तु·	अ·	ग·	वा·	वि·	सु·	पा·	सौ·	भा·	स·	रौ·	श्वे·	मै·	चा·	मु·
र·	र·	त·	त·	स·	स·	र·	र·	त·	त·	स·	स·	र·	र·	त·	त·	गु·
४	४	८	८	८	८	⌒		⌒		८	८	⌒		⌒		माघ-फा· चै· वै· श्रा· भाद्रेषु
⌒		⌒		०	८	८	०	⌒		८	८	८	०	⌒		आश्विन का·मार्ग पौषेषु
०	०	८	८	⌒		०	८	८	⌒		⌒		⌒		८	ज्येष्ठा षाढ-मल मासेषु

भौम-रात्रि-मुहूर्त-चक्र।

वै·	तु·	अ·	ग·	वा·	वि·	सु·	पा·	सौ·	भा·	स·	रौ·	श्वे·	मै·	चा·	ज·	मु·
स	स·	र·	र·	त·	त·	स·	स·	र·	र·	त·	त·	स·	स·	र·	र·	गु·
⌒		४	४	८	८	८	४	४	४	८	८	८	०	०	८	माघ-फा चै· वै· श्रा· भाद्रेषु
⌒		⌒		०	८	८	८	⌒		०	८	८	८	⌒		आश्विन का·मार्ग· पौषेषु
⌒		⌒		०	⌒		⌒		४	८	०	⌒		८	८	ज्येष्ठा-षाढ मल-मासेषु

मुहूर्त प्रकरण ।

बुध-दिन-मुहूर्त-चक्र।

<table>
<tr><td>तु.</td><td>अ.</td><td>रा.</td><td>बा.</td><td>वि.</td><td>सु.</td><td>या.</td><td>सो.</td><td>भा.</td><td>स.</td><td>रौ.</td><td>श्वे.</td><td>मै.</td><td>चा.</td><td>ज.</td><td>वै.</td><td>मु.</td></tr>
<tr><td>त.</td><td>त.</td><td>स.</td><td>स.</td><td>र.</td><td>र.</td><td>त.</td><td>त.</td><td>स.</td><td>स.</td><td>र.</td><td>र.</td><td>त.</td><td>त.</td><td>स.</td><td>स.</td><td>गु.</td></tr>
<tr><td colspan="2">o⁀o</td><td>δ</td><td>δ</td><td>♉</td><td>♉</td><td>δ</td><td>δ</td><td>δ</td><td colspan="2">o⁀o</td><td>δ</td><td>δ</td><td>♉</td><td>♉</td><td>δ</td><td>माघ-फा
चै. वै. श्रा
भाद्रेषु</td></tr>
<tr><td colspan="2">o⁀o</td><td>δ</td><td>δ</td><td>δ</td><td>♉</td><td>♉</td><td>δ</td><td>δ</td><td>δ</td><td>δ</td><td colspan="2">o⁀o</td><td colspan="2">o⁀o</td><td>δ</td><td>आश्विन
का-मार्ग
पौषेषु</td></tr>
<tr><td>δ</td><td colspan="2">o⁀o</td><td colspan="2">o⁀o</td><td>δ</td><td>δ</td><td colspan="2">o⁀o</td><td colspan="2">o⁀o</td><td>δ</td><td>δ</td><td>δ</td><td>δ</td><td>♉</td><td>ज्येष्ठा
षाढ मल
मासेषु</td></tr>
</table>

बुध-रात्रि-मुहूर्त-चक्र।

<table>
<tr><td>अ.</td><td>रा.</td><td>वा.</td><td>वि.</td><td>सु.</td><td>या.</td><td>सौ.</td><td>भा.</td><td>स.</td><td>रौ.</td><td>श्वे.</td><td>मै.</td><td>चा.</td><td>ज.</td><td>वै.</td><td>तु.</td><td>मु.</td></tr>
<tr><td>र.</td><td>र.</td><td>त.</td><td>त.</td><td>स.</td><td>स.</td><td>र.</td><td>र.</td><td>त.</td><td>त.</td><td>स.</td><td>स.</td><td>र.</td><td>र.</td><td>त.</td><td>त.</td><td>गु.</td></tr>
<tr><td>δ</td><td>δ</td><td>δ</td><td>δ</td><td>δ</td><td colspan="2">o⁀o</td><td>०</td><td>δ</td><td>δ</td><td>δ</td><td>δ</td><td colspan="2">o⁀o</td><td colspan="2">o⁀o</td><td>माघ-फा.
चै. वै. श्रा.
भाद्रेषु</td></tr>
<tr><td>♉</td><td>♉</td><td>δ</td><td>δ</td><td>०</td><td>♉</td><td>♉</td><td>δ</td><td>δ</td><td>δ</td><td colspan="2">o⁀o</td><td colspan="2">o⁀o</td><td>०</td><td>δ</td><td>आश्विन
का-मार्ग
पौषेषु</td></tr>
<tr><td>δ</td><td colspan="2">o⁀o</td><td>δ</td><td>δ</td><td>०</td><td colspan="2">o⁀o</td><td colspan="2">o⁀o</td><td>δ</td><td>δ</td><td>०</td><td>०</td><td>δ</td><td>δ</td><td>ज्येष्ठा
षाढ मल
मासेषु</td></tr>
</table>

गुरु-दिन-मुहूर्त-चक्र।

<table>
<tr><td>रा·</td><td>वा·</td><td>वि·</td><td>सु·</td><td>या·</td><td>सौ·</td><td>भा·</td><td>स·</td><td>रौ·</td><td>श्वे</td><td>मै·</td><td>चा·</td><td>ज·</td><td>वै·</td><td>तु·</td><td>अ·</td><td>मु·</td></tr>
<tr><td>स·</td><td>स·</td><td>र·</td><td>र·</td><td>त·</td><td>त·</td><td>स·</td><td>स·</td><td>र·</td><td>र·</td><td>त·</td><td>त·</td><td>स·</td><td>स·</td><td>र·</td><td>र·</td><td>गु·</td></tr>
<tr><td>ऽ</td><td>ऽ</td><td>ऽ</td><td>ऽ</td><td colspan="2">⌒</td><td colspan="2">⌒</td><td>०</td><td>ऽ</td><td>ऽ</td><td>ऽ</td><td colspan="2">⌒</td><td colspan="2">⌒</td><td>माघ-फा· चै· वै· श्रा· भाद्रेषु</td></tr>
<tr><td>ऽ</td><td>ऽ</td><td>०</td><td colspan="2">⌒</td><td>ऽ</td><td>ऽ</td><td>ऽ</td><td>ऽ</td><td colspan="2">⌒</td><td colspan="2">⌒</td><td>०</td><td>०</td><td>ऽ</td><td>आश्विन का-मार्ग पौषेषु</td></tr>
<tr><td>ऽ</td><td>ऽ</td><td colspan="2">⌒</td><td>०</td><td>ऽ</td><td>ऽ</td><td>ऽ</td><td>०</td><td>♆</td><td>♆</td><td>♆</td><td>♆</td><td>ऽ</td><td>ऽ</td><td>ऽ</td><td>ज्येष्ठा-षाढ मल मासेषु</td></tr>
</table>

गुरु-रात्रि-मुहूर्त-चक्र।

<table>
<tr><td>वा·</td><td>वि·</td><td>सु·</td><td>या·</td><td>सौ·</td><td>भा·</td><td>स·</td><td>रौ·</td><td>श्वे</td><td>मै·</td><td>चा·</td><td>ज·</td><td>वै·</td><td>तु·</td><td>अ·</td><td>रा·</td><td>मु·</td></tr>
<tr><td>त·</td><td>त·</td><td>स·</td><td>स·</td><td>र·</td><td>र·</td><td>त·</td><td>त·</td><td>स·</td><td>स·</td><td>र·</td><td>र·</td><td>त·</td><td>त·</td><td>स·</td><td>स·</td><td>गु·</td></tr>
<tr><td>♆</td><td>ऽ</td><td>ऽ</td><td>ऽ</td><td>♆</td><td>♆</td><td>♆</td><td>♆</td><td>०</td><td>ऽ</td><td>ऽ</td><td>ऽ</td><td colspan="2">⌒</td><td>ऽ</td><td>ऽ</td><td>माघ-फा· चै· वै· श्रा· भाद्रेषु</td></tr>
<tr><td>♆</td><td>ऽ</td><td>ऽ</td><td>ऽ</td><td>०</td><td colspan="2">⌒</td><td>♆</td><td>♆</td><td>ऽ</td><td>ऽ</td><td>ऽ</td><td>०</td><td colspan="2">⌒</td><td>ऽ</td><td>आश्विन का-मार्ग-पौषेषु</td></tr>
<tr><td>०</td><td>०</td><td>ऽ</td><td>ऽ</td><td>ऽ</td><td>०</td><td colspan="2">⌒</td><td colspan="2">⌒</td><td>ऽ</td><td>ऽ</td><td colspan="2">⌒</td><td>♆</td><td>♆</td><td>ज्येष्ठा-षाढ-मल मासेषु</td></tr>
</table>

मुहूर्त प्रकरण ।

शुक्र-दिन-मुहूर्त-चक्र।

वि·	सु·	या·	सौ·	भा·	स·	रौ·	श्वे·	मै·	चा·	ज·	वै·	तु·	अ·	रा·	वा·	मु·
र·	र·	त·	त·	स·	स·	र·	र·	त·	त·	स·	स·	र·	र·	त·	त·	गु·
ऽ	ऽ	♉	♉	०	ऽ	ऽ	ऽ	⌒		⌒		ऽ	ऽ	ऽ	०	माघ-फा· चै· वै· आ· भाद्रेषु-
ऽ	⌒		ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	⌒		⌒		ऽ	ऽ	ऽ	०	♉	आश्विन-का· मार्ग पौषेषु
⌒		ऽ	ऽ	ऽ	०	⌒		⌒		ऽ	ऽ	⌒		♉	♉	ज्येष्ठा पाढ़-मल मासेषु-

शुक्र-रात्रि-मुहूर्त चक्र ।

सु·	या·	सौ·	भा·	स·	रौ·	श्वे·	मै·	चा·	ज·	वै·	तु·	आ·	रा·	वा·	वि·	मु·
स·	स·	र·	र·	त	त·	स·	स·	र·	र·	त·	त·	स·	स·	र·	र·	गु·
♉	♉	ऽ	ऽ	ऽ	०	⌒		०	♉	ऽ	ऽ	ऽ	०	♉	♉	माघ-फा चै· बै· आ भाद्रेषु
⌒		ऽ	ऽ	ऽ	०	⌒		ऽ	ऽ	०	⌒		०	⌒		आश्विन का· मार्ग पौषेषु
⌒		ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	⌒		०	ऽ	ऽ	ऽ	०	♉	♉	ऽ	ज्येष्ठा-पाढ-मल मासेषु

शनि-दिन-मुहूर्त चक्र।

या	सौ	भा	स	रो	श्वे	मै	चा	ज	वै	तु	अ	रा	बा	वि	सु	सु
त	त	स	स	र	र	त	त	स	स	र	र	त	त	स	स	गु
४	ऽ	०	०	०	०	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	०	ऽ	ऽ	०	ऽ	ऽ	माघ-फा-चै-वै-आ-भाद्रेषु
४	ऽ	०	ऽ	०	ऽ	ऽ	०	ऽ	४	ऽ	ऽ	०	ऽ	ऽ	४	आश्विन-का-मार्ग पौषेषु
ऽ	⌒		ऽ	ऽ	०	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	०	ऽ	ऽ	०	ऽ	४	ज्येष्ठा-षाढ-मल मासेषु

शनि-रात्रि-मुहूर्त-चक्र।

सौ	भा	स	रौ	श्वे	मै	चा	ज	वै	तु	अ	रा	बा	वि	सु	या	मु
र	र	त	त	स	स	र	र	त	त	स	स	र	र	त	त	गु
०	४	४	ऽ	ऽ	ऽ	०	⌒		⌒		ऽ	ऽ	ऽ	४	४	माघ-फा-चै-वै-आ-भाद्रेषु
४	०	४	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	⌒		⌒		ऽ	ऽ	ऽ	०	४	आश्विन-का-मार्ग पौषेषु
ऽ	⌒		ऽ	ऽ	०	०	⌒		ऽ	ऽ	०	ऽ	ऽ	ऽ	०	ज्येष्ठा-षाढ-मल मासेषु

इति श्रीमत्पण्डित सूर्यनारायण त्रिपाठिसंगृहीते बृहज्ज्योतिः सार मुहूर्त प्रकरण द्वितीयं समाप्तम् ॥२॥

(३) ताजिकप्रकरण

वर्ष-प्रवेश का प्रकार ।

सपादमर्धसार्द्धं च त्रिस्थानस्थं गताब्दकम् ।
वारनाडीपलेभ्यश्च जन्मवारादिसंयुतम् ॥ १ ॥

गत वर्ष को तीन जगह स्थापित करे। प्रथम को सवाया करे, उनको वार जानिए; दूसरे को आधा करे, वे घटी होती हैं; तीसरे अङ्क को डयोढ़ा करे, वे पल होते हैं; उनमें जन्म वारादि के जोड़ने से वर्ष के इष्ट वारादि होते हैं।

उदाहरण–गत वर्ष २० को सवाया किया तो २५ हुए, बीस को आधा किया तो १० हुए; फिर बीस को डयोढ़ा किया तो ३० हुए। उनको क्रम से तीनों अङ्क २५।१०।३० वार, घटी और पल जानना। वार सात से अधिक हैं इस कारण सात का भाग प्रथम अंक में दिया तो शेष रहे चार। अब शुद्ध ध्रुवा हुआ ४।१०।३० ये बीस वर्ष के गताब्द का ध्रुवा जानिये। जब पल साठ से अधिक हों तब साठ का भाग देकर शेषांङ्क पलों की जगह में रखना, लब्धाङ्क को घटी के अङ्क में शामिल करना; जो घटी साठ से अधिक हों तो उसमें साठ का भाग देकर शेषाङ्क को घटी की जगह रखना और लब्धाङ्क को वार के अङ्क में जोड़ देना; वारों का अङ्क सात से अधिक हो तो सात से भाग लेकर शेषाङ्क को वार की जगह रखना और लब्धाङ्क को छोड़ देना तब शुद्ध ध्रुवा बनेगा। जब जन्म वारादि जोड़े तो उसमें भी इसी क्रिया से अङ्क को चढ़ा लेना तब वर्षप्रवेश के इष्ट वारादि शुद्ध होंगे। अथवा, अङ्क चढ़ाने काबिल न हों अर्थात् अपने प्रमाण के भीतर हों तो वही शुद्ध जानिए तथा गत वर्ष को सवाया करने मे

कुछ घड़ी आयें तो वे घड़ी, घड़ी के अङ्क में जोड़ देना अर्थात् दूसरी जगह जिसको आधा किया है वही घड़ी का अङ्क है उसमें वह अङ्क जोड़ देना तथा घड़ी के अङ्क में जो अङ्क अधिक आवें वे वार के अङ्क में जोड़ देना अर्थात् जिसे डयोढ़ा किया है वही पल का अङ्क है और जो पल से अधिक हो वह विपल की जगह स्थापित करें। उसका उदाहरण दिखाते हैं—

गत वर्ष ११, सवाया करने से १३ ।।। हुए, इनके तेरह वार आये और तीन पाइयों की पैंतालीस घड़ी हुईं, इसलिए तेरह पैंतालीस १३ । ४५ स्थापित किये। गताब्द ११ को आधा किया तो साढ़े पाँच ५।३० हुए, इसको पैंतालीस में जोड़ा तो ५०।। हुए, इस अङ्क की पचास घड़ी हुईं और दो पाइयों के ३० पल हुए। अब ये अङ्क वारादि स्थापित किया तो १३ । ५० । ३० हुए। गताब्द ११ को डयोढ़ा किया तो १६।। अर्थात् सोलह पल पाये और दो पाइयों के तीस विपल हुए उन पलों को पलों में जोड़ने से ४६ पल हुए; बाद उसके ऊपर ३० विपल हुए, अब क्रम से अङ्क स्थापित किया तो ध्रुवाङ्क हुआ १३ । ५० । ४६ । ३० ये वारादि हुए; प्रथम वार के अङ्क में तेरह हैं इसमें सात का भाग दिया तो शेष ६ बचे; अतः शुद्ध ध्रुवा हुआ ६ । ५०।४६।३०। इसी में जन्मवारादि जोड़ने से इष्टवारादि होंगे। तथा जन्म के सूर्यों के समान वर्ष के सूर्य देखें उतने सूर्यों पर वर्षप्रवेश होगा और इष्टवार उन्हीं सूर्यों पर मिलेगा ।। १ ।।

चन्द्र को छोड़कर रवि आदि ग्रहों का स्पष्टीकरण।

गतैष्यदिवसाद्येन गतिर्निघ्नी खषड्हृता ।
लब्धमंशादिकं शोध्यं योज्यं स्पष्टो भवेद्ग्रहः ॥ १ ॥

इष्टकालो यदाग्रे स्यात्प्रस्तारं शोधयेत्तदा।
अग्रे प्रस्तारकं चेत्स्यादिष्टं संशोधयेत्तथा ॥ २ ॥

चालक के दिनादिक गत व एष्य हों उनको गोमूत्रिका विधान से ग्रह की गति से गुणे तथा विगति से भी वारादिक गुणे। उसको साठ से चढ़ाकर दोनों के अङ्कों में फिर साठ का भाग दे, लब्ध अंशादि मिलेंगे। जिस पंक्ति से चालक बनाया है उसी पंक्ति के ग्रहों में क्रम से घटाना और जोड़ना अर्थात् गतचालक हो तो घटा देना और एष्य हो तो जोड़ देना, तब स्पष्ट ग्रह बन जायगा। वक्री ग्रह को विलोम जानिए अर्थात् जोड़ना हो तो घटा देना और घटाना हो तो जोड़ देना।

अब चालक स्पष्ट लिखते हैं–प्रस्तार से इष्टकाल आगे हो तो इष्टकाल के वारादिकों में प्रस्तार के वारादि घटा दें तब एष्य चालक बनेगा। प्रस्तार आगे हो और इष्टकाल प्रथम हो तो प्रस्तार के वारादिकों में इष्ट के वारादि घटाने से गत चालक बनेगा, अथवा वार में वार न घट सके तो सात और जोड़कर घटा देना व घड़ी, घड़ी में न घटे तो एक अङ्क वार से उतार लें। इसी प्रकार पल न घट सकें तो एक अङ्क घड़ी से उतार लें ॥१-२॥

चन्द्र का स्पष्टीकरण।

खषड् ६०घ्नं भयातं भभोगोद्धृतं त-
त्खतर्क ६० घ्नधिष्ण्येषु युक्तं द्विनिघ्नम्।
नवाप्तं शशीभागपूर्वस्तु भुक्तिः
खखाभ्राष्टवेदा ४८००० भभोगेन भक्ताः ॥१॥

इष्ट समय के भयात को साठ से गुणा करें और भभोग का भाग लें, लब्ध जो मिले उसमें अश्विन्यादि गत नक्षत्र, साठ से गुणकर जोड़ दें उस अङ्क को दूना करें, उसमें नव का भाग

दें, लब्ध जो मिलें उन्हें स्पष्ट चन्द्रमा के अंशादि जानिये। अंश तीस से अधिक हों तो तीस का भाग देने से जो लब्ध मिले उसे राशि जानिये।

अब गतिसाधन की विधि लिखते हैं—अड़तालिस हजार ४८००० को ६० से गुणा करें, उसमें भभोग का भाग देने से लब्ध गति मिलेगी, शेषाङ्क को ६० से गुणा करके फिर भभोग का भाग देने से विगति जानना चाहिए ॥ १ ॥

भभोग और भयात का प्रकार ।

गतर्क्षनाड्यः खरसेषु शुद्धाः
सूर्योदयादिष्टघटीषु युक्ताः ।
भयातसंज्ञा भवतीह तस्य
निजर्क्षनाडीसहितो भभोगः ॥ १ ॥

गत नक्षत्र की घड़ी ६० में घटा दें, उसमें जो सूर्योदय से इष्टघड़ी हो उसे जोड़ दें, वह भयात होता है। ६० में जो घटा हुआ नक्षत्र है उसमें वर्तमान नक्षत्र की घड़ी जोड़ने से भभोग होगा।

अब दूसरा भभोग का क्रम लिखते हैं—जो नक्षत्र का अवम (क्षय) हुआ हो तो गत नक्षत्र अवम (क्षय) के नक्षत्र में घटाने से भभोग बनेगा। तथा नक्षत्र की वृद्धि हुई हो तो वर्तमान में जोड़कर उसी में वृद्धि की भी घट्यादि जोड़ने से भभोग होता है।

अब भयात का दूसरा क्रम लिखते हैं—जिस दिन का इष्ट हो, उसी दिन सूर्योदय में जो नक्षत्र हो उससे दूसरा नक्षत्र इष्टसमय में हो, ऐसा समय पड़े तो प्रथम नक्षत्र के घट्यादि इष्टकाल में घटाने से भयात होता है ॥ १ ॥

अयनांश लाने की रीति ।

वेदाब्धिवेद[४४४]हीनात्तु शकात्खरस[६०]भाजितात् ।
अयनांशा भवन्त्येते ब्रह्मपक्षाश्रिताः किल ॥ १ ॥

शालिवाहन के शक में ४४४ घटा दें, उसमें साठ का भाग देने से जो लब्ध मिले वे ब्रह्म-सिद्धान्त पक्ष के मत से अयनांश होते हैं ॥ १ ॥

लखनऊ में लग्न का प्रमाण ।

मेष	वृष	मि.	कर्क	सिं.	कं.	तु.	वृ.	ध.	मं.	कुं.	मी.	ल.
३	४	५	५	५	५	५	५	५	५	४	३	घटी
३८	११	३	४३	४७	३८	३८	४७	४३	३	११	३८	पल

लग्न का स्पष्टीकरण ।

तत्कालार्कः सायनः स्वोदयघ्ना
भोग्यांशाः खत्र्युद्धृता भोग्यकालः ।
एवं यातांशैर्भवेद्यातकालो
भोग्यः शोध्योऽभीष्टनाडीपलेभ्यः ॥ १ ॥
तदनु विशोध्य गृहोदयांश्च शेषं
गगनगुणघ्नमशुद्धहृल्लवाद्यम् ।
सहितमजादिगृहैरशुद्धपूर्वै-
र्भवति विलग्नमदोऽयनांशहीनम् ॥ २ ॥

भोग्यतोऽल्पेष्टकालात् खरामाहता-
त्स्वोदयाप्तांशयुग्भास्करः स्यात्तनुः ।
अर्कभोग्यस्तनोर्भुक्तकालान्वितो
युक्तमध्योदयोऽभीष्टकालो भवेत् ॥ ३ ॥
यदि तनुदिननाथावेकराशौ तदंशा-
न्तरहत उदयः स्यात् खाग्निहृत्पिष्टकालः ।
इनत उदयऊनश्चेत्स शोध्यो द्युरात्रा-
न्निशि तु सरसभार्कात्स्यात्तनूरिष्टकाले ॥ ४ ॥

इष्ट-समय के सूर्य में अयनांश जोड़कर उसको तीस अंशों में घटा देने से भोग्यांश होते हैं। सायन सूर्य जिस राशि का हो वही उदय लें। उस उदय के पल से भोग्यांशों को गुणा करें, उसमें तीस का भाग दें, जो लब्ध मिले वह पलात्मक सूर्य का भोग्यकाल होगा।

अब सूर्य के भुक्तकाल लाने का क्रम लिखते हैं—सायन सूर्य के अंशादिक उसी के उदय के पलों से गुण दें उसमें तीस का भाग दें, जो लब्ध मिले वह पलात्मक सूर्य का भुक्तकाल होता है। फिर भोग्यकाल के पल इष्ट-घटी के पल करके उसमें घटा दें। उस अङ्क में सायन सूर्य जिस लग्न के हों उससे दूसरी लग्न के पलों को घटा दें। फिर उसके आगेवाली लग्न के पलों को उसी अङ्क में हीन करें। इसी प्रकार से जो जो लग्न घटें वे घटा दें और जो लग्न न घट सके उसकी अशुद्ध संज्ञा है। फिर जो शेषाङ्क बचा है उसे तीस से गुणा करें। उन अङ्कों में अशुद्ध लग्न के पलों से भाग लें, जो लब्ध मिले उसे अंशादि जानिये। फिर मेषादिक लग्नों में जो लग्न अशुद्ध संज्ञक है उससे जो प्रथम लग्न है वह

अंशादिकों में जोड़ दें अर्थात् अंशादिक उसके बाद स्थापित करें तब राश्यादि अङ्क प्राप्त होंगे। उसमें अयनांश हीन करने से स्पष्ट लग्न होगा।

भोग्य-काल इष्ट-घड़ी के पलों में हीन न हो उसकी क्रिया लिखते हैं—भोग्य के पलों से इष्ट-काल के पल कम हों तो इष्ट-काल के पलों को तीस से गुणा करें और सायन-सूर्य के पलों से भाग लें, जो लब्ध अंशादिक मिलें वे स्पष्ट सूर्य में जोड़ देने से लग्न स्पष्ट होती है।

लग्न से इष्टकाल लाने का क्रम।

सूर्य को सायन करके भोग्यकाल पूर्वोक्त रीति में बनाकर उसको अलग रखें, फिर स्पष्ट लग्न को सायन करें, उसके अंशादि उसी के उदय के पलों से गुण दें, उसमें तीस का भाग दें, पूर्वोक्त रीति से जो लब्ध अंशादि मिलें उसे लग्न का भुक्तकाल जानिए। दोनों अङ्कों को एक में जोड़ दें अर्थात् सूर्य का भोग्यकाल और लग्न का भुक्त-काल जोड़ दें। उसमें मध्य लग्नों के पल जोड़ दें अर्थात् सायन सूर्य जिस लग्न के हों उसके दूसरे लग्न से सायन लग्न की पहली लग्न तक जोड़े यही मध्य की लग्न हैं; इन तीनों अङ्कों को जोड़ने से इष्ट काल के पल निकलेंगे। पलों में साठ का भाग देने से इष्टकाल की घड़ी होंगी और शेष पल होंगे।

सूर्य और लग्न एक राशि के हों तो इष्टकाल लाने का क्रम।

सूर्य और लग्न एक राशि के हों तो दोनों का अन्तर करें उसे उदय के पलों से गुणाकर उसमें तीस का भाग दें, लब्ध इष्ट-काल पलात्मक होता है। सूर्य से लग्न कम हो तो लब्ध पलात्मक जो मिला है वह साठ घटी में घटा दे तो इष्टकाल निकलता है, उसे घट्यादिक जानिये, और रात्रि की लग्न व इष्टसाधन हो तो सूर्य

की राशि में छः मिलायें, शेष क्रिया पूर्ववत् समझ लें, परन्तु जब रात्रि का लग्न साधन करे तो इष्टकाल सायंकाल से लें और पूर्वोक्त प्रकार मे लग्न बना लें ॥ १-४ ॥

मास-प्रवेश-विचार ।

मासार्कस्य तदासन्नपंक्त्यर्केण सहान्तरम् ।
कलीकृत्यार्कगत्याप्तं दिनाद्येन युतोनितम् ॥ १ ॥

वर्षप्रवेश के सूर्यों के निकट जो मास सूर्य हों उसका अन्तर करें । जो अंशादि हों उनकी कला करके सूर्य की गति का भाग लें । तीन बार लब्ध वारादि मिलेंगे, उसे जिस सूर्य की पंक्ति का अन्तर किया हो उसी पंक्ति के वारादि मिश्रमान में जोड़ें अथवा घटाये । जो वर्ष-प्रवेश का सूर्य पंक्ति से अधिक हो तो जोड़ दें और हीन हो तो घटा दें तो मासस्पष्ट वारादि होगा ॥ १ ॥

त्रिपताकी चक्र ।

रेखात्रयं तिर्यगधोर्ध्वसंस्थ-
मन्योन्यविद्धाग्रकमीशकोणात् ।
स्मृतं बुधैस्तत्त्रिपताकिचक्रं
प्राङ्मध्यरेखाग्रगवर्षलग्नात् ॥ १ ॥
न्यसेद्धचक्रं किल तत्र सैकां
याताब्दसंख्यां विभजेन्नभोगैः ।
शेषोन्मिते जन्मगचन्द्रराशे-
स्तुल्ये च राशौ विलिखेच्छशाङ्कम् ॥ २ ॥
परे चतुर्भाजितशेषतुल्ये
स्थाने स्वराशेः खचरास्तु लेख्याः ।

स्वर्भानुविद्धे हिमगौ त्वरिष्टं
तापोऽर्कविद्धे रुगिणोऽर्किविद्धे ।
महीजविद्धे तु शरीरपीडा
शुभैश्च विद्धे जयसौख्यलाभः ।। ३ ।।

तीन रेखा सीधी और तीन बेंड़ी करें । परस्पर ईशान कोण से रेखा का वेध करें । इसको पण्डित लोग त्रिपताकीचक्र कहते हैं । इसके पूर्व के मध्यरेखा पर वर्षलग्न का न्यास करें । फिर गत वर्ष में एक और जोड़ दें, उसमें नव का भाग दें, शेष जो अङ्क मिलें उतने अङ्क को जन्मस्थान से चन्द्रमा लिखें । अन्य ग्रहों में चार का भाग देकर जो अङ्क शेष रहे उसे जन्मस्थान से लिखें । राहु-केतु वक्री होने से जन्मस्थान से पीछे लिखें । त्रिपताकीचक्र में चन्द्रमा का राहु और केतु से वेध हो तो अरिष्ट, सूर्य से चन्द्रमा का वेध हो तो ताप, शनैश्चर का चन्द्रमा से वेध हो तो रोग, मङ्गल से चन्द्रमा का वेध हो तो शरीर पीड़ा, और चन्द्रमा से शुभग्रह का वेध हो तो जय, सुख और लाभ जानिए ।। १-३ ।।

त्रिपताकी चक्र ।
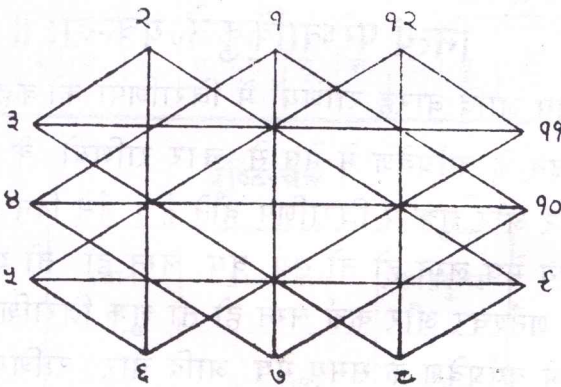
पञ्चाधिकारी-विचार ।

मुन्थेशो वर्षलग्नेशस्तथा त्रैराशिनायकः ।
दिवार्कराशिनाथश्च रात्रौ चन्द्रर्क्षनायकः ॥ १ ॥
जन्मलग्नेश्वरश्चैव वर्षपञ्चाधिकारिणः ।
पञ्चवर्गीबलाधिक्यं लग्नदर्शी च वर्षराट् ॥ २ ॥

मुन्थालग्न का स्वामी, वर्षलग्न का स्वामी, त्रिराशिप और दिन में वर्षप्रवेश हो तो सूर्यराशि का स्वामी तथा रात्रि में वर्ष-प्रवेश हो तो चन्द्रमा की राशि का स्वामी और जन्मलग्न का स्वामी इनको पञ्चाधिकारी जानिये । इन पाँचों में से पञ्चवर्गी में जो अधिक बली हो तथा वर्षलग्न को देखता हो वही वर्षेश होता है ॥ १-२ ॥

त्रिराशिप-विचार ।

त्रिराशिपाः सूर्यसितार्किशुक्रा
दिने निशीज्येन्दुबुधक्षमाजाः ।
मेषाच्चतुर्णां हरिभाद्विलोमं
नित्यं परेष्वार्किकुजेज्यचन्द्राः ॥ १ ॥

मेष आदि बारह राशियों में त्रिराशिपों को कहते हैं—

दिन के वर्षप्रवेश में मेष से चार राशियों के सूर्य, शुक्र, शनैश्चर और शुक्र ये त्रिराशिप होते हैं । जैसे दिन में वर्ष प्रवेश के समय मेष लग्न हो तो सूर्य, वृष लग्न हो तो शुक्र, मिथुन हो तो शनैश्चर और कर्क लग्न हो तो शुक्र त्रिराशिप होता है । रात्रि में वर्षप्रवेश के समय मेष आदि चार राशियों के गुरु, चन्द्र, बुध और मंगल ये त्रिराशिप होते हैं अर्थात् रात्रि में मेष

लग्न का स्वामी गुरु, वृष का चन्द्रमा, मिथुन का बुध और कर्क का मंगल त्रिराशिप होता है । पूर्वोक्त त्रिराशिप सिंह से चार राशियों के विलोम होते हैं, अर्थात् मेष आदि के जो दिनेश हैं वे रात्रि के ईश होते हैं और जो मेष आदि के रात्रीश हैं, वे दिनेश होते हैं । जैसे दिन में सिंह लग्न का बृहस्पति, कन्या का चन्द्रमा, तुला का बुध और वृश्चिक का मंगल तथा रात्रि में सिंह का सूर्य, कन्या का शुक्र, तुला का शनैश्चर और वृश्चिक का शुक्र त्रिराशिप होता है । धनु आदि चार राशियों के सदा दिन और रात्रि के वर्ष प्रवेश में शनैश्चर, मंगल, बृहस्पति और चन्द्रमा ये त्रिराशिप होते हैं । जैसे—धनु का शनैश्चर, मकर का मंगल, कुम्भ का बृहस्पति और मीन का चन्द्रमा त्रिराशिप होता है । इन राशियों में त्रिराशिपों का विपर्यय नहीं होता है ॥ १ ॥

त्रिराशिप-चक्र ।

मे०	वृ०	मि०	क०	सिं०	कं०	तु०	वृ०	ध०	म०	कुं०	मी०	लग्न
सू.	शु.	श.	शु.	बृ.	चं.	बु.	मं.	श.	मं.	बृ.	चं.	दिन में त्रिराशिप
बृ.	चं.	बु.	मं.	सू.	शु.	श.	शु.	श.	मं.	बृ.	चं.	रात्रि में त्रिराशिप

दृष्टि-चक्र ।

स्थान	३।५।९।११	मित्रदृष्टि
स्थान	७।१।४।१०	शत्रुदृष्टि

क्षेत्रादिबल-चक्र ।

स्वगृही	मित्रगृही	समगृही	शत्रुगृही	ग्रहस्थान
३०।००	२२।३०	१५।००	०७।३०	बलप्रमाण

स्वगृह-संज्ञा-चक्र ।

सू.	चं.	मं.	बु.	बृ.	शु.	श.	ग्रह
५	४	१ ८	३ ६	९ १२	२ ७	१० ११	लग्न

मित्र, सम और शत्रुसंज्ञा-चक्र ।

स्थान	३।५।९।११	मित्र
स्थान	२।६।८।१२	सम
स्थान	१।४।७।१०	शत्रु

उच्चबलज्ञान और नवांशज्ञान ।

सूर्यादितुङ्गर्क्षमजोक्षनक्रं
कन्याकुलीरान्त्यतुलालवैः स्युः ।
दिग्भिर्गुणैरष्टयमैः शरैकै-
र्भूतैर्भसंख्यैर्नखसम्मितैश्च ॥ १ ॥
तत्सप्तमं नीचमनेन हीनो
ग्रहोऽधिकश्चेद्रसभाद्विशोध्यः ।
चक्रात्तदंशाङ्कलवो बलं स्यात्
क्रियेणतौलीन्दुभतो नवांशाः ॥ २ ॥

सूर्यादि ग्रहों का उच्चस्थान।

सूर्य आदि ग्रहों की मेष आदि राशियाँ दश आदि अंशों से उच्च होती हैं। जैसे—मेषराशि का सूर्य, वृष का चन्द्रमा, मकर का मङ्गल, कन्या का बुध, कर्क का बृहस्पति, मीन का शुक्र और तुला का शनैश्चर उच्च राशि का होता है।

सूर्यादि ग्रहों की परमोच्चता।

मेष के जब दश अंश पूरे होंगे तब सूर्य और चन्द्रमा वृष राशि के तीन अंश पूरे होने तक परमोच्च होता है। मङ्गल मकर के अट्ठाइस अंश तक, बुध कन्या के पन्द्रह अंश तक, बृहस्पति कर्क के पाँच अंश तक, शुक्र मीन के सत्ताइस अंश तक और शनैश्चर तुला के बीस अंश तक परमोच्च होता है। इससे सप्तम राशि को नीच जानिए। स्पष्ट ग्रह में वही ग्रह का नीच घटा दे। छः राशि से अधिक हो तो वही अंक बारह में घटा दे, उस अंक में नव का भाग दे, जो लब्ध मिले उसे उच्चबल जानिये। परमोच्च हो तो पूरा बीस बिस्वा उच्चबल होता है। तथा नवांश मेष, मकर, तुला और कर्क से मेषादि तीन आवृत्ति करके चक्र से समझ ले। तीन अंश बीस कला का एक भाग होता है इसी के समान नव भाग होते हैं॥ १-२॥

उच्चनीच-चक्र।

सू०	चं०	मं०	बु०	बृ०	शु०	श०	ग्रह
०	१	९	५	३	११	६	उच्चराशि
१०	३	२८	१५	५	२७	२०	परमोच्चांश
६	७	३	११	९	५	०	नीचराशि
१०	३	२८	१५	५	२७	२०	परमनीचांश

नवांश-चक्र ।

मेष	वृष	मि.	कर्क	सिं.	कं	तु.	वृ.	ध.	म.	कुं.	मी.	राशि
मेष	मं.	तु.	कर्क	मे.	म.	तु.	कर्क	मे.	म.	तु.	कर्क	राशि-गणना

नवांशप्रमाण-चक्र ।

३	६	१०	१३	१६	२०	२३	२६	३०	अंश
२०	४०	००	२०	४०	००	२०	४०	००	क.
प्रथम भाग	द्वितीय भाग	तृतीय भाग	चतुर्थ भाग	पञ्चम भाग	षष्ठ भाग	सप्तम भाग	अष्टम भाग	नवम भाग	भाग

पञ्चवर्गी में नवांशबल-चक्र ।

स्वगृही	मित्रगृही	समगृही	शत्रुगृही	ग्रहस्थान
०५।००	०३।४५	०२।३०	०१।१५	बलप्रमाण

हद्दाप्रमाण-चक्र ।

मे.	वृ.	मि.	क.	सिं.	कं.	तु.	वृ.	ध.	मं.	कुं.	मी.	राशि
६	८	६	७	६	७	६	७	१२	७	७	१२	अंश
बृ.	शु.	बु.	म.	बृ.	बु.	श.	मं.	बृ.	बु.	बु.	शु.	हद्देश
६	६	६	६	५	१०	८	४	५	७	६	४	अंश
शु.	बु.	शु.	शु.	शु.	शु.	बु.	शु.	शु.	बृ.	शु.	बृ.	हद्देश
८	८	५	६	७	४	७	८	४	८	७	३	अंश
बु.	बृ.	बृ.	बु.	श.	बृ.	बृ.	बु.	बु.	शु.	बृ.	बु.	हद्देश
५	५	७	७	६	७	७	५	५	४	५	९	अंश
मं.	श.	मं.	बृ.	बु.	मं.	शु.	बृ.	मं.	श.	मं.	मं.	हद्देश
५	३	६	४	६	२	२	६	४	४	५	२	अंश
श.	मं.	श.	श.	मं.	श.	मं.	श.	श.	मं.	श.	श.	हद्देश

हद्दाबल-चक्र ।

स्वगृही	मित्रगृही	समगृही	शत्रुगृही	ग्रहस्थान
१५।००	११।१५	०७।३०	०३।४५	बलप्रमाण

दृकाण-चक्र ।

मे.	वृ.	मि.	कर्क	सिं.	कं.	तु.	वृ.	ध.	म.	कुं.	मी.	लग्न
१०	१०	१०	१०	१०	१०	१०	१०	१०	१०	१०	१०	अंश
मं.	बु.	वृ.	शु.	श.	सू.	च.	मं.	बु.	वृ.	शु.	श.	दृकाणेश
१०	१०	१०	१०	१०	१०	१०	१०	१०	१०	१०	१०	अंश
सू.	चं.	मं.	बु.	बृ.	शु.	श.	सू.	चं.	मं.	बु.	बृ.	दृकाणेश
१०	१०	१०	१०	१०	१०	१०	१०	१०	१०	१०	१०	अंश
शु.	श.	सू.	चं.	मं.	बु.	बृ.	शु.	श.	सू.	चं.	मं.	दृकाणेश

पञ्चवर्गी में दृकाणबल-चक्र ।

स्वगृही	मित्रगृही	समगृही	शत्रुगृही	ग्रहस्थान
१०।००	०७।३०	०५।००	०२।३०	बलप्रमाण

वर्षेश-फल ।

बलपूर्णेऽब्दपे पूर्णं शुभं मध्ये च मध्यमम् ।
अधमे दुःखरोगारिभयानि विविधाः शुचः ॥ १ ॥

वर्ष का स्वामी पूर्णबली हो अर्थात् १३ । २० के उपरान्त बल हो तो वर्ष भर पूर्ण शुभ फल जानिए। यदि मध्यबल अर्थात् ६ । ४० के उपरान्त १३ । २० के भीतर हो तो मध्य फल जानिए । यदि अधमबल अर्थात् ६ । ४० के भीतर